

# mires è sesies PUBLISHED BY AUTHORITY

सं॰ 🤋

नर्द विरुत्ती, ऋमियार, मार्च 1, 1986/फाल्तुन 10, 1907

No. 9]

NEW DELHI, SATURDAY, MARCH 1, 1986/PHALGUNA 10, 1907

## इस आग में भिन्न पृष्ठ संख्या की **वाली है जिससे कि यह अक्षय संख्**रान के क्य में रक्षा का सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

# MART II—Gordon 3—Sub-section (ii)

(रका मंत्रालय को छोड़ कर) भारत सरकार के मंत्रालकों हारा जारी किए गए सांविधिक धावेस और अधिस्थनाएं statutory orders and Notifications issued by the Ministrice of the Government of India (other than the Ministry of Defence)

#### विधि और न्याय मंत्राजव

(विधि कार्य विभाग ) महं दिल्ली, 7 फरवरी, 1985 सूचनाएं

he Gazet

भा. भा. 757:—नोटरीज निवम, 1956 के नियम 6 के जनुसरण में सवाम प्राधिकारी द्वारा यह सूचना दी जाती है कि श्री श्रिर सिंह कुल्हर एडवोदेज ने उनत प्राधिकारी की उक्त नियम के नियम 4 के अधीन एक प्रानेवन इस बात के लिए दिया है कि उसे चिरावा (राजम्यान) ने ध्ययमान हरने के लिए नोटरी के ख्य में निश्का किया जाए।

2. उक्त स्थाक्त की नाइरी के एप में नियुक्त पर फिसो भी प्रकार का भासोप इस सूचना के प्रकाशन के चौंदह दिन के शीतर जिस्तिक रूप में मेरे पास भेजत ब्रह्म ।

[सं. ७ (७)/४०—न्याः]

### MINISTRY OF LAW AND JUSTICE

(Department of Legal Affairs)

New Delhi, the 7th February, 1986 NOTICES

that application has been made to the said Authority, under

S.O. 757.—Notice is hereby given by the Competent Authority in pursuance of rule 6 of the Notaries Rules, 1956,

rule 4 of the said Rules, by Shri Sher Singh Kulhar, Advocate for appointment as a Notary to practise in Chirawa (Raiasthan).

2. Any objection to the appointment of the said person as a Notary may be submitted in writing to the undersigned within fourteen days of the publication of this Notice.

[No. F. 5(9)/86-Judl.]

का. भ्रा. 158:—नोटरीज नियम, 1956 के नियम 6 के अनुसरण में सक्षम प्राधिकारी द्वारा यह सूचना दी जाती है कि श्रा: राम प्रसाद नेयर एडब्रोकेट ने उकत प्राधिकारी को उकत नियम के नियम 4 के अज्ञान एक भानेदन इस बात के लिए दिया है कि उसे सम्पूर्ण भारतनर्ज में व्यवसाय करने के लिए मोटरी के रूप में नियमत किया जाए।

2. उक्त व्यक्ति की नोटरी के रूप में नियुक्ति पर किसी भी प्रकार का श्राक्षेप इस सूचना के प्रकाशन के चौबह दिन के भीतर लिखित रूप में भेरे पास भेजा जाए।

[मं. 5 (15)/8<del>6 स्</del>या]

S.O. 758.—Notice is hereby given by the Competent Achhority in pursuance of rule 6 of the Notaries Rules, 1956, that application has been made to the said Authority, under rule 4 of the said Rules, by Shri Ram Prasad Nayar, Advocate for appointment as a Notary to practise in whole India.

2. Any objection to the appointment of the said person as a Notary may be submitted in writing to the undersigned within fourteen days of the publication of this Notice.

[No. F. 5(15)/86-Judi.]

का. घा. 759:—नोटरीज नियम, 1956 के नियम 6 के धनुसरण में सक्षम प्राधिकारी द्वारा यह सूचना दी जाती हैं कि श्री मोहर सिह धिगरा एडवोकेट ने उक्त प्राधिकारी को उक्त नियम के नियम 4 के धिन एक धावेवन इस बात के लिए दिया है कि उसे जालंधर (पंजाब) व्यवसाय करने के लिए नोटरी के रूप में नियुन्त किया जाएं।

2. जनत व्यक्ति की नोटरी के रूप में नियुक्ति पर किसी भी प्रकार का प्राक्षेप इस सूचना के प्रकाशन के चौवह विन के भीतर लिखित वप में मेरे पास भेजा जाए।

> [सं० 5 (24)/86-न्या०] स्नार० एन० पोहार, सक्षम प्राधिकारी

- S.O. 759.—Notice is hereby given by the Competent Authority in pursuance of rufe 6 of the Notaries Rules, 1956, that application has been made to the said Authority, under rule 4 of the said Rufes, by Shri Mohar Singh Dhingra, Advocate for appointment as a Notary to practise in Jalandhar (Punjab).
- 2. Any objection to the appointment of the said person as a Notary may be submitted in writing to the undersigned within fourteen days of the publication of this Notice.

[No. F. 5(24)/85-Judl.] R. N. PODDAR, Competent Authority

# कार्मिक और लोक शिकायत तथा पंचान मंत्रालय

. (कार्मिक धौर प्रशिक्षण विभाग)

नई विल्ली, 11 फरवरी, 1986

का. भा. 760:—केन्द्रीय सरकार, वंड प्रिक्षिया संहिता, 1973 ( 1974 का 2 ) की धारा 24 की उपधारा (8) द्वारा प्रदक्ष णिनतर्यों का प्रयोग करते हुए और मधिलुनना संख्या 225/20/78—ए. बी. बी. (2) तारीख 11-12-84 में उल्लिखित श्री ने. जी. भलीमचंदानी, मधिलका की नियुक्ति का अधिकात करते हुए श्री ए. बी. बेलगल, मधिलका मुम्पई को, श्री ली. एम. दनाल और एम. एस. मुधाना के विश्व श्रार.सी. 65/75—मुम्बई में विशेष स्थापाधीश, मुम्पई के न्यायालय में राज्य की श्रीर से उपसंजात होने और भियोजन का संभालन करने के लिए विशेष सोक भभियोजक नियुक्त करती है।

[10 225/25/85-ए. वी. की.-II]

#### MINISTRY OF PERSONNEL, P.G. & PENSION

(Department of Personnel & Training)

New Delhi, the 11th February, 1986

S.O. 760.—In exercise of the powers conferred by subsection (8) of Section 24 of the Code of Criminal Procedure, 1973 (2 of 1974) and in supersession of appointment of Shri I. G. Alimchandani, Advocate, mentioned in notification No. 225|20|78-AVD. II dated the 11th December, 1984, the Central Government hereby appoints Shri A. B. Belgal, Advocate, Bombay, as a Special Public Prosecutor to appear and conduct prosecution on behalf of the State in the Court of the Special Judge, Bombay in RC 65/75-Bom. against Shri V. M. Dalai and M. S. Muthanna.

[No. 225/25/85-AVD, II]

का.मा. 761:—केन्द्रीय सरकार, वण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 (1974 का 2) थी घारा 24की उपधारा (8) द्वारा प्रवत शक्तियों का प्रयोग करते धुए, श्री थी. बार. रामगोगी, ब्रधिवक्ता मुस्त्रई को, राजस्य बासूचना निवेशालय, मुस्त्रई के विल्ली विशेष पुलिस स्थापना मुस्त्रई आर. सी. सं. 70/80-मुस्त्रई राज्य ॄ्वनाम बावि

पी. गांधी में उत्पन्न होने वाले मामले में, मुम्बई उच्च न्यायालय में उपसंजात होने के लिए विमेष लीक श्रिषयोजक नियुक्त करती है।

[सं. 225/21/85—ए. बी. - [{] एम. एस. प्रसाद, अवर यशिव

S.O. 761.—In exercise of the powers conferred by subsection (8) of Section 24 of the Code of Crimmal Procedure, 1973 (2 of 1974), the Central Government hereby appoints Shri P. R. Namjoshi, Advocate, Bombay as Special Public Prosecutor to apear in High Court, Bombay, in the case arising out of Deihi Special Police Establishment Bombay RC No. 70/80-Bombay State Versus Adi P. Gandhi, of the Directorate of Revenue Intelligence, Bombay.

[No. 225/21/85-AVD.11] M. S. PRASAD, Under Sect.

(पेंगन और पेंशन भोगी कल्याण कि ग) नई दिल्ली, 11 फरवरी, 1986

का॰ घा॰ 762: -राष्ट्रपति, संविधान के प्रमुच्छेद 148 के खण्ड (5) के साथ पठित प्रमुच्छेद 309 के परन्तुक द्वारा प्रदक्त मिनतथों का प्रयोग करते हुए, और मारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग में सेवारत व्यक्तियों के सबंध में, नियंत्रक-महालेखावरीक्षक सें परामर्थ करने के पण्चात् केन्द्रीय मिविल सेवा (पेंजन) नियम, 1972 में और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाते हैं, भर्षात :--

- 1. (1) इन नियमों का नाम केन्द्रीय सिविल सेवा (पेंशन) (संशोधन) नियम, 1986 हैं।
  - (2) ये राजपल में प्रकाशन की तारीश्व को प्रवृत्त होंगे।
- 2. केन्द्रीय सिविल सेवा (पेंशन) नियम, 1972 के नियम 50 के उपनियम (1) में खण्ड (ख) के विद्यमान परन्तुक के पश्चान्, विम्न-लिखित परन्तुक अंतःस्थापित किया जाएगा, प्रयांत:—-

"परन्तु यह भीर कि मृत्यु तथा सेवानिवृत्ति उपदान भी भन्तिम रूप से संगणित रकम, ठीक अगले रुपए तक पूर्णीकेत की जाएगी"

> [संबंधः 7/12/85-पा० एग्ड पा०डडःयू०] हवारा सिंह, उप सविव

पाद टिप्पण:—केन्द्रीय सिविल सेवा (पेंगन) नियम, 1972
का. भा. सं. 934 के रूप में तारीखा 1-4-1972
को प्रकासित किए गए नियमों का नृतीय संस्करण
(विसम्बर, 1981 तक प्रवतन) 1982 में मृदित
हुआ। तत्पश्चात् नियमों को का. धौर प्र. सु.
वि. की निम्नसिखित ग्रिधसूचनाग्रों ारा संगोधित
किया गया:—

कम सं. प्रधिसूचना सं.	तारीख
(1) 32/4/83 - पेंशन एकक	26-8-1983
(2) 29/4/83—पेंशन एकक	15-11-1984
(3) 7/3/84—र्पेशन एकक	17-11-1984
(4) 38/15/85— पेंशन एकक	1-7-1985
(s) 7/4/85—पेंशन ए <del>कक</del>	29-10-1985
(6) 1/2/85 - र्पेमन एकक	14-11-1985

# (Department of Pension & Pensioners' Welfare) New Delhi, the 11th February, 1986

S.O. 762.—In exercise of the powers conferred by the proviso to article 309 read with clause (5) of article 148 of the Constitution and after consultation with the Comproller and Auditor-General in relation to persons serving in the Indian Audit and Accounts Department, the President hereby

makes the following rules furher to amend the Central Civil Services (Pension) Rolles, 1972 namely:—

- 1. (1) Theses rules may be called the Central Civil Services (Pension) (Amendment) Rules, 1986.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the official Gazette.
- 2. In the Central Civil Services (Pension) Rules, 1972 in Rule 50 in sub-rule (1), after the existing proviso to clause (b) the following proviso shall be inserted namely:—

"Provided further that the amount of death-cum-retirement gratuity as finally calculated shall be rounded off to the next higher rupee".

[No. 7(12)/85-P&PW] HAZARA SINGH, Dy. Secy.

Foot Note:—The Central Civil Services (Pension) Rules, 1972 were published as S.O. 934 dated 1-4-72. The Third Edition (Corrected upto December, 1981) of the rules was printed in 1982. The rules were subsequently amended vide DP&AR Notifications given below:—

 גלא.	Notification No.	Date
<sup>-</sup> 1.	32/4/83-Pension Unit	26-8-8a
2.	29/4/83-Ponsion Unit	15-11-84
3.	7/3/84-Pension Unit	17-11-84
4.	38/15/85-Pension Unit	1-7-85
5.	7/4/85-Pension Unit	29-10-85
6.	1/2/85-Pension Unit	14-11-85

#### विस मंत्रालय

( राजस्य विभाग )

नई दिल्ली, 6 फरवरी, 1986

भादेश

स्टाम्प

का. ग्रा. 763.—भारतीय स्टाम्प प्रधिनियम, 1899 (1899 का 2) की घारा 9की उपधारा (1) के खंड (क) में प्रवत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्य्रीय सरकार एतब्द्धारा उस शुक्क को माफ करती है, जो नेशनल को आपरेटिश डेयलपमेंट कारपोरेशन, नई दिल्ली द्वारा जारी किये जाने बोले केवल बाईम करोड़ शीम लाख रुपये मृत्य के "9.75% एन. मी. ही. सी. बन्ध-पन्न, 1999 (XX भीरिज)" के रूप में उल्लिख्त प्रोमिसरी मोटों के स्वरूप के बन्ध-पन्नों पर उक्त प्रधिनियम के प्रत्योन प्रभार्य है।

[सच्या 2/86-स्टाम्प-फा. मं. 33/10/86-वि. क.]

#### MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

New Delhi, the 6th February, 1986

ORDER

#### STAMPS

S.O. 763.—In exercise of the powers conferred by clause (a) of sub-section (1) of section 9 of the Indian Stamp Act, 1899 (2 of 1899), the Central Government hereby remits the duty with which the bonds in the nature of Promissory Notes described as "9.75% N.C.D.C Bonds, 1999 (XXth Series)" to the value of rupees twenty-two crores and twenty lakhs only to be issued by National Cooperative Development Corporation, New Delhi are chargeable under the said Act.

[No. 2/86-Stamps-F. No. 33/10/86-ST]

नई दिल्ली, 7फरबरी, 1986

यावश

स्ट्राम्प

का० आ 764.—सारतीय स्टाम्प प्रधिनियम, 1899 (1899 का 2) की धारा 9 की उपधारा 1 के खंड (क) में प्रवत्त शिक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा उस शून्क को छूट देती है जो भाषाम तथा शहरी विकास निगम लिमिटेड, नई दिल्ली ढारा जारी किए जाने वाले केवल सोलह करोड़ सत्तर लाख उपये मूल्य के "9.75% ऋष्टण-पत्न 1998, (XXIV मिरीज)" के रूप में उल्लिखित ऋणपत्नों पर उक्त श्रिक्षित्यम के श्रन्तर्गत प्रभार्य है।

[सं. 1/86-स्डाम्प-फा. सं. 33/67/85-—िष. क.] बी. म्रार. मेहमी, मनर सचिष

New Delhi, the 7th February, 1986

#### ORDER

#### **STAMPS**

S.O. 764.—In exercise of the powers conferred by clause (a) of sub-section (1) of Section 9 of the Indiann Stamp Act, 1899 (2 of 1899), the Central Government hereby remits the duty with which the bonds in the nature of Debentures described as "9.75% debentures, 1998 (XXIV Series)" to the value of Sixteen Crores and Seventy Lakhs rupces only to be issued by the Housing and Urban Development Corporation Limited,, New Delhi are chargeable under the said

[No. 1/86-Stamps. F. No. 33/67/85-ST] B. R. MEHMI, Under Secy.

(केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड)

नई विल्ली, 16 भ्रम्नुबर, 1985

शुद्धिपत्न

(भ्रायकर)

का. भा. 765:--भोर्ड की विनांक 30-5-85 की श्रिधिसूचना स; 6237 (फा. स. 261/3/85-आयक्तर न्या०) में, ब्रायकर भायुक्त (प्रपील), कालीकट के क्षेत्राधिकार के सम्मुख अनुसूक्षी के स्तम्भ सं. 2 के ध्रन्तर्गंत मद मं. 9 के रूप में निम्नलिखित को जोड़ा जाएगा:--

"9. **धा**यकर सर्वेक्षण परिमं**डल, तिज्**र"

[सं. 6461 (फा. स॰ 261/3/85-भ्रायकर (न्या०)]

(Central Board of Direct Taxes)

New Delhi, the 16th October, 1985

# CORRIGENDUM

#### (INCOME-TAX)

S.O. 765.—In Board's notification No. 6237 (F. No. 261/3/85-ITI) dated 30-5-85 against the jurisdiction of Commissioner of Income tax (Appeals), Calicut under column No. 2 of the schedule the following shall be added as item No. 9:

"9 I. T. Survey Circle, Trichur"

[No. 6461 (F. No. 261/3/85-ITJ)]

# नई दिल्ली, 20 विसम्बर, 1985 ( भ्रायकर)

का. घा. 766:— आयकर श्रीविनयम 1961 (1961 का 43) की धारा 122 की उपधारा (1) हारा प्रवत्त गरिनयों का प्रयोग करते हुए भीर इस संबंध में इसे समर्थ बनाने जानी अन्य सभी गरिनयों का प्रयोग करते हुए भीर इस संबंध में इसे समर्थ बनाने जानी अन्य सभी गरिनयों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय प्रस्थक्ष कर बोर्ड एतद्द्रारा निदेश देना है कि नीचे दी गई अनुमूची के स्तम्भ (2) में विनिर्दिश्ट रेंजों के अपीलीय सहायक भायकर श्रायुक्त उक्त अनुसूची के स्तम्भ 3 की तस्संबंधी प्रविद्यि में चिनिर्दिश्ट भायकर परिमण्डलों, वार्डों और जिलों में आयकर प्रथवा भिष्ठकर से निर्धारित उन सभी व्यक्तियों भीर आय के संबंध में अपने कार्य का निर्धारित उन सभी व्यक्तियों भीर आय के संबंध में अपने कार्य का निर्धारित उन सभी व्यक्तियों भीर आय के संबंध में अपने कार्य का निर्धारित उन सभी व्यक्तियों भीर आय के संबंध में अपने कार्य का निर्धारित उन सभी व्यक्तियों भीर आय के संबंध में अपने कार्य का निर्धारित उन सभी व्यक्तियों भीर आय के संबंध में अपने कार्य का निर्धारित जन सभी व्यक्तियों भीर आय के संबंध में अपने कार्य का निर्धारित जन सभी व्यक्तियों भीर आय के संबंध में अपने कार्य का निर्धारित अपने स्वास्तियों का निर्धारित अपने स्वास्तियों स्वास्तियों स्वास्तियों का निर्धारित अपने सभी व्यक्तियों स्वास्तियों स्वास्तियों स्वास्तियों का

ज.सं. धनुसूची रेंज	ज्ञायकर परिमण्डल, वार्ड औरजिले
1. अपीलीय सहायक आयुक्त, रेंज- I आगरा	परिभण्डल I आगरा के के ख, ख, ग, ख, ब, और छ बाड़ों के आयक्तर कार्यालय। फतेहगढ़ परिमंडल अलीगढ़ परिमण्डल मैंनपुरी परिभण्डल फार्नेई परिभंडल एटा परिभण्डल केन्द्रीय परिभण्डल आगरा विशेष जांच परिभण्डल
2. भ्रपोलोय सहायक श्रायुक्त, रेंज- II श्रागरा	शायकर कार्यालय, क, ख, ग, घ, घ, अर छ परिमण्डल II धागरा के बेतन बोडें। हाथ रस परिमण्डल, इटावा परि-मण्डल इटावा परि-मण्डल फैजीबाव परिमण्डल मथुरा परिमण्डल मथुरा परिमण्डल

यतः कोई धायकर परिमंडल, वार्ड या जिला या उसका कोई भाग इस ध्रिधसूचना द्वारा एक रेंज से किसी धन्य रेंज में धन्तरित कर विद्या जाता है, उस परिमण्डल, वार्ड अथवा जिले अथवा उसके किसी भाग में भिए गए कर निर्धारणों से उत्पन्न होने वाली और इस ध्रिमचना की तारीख से रत्याल पूर्व-रेंज के उस ध्रिमों सहायक शायकर ध्रियम ध्रीम स्व समक विचाराधीन पड़ी ध्रपोंलें जिसके ध्रियमार क्षेत्र से उस परिमण्डल, वार्ड अथवा जिला प्रयवा उसका कोई भाग अंतरित किया गया हो, रेंज के उस ध्रपोलीय, सहायक ध्रायकर ध्रायकत द्वारा निपटाई जाएगी जिसकी उनत परिमंडल वार्ड ध्रयका जिला ध्रयवा उसका कोई भाग अंतरित किया गया हो। यह ध्रियमुचना 1-1-86 से लागू होगी।

[सं. 6542 (फा. सं. 261/21/85-आ. क. स्या)]

New Delhi, the 20th December, 1985

## (INCOME--TAX)

S.O. 766.—In exercise of the powers conferred by subsection (1) of Section 122 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) and all other powers enabling in that behalf and in partial modification of all previous notifications in this regard and the Central Board of Direct Taxes hereby directs that the Appellate Asstt. Commissioners of Incometax of the Ranges specified in column (2) of the Schedule below shall perform their functions in respect of the persons and income assessed to Income-tax or Super-tax in the

Income-tax Circles, wards and Districts specified in the corresponding entry in column 3 thereof:—

#### **SCHEDULE**

SI. No.	Schedule Range	Income-tax Districts	Circles,	Wards	- &
1	2		3		
_	A.C., Range-1 gra.	Income-tax Offices, A, B, C, D, F, & G, Wards of Circle-I, Agra. Fatchgarh Circle. Aligarh Circle, Mainpuri Circle, Jhansi Circle, Etah Circle, Central Circle-I & II, Agra. Special Investigation Circle, Agra.			
_	A.C., Range-II, gra.	Income-tax A, B, C, D wards of C Agra. Hathras C Etawah Ci Firozabad Mathura C	, E, & G, ircle 11, lircle, role, Circle,	und S	alary

Where an Income-tax Circles, Wards or District or part thereof stands transferred by this notification from one Range to another appeals arising out of Assessments made in that Income-tax Circles, Wards or Districts or part thereof and pending immediately before the date of this notification before the Appellaté Asstt. Commissioner of Incometax of the Range from whom that Income-tax Office, Circle Ward or District or part thereof is transferred to and dealt with by the Appellate Asstt. Commissioner of Income-tax of the Range to whom the said circle, ward or district or part thereof is transferred.

This notification shall take effect from 1-1-1985.

[No 6542 (F. No. 261/21/85-ITJ)]

# नई विल्ली, 24 विसम्बर, 1985 (भ्रायकर)

का. जा. 767:— आयकार ध्रिधिनियम, 1961 ( 1961 का 43 ) की धारा 122 की उपधारा (1) द्वारा प्रवस्त गिक्सियों का प्रयोग करने हुए और इस संबंध में सभी पूर्ववर्ती ध्रिधसूचनाओं का अधिलंबन करते हुए, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड एसद्धारा निवेश वेता है कि नीचे दी गई धनुसूची के स्सम्भ (1) में विनिर्दिष्ट रेंजों के ध्रिपीचिंब सहायक ध्रायकर प्रायक्तर प्रायक्तर सायकार से निर्धारित उन सभी व्यक्तियों और ध्राय को छोड़कर जिम पर क्षेताधिकार ध्रायकर धायुक्त (ध्रिपीक) में निहित है, उक्त धनुसूची के स्तम्भ 2की तासंबंधी प्रविष्टि में विनिर्दिष्ट ध्रायकर परिमंडलों, वाडों और जिलों मे ध्रायकर से निर्धारित सभी व्यक्तियों और ध्राय के मम्बन्ध में अपने काम करेंगे।

## भनुसूची

कम सं. रेज	भ्रायकार परिमंडल/वा <b>र्ड और जिसे</b>
1 2	3
<ol> <li>अपीलं य सहायक प्रायुक्त, नासिक रेंज-1, नासिक</li> </ol>	<ol> <li>नाधिक के सभी वार्ड/परिमण्डल</li> <li>मालेगांव के सभी वार्ध/परि- मण्डल</li> </ol>

1	2	3
		<ol> <li>शहमवनगर के सभी घाडं/ परिमण्डल</li> <li>सहायक नियंत्रक संपदा णुल्कः, नासिक</li> </ol>
2.	भ्रपीलीय सहायक भ्राय,क्त, मासिक रेंज-II, नासिक	
3.	भ्रपीलीय सहायक भ्रायुक्त, और- गावाद रेंज, औरंगाबाद	<ol> <li>अरिंगाबाद के मभी वार्ड/ परिमण्डल</li> </ol>
		<ol> <li>जालना के सभी वार्ड/परिमण्डल</li> </ol>
		<ol> <li>परभनी के सभी वार्ड/परि- मंडल</li> </ol>
		4. <b>बोड़</b> के सभी बार्ड/परिमण्डल
		<ul><li>5- लाटुर के सभी वार्ड/परिमण्डल</li></ul>
		<ul><li>तस्वेड के सभी वार्ड/परिमण्डल</li></ul>
		<ol> <li>जलगांच के सभी वार्ड/परिमण्डल</li> </ol>
		8. धुले के सभी वार्ड/परिमण्डल

यतः कोई प्रायकर परिमण्डल, और प्रथवा जिला प्रथवा उसका कोई भाग इस प्रशिसुचना द्वारा एक रेंज से किसी प्रस्य रेंज में भन्तरित कर दिया जाता है, उस प्रायकर परिमण्डल, वार्ड ध्रयवा जिले ध्रयवा उसके किसी भाग में किए गए कर निर्धारणों से उत्पन्न होने वाली तत्काल पूर्व रेंज के उस ध्रपीलीय सहायक प्रायकर परिमण्डल, वार्ड ध्रयवा जिला भ्रयवा उसका कोई भाग प्रश्तरित किया गया हो, इस ध्रधिमूचना के लागू होने की तारीखा से रेंज के उस ध्रपीलीय सहायक ध्रायक्त को ध्रमतित की जाएंगी और उसके द्वारा निपटाई जाएंगी जिसके ध्रधिकार को भ्रमतित की जाएंगी और उसके द्वारा निपटाई जाएंगी जिसके ध्रधिकार को में उक्त परिभण्डल, वार्ड ध्रयवा जिला ध्रयवा उसका कोई भाग भन्तरित किया गया हो।

यह श्रधिसूचना विनाक 1-12-1985 से लागू होगी।.

[सं. 6543/फा. सं. 261/ 12/84--मा. क. न्या.] ए. के, गर्ग, झवर सचिव केन्द्राय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

# New Delhi, the 24th December, 1985 (INCOME-TAX)

S.O. 767.—In exercise of the powers conferred by subsection (1) of Section 122 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) and in supersession of all the previous notifications in this regard, the Central Board of Direct Taxes

hereby directs that Appellate Assistant Commissioner of Income-tax of the Ranges specified in column (1) of the Schedule below shall perform their functions in respect of all persons and income assessed to income-tax in the Incometax Circles, Wards and Districts specified in the correponding entry in column (2) thereof excluding all persons and income assessed to Income-tax over which the jurisdiction vests in Commissioner of Income-tax (Appeal).

#### **SCHEDULE**

SI. No.	Range	Income-tax Circles, Ward and Districts.
i	2	3
	A.C., N.RI ashik.	1. All Wards /Circles in Nashik.
		2. All Wards/Curoles in Male- gaon.
		<ol> <li>All Wards/Circles in Ahmed- nagar.</li> </ol>
		4. A.C.E.D. Nashik.
	A.C. N.RII, ashik.	_
3. A	A.C. A.R. Aurangabad,	<ol> <li>All Wards /Circles in Auranga- bad.</li> </ol>
		2. All Wards /Circles in Jalna.
		3. All Wards/Circles in Parbheni
		4. All Wards/Circles in Beed.
		5. All Wards/Circles in Latur.
		<ol><li>All Wards/Circles in Nanded.</li></ol>
		7. All Wards/Circles in Jalgaon.
		8. All Wards/Cirlcos in Dhule.

Whereas the Income-tax Circle, and or District or part thereof stands transferred by this Notification from one Range to another Range, appeals arising out of the assessments made in that Income-tax Circles, Wards or Districts or part thereof and rending immediately before the Appeal-late Assistant Commissioner of the Range from whom that Income-tax Circle, Ward or Districts or part thereof is transferred shall from the date of this Notification takes effect to transferred to and dealt with by the Appellate Assistant Commissioner of the Range to whom the said Circle, Ward, District or part thereof is transferred.

This Notification shall take effect from 1-12-1985.

[No. 6543/F. No. 261/12/84-ITJ]
A. K. GARG, Under Secy.,
Central Board of Direct Taxes

# नई दिल्ली, 29 सक्तूबर, 1985

(अयमर)

का.मा. 768.—मायकर प्रधिनियम 1961 (1961 का 43) की धारा 126, 121-क तथा 122 के प्रधीन प्रवत्त शिव्दवीं तथा इस सर्थत्र में इसे समर्थ बनाने वाली भन्य सभी शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, स्तम्भ 3, 4, 5, 6 तथा 7 में उल्लिखित प्रधिकारियों को मीक्से स्तम्भ 2 में यथाविनिर्दिष्ट व्यक्तियों के संबंध में, क्षेत्राधिकार की शक्ति प्रदान करता है:---

कम सं	•यम्ति	भ्रायकर भ्रष्टिकारी	निरीक्षी सहायक ` भ्रायुक्त	भ्रपीलीय सहायक भ्रायुक्त	म्रायकर प्रायुक्त (मपील)	मायकर भागुक्त
1	2	3	4	5	б	7
	भारत में पंजीकृत कार्यालय रहित विदेशी कम्पनियां/ प्रतिष्ठान तथा प्रयवा जिम्हें तेल तथा प्राकृतिक गैस धायोग धिधनियम, 1989 (1959 का 43) के प्रधीत गठित तेल तथा प्राकृतिक गैस धायोग उनके उप-ठेकेदार		निरीक्षी सहायक भागकर भागुक्त (कर-निर्धारण) वेहरादून		घायकर घायुक्त (धपील), मेरठ	भायकर भागुक्त, मेरठ

1	2	3	4	5	6	7
2	तथा प्रतिनिधियों ने, तेल तथा प्राकृतिक गैस प्रायोग और ऐसी विदेशी कम्पनियों/प्रतिष्ठानों के बीच हुए करार के प्रमुसार, भारत के विभिन्न स्थलों पर चलने वाले कार्यों प्रथला इसके अपतिटीय कार्यों के सिलसिले में तकनीकी कार्य करने प्रयोजनों से एकमेव तथा अनन्य रूप से लगाया हुआ है। भारत में पंजीकृत कार्यालय रिहत अनियासी कम्पनियों/प्रतिष्ठानों के कर्मचारी (जिनमें अनिवासी संबद्ध कम्पनियों/प्रतिष्ठानों के उपठेकदार शामिल हैं) जिन्हें तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग अधिनियम, 1959 (6959 का 43) के घष्ठीन गठित तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग ने, तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग ने, तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग के विभिन्न स्थलों पर चलने वाले कार्यों प्रयान सके अपतिया कार्यों के सिलसिले में तकनीकी कार्य करने प्रयान अन्य सेवाएं प्रवान करने के प्रयोजनों से, एकमेव तथा प्रान्य कप से लगाया हुआ है।	ध्रायकर मधिकारी क–वार्ड देहरादून	निरीक्षी सहायक मायकर आयुक्त देहरादून	धपीलीय सहायक भायकर आयुक्त देहराबून	श्रायकर श्रायक्त (भ्रपील) मे रठ	ध्रायकर प्रायुक्त भेरठ

यह मधिसूचना 1-12-1985 से प्रमावी होगी।

[सं. 6476/फा.सं. 187/29/84-मा.क. (नि-I)]

मार.के. तिवारी, भवर संचिव

केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

# New Delhi, the 29th October, 1985 (INCOME-TAX)

S.O. 768—In exercise of the powers concerned under section 126, 121-A & 122 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) and of all other powers enabling it in this behalf, the Central Board of Direct Taxes empowers the officers mentioned in Col. 3, 4, 5, 6 & 7 to have jurisdiction in respect of such persons as specified in Col. 2 hereunder.

SI N	lo. Persons	I.T.O.	I.A.C.	A.A.C.	C.I.T (Appeals)	C.I.T.
1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.
1.	Foreign companies/concerns who have no registered office in India and/or solely and exclusively engaged by the Oil & Natural Gas Commission constituted under the Oil & Natural Gas Commission Act, 1959 (43 of 1959) their sub-contractors and assignces, for the purposes of rendering works technical or other services in relation to its operations at various places in India or in relation to its off-shore operations in accordance with the agreement between Oil & Natural Gas Commission and such foreign	<u>-</u>	Inspecting Assistant Commissioner of Income, (Assessment) Dehradun.		Commissioner of Income- tax (Appeals) Mecrut.	Commissioner of Income- tax, Meerut.
2.	companies/conccins. Employees of non-resident companies/concerns who have no registered offices in India including employees of non-resident affiliates and sub-contractors of such non-resident companies/concerns, and who are engaged solely and exclusively by the Oi & Natural Gas Commission, constituted under the Oil & Natural Gas Commission Act, 1959 (43 of 1959) for the purpose of rendering works technical or others services in relation to its operations at various places in India or in relation to its offshor, operations in accordance with the agreement between Oil & Natural Gas Commission and such non-resident companies/concerns.		Inspecting Assit. Commissioner of Income-tax Dehradun.	Appellate Asstt. Commissioner of Income-tax Dehradun.	Commissioner of Incometax (Appeals) Meerut.	Commissioner of Income,- tax, Meerut.

This notification shall take effect from 4-. 2-85.

# नई दिल्ली, 29 नवस्थर, 1985

## (ध्रायकर)

का. थां. 769:--भायकर अधिनियम, 1961 (1961 को 43 को धारा 122 का उपधारा 1 द्वारा प्रदेश्व पाकिश्यों का प्रयोग करते हुए तथा बोर्ड का दिनंबः 11.11.81 का अधिसूचना सं. 4306 (फा. सं. 261/13/81--भा. फा. न्या.) दिसंक 1:-11-1982 की अधिसूचना सं. 4448 (फा. सं. 261/6/82--भा. फा. न्या.); दिनांक 7-10-82 की अधिसूचना सं. 4041 तथा दिनांक 10-11-1982 की अधिसूचना सं. 4962 (फा. सं. 261/6/82--प्रा. फ न्या.) में आधिक संगोधन करते हुए, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, एतब्-द्वारा निदेश देता है कि नीचे दीगयी अनुसूची के स्तम्भ (1) में बिनिर्दिष्ट रेंजों के अपीलीय सहायम आयकर आयुक्त, आपकर से निर्धारित उन सभी व्यक्तियों और प्राय को छोड़कर जिन पर क्षेत्राधिकार आयकर आयुक्त (अपील) में निहित्त है, उन्द्र अनुसूची के स्तम्भ (2) ते तस्संबंधी प्रविच्टि में विनिर्दिष्ट आयकर परिमंडलों, वार्डों तथा जिलों में, आयकर से निर्धारित मभी व्यक्तियों और प्राय के संबंध में अपने कार्य करों।

## भ्रनुसूची

क, सं.	रेंज	भायकार परिमङ्खल, बार्ड औ	र जिले
1	2	3	
			<del></del>

- भ्रपीलीय सहायक ग्रायकर भ्रायुक्त, इन्दीर रेंज, इन्दीर।
- भा. क. भ्रक्षि., केन्द्रीय परि-मंडल, इन्दौर
- श्रा.क. परिमंडल---I, इन्दौर
- 4 भा. क. परिमंडल , खंडवा
- महायक नियंत्रक, सम्पदा शुरुक, इन्दीर
- 6 श्रा.क. श्रीधः, विशेष सम्पदा शुल्कव भ्रा.क. परिमंडल, इन्दौर
- श्रा. क. मधि. विशेष जांच परिमंडल, इस्टीर.
- 8- मा. क. मधि. (विशेष) आंच परिमंडल, इन्दौर
- 9. ग्रा. फ. मधि., विशेष जाच परिमंडल-1, **इन्दोर**
- भा. क. मधि., विशेष जांच परिमंडल-II, इन्दौर
- 11 मा. क. मधि., विशेष जांच परिमंडल-I[[ , इंदौर
- 12 ग्रा.क. ग्रक्षि., विणेष जांच IV, इन्दौर
- 13 आ. क. परिमंडल, धार
- 14 प्रा. क. प्रिष्ठा ( बसूली तथा उगाही वार्ड), परिमंडल-1, इन्तोर
- 15 हा. क. परिमंडल, मह
- 16. मा. क. अधि., विशेष सर्वे-क्षण परिसंडल, इन्दौर
- 17 आ क अधि सर्वेक्षण, इन्दौर

1	2	3
		<ul> <li>18 श्रा. क. श्रिष्ठ., जिलेक सर्वेक्षण परिमंडल वार्ड, परि-मंडल-I, इंग्लौर ।</li> <li>19 श्रा. क. श्रिष्ठ., विशेष सर्वेक्षण वार्ड, परिमंडल 1, इन्दोर</li> <li>20 श्रा. क. श्रिष्ठ., विशेष सर्वे-</li> </ul>
		क्षण वार्ड, परिमंडल-[[, इन्दीर। 21 मा.क. परिमंडल, खारगीव।
	गिय सहायक प्रायक्षर कत, उञ्जीनरोंज, उञ्जीन ।	<ol> <li>ग्रा. क. परिमंडल, उज्जैन</li> <li>ग्रा. क. परिमंडल, रतलाम।</li> <li>ग्रा. क. परिमंडल, मन्द्रसौर।</li> <li>ग्रा. क. परिमंडल, नीमच।</li> <li>ग्रा. क. परिमंडल, देवास।</li> </ol>
	ोिम सहायक श्रायकर स्त, भोपाल टेंज, भोपाल	<ol> <li>प्रा० क. परिमंडल, भोपाल।</li> <li>श्रा. क. परिमंडल, इटारवी</li> <li>भ्रा. क. परिमंडल, वेसुल।</li> <li>भ्रा. क. परिमंडल, विदिशा।</li> <li>प्रा. क. प्रिमंड, सिहोर, मुख्यालय भोपाल।</li> </ol>
	तीय सहायक भ्रायकर स्त,ग्वालियर रेंअ ग्वालियर ——	<ol> <li>श्रा. क. परिमंडल, ग्वालियर</li> <li>श्रा. क. परिमंडल, गुना ।</li> <li>श्रा. क. परिमंडल, शिवपुरी।</li> <li>श्रा. क. परिमंडल, म्रुनेना ।</li> </ol>

2. जहां काई झायकर परिमंडल/वार्ड/जिला प्रथवा उसका कोई भाग इस मिश्रुक्ता द्वारा एक रैंज से किसी मन्य रेंज में अंतरित मार दिया गया हो, वहां उस भायकर परिमंडल, वार्ड भथवा जिला मथवा उसके किसी भाग में किए गए निर्धारणों से उत्पन्न होने वाली और इस भश्रिसूचनी को नारीख से तत्काल पूर्व, रेंज के उस भ्रपीलीय सहायक भायुक्त के समक्ष विचाराभीन पड़ी भ्रपीले, जिसके भृष्टिकार-क्षेत्र में उक्त भायकर परिमंडल, वार्ड भ्रथवा जिला भ्रथवा उसका कोई भाग अंतरित किया गया हो, इस प्रधिसूचना के लागू होने की तारीख से रेंज के उस भ्रपीलीय सहायक आयुक्त को अंतरित की जाएंगी और उसके द्वारा निपटाई जाएंगी जिसके भृष्टिकार-क्षेत्र में उक्त परिमंडल, वार्ड भ्रथवा जिला भ्रथवा उसका कोई भाग अंतरित किया गया है।

यह अधिसूचना 1 दिसम्बर, 1985 से लागू होगी।

[सं. 6518 (फा..मं. 279/143/84--आ. फ. म्या.]

# New Delhi, the 29th November, 1985 (INCOME-TAX)

S.O. 769.—In exercise of the powers conferred by subsection (1) of Section 122 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) and in partial modification of Board's Notification No. 4306 (F. No. 261/13/81-ITJ) dated 13-11-81, No. 4448 (F. No. 261/6/82-ITJ) dated 10-11-1982, No. 4041 dated 7-10-82 and 4962 (F. No. 261/6/82-ITJ) dated 10-11-1982, the Central Board of Direct Taxes hereby directs that Appellate Assistant Commissioners of Income-tax of the Rarlges specified in column (1) of Schedule below shall perform their functions in respect of all persons and income assessed to income tax in the Income tax circles, wards and districts specified in the corresponding entry in column (2) thereof, excluding all persons and income assessed to Incometax over which the jurisdiction vests in Commissioners of Income-tax (Appeals).

#### SCHEDULE

Sl. Range No.		Income-tax Districts.	Circles,	Wards	&
]	2	3		·	-,-
1 1	Anninana	1 (TO C		To J.	

- 1. App llate Commissioner of Decemb Tax.
  - Indone Range, Indoro.
- Assistant 1. ITO, Canal Circle, Indore
  - 2. IT-Circle-I, Indore.
  - 3. IT- Circle-II, Indore.
  - 4. IT-Circle, Khandwa.
  - 5. Asstt. Controller of Estate Duty, Indore.
  - 6. ITO, Spl. Estate Duty-cum-II Circle, Indore.
  - 7. ITO, Spl. Investigation Circle, Indore.
  - 8. ITO (Special) Investigation Circle, Indore.
  - 9. ITO, Special Investigation Circle-I, Indore.
  - 10. ITO. Special Investigation Circle-II, Indore.
  - 11. ITO, Special Investigation Circle-III, Indore.
  - 12. ITO, Special Investigation IV Indore.
  - 13. ITO Circle, Dhar.
  - 14. ITO (Collection & Recovery Ward, Circle-I, Indore.
  - 15. II Circle, Mhow.
  - 16. ITO, Special Survey Circle, Indore.
  - 17. ITO, Survey Circle, Indoro.
  - 18. ITO, Special & Survey Circle Ward, Circle-I, Indore.
  - 19. ITO, Spie. & Survey Ward, Circle-I, Indore.
  - 20. ITO, Spl., & Survey Ward, Circle-II, Indore.
  - 21. IT Circle, Khargone.
- 2. Appollate Assistant Commissioner of Income-tax, Ujjan Range, Ujjain.
- 3. Appollate Assistant Commissioner of In- ?. IT Circle, Itarsi. come-taxe, Bhopai Range, Bhopal.
- 4. App.llate Assistant Comissioner of Income-tax, Gwalior Range, Gwalior.

- 1. IT Circle, Ujjain.
- 2. IT Circle, Ratlam.
- IT Circle, Mandsaur.
- 4. IT Circle, Neemuch.
- 5. IT Circle, Dewas.
- 1. IT Circle, Bhopal.
- 3. IT Circle, Botul.
- 4. IT Circle, Vidisha.
- 5. ITO, Schora with Hgrs, at
- 1. IT Circle, Gwalior.
- 2. IT Circle, Guna.
- 3. IT Chele, Shivpuri.
- 4. IT Circle, Moreta.

2. Wherever an Income-tax Circle, ward, District of part thereof stands transferred by this Notification from one Range to another Range, appeals arising out of the assessments made in that I.T. Circle, Ward or Districts or part thereof and pending immediately before the date of this Notification before the Appeallte Assistant Commissioner of the Range from whom that I.T. Circle, Ward or Districts of the Range from whom that I.T. Circle, Ward or Districts of the Range from th or part thereof is transferred shall from the date of this Notification takes effect be transferred to and dealt with by the Appellate Assistant Commissioner of the Range to whom the said circle, ward or district or part thereof is transferred.

This notification shall take effect from 1st December, 1985.

[No. 6518 (F. No. 279/143/84-ITJ)]

का. **मा.** 770:—मायकर मधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 122 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए तथा इस संबंध में सभी पर्यवर्ती प्रधिसूचनाओं का ग्रक्षिलंघन करते हुए, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड एतदृक्कारा निदेश देता है कि नीचे दी गयी अनुसूची के स्तम्भ (1) में विनिद्दिष्ट रेंजों के श्रपीलीय सहायक प्रायकर प्राय्क्त, श्रायकर से निर्धारित उन सभी व्यक्तियों भीर भाय को छोड़कर, जिन पर क्षेत्राधिकार श्रायकर भ्रायुक्त (भ्रपील) में सिहित है, उक्त भन्सूची के स्तम्भ (2) की तत्संबंधी प्रविष्टि में विनिर्दिष्ट प्रायकर परिमंडलों, वाडौं A CAN X HALL A CHARL AA HARAN AA HARAN A HARAN A

		धनुसूची 
क्र.सं.	रेंज	ग्रायकर परिमंडल वार्ड/जि <b>ले</b>
1	2	3
	ाय महायक भ्रायक <b>र भ्रा</b> यु <b>क</b> , जयपुर	<ul> <li>त. जयपुर स्थित मधी केन्द्रीय परिमंडल ।</li> <li>त. जयपुर स्थित सभी विशेष जीच परिमंडल ।</li> <li>जयपुर स्थित सभी विशेष जीच सर्वेक्षण परिमंडल ।</li> <li>जयपुर स्थित सभी वेतन परिमंडल ।</li> <li>जयपुर स्थित सभी वेतन परिमंडल ।</li> <li>जयपुर स्थित झायकर प्रधिकारी व स. ति. सं. शुरूक ।</li> <li>जयपुर स्थित सभी कंपनी परिमंडल ।</li> <li>जयपुर स्थित सभी जिला परिमंडल ।</li> <li>जयपुर स्थित सभी वार्बं/परिमंडल ।</li> <li>भलवर स्थित सभी वार्बं/परिमंडल ।</li> <li>भरतपुर स्थित सभी वार्बं/परिमंडल ।</li> </ul>
	ोय सहायक श्रायकर श्रायुक : जयपुर	त, 1. झ.स.धा., क-रेंज, जयपुर के सामने उस्लिखित से भिन्न जयपुर स्थित सभी बार्ड/परि- मंडल । 2. टोंक स्थित सभी बार्ड/परिमंडल ।
	ाय सहायक श्रायकर <b>धायुक</b> रेंज, कोट!	<ul> <li>त, 1. कोटा में सभी वार्ड/परिमंडल ।</li> <li>2. क्रूम्दी में सभी वार्ड/परिमंडल ।</li> <li>3 झालावाट में मभी वार्ड/परिन</li> </ul>

भंडल ।

परिमंडल ।

4. सबाई माधोपूर में सभी वार्ड/

1	2	3
1	सपी <b>ली</b> य सहायक द्रायकर भाय <del>ग</del> त,	1. भ्रजमेर में मभी बार्ड/परिमंडल ।
	ग्रजमेर रेंभ, ग्रजमेर	. 2 सीकर में सभी घाडें/पश्चिरल ।
		<ol> <li>अ. भृनद्युन में सभी बाई/परिसंदल ।</li> </ol>
		ा. <b>ब्या</b> क्षर में सभी बाई/परिमं <b>ड</b> ल ।

2. जहां कोई आयकर परिमंडल, वार्ड अथवा जिला अथवा उसका कोई भाग इस अधिसूचना धारा एक रेंज से किसी अन्य रेंज में अंतरित कर दिया गया हो, वहां उस आयकर परिमंडल, वार्ड प्रथवा जिला अथवा उसके किसी भाग में किए गए निर्धारणों से उत्पन्न होने वाली और इस अधिसूचना की रारीख से नत्काल पूर्व, रेंज के उस अधीलीय सहायक आयुक्त के समक्ष विचाराधीन पड़ी अपीलें, जिसके अधिकार-केल में उन्स आयकर परिमंडल, बार्ड अथवा जिला अथवा उसका कोई भाग अन्तरित किया गया हो, इस अधिसूचना के लागू होने की तारीख से रेंज के उस अधीलीय सहायक आयुक्त को अनिरत की जाएगी और उसके द्वारा निषटाई जाएगी जिसके अधिकार-केल में उक्त परिमंडल, वार्ड प्रयवा जिला अथवा उसका कोई भाग अनिरत किया गया हो।

यह प्रश्निमूचना 1 दिसम्बर, 1985 में लागू होगी । [स. 6519 (फा. सं. 279/143/84—प्रा. क. स्या.)]

S.O. 770.—In exercise of the powers conferred by subsection (1) of Section 122 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) and in supersession of all the previous notifications in this regard, the Central Board of Direct Taxes hereby directs that Appellate Assistant Commissioner of Incometax of the Ranges specified in column (1) of the Schedule below, shall perform their functions in respect of all persons and incomes assessed to income-tax in the Incometax Circles, Wards and Districts specified in the corresponding entry in Column (2) thereof excluding all persons and incomes assessed to income-tax over which the jurisdiction vests in Commissioner of Income-tax (Appeals).

## **SCHEDULE**

SI.	Range	Income-tax Circles/Wards Districts
1	2	3
1.	Appellate Assistant Commissioner of Income-taxe, A-Range,	1. All Central Circles at Jaipur.
	Jaipur.	<ol> <li>All Special Investigation Circles at Jaipur.</li> </ol>
		3. All Special Survey Circles at Jaipur.
		4. All Salary Circles at Jaipur.
		<ol> <li>Income-tax Officer-cum- ACED at Jaipur.</li> </ol>
		6. All Company Circles at Jaipur.
		7. Trust Circles at Jaipur.
		8. All Districts Circles at Jaipur.
		9. All Wards/Circles at Alwar.
		10. All Wards/Circles at Bharat- pur.
2.	Appellate Assistant Commissioner of In- come-tax, B. Range, Jaipur.	1. All Wards/Circles at Japur. other than those specified against AAC A-Range, Jaipur.

2. All Wards/Circles at Tonk.

1		3		
3.	Appellate Assistant	1. All Wards/Cheles at Kota.		
	Commissioner of	2. All Wards/Circles at Bundi.		
	Income-tex, Kota	<ol> <li>All Wards/Circles at Jhala.</li> </ol>	3.	
	Range, Kota,	war,		
		4. All Wards/Circles at Sawai-	4.	
		Madhopur.		
4,	Appullate Assistant	1. All Wards/Circles at Ajmer.	1.	ε.
	Commissioner of	2. All Wards/Circles at Sikar,		
	Income-tax, Ajmer	3. All Wards/Circles at Jhun-	3.	
	Range, Ajmar.	jhudu.		
		4. All Wards/Circles at Beawar.	4.	

2. Where any Income-tax Circle, Ward or District or part thereof stands transferred by this notification from one Range to another Range, appeals arising out of the assessments made in that Income-tax Circle/Ward or District or part thereof and pending immediately before the date of this notification before the Appellate Assistant Commissioner of the Range from whom that Income-tax Circle/Ward or District or part thereof is transferred shall from the date of this notification take effect, be transferred to and dealt with by the Appellate Assistant Commissioner of the Range to whom the said Circle/Ward or District or part thereof is transferred.

This Notification shall take effect from 1st December, 1985.

[No 6519 (F. No. 279/143/84-ITJ]

का. था. 771 .— आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 122, की उपधारा (1) द्वारा प्रवत्त गिक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, एतद्श्वारा, दिनोक 14-12-1981 की भएनी मिक्स्चिना सं. 4343 (फा. मं. 261/32/81—मा. क. म्या.) से संलग्न अनुसूची में निम्निलिखिन मंगोधन करता है :~-

"श्रमृतसर रेंज, श्रमृतसर सथा जम्मृ रेंज, जम्मृ के सामने स्तम्भ (1) श्रीर (2) के श्रंतर्गत विद्यमान श्रीविष्टियों के स्थान पर निम्न-लिखित प्रविष्टियों रखी जाएंगी :—--

र्गें,ज	श्रायकर परिमंडल, <b>वार्ड ग्री</b> र जि <b>ले</b>
श्रमृतसर रेंज, श्रमृतसर	(i) सभी आयकर परिमंडल, वार्ड भौर जिले जिनके मुख्यालय जिला-1, अमृतसर से सिन्न अमृतसर में स्थित थे भ्रमुखा हैं।
	(ii) भायकर परिमंडल, तरनक्षारम भौर बटाला ।
जम्मू रेंअ, जम्मू	पटारा ।  (i) सभी आयकर परिमंडल, वार्ड अयवा, जिले जिनके मुख्यालय जम्मू, श्रीनगर, गुरदासपुर, पठानकोट श्रीर अधमपुर में थे अथवा है ।
	(ii) श्रायकर जिला-1, <b>प्र</b> मृतसर ।

जहां कोई श्रामकर परिमंडल, तार्ड मयवा जिला मथवा उसका कोई भाग इस मिस्सूचना द्वारा एक रेंज में किसी भन्य रेंज में मंतरित कर विया गया हो, वहां उस प्रायकर परिमंडल, वार्ड भयवा जिला भथवा उसके किसी भाग में किए गए निर्धारणों से उत्पन्न होने वाली भीर इस प्रिम्तूचना की तारीख स तत्काल पूर्व, रेंज के उस प्रपीलीय सहायक भायुक्त के समक्ष विचाराधीन पड़ी प्रपीलें, जिसके मिशकार क्षेत्र में उकत चायकर परिसंडल, वार्ड भयवा जिला भ्रथवा उसका कोई भाग भंतरित किया गया हो, इस मिससुचना के सागु होने की तारीख से रेंज के उस

भपीलीय सहायक भायुक्त को मंतरित की जाएंगी बौर उसके द्वारा निप-टायी आएंगी जिसके मधिकार-केल में उक्त परिमंडल, वार्ड मध्या जिला मथवा उसका कोई भाग अंतरित किया गया हो।

S.O. 771.—In exercise of the powers conferred by subsection (1) of Section 122 of the Income-tax A-t, 1961 (43 of the 1961) the Central Board of Direct Taxes hereby makes the following amendments to the schedule appended to its Notification No. 4343 (F. No. 261/32/81-IIJ), dated 14-12-1981.

Existing entries under column (1) and (2) against Amitsar Range, Amritsar and Jammu Range, Jammu shall be substituted by the following entries:—

Runge	Income tax Circles, Words and District.
	(2)
Amritsar R <sup>1</sup> nge	<ul> <li>(i) All Lie cm -tax Ci cles, Wares and Districts which had on have their headquarters at Amaissa, other than District -1, Amait-or.</li> <li>(ii) Income-tax Circle Term Taxon</li> </ul>
In a see Donas	Batala.
Jammu Range, Jammu.	(i) All Jacomest x Circles, Werest or Districts which had or have their he dan reas at J mmu, Sirjacgur, Gurdaspur, Pathanket and Uchampur.
	(ii) Income-tax District - 1, Amritsar.

Where any Income-rax Circle, Ward or District or part thereof stands transferred by this Notification from one Range to another Range appeals arising out the assessments made in that Income-tax Circle, Ward or Districts or part thereof and pending immediately before the date of this notification before the Appellate Assistant Commissioner of the Range from whom that Income-tax Circle, Ward or District or part thereof is transferred shall from the date of this Notification takes effect be transferred to and dealt with by the Appellate Assistant Commissioner of the Range to whom the said Circle, Ward or District or part thereof is transferred.

This Notification shall take effect from 25-10-1985.
[No. 6520 (F. No. 261/16/85-ITJ)]

## नई दिल्ली, 24 दिसम्बर, 1985

का. भा. 772—श्रायकर मधिनियम, 1961 (1961 का 13) की धारा 122 की उपपारा (1) ब्राया प्रयम मिन्सयों का प्रयोग करों हुए और इस संबंध में सभी पूर्ववर्गी सिंधगुष्ताओं का श्रिधलंबन करते हुए, केरदीय प्रस्पक्ष कर बोर्ड एनद्वारा निवेश देला है कि नीचे दी गई धनुसूची के स्तम्भ (2) में विनिर्विष्ट रेंज के श्रिपलिंग गहायक श्रायकर भायुक्त, भायकर से निधिरित उन सभी व्यक्तियों और श्राय को छोड़कर जिन पर क्षेत्राधिकार भायकर श्रायुक्त (श्रिपलि) में निहित है, उपन धनुसूची के स्तम्भ (3) की तत्संबंधी प्रविष्ट में विनिर्विष्ट श्रायकर प्रिमण्डलों, वाडों और जिलों में, श्रायकर से निधिरित सभी ब्यक्तियों और साथ के संबंध में भपने कार्य करेंगे।

धनुसूची			
 त्रम री.	रेंज	त्रायकर परिमण्डल, वार्ड मीर जिला	
1	2	3	
शहमदाबाद			
	य नहासक सामृक्त ासद, रेजनी श्रह	, पश्मिण्डलॉ, सहमदाबाद र मदाबाद	
	•	परिमण्डल-II. सहमदाबाद, दाबाद सर्वेक्षण परिमण्डल, श्रट्मवाबाद	
<ol> <li>भ्रपीली</li> </ol>	।य सहायक स्नायुक्त	ा, परिमण्डल−III,	

 अपीलीय सहायक अत्युक्त, अहमदानाद नेंग-IV ,

श्रहमदाबाद रेज--III, . .

शहमदाबाद

परिमण्डल-[, शहमदाबाद

श्रहगदाबाद

5 प्रापीलीय सहायक आयुष्त, सहमदाबाद 'रेंज-V, अहमदाबाद

परिमण्डल-V अहमदाबाद, पाटन परिमण्डल, महमाणा परि-मण्डल तथा पालनपुर परिमण्डल

 स्. अपीलीय सहायक प्राय्क्त, प्रहमदाबाद केन-VI, प्रहमदाबाद परिमण्डल-V1 भ्रहमदाश्राव,
सुरेन्द्र नगर परिमण्डल,
हिम्मत नगर परिमण्डल,
मेदासा परिमण्डल

प्रभीनीय सहायक आयुक्त,
 रेज- VII,
 श्रष्टमदायाव

कश्मनी परिमण्डल-I, कस्पनी परि-मण्डल-II कस्पनी परिभण्डल-V, कस्पनी परि-मण्डल-VI, कस्पनी परिमण्डल- VII, कस्पनी परिमण्डल- VIII, कस्पनी परिमण्डल-IX, कस्पनी परि-

मण्डल, XV ग्रहमदाबाद ।

अधीयीय महायक प्रायुक्त,
 प्रजुमवाधाय जीज- VIII
 प्रहमधायाय ।

करपनीः परिमण्डल-III,
कर्मणी परिमण्डल-IV
कम्पनी परिमण्डल-X
कम्पनी परिमण्डल-XI
कम्पनीः परिमण्डल-XII
कम्पनीः परिमण्डल-XIII
कम्पनीः परिमण्डल-XIII
कम्पनीः परिमण्डल-XIII
कम्पनीः परिमण्डल-XVI
ध्रहमनाः द

 पर्वालीय महायक ध्रायक्त, ध्रहमवाबाद रेप्त- IX ध्रहमयाबाद । विशोष परिमण्डल, श्रहसदादाव विशेष जोच परिमण्डल, श्रहसदाबाद व्यावसायिक परिमण्डल, श्रहसदाब द।

10 अवीत्रीय महायक प्राप्यत, प्राप्तदाव द रिंज-X श्रहमदाबाद। केन्द्रीय परिभण्डल, ब्रह्मदण्डाद, समावः शुरुक तया प्र चकर परिमण्डस श्रष्टमदावाद।

सूरत

 श्रपीलीय महाय र परिमण्डल क —र्रेत भूरत परिसण्डल-I सूरम, धलमार परिभण्डल, बापी परिसण्डल, नवागारी परिसण्डल 

1	2	3
1 2. WY	ीलीय गहायक ग्रापुनन	परिभण्डल-11, सूरत,
Œ-	—रें ३१, सूरत	परिमण्डल-III, सूरत,
		विशेष जाच परिमण्डल,
		सूरत, केन्द्रीय परिमण्डल, युरत
		्र विशेष स <b>र्वे</b> क्षण परिमण्डल, सूरन
<b>य</b> वृ	ोदा	
13. ग्रंप	ोतीय सहायक ग्रामुक्तः	केन्द्रीय परिमण्डल, बङ्गीदा
	-रेंज बड़ांदा।	परिमण्इल-I
		परिमण्डल III , बङ्गोदा,
		गोधरः परिमण्डलः
		भरूच परिमण्डल
14 अपं	ोषीय सह।यक्ष भ्रायुक्त,	परिमण्डल $\mathbf{H}_{r}$ बहीदा,
₩-	—रेज <b>बड़ीय</b> ा।	स. <b>ग</b> ु. परिमण्डल तथा आः कः.
		परिमण्डल, बड़ौदा, नाड़ियाड परिमण्डल
		नाड्रियः रूपरिमण्डल,
		पेटलाड परिमण्डल,
		ध्रानन्द परिमण्डल <i>,</i>
,		विशेष सर्वेक्षण परिमण्डल, बङ्गीदा ।

यतः कोई अत्यकर परिमण्डल, वार्ड अथवा जिला श्रथवः उसहा कोई भाग इस अधिशुचना बारा एक रंग में किसी अन्य रेंग में अतिरत करदिया जाता ह, उस प्राथकर परिमण्डल, वार्ड श्रयया जिले श्रथया उसके किसी भाग में किए गए कर-निर्धारण से उत्पन्न होने याली और इस अधिमूचना का ताराज्य से तस्कात पूर्व रीज के उस अपीलीय सहायक आयुक्त के सबक्ष विचार,धीन पड़ी अशील, जिनके अधिकार-क्षेत्र में उस परिमण्डन, कार्ड श्रयव। जिला श्रयवा उसका कोई भाग धन्तरित किया गय हो, इस प्रधिसूचना के लाग् होने की तारीख से उस प्रशालीय सहायक आयुक्त की अरुतरित को अध्येगी श्रार ६सके द्वारा निषटाई जाएगी जिसके अधिकार क्षेत्र में उक्त परिमण्डल, बार्ड अथवा जिला अथवा उसका कोई भाग श्रन्तरित किया गया हो ।

#### यह प्रधिसूचना 1-1-1986 से लाग् होंगी।

[गं. 6544(फा. सं. 279/143/84-आं.क.स्वा.)] मुरेन्द्र पाल, प्रवर सचिष केन्द्रोय प्रस्थक्ष कर बोर्ड

New Delhi, the 24th December, 1985

S.O. 772.—In exercise of the powers conferred by subsection (1) of Section 122 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) and in supersession of all the previous Notifications in this regard, the Central Board of Direct Taxes hereby directs that Appellate Assistant Commissioner of Incometax of the Ranges specified in column (2) of the Schedule below shall perform their functions in respect of all persons and income assessed to income-tax in the Income-tax Circles, wards and districts specified in the corresponding entry in column (3) thereof, excluding all persons and income assessed to Income-tax over which the jurisdiction vests in Commissioner of Income tax (Appeals).

## SCHEDULE

SI. No.	Range	Income-tax Districts.	Circle,	Ward	&
1	2	3		,, _	
1. Ag	HMEDABAD  pollate Assistant manissioner, any dabad Range-I.	Circle I, Al	nny dabac	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	<u>-</u> -

Ahnelab da

<b>7</b> 91	फालगुन् 10, 1907 :
3	2
Sarvey Circles.  Almedab.d.	Topolitic A sistint Commission r, Alon wib d. R. 1693-11. Alone - 5.
field-III, thm dab d.	- •
Tirole-IV, Ohmed: had.	· ·
Circle V, Alunedabad, Paian Circle, Mehsana Circle and Palanpur Circle.	Appelline Assistant Comminister, Almoda bad Range V, Almombad.
Circle VI, Ahmedabad, Surewlranagar Circle, Himmatnagar Circle, Modasa Circle.	Abbeli de Ashsant vomar, rober Alen da- bad Runge VI, Ahmodab id
Com. Circle I, Com. Circle II Com. Circle V, Com. Circle VI, Com. Circle VII, Com. Circle VIII, Com. Circle IX Com. Circle XV, Ahmedabed.	Appellato Assistant Commission of Longe VII, Ahmudabad.
Com. Circle III, Com. Circle IV, Com. Circle X, Com. Circle XI, Com. Circle XII, Com. Circle XVI, Abmedabad.	. Appellate Assistant Commissioner, Aluncoabad Range VIII Aluncoabad.
Special Circles, Ahmedabad Special Investigation Circles, Ahmedabad, Professional Circles, Ahmedabad.	. Appelle a Assistant Commissioner, Ahmedabad Rauge IX, Ahmedabad.
Contral Circles, Ahmedabad	. Appellate Assistant

10. Appellate Assistant Commissioner,

Ahmeenbad Range-K, Ahmedabid.

#### SURAT

11. App Ilato Assistant Commissioner, A-Raygo, Surat.

12. App. Hoto Assistant Commissioner, B-Russo S 4. . . . .

Circle I Surat. Bulsar Circle. Vapi Circle. Navseri Circle.

Almodobad,

Circle II, Sarat, Circle III Surat, Spl. Investigation Circles, Surat, Contral Circles, Surat, Spl. Survey Cardee, Suret.

Estate Duty-cum-I. T. Circle.

#### BARODA

Appellato Assistant Commissioner, A-Range, Baroda.

Central Circles, Baroda Circle I, Circele III, Baroda, Godhra Circle, Bharuch Circle.

14. Appellate Assistant Circle -II, Baroda, Commissioner, B-R age E.D. Circle Cum-LT. Circle, Bar $\sim 0.1$ . Barnde, Nudi d. Circle, Potlad Circle, Anand Circle, Spl., Survey Circles, Baroda.

Where an Income-tax Circle, Ward or District or part thereof stands transferred by this Notification from one Range to another Range, Appeals arising out of the assessnents made in that Income-tax Circle, Ward or Distret or part thereof, and needing immediately before the date of this Notification before the Appellate Assistant Commissioner of the Range from whom that Income-tax Circle, Ward or District or part thereof is transferred, shall from the date of this Notification takes effect to be transferred to and dealt with by the Appellate Assistant Commissioner of the Range to whom the asid Circle, Ward or District or part thereof is transferred.

This Notification shall take effect from 1-1-1986,

[No. 6544 (F. No. 279/143/84-ITJ)] SURENDER PAUL, Under Secy., Central Board of Direc: Taxes

(भ्राधिक कार्यविभाग)

(वैकिश प्रभाग)

नई दिल्ली, 31 जनवरी, 1986

का. था. 773- प्रावेणिक ग्रामीण बैंक श्रिधिनियम, 1976 (1976 का 21) की घारा 11 की उपधारा 1 द्वारा प्रथल शिवलयों का प्रयोग करने हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा श्री आशीष कुमार काद्र की हाबड़ा ग्रामीण बैंक, हांबड़ा, (प. बं.) का श्रव्यक्ष नियुक्त करती है और 8-6-1985 से प्रारम्भ होकर तथा 30-6-1988 को सामप्त होने वाली श्रव्यक्ष को उस श्रव्यक्ष के रूप में निर्धारित करनी है जिसके वौरान श्री श्राशीष कुमार करह, श्रद्धक के रूप में कार्य करेंगे।

[संख्या एफ. 2-5/85-छ।र. धार. बी.]

#### MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)
(Banking Division)

New Delhi, the 31st January, 1986

S.O. 773.—In exercise of the powers conferred by subsection (1) of section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby appoints Shri Ashis Kumar Chandra as the Chairman of the Howrah Gramin Bank, Howrah (WB) and specifies the period commencing on the 8th June, 1985 and ending with 30th June, 1988 as the period for which the said Shri Ashis Kumar Chandra shall hold office as such Chairman.

[No. F. 2-5/85-RRB]

का. था. 774.—प्रावेशिक ग्रामीण बैक अधिनयम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11की उपधारा 2 द्वारा प्रदत्त शिवतमों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एनध्द्वारा श्री विनकर राव को जिनकी धारा 11की उपधारा (1) के भ्रन्तमंत नियुक्ति की सीन वर्ष की श्रवधि 30-6-1985 को समाप्त हो गई थी, 1-7-1985 से भारम्म होने वाली सथा 28-10-1985 को समाप्त होने वाली भ्रवधि के लिए प्रथमा बैक, मुरावाबाद का पुनः श्रध्यक्ष नियुक्त करनी है।

[संख्या एक. 2-16/85-ग्राप. ग्रार. बी.]

S.O. 774.—In exercise of the powers conferred by subsection 2 of section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby reappoints Shri Dinkar Rao as the Chairman of Prathma Bank, Moradabad whose earlier tenure of three years appointment under sub-section (1) of Section 11 had expired on 30th June, 1985 for a period commencing from 1st July, 1985 and ending with 28th October, 1985.

[No. F. 2-16/85-RRB]

# मई विल्ली, 7 फरवरी, 1986

का, आ. 775.—वैककारी विनियमन अधिनिया, 1949 (1949 का 10) की धारा 53 द्वारा प्रदल शिक्षियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार भारतीय रिजर्व बैंक की सिकारिश पर एतव्द्वारा घोषणा करती है कि अवत प्रधिनियम की धारा 31 के उपबंध प्रादेशिक ग्रामीण बैंक प्रधि-

नियम, 1976 (1076 का 21) की घारा 3 की स्पद्यारा (1) के धन्तर्गम 31 दिसम्बर, 1980 के बाद स्थापित किए गए केई य ग्राभीण बैंकों पर उस सीमा तक लागू नहीं होंगे जहां तक उनका सम्बन्ध 31 दिसम्बर, 1985 को समाप्त वर्ण के लिए उनके हुलन पत्नों घीर लाध-हानि निवरण तथा उन पर लेखा परीक्षकों की रिपोर्ट के प्रकाशन से है।

[सं. एक. 8 (11) /84 आर. आर.बी.] च. वा. मीरचस्वानी, निदेणक

## New Delhi, the 7th February, 1986

S.O. 775.—In exercise of the powers conferred by Section 53 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government on the recommendation of the Reserve Bank of India, hereby declare that the provisions of section 31 of the said Act shall not apply to the Regional-Rural Banks established after 31st December, 1980 under sub-section (1) of Section 3 of the Regional Rural Banks. Act, 1976 (21 of 1976) insofar as the said Section requires the publication of their balance sheets and profit and loss accounts together with the Auditors Report thereon in respect of the year ending 31st December, 1985.

[F. 8(11)/84-RRB] C. W. MIRCHANDANI, Director

नई दिल्लं , 10 फरवरी, 1986

का. था. 276.—राष्ट्रं यक्षत बैंक (प्रबन्ध और प्रकं ण उपबन्ध) स्क म, 1970 के खंड 8के उपखंड (1) के साथ पठित खंड 3 के उपखंड (क) के धनुसरण में केन्द्रं य सरकार भारतीय रिजर्ब बैंक से पराममं करने के पश्चास श्रीएम. बी. के. नायर को 16 करवरी, 1986 से धारम्भ होने वाली और 13 नवस्बर, 1988 को समाध्य होने वाली विक के प्रवस्थ के सिए इंडियन बैंक के प्रवस्थ निर्देशक के रूप में पून. नियुक्त करती है।

[मं एक. 9/49/85-वी.भी.1(1)]

New Delhi, the 10th February, 1986

S.O. 776.—In pursuance of sub-clause (a) of clause 3 read with sub-clause (1) of clause 8 of the Nationalised Banks (Management and Miscellaneous Provisions) Scheme, 1970, the Central Government, after consultation with the Reserve Bank of India, hereby re-appoints Shri M.G.K. Nair as the Managing Director of Indian Bank for a period commencing on February 16, 1986 and ending with November 13, 1988.

[No. F. 9/49/85-BO, I(1)]

का आ 777.—-राष्ट्रं यक्कम बैंक (प्रबन्ध मीर प्रकीण उपबन्ध) स्कीम, 1970 के खण्ड 7 पठित खंड 5 के उपबंड (क) के ध्रमुसरण में केन्द्रीय गरकार, भारतीय रिजर्व बैंक से परामण करने के पश्चाल थी। एम.जी.के. नायर की, जिन्हें 6 फरबरी, 1986 से इंडियन बैंक के प्रवन्ध निरोध के रूप में पुना नियुक्त किया गया है, उसी तारीख से इंडियन बैंक के प्रवन्ध निरोध के के प्रवन्ध की रूप में नियुक्त करती है।

[सं. एक. 9/49/85-की.को.। (३)]

S.O. 777.—In pursuance of sub-clause (1) of clause 5, read with clause 7, of the Nationalised Banks (Management and Miscellaneous Provisions) Scheme, 1970, the Central Government after consultation with the Reserve Bank of India, hereby, appoints Shri M.G.K. Nair who has been re-appointed as Managing Director of Indian Bank with effect from February 16, 1986 to be the Chairman of the Board of Directors of Indian Bank with effect from the same date.

का. बा. 778.—राष्ट्रीयक्वन वैक (प्रवन्ध भीर प्रकीण उपबन्ध) स्कीम, 1980 के खंड 9 द्वारा प्रवन मिलेवों का प्रयोग करने हुए, भारत सरकार निवेण देती है कि थी के पी. बस्तवार, एडबोकेट, 12वीं लाइन, वैल मार्किट के निकट, इटारसी (मध्य प्रवेग), जी भारत सरकार, वित्त मंद्रालय, आर्थिक कार्य विभाग (बींकग प्रभाग) का दिनांक 19 फरवर, 1983 की प्रधिसूचना सी. एक9/18/81-बी. भी.-1 के तहत विजया बैंक के निवेगक नियुक्त किए गए थे, दिनांक 19 फरवरा, 1986 से निवेगक नहीं रहेंगे।

[मस्या एक. 9/31/82-विभो-1] एस. एस. हमूरकर, निदेशक

S.O. 778.—In exercise of the powers conferred by clause 9 of the Nationalised Banks (Management and Miscellaneous Provisions) Scheme, 1980, the Central Government is pleased to direct that Shri K. P. Bastwar, Advocate, 12th Line, Near Block Market, Itars (Madhya Pradesh) appointed as Director of the Vijaya Bank under notification of the Government of India in the Ministry of Finance, Department of Economic Affairs (Banking Division), No. F. 9|48|81-BO. I, dated 19th February, 1983 shall cease to hold the office of Director with effect from 19th February, 1986.

[No. F. 9|31|82-BO. 1] S. S. HASURKAR, Director

कोन्द्रीय उत्पाद-शृल्क और सीमाशृल्क बांर्ड नर्दे दिल्ली, 1 मार्च, 1986 मं. 147ए/86-सीमाशुल्क

का. आ. 779. कोन्द्रीय उत्पाद शून्क और सीमाश्रुष्ट बांडी, सीमाश्रुन्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) की धारा 9 द्वारा प्रदत्त शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, उड़ीसा राज्य मी भूवनेश्वर को भाण्डागार स्टोशन शिक्त करता है।

[फा. सं. 473/609/84-की यू 7] संदीप जोशी, अवर सचिव कोन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और सीमा-शुल्क मोर्ड

CENTRAL BOARD OF EXCISE AND CUSTOMS

New Delhi, the 1st March, 1986

No. 147A/86-CUSTOMS

S.O. 779.—In exercise of the powers conferred by section 9 of the Customs Act, 1962 (52 of 1962), the Central Board of Excise and Customs hereby declares Bhubaneshwar in the State of Orissa to be a warehousing station

[F. No. 473]609[85-CUS. VII] SANDFFP JOSHI, Under Secy. Central Board of Excise and Customs

#### वाणिज्य मंत्रालय

नई दिल्ली, 7 मार्च, 1986

#### ग्रादेण

का, मा. 780 — भारत के निर्यात व्यापार के विकास के निर् नाशक जीवसार नवा उनके निर्पणों की बाबत भारत संस्कार के बाणिज्य मंत्रालय की श्रीधसूचना गं. का. था 3310 नारीख 7 अस्टूबर, 1070 में संशोधन करने के निष् करिषय प्रस्ताव, निर्यात (मबानिटी नियंत्रण और निरीक्षण) नियम, 1964 के नियम 11 के उपनियम (2) की श्रुद्धकानसार भारत मरकार के बाणिज्य मंत्रालय के भादेश सं. का. भा 3982 तारीख 24 अगस्त, 1985 के अंतर्गत प्रकाणित किए गए थे जिनके द्वारा ऐसे सभी व्यक्तियों से उनसे प्रभावित होने की संभावना थी, श्रादेण के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिनों के भीतर श्राक्षेप और सुमाव भीगे गए थी:

और उक्त राज्यन्न की प्रतिया जनका को 28-8-1985 को उपलब्ध करा दी गयी थीं;

और उक्त प्रारूप पर जनता से प्राप्त ग्राक्षेपों और सुकाओं पर केन्द्रीय सरकार से विचार कर निया है,

श्रतः श्रवः, निर्यातः (क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण) प्रधिनियमः 1963 (1963 का 22) की धारा 6 द्वारा प्रवत्त प्रक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार निर्यात निरीक्षण परिषद् से परामर्ग करते के पश्चात् भारत सरकार के वाणिश्य मंत्रालय की श्रधिसूचना सं. का. श्रा. 3310 सारीख 7 अवत्थर, 1970 में निम्निखिलत और संगोधन करती है, प्रार्थात् :—

जनत प्रधिसूचना के जपाबंध-] के स्थान पर निम्नतिखित रखा जाएगा, भ्रथीतृ:—-

#### उपावध-1

- बीएचसी, तकनीकी सथा परिष्कृत।
- 2 बीएचसी (एचसीएच) डिस्टिंग चूर्ण ।
- बीएचर्सा (एनसीएच) पानी में घुलनशील सादित चुर्ण।
- डीक्कोटी सकनीकी ।
- डीडीटी डस्टिंग चुर्णे।
- डीडीटी पानी में युननशील सांक्रित चूर्ण।
- 7. म**न्छ**र लाखानागी तेल।
- 8 गामा--बीएजमी (लिप्रेन) पायसीकृत दाने।
- डीडीटी पायसीकृत दाने ।
- 10. एथिलीन डायक्लोराई४ कार्बन टेटराक्लोराईड मिश्रण।
- 11 गाभा--बीएचसी (लिडेन)
- 12 चूनागंधक धोला।
- 13 पायरे**यम** निस्मारण।
- 14. निकोटिन गंधक घोल।
- 15 जिक फॉसकाइड, तकनीकी।
- 16 एल्ब्रोन, नकनीकी ।
- 17. एस्ड्रीन पायसीफूम दाने
- 18. एस्ड्रीन डिस्टग चुर्ण ।
- 19. एन्**ड**(न, तकनीकी)।
- 20. ए**थिलीन डायब्रो**माईड ।
- 21. मैथिल श्रोमाइड ।
- 22 कॉपर ऑक्सीक्लोगईड, तकनीकी।
- 23 2, 4-डी सोडियम, तकनीकी।
- 24 गामा---बीएचसी (लिडेन) धुंग्रा कारक जनिव।
- 25 कॉपर ऑक्सीक्लोराईड डॉस्टग चूर्ण।
- 26. कॉपर ऑक्सीक्लोराईड पानी में घुलनशील सांबित चूर्ण।
- 27. स्पूपरस ऑक्साइड पार्ना में घुलनणील साद्विल चूर्ण।
- 28. क्यूपरन ऑक्साइड इस्टिंग चुर्ण ।
- 29. क्यूपरम ऑक्साइड तकनीकी (फर्फ्दनाभी श्रेणी)
- 30. जगह-जगह कीटनाशी छिड़काव।
- 31. 2,4-डी का तरल एमिन नमका
- 32. मैलेथिनय, तकनीकी।
- 33. इत्याजनान, तकनीकी ।
- 34. फिनाइल मर्करी एसीटेट, तकनीकी।
- 35 स्थार्था भैथावसी एथिल मर्करी क्लोराईड मादित।
- 36 पैराधियान एधिल, सकतीकी ।
- 37. फिलाईल मर्करी मलोराइड, सकर्ताकी।
- 38. एक्सिल मर्कर। नलीराइड, तकमीकी।

- 39. स्थायी मैथोक्सी एथिल मकेरी क्लोराइट पर प्राधारित निष्यण ।
- 40. भैलेथियन पायभीका दाने।
- भैनेरियम द्वस्टिन नुर्ण ।
- 42 मैलेथियत पानी में घुलतजील मादित जुर्ग।
- 43. मिथाइल पैरेबियन, तकनीकी।
- 44 वलं(रहेन पायसीक्रस वाने ।
- 45. श्रायजिनोन पायमीकृत दाने ।
- 46. डायजिनोन पानी में मुलनशील साद्वित चूर्ण
- 47. क्लोरडेन, तकनीकी।
- 48. क्लोरहेन इस्टिंग चर्ण।
- 49 मिथाइल पैराथियन पायसीकृत वाने।
- 50. औरगैनोमरक्युरियल ग्राई-सीच-ग्रेसिंग निरूण।
- 51. भिगाने योग्य गंधक चूर्ण।
- 52 जिनेब, तकनीकी।
- 53 जिनेब,पानी में **मुन**नशील चूर्ण।
- 54 जिस्स, तकनोकी।
- जिस्म पामी में घुलतशील खुर्ग।
- 56. डाईमेथोट, सकनीकी।
- 57. डाईमेथोट पायसीकृत दाने।
- 58. थियोमेटोन दाने।
- 59. थियोमेटोन पायसीकृत दान ।
- 60. था**ई**रम, तकनीकी ।
- 61- 2, 4-की सकनीकी।
- 62. एडोसल्फन डस्टिंग चर्ण।
- 63. एंडोमल्फन पायसीकृत दाने।
- 64. एंडोयरफन पानी में पूजनशीन चुर्ग, दाने।
- 65 बिनापाफाइन पायसंक्रित दाने।
- 66. एं**ड**ामन्फन, नक्रनीकी ।
- ७७. टोक्साकैन, तकनीकी।
- 68. थाईरम पानी में धुतनशीत सूर्ण।
- 69. **था**ईरम सीड **ड्रे**सिंग पर श्राक्षारित।
- 70 पारारेयम पायसीकृत दाने ।
- 71 जापवलोरोबोस, तहनीकी।
- 72 पर्मनसभी इन, तकनीकी ।
- 73 शानकारोबेस पायसीका दाने।
- 7.4 डाइकॉफोल सकतीकी।
- 75. डाइकापोल, पायसीकृत वाने।
- 76. **फैन**होिषयन, तक्तीकी ।
- 77. फेनं(ट्रोथियन पायसीकुस वाने ।
- 78. क्यूमाकयूरल तकनीकी।
- 79 बाफरेन चारे के दाने।
- 80 वाफेरेन सोडियन, मकनीकी।
- 81 वार्फंग्न, नकनीकी ।
- ३2. पायभीकृत लारबीमाइडल तेल पाइरेश्चम मे ।
- . 83. फामफेमीक्षोम पानी में घुतनशील टाने।
  - 84. पाइरेध्यन **इस्टि**श चूर्ग ।
  - ८३ हेप्टाक्लोर डॉस्टर चूर्ण।
  - ८८. हेप्टायम्मोग तकनीकी ।
  - 87. एत्युमिनियम फा**स्फाइड निम्ह्**पण।
  - 8 धः हेट्टोक्लोर पायमी**कृत दाने** ।
  - 89. सत्फर **डस्टिंग** चुणे।
  - 90. कारबेरियल पानी में घुलनशील दाने।
  - 91 कारबेरियन डा्न्टग चुर्ण ।
  - 92. फेनीट्रोथियन इस्टिंग पूर्ण ।
  - 9.3 शाहसोबोरनियल विशेषा नोसिटेट (याइनाइट) तकती का ।
  - 94. वाफीन सोष्टियम तमक पानी में भूलनशीत पूर्व।
  - . 95 2, 4-ई। एपित इरटर्स ।

- 96. ाज्बेरियम तकनीकी।
- ०७८ हर्स स्था कोश विश्वम चुर्ण ।
- 98 वन गलकान डस्टिंग चर्म।
- १९५ प्रीपंत त, पक्त क.।
- 100. दावसकी पाकतकत असे ।
- 101 डीस्नाकेन धरिटण पूर्ण।
- 102 फेलियियम पायसीक्वा बाने।
- 103 क्वीननटोजन पानी में ब्लनशील याने।
- 101 फेनांगप्रन सकनीकी।
- 105 फारेट, वर्क्सर्कर ।
- 106- टायसनकोटन, गाउनीकी ।
- 107. वर्षसङ्ख्यात्र, संसर्वताः।
- 108. फोरमेथियन लक्तनीकी घोल।
- 109. मोनंकोटोफोश, सकर्नेकी।
- 110. फोरेओधियन पापनीकृत दाने।
- 111. प्रेरोनान पायमीकृत दाने।
- 112 क्वेटल होन पायनीकृत करे।
- 113. नवोनजनीम इस्टिंग चूर्ण।
- 114 प्रोधेनीत, धकनीकी।
- 115 क्यिनपफास, दफ्तीकी।
- 116. मोनोश्रेटोफोय पानीमें घुलनश्रील दाने।
- 117 अस्ति। डेपटन---वैथाइन, व वर्तकी दाने ।
- 118. ऑन्मीडेमेटन---भैषाहल पायस.कृत दाने।
- 119. प्राताकोष-मोर्जापम, गजनी ही।
- 120. डालाफोल-सोडियन पानी से प्रतिशील चुर्गे।
- 121. फैनबार्ड पायसीकृत करे।
- 122. फीनवंद्यः, नहतीको ।
- 123 एमर्ग(पीए का ७४४ एमाइन नयक।
- 134. कारधनडाधाःसम् (एमर्बर्गा) तहर्नाकाः।
- 125. कारबटाइजिम (एमबीसी) पानी में घुननशील चुर्ण दारे
- 126 फॉसेलॉन पशर्माकृत दाने।
- 127 प्रांगिलं (स. तकसीकी ।
- 128 फोसेगोन इस्टिंग चूर्ण।
- -129 एमसी**पी**ल, **तक**रीकी ।
- 130. पंटास्तर, तकर्नकी ।
- 13). पैराह्म्ट ट्रेस्बेश्वेड पादी में ब्लनणील बाने।
- १७२० देवकाम वाबनीक्षा पाने।
- 100. टेमकीप, धनर्मीकी ।
- 134 डियुरीन अकन.कः
- 135 डियूरीन पन्धे में बृतनसंत नृर्व, दाने।
- 136 मैन क्षेत्रेब, लक्षर्नक्ति।
- 137. भैनकोबेब पाना स प्राफ्रांत चर्य, दाने।
- 133 वर्तेस्पर्कतिकील ४८४४(इन बले)
- 139. एडिफ्**न** होस यक्तर्रक्ता
- 140. एडिकाकोस पादशीहर करे।
- ाताः साद्वंष्मारः सहस्वाकाः
- 142 नाइट्रेफा पायरीवृत दाने।
- 143. फ्रयूक्सीरोर्माच, वक्तसंकी दला।
- 144 फन् स्लोगेजीन पायसोक्रम दाने।
- 145 मेशाइल पैपालियान डॉस्ट्स पुणी।
- 🗓 📭 क्लोटफोर्मस्फोस अर्जनको।
- ा ४७ नि ८० क्लोराइड, हक्ष्मह्याईट्रेड, पैस्टीसाइडल श्रेड ।
- 14: योडियन माहनाउँ हीटनशी वर्ग।
- 140, म्यक्तीर, वक्रमेष्टी।
- 150 कुलालीर पाससीकुर दाने।
- 15। युटावरीय जार्नाको।
- 152. भूटास्थार पाप्रशंहक दाने।

153 <sup>*</sup> द्राईस्लेट, तकनीकी	1- 2-	3.
154 द्राईल्लेट पायसीक्ष्म यान	ाः गागासः एव भी (लिप्टेन)	भा.मा: 8821984
155 फारेट दानेदार, संपुटिन	12 चूनामधक घोल	मा.साः 1050-1984
156 कारबोफेरेन दानेदार-संपुटित	13 प्तापरेश्वम निस्तारण	भा.ना: 10511980
157 एलक्कोर, बानेदार	. यः   विकोर्ट म गंध <i>ाः</i> , <b>मो</b> ल	भा.माः 10551984
158 <b>म्टा</b> क्लोर, दानेदार	15- जिंक फासफाइड, तक्षतीकी	भा.माः 1251 1984
159 फैनिशियोन वानेदार	16. एन्ड्रोन, तकसीकी	भा.मा: 1306- ←1974
160 द्राईनलीरोफन वानेदार	17 एट्यूने पायसीफून बाने	1374 - 1307 1982
161 फैनीट्रोथियो सनेदार	1% एन्द्री <b>न इस्टिंग चूर्ण</b>	भा.मा: 13081984
162 विवेतलकोस-दानेदार 163 डायसंस्कोने दानेदार, संपृटित	1 % प्रमूहीन तफर्नःकी	भा. भा: 13091974
163 अयमल्कान दानवार, समूहित 164 कारबेरियल दानेदार।	20 एबिलिन डाङ्गायाईड	भा.माः 13111966
165 <b>ग्रामिनोन द</b> निदार	21. मेंबिलि प्रोसाक्ड	भा.मा. 13121980
166 निष्ठेन दानेदार।	<ol> <li>काण र आनसीक्लो राष्ट्रह, तकनीकी</li> </ol>	मा.साः 1486 1978
167 एल्डीकार्क, दानेदार गंपूटिन।	23. 2. यन्द्री सोडियमः तकनोकी	भा.भा: 1488 1985
168 भीषाइल नैरासियन, तकनीकी दाले।	24. शामा-वी एए जी (लिडेन) शुक्राकारक जिल	त्र भा.माः 1505——1968
169 दृष्टिमार्क पायगीकृत वाने।	25. कागर आक्स सर्तारा <b>इड डस्टिंग चूर्ण</b>	मा. मा: 15061977
170 प्रयोक्सर पायलीकृत दाने।	26 काप्रआकर्भाशनी राइड पानी में चुलनणील	भा. मा. 15071977
171 दृष्ट्विमोर्फ, सभनीकी।	साद्रिय जूर्ण	
172 2, 4-दी एथिल हस्टर पायमीकृत दान।	27- त्युमरम आक्षेत्रद थनि। से गुलनकील सांक्रिय	त या 4t: 1665——19 <b>77</b>
173 2. 4-की एथिल इस्टर पानी में चलनकील चूर्ण∤	चूण	
174 एण्डोस्हफन दानवार।	23- अरूपरम् आस्थाद्य डिस्टन चूर्ण	<b>म</b> ा.मा : 1669—-1960
175 नाह्युंजन दानदार।	29- क्यूपरस आक्ताइट, तक्षतीकी (फफुंबीनाशी	मा.मा : 16821973
176 फैनथाएँट दानेवार।	श्रेणी )	
177 क्लोरफोनबीनफोन, तकनीको।	3.0. जनह्-मातृ कीटनाणी छिड़काय	भार. भा: 1824 1978
178 पैराश्यूट डाइमैय।इल शल्फेट पार्ना में घलनणील दारे।	31. 2, 4-की का नरल एभिल नमक	भार. स्र : 1827 1984
179 फीनोट्रोथियन पानी म युजनमील चुर्ण।	3.2. मैं देशियन, तकतीकी	भा.म <sup>ग</sup> : 1832 1978
180 भीपटाको र पानी में घूलनणील चुर्ण।	३३ डायजीनोन, तकनीकी	भा.मा: १४३३ १९४०
181 कैपटाफोल तक्षर्नाकी।	34 फिलाइल भक्तरी एसी देख, तकनीकी	भ1.41:21261973
152. एथियन पात्रसीकृत दाने।	35. स्थामी भैषाभर्मः एथिल मर्करा क्लोराइड दा	में भा,मा: 2127 1984
183 कापर एसिटोग्रर्सनाइट ।	36. पेराधिन एथिन, तकनीकी	भा .भा : १११९ 1973
184. <b>एपियन,</b> तक्षन् की।	37. एथिल मर्करी क्ला स <b>इड, तकनीकी</b>	भा. भा: 23531963
185. निकाटीन सल्केट	38- स्थायी मैथोनमी एथिल मर्ग री बनोराहड प	<b>म</b> ा.मा: 23541963
18 छ. पुरुपूभिनियम फानफाइड ।	ाधः(रिन निरूपण।	
(ii) उक्त श्रधिपुषता के उपावध-(ii) के लिए निस्नलिखित <b>रखा</b>	39 स्थापी भैथोक्ती एथिल मर्करी क्लो राइड वार् केल्या	
अपूर्णा:	40. में सथियन पायसीकृत दाने	भा.सः: 25671978
·	41. मैंनेथियन उम्टिन मूर्ण	भा, मा: 2568 1978
"उपामघ <i></i> ( I <b>I</b> ) "	42 मेलेथियन पानी में चुलतयोज सांद्रित चूर्ण	मा भा: 2565~-1978
नाणकजीवभार नथा उनके निम्पणो के लिए धिनिर्देश:	43- भि <b>षाद्रल पैरा वियन, त</b> ानाकी	भा.माः 2570 1980
Alabana de la constanta de la	44 क्लोरहेन पायसीहात दाने	मा. मा: 2682 1984
क.स. नाशकर्जः बनार सथा उसके निरूपणों का *भारतीय भानक संस्थान	45. डायजानीन पायसीकृत दान	भा(.सा. 2861-~1980
नाम द्वारा कारी किए गए संबंब	46. डायजिनोन पानो में धुलनश्रील सांद्रित चूण	भा: मा: 28621984
विनिद ।	47. भलो रहेन, राजनीकी	भा. मा : 2863— 1968
2 3	an पनोरडेन डरिटन पूर्ण	भा.माः 28641984
	49 मियाइल पैराणियान पायसीहान दाने	भा.मा : 3284—1984
<ol> <li>को एक सी तकनीकी तथा परिष्कृत भा. मा: 1601980</li> </ol>	50. औरगैनोम खयूरियल हाई-मोह-द्रीमग निरूष	
2. बीएच मी (एच मी एच) अस्टिन चूर्ण भा.भा: 5611973	51. भिगोने योग्य गंधक चूर्ण	भार. भार: 33831982
3. बीएच सी (एच सीएच) जल में युननर्शल भा.सी: 5621973	52. जिनेव, तकर्नाकी	भा. भा: 389a—1 <b>9</b> 81
मूर्ण दाने	53. जिनेष पानी में युक्तनशील पूर्ण	भा. मा: 3899 19f I
4. डी डो ट., तकनीकी भा भा भा : 563 1973	54. अरिम, नवनिषी विकास	भा.भा: ३१००1975
5. बी बी टी बस्टिंग चूर्ण भा .मा : 564 1984	55. जिस्म पाँनी में घुलनणील चूर्ण	भा. मा: ३९०१1975
6. डी डी टी जल में 'रुननशील चूर्ण', बॉर्न भामा: 565-—1984	56. डाइमियॉएट, तकनीकी	भा. मा 3902-~1975
7. मच् <b>छर लारबानाशी ते</b> ल भा.सः ५५१ १९७७ ।	57. डायमियोएट पॉयसीकृत दाने रिवरिकेच-प्रति	भा.मा: 39031984
ह, गामा-बीएच सी (लिंबेन) पायसीहात वॉर्न भा.मा. 632 1978	58. थियोभेटोन दाँ रे इन्हें देवें कर किल्क करें	भा.मा: 3904⊸⊶1966
9. डीडीटीपायसीफुल डॉमें भा. मा 633 1985	5.9. <b>थियोमेंटो</b> न पात्रसीकृत दाने	भा. मा: 3905 1966
10. एपियोन डायक्नोराईड कार्यं न टेटराक्लोराईड भा .सा : 63 4 1965	60 <b>षाइर</b> म, मकनोकी	मा.मा: 4320 1982
मिश्रण	61. 2, 4-डी, तकनीकी	भा आ: 43211978

1	2	3		3
~	एडोमस्फन डस्टिंग चूर्ण	W. T. (200 1067	112ः वशीनलकोग पावसीकृत थान	भाग , मा । 80281976
	एडामल्फन पाससीकृत बाने, चूर्ण	भा भा . 4322 1967	1 1 3 - मंत्रीनशकोस डस्टिंग चृण	भा.म(18029~-1985
	एंडोमल्फन पानी में जुलतजील संद्रित चूर्ण	भा भा: 43 23 1930 भा:भा: 43 24 1967	ा 14 प्रोपेनील, तकनीकी	भा .मा : 8671—-19 <b>7</b> 6
	्धानस्कर पास म पुलस्ताल साक्रित पूर्य विनापाक्राइल पासमीकृत दाने	भा.मा: 4324 1967	115. दंशीनलफोस, तकनीकी	भा .मा : ४०७२ <del></del> १५८४
	एंडोसल्फन, नकतीकी	भा.भा: 43.44—1978 <sup>भ</sup>	116. भोगो कोटोकोस पत्नी में घ्लगणील दाने	भा भा 8074—1983
	टोक्सोम, तकनीकी	भा माः 44511967	117. श्रानमीडेमेटन-मैथाइल तकर्नाकी दाने	भा . मा . 82581976
	था <b>इर</b> म पानी में चुलनशील <b>चुर्ण</b>	भा भा: 47661982	118. अक्सिक्रिमेटन-मैथाइल पायसीकृत दाने	भा भा 82591976
	थाइरम-सो- <b>इं</b> सिन निरूपण	भा.साः 47831982	1 1 9 - डालापोल-गोडियम, तक्रनीर्फा	भार मा : 8267-~1976
	पायरेश्वम पायसीकृत दान	मा.मा: 48081982	120 है। लापोल-मोडियम पानी में घुलनगील	
	डायक्लोरोकोस, तकनीकी	भा .सा : 4929 1978	<b>भू</b> र्ण	भा मा 8286— 1976
	फासकामीडन, तकनीकी	भा.माः ४९५४ १९६४	121. फैनभोएट पायसीकृत दाने	भा.मा : 8291— 1976
	डायक्लोरवस पायसीकृत दाने	भा.माः 5277—1978	122 फैनपोएट, तकनीकी	भा.माः १२१३— 1976
	डाइकोफोल, तकमीकी	भा.मा: 52781969	123- एम सी पी ए का तरल एमाइन नमक	भा मा 8294— 1976
	डाइकोफोन पायसीकृत दाने	भा.भा: 52791969	12-1 कार्बनडाइजिम (एमबी सी), तकनीयी	भाग मा. 8445—1977
	फैनीट्रोथियन, तकनीकी	मा मा: 52801969	125 कार्यनडाइजिम (एम भी सी) पानी मे	
77.	फैनीट्राथियन पायसीकृत वाने	भा. मा: 528 I 1979	घुलनशील मोब्रिन चूर्ण	भा.माः 8446—-1977
78-	<b>भ्यूमाप्यूप</b> ल, तकनीर्कः	भा.भाः 55261969	126 फोसेलॉन पायसीकृत दाने	भी.मा: 8487—·1977
79	बाफॅरेन भारे कंदाने	भा ना: 55491970	127. फोमेलोन, तकनीकी	भा.भा: 84881977
8 0	्वार्फरेन सोडियम, ५कनीकी	भा.माः 55511970	128 फोसेलोन क्रस्टिंग चूर्ण	भा , मा : 84891977
81	्याफॅरेन, सकर्नाकी	भा,मा: 55521970	129 एम सोपी ए, तकनीकी	भा . भा : 819-11977
	पायसीकृत लाखीनाशी तेल पाइरेयभवेस में	भा.माः 6014 1978	130- भोषोत्सर, तकनीकी	भा.माः ४४७६—-1977
	कासकेमीडोन पानी में धुलनशील दाने	भा . मा : 6177 1981	131. रिरास्ट डायस्लोरेड पानी में घृलनशील	•
	. पाइरधम <b>ड</b> स्टिंग चूर्ण	भा, भाः 6178 1982	दाने	भा.भा. १४१७७ — 1982
	. हेव्टाक्लोर इस्टिंग चूर्ण	भा.मा: 64291981	132. टेमकोस पायसीक्वत दाने	भा.मा: 94981977
86	. हेप्टाक्सोर तकनीकी	भार.भार: 64321972	133. टेमफोस, तकनीकी	भा.मा : 87011978
87	ए न्यू तीनियम फास्फाइड निरूपण	भा भा: 64381980	134. डियूरोन, तकनीकी	भा. मा : 87021973
	. हे-डाक्नोर पायसीकृत दाने	भा . मा : 6439—1978	135. डियूरोन पानी में घुलनशील सांद्रित चूर्ण	
. 89	. सल्कर इस्टिंग चूर्ण	भा.माः 64441979	136. मैनकोजेब, तकनीकी	भा.माः ४७०७-—1978
90	कार्वेरियण पानो में घुलनशोल दाने	भा भा : 7121 — 1973	137. मैनकोजेंब पानी में घुलनशील साद्रित चृ	र्णमा.साः ४७०४ — 1978
91		भा.मा: <b>7</b> 122 1984	138. क्योरफीरिफोस पायसीकृत दाने	भा.मा: 89441978
	. फैतोट्रोमियन इस्टिंग चूर्ण	मा.माः 7126 1973	139. एडिफनकोस, नकनीकी	भा.मा: 8954—1978
93	. ग्राइसोबोरनियल थियोसाइनोएसिटेट		140. एडिफनफोस पायसीकृत दाने	भा . मा : 8955 1978
	(थाईसाइट), तकतीकी	भा.भा: 7158— 1973	141. न(इट्रोफन, नकनीकी	भा . मा : 8956—1978
94	. वार्जरेन सोडियम नमक पानी में बुलन-		142. नाइद्रोफन पायसीकृत दाने	भा . मो : 8957 1978
	शीन चूर्ण	भा.मा: 7168 1973	143. प्लूबलोरोलीन, तकनीकी दाने	भा.मा: 8956—-1978
95	. 2, 4-श्री एथिल इस्टर्स	भा,माः 7233—1985	144. फ्लूक्लोरोलीन पायसीकृत वाने	भा.माः ४९५९—- 1978
96	कारणोरियस, तकनीकी	भा.मा: 75391975	145. भैषाइल पैराथियन क्रिटिंग चूर्ण	भा.मा: 89601978
97	. ट्राईक्कोरकोस बस्टिंग चूर्ण	भा.माः 7943— 1976	146. क्लोरफीरफोस, तकसंकी	भा.मा: 8963 — 19 <b>7</b> 8
	. नवीतटोजन इस्टिंग चूर्ण	मा मा: 79441976	147. नियल क्लोराइड हैंबस(ह)ईड्रेट, पैस्टीस	
99	. ट्राईक्लोरफोन, तकनीकी	भा.मा: 7945— 1975	डल ग्रेड 148. सोडियम, साहताहर, कीटनाणी वर्ग	भा . मा : 9351 1980
	टोक्साफैन पायसीकृत वाने	भा.माः 7946—1976	149. एलक्लोर, तकनीको	भा: भा: 9352—1980
101	. डोक्माफेन बस्टिंग चूर्ण	भा.मा: 79471976	150. एलक्लोर, पायसीकृत दाने	भा .भा: 9353—1980 भा .भा: 9354—1980
102	फेतथियन पायसीकृत दाने	<b>मा.माः 79</b> 48-⊶1976	151. बूटाश्रमोर, तकनीकी	भा .मा : 9355—1980
103	. विद्योजन वानी में घुलनण ल साद्रित		152. बूटाक्लोर पायसीकृत दोने	भा.मा. 935 <del>6 -</del> 1980
	चूर्ण	<b>भा.मा: 7949—</b> 1976	153- ट्राईल्लेंट, तकनीकी	भा.मा : 9357 1980
104	. फेन्यियन, सक्तीकी	भा भा: 7960—1976	154. ट्राईल्लैंट पायमीकृत दान	भा.माः 93581980
	s. फोरेट, तकनीकी	भा.माः 7976—-1976	। 55. फोरेट वानेदार संपुटित	भा∴माः
	्रायसलकोटन, तकनीकी	भा. मा : <b>797</b> 7 1976	156. कारकोफरेन दानेदार-संपृटित	भा मा: 9360—1980
	, क्षायसलकाटन, तकनीकी 7. क्बोनटोजन, तकनीकी	भा,मा: 7985—1976	157. एलक्लोर वानेदार	भा.मा: 9361—1980
107	. कोरेनोबियन तकतीको घोल	भा.मा: 8024-1976	158. बृटाक्लोर वानेवार	भा भा : 9362-1980
	. कार्यापयम सम्यापा परा ). बोलोकोटोकोस, तकनोकी	<b>भा.मा: 8</b> 025—1983	159. फैन <b>बियोन वान</b> दार	भा . माः : 9363—-1980
	).  कोरेकोणियत पायसीकृत वाने	भा .मा : 8026 — 1976	160. द्राईक्लोरोफन वानेवार	भा.माः १३१४1980
	<ol> <li>प्रोपेनोल पायसीकृत वाने</li> </ol>	<b>मा</b> .मा : 80271976	161. फैनीट्रोथियन वानेदार	मा.मा: 9365—198(
-		<del>_</del>	<del></del>	

1 2	3
	भा.मा: 93661980
163. इत्यसल्योटन-दानेदार, संपृष्टित	भा.मा: 9367 -1983
1 6.4. कारबैरियल-दानेदार	भा.मा: 93681980
। 65. डायजिनोन-दानेदार	भा.मा: 9369 1980
165  निण्डेन दाने <b>द</b> ार	भा.मः 9370—1980
167 - ग्लंडांक(बं दानेदाश, संपृटित	भा मा 9371- 1980
168. भीवाइ व गैगावियन, तकने की दाने	भारतमा 9372—-1980
169. ट्राईटेमार्फ,पायसीकृत दाने	भा: मा: 9656—198n
। 70- प्रोपोपयर पाससीकृत दाने	भा.मा: 96651981
171- दुरईटेम(फं. तकर्न(की	भा.मः: 9667 -1981
172. 2, 4-की एथिल इस्टर पायस क्रुन यान	भारे, मार्च १०२४३—-१९८२
्र-7ु3 ट, 4-की एथिल्डस्टर पानी में घुलनशील	
े <b>भू</b> र्ण	भा.मा: 102441982
1.74. एण्डोसल्फन दानेदार	भार,मा: 10265—1982
⊥ 7.5ः नाइट्रोफन दानेदा <i>र</i>	भा . मा . 102661982
1.76 फैनथोएट वानेदार	भा,मा - 10267—1982
1 7 7. क्लॉरफोनबीनफोस, तकनीकी	भा . मा : 102681982
। 78. पौरान्यूट डाईमैथाइल मल्फेट पानी मे	
धुलनणीस दाने	भा.मा: 10294 <del></del> :1982
179. फैनीट्रोथियन पानी में घुलनगील चूर्ण	भा.मा: 10295—1982
180- कैंपटाफोल पार्ता में घुलनशील घूर्ण	भा.माः 10296—-1982
181. कॅपटाफोल, नकनीकी	भा.माः 103001982
182 एथियन पायमीकृत दाने	भा.मा: 10319—1982
183 कॉपरएसिटोग्रर्भनाष्ट	भा.भा: 103551982
184. एथियन, तकतीकी	भा.माः 10269 1982"

[फाईल सं. 16(2)/84—ई झाई एंड ईंपी]

# MINISTRY OF COMMERCE New Delhi, the 1st March, 1986 ORDERS

S.O. 780.—Whereas for the development of the Export Trade of India, certain proposals for amending the notification of the Government of India in the Ministry of Commerce No. S.O. 3310 dated the 7th October, 1970 regarding the Pesticides and their formulations were published as required by sub-rule (2) of rule 11 of the Export (Quality Control and Inspection) Rules 1964 under the Order of the Government of India in the Ministry of Commerce No. S.O. 3982 dated the 24th August, 1985, inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby, within 45 days from the date of publication of the order in the Official Gazette;

And whereas copies of the said Gazette were made available to the public on the 28th August, 1985.

And whereas objections and suggestions received from the public on the said draft have been considered by the Central Government;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 6 of the Export (Quality Control and Inspection) Act. 1963 (22 of 1963), the Central Government, after conculting the Export Inspection Council, hereby makes the following further amendments in the notification of the Government of India in the Ministry of Commerce No. S.O. 3310 dated the 7th October 1970, namely:—

For Annexure I to the vaid notification, the following shall be substituted, namely:-

## ANNEXURE-L

- 1. BHC Technical and refined
- 2. BHC (HCH) dusting powders
- 3. BHC (HCH) water dispersible powder concentrates 1565 GI/85-3

- 4. DDT technical
- 5. DDT dusting powders
- 6. DDT water dispersible powder concentrates
- 7. Mosquito larvicidal oil
- 8. Gama-BHC (Lindanc) emulsifiable concentrates
- 9. DDT emulsifiable concentrates
- 10. Ethylene dichloride carbon tetrachloridemixture
- 11. Gama HBC (Lindane)
- 12. Lime sulphur solution
- 13. Pyrethrum extracts
- 14. Nicotine sulphate solution
- 15. Zinc phosphide, technical
- 16. Aldrin, technical
- 17. Aldrin emulsifiable concentrates
- 18. Aldrin dusting powders
- 19. Endrin, technical
- 20. Ethylene dibromide
- 21. Methyl bromide
- 22. Copper oxychloride, technical
- 23. 2, 4D sodium, technical
- 24. Gama-BHC (Lindane) smoke generators
- 25. Copper oxychloride dusting powders
- Copper oxychloride water dispersible powder concentrates
- 27. Cuprous oxide water dispersible powder concentrates
- 28. Cuprous oxide dusting powders
- 29. Cuprous oxide, technical (fungicidal grade)
- 30. Insecticidal space spray
- 31. Liquid amine salts of 2, 4-D
- 32. Malathion, technical
- 33. Diazinon Technical
- 34. Phenyl mercury acetate, technical
- Stabilized methoxy ethyl mercury chloride concentrates
- 36. Parathion ethyl, technical
- 37. Phenyl mercury chloride, technical
- 38. Ethyl mercury chloride, technical
- Formulations based on stabilized methoxy ethyl mercury chloride concentrates
- 40. Malathion emulsifiable concentrates
- 41. Malathion dusting powders
- 42. Malathion water dispersible powder concentrates
- 43. Methyl parathion, technical
- 44. Chlordane emulsifiable concentrates
- 45. Diazinon emulsifiable concentrates
- 46. Diazinon water dispersible powder concentrates
- 47. Chlordane, technical
- 48. Chlordane dusting powders
- 49. Methyl parathion emulsifiable concentrates
- 50. Organo mercurial dry-seed-dressing formulations
- 51. Wettable sulphur powder
- 52. Zineb, technical
- 53. Zineb water dispersible powders
- 54. Ziram, technical
- 55, Ziram water dispersible powder
- 56. Dimethoate technical
- 57. Dimethoate emulsifiable concentrates
- 58. Thiometon concentrates
- 59. Thiometon emulsifiable concentrates
- 60. Thiram technical
- 61. 2, 4-D technical
- 62. Endosulfan dusting powders
- 63. Endosulfan emulsifiable concentrates
- 64. Endosulfan water dispersible powder concentrates
- 65. Binapacryl emulsifiable concentrates
- 66. Endosulfan, technical
- 67. Toxaphene, technical
- 68. Thiram water dispersible powder

- 69. Thiram seed dressing formulations
- 70. Pyrethrum emulsifiable concentrates
- 71. Dichlorves technical
- 72. Phosphemidon technical
- 73. Dichlorves emulsifiable concentrates
- 74. Dicofol, technical
- 75. Dicofol, emulsifiable concentrates
- 76. Fenitrothion, technical
- 77. Fenitrothion, emulsifiable concentrates
- 78. Coumafuryl, technical
- 79. Warfarin bait concentrates
- 80. Warfarin sodium, technical
- 81. Warfarin, technical
- 82. Emulsifiable larvicidal oil ryethrum based
- 83. Phosphamidon water soluble concentrates
- 84. Pyrothrum dusting powders
- 85. Heptachlor dusting powders
- 86. Heptachlor, technical
- 87. Aluminium phosphide formulation
- 88. Heptachlor emulsifiable concentrates
- 89. Sulphur dusting powder
- 90. Carbaryl water dispersible concentrates
- 91. Carbaryl dusting powders
- 92. Fenitrothion dusting powders
- 93. Isobornyl thiocyanoacetate (Thanite) technical
- 94. Warfarin sodium salt water soluble powder
- 95. 2, 4-D Ethyl Esters
- 96. Carbaryl technical
- 97. Trichlorfom dusting powders
- 98. Quintozene dusting powders
- 99. Trichlorfon, technical
- 100. Toxaphene emulsifiable concentrates
- 101. Toyaphene dusting powders
- 102. Fenthion emulsifiable concentrates
- 103. Quintozene water dispersible powder concentrates
- 104. Fenthion, technical
- 105. Phorate, technical
- 106. Disulfoton, technical
- 107. Quintozene, technical
- 108. Formothion technical solution
- 109. Monocrotophos, technical
- 110. Formothion emulsifiable concentrates
- 111. Propanil emulsifiable concentrates
- 112. Quinalphos emulsifiable concentrates
- 113. Quinalphos dusting powders
- 114. Propanil, technical
- 115. Quinalphos technical
- 116. Monocrotophos water soluble concentrates
- 117. Oxydemeton-methyl technical concentrates
- 118. Oxydemeton-methly emulsifiable concentrates
- 119. Dalapon-sodium technical
- 120. Dalapon-sodium water voluble powder
- 121. Phenthoate emulsifiable concentrates
- 122. Phenthoate, technical
- 123. Liquid amine salts of MCPA
- 124. Carbendazini (MBC) technical
- 125. Carbendazim (MBC) water dispersible powder concentrates
- 126. Phosalone emulsifiable concentrates
- 127. Phosalone, technical
- 128. Phosalene, dusting powders
- 129. MCPA, technical
- 130. Propoxur, technical
- 131. Paraquat dichloride water soluble concentrates
- 132. Temephos emulsifiable concentrates
- 133. Temephos technical
- 134. Diuron, technical
- 135. Diuron water dispersible concentrates

- 136. Moncozeb, technical
- 137. Mancozeb water dispersible powder concentrates
- 138. Chlorphyrifos emulsifiable concentrates
- 139. Edifenphos, technical
- 140. Edifenphos emulsifiable concentrates
- 141. Nitrofen, technical
- 142. Nitrofen emulsifiable concentrates
- 143. Fluchloralin. technical concentrates
- 144. Fluchloralin emulsifiable concentrates
- 145. Methyl parathion dusting powders
- 146. Chloryrifos, technical
- 147. Nickel chloride, hexa hydrate, pesticidal grade
- 148. Sodium eyanide, pesticidal grade
- 149. Alachlor, technical
- 150. Alachlor emulsifiable concentrates
- 151. Butachlor, technical
- 152. Butachlor emulsifiable concentrates
- 153. Triallate, technical
- 154. Triallate emulsifiable concentrates
- 155. Phorate granules, encapsulated
- 156. Carbofuran granules, encapsulated
- 157. Alachlor granules
- 158. Butachlor granules
- 159. Fenthion granules
- 160. Trichlorfon granules
- 161. Fenitrothion granules
- 162. Quinalphos granules
- 163. Disulfoton granules, encapsulated
- 164. Carbaryl granules
- 165. Diazinon granules
- 166. Lindane granules
- 167. Aldicarb granules encapsulated
- 168. Methyl parathion, technical concentrates
- 169. Tridemorph emulsifiable concentrates
- 170. Propoxur emulsifiable concentrates.
- 171. Tri lemorph, technical
- 172. 2, 4D Ethyl ester emulsifiable concentrates
- 173. 2, 4D, Ethyl ester water dispersible powders
- 174. Endosulfan granules
- 175. Nitrofan granules
- 176. Phenthoate granules
- 177. Chlorfenvinphos, technical
- 178. Paraquate dimethyl sulphate water soluble concentrates
- 179. Fenitrothion water dispersible powders
- 180. Captafol water dispersible powders
- 181. Captafol technical
- 182. Ehtion emulsifiable concentrates
- 183. Copper acetoar onite
- 184. Ethion technical
- 185. Nicotine sulphate 186. Aluminium Phosphide
  - (ii) For Annexure-II to the said notification, the following shall be substituted, namely:—

#### "ANNEXURE-II

Specification, for pesticides and their formulations

SI.	Name of the		the	pesticides	and	their
No.	fo	rın	ulati	ons		

\*Relevant specification issued by the Indian Standard Insti-

3

tution

1. BHC technical and refined

2. BHC (HCH) unter digrary ible panel. IS: 561—1978

BHC (HCH) water dispersible powder concentrates

IS: 562—1978

IS: 560-1980

	7 TSILLE TO SILL - TOS EL		<u>-</u>		3
1	2	3		2	<u></u>
4.	DDT technical	IS: 563—1973		Zineb water dispersible powders	IS: 389919
	(i))T dusting powders	IS: 564-1984		. Ziram, technical	IS : 3900—19
	DDT water dispossible powder con-			. Ziram water dispersible powder	IS: 3901—19
	centrates	IS: 565—1984		. Dimethoate technical . Dimethoate emulsifiable concentrate.	IS : 3902—19
	Mosquito larvicidal oil	IS: 588—1978		. Dimethoate emulsimable concentrate Thiometon concentrates	IS : 3904—19
	Gama-BHC (Lindane) emulsifiable			. Thiometon concentrates . Thiometon emulsifiable concentrates	
	concentrates	IS: 632—1978		. Thiram technical	IS: 432019
	DDT emulsifiable concentrates	IS: 633—1985		2, 4-D technical	1S: 4321—19
	Ethylene dichloride carbon tetrachlo-			. Endosulfan dusting powders	IS: 4322—19
	ride mixture	IS: 634—1965		. Endosultan emulsifiable concentrates	IS: 432319
	Gama -BHC (Lindane)	1S: 882—1984	64	. Endosulfan water dispersible powder	IS: 432419
	Lime sulphur solution	IS: 1050—1984		concentrates	
	Pyrethrum extracts	IS: 1051—1980	65.	. Binapacryl emulsifiable concentrates	IS: 432519
	Nicotine sulphate solution	IS: 1055—1984	66.	Endosulfan, technical	IS: 4344—19
	Zinc phosphide, technical Aldrin, technical	IS: 1251—1984 IS: 1306—1974		Toxaphene, technical	IS:4451196
	Aldrin emulsifiable concentrates	IS: 1307—1983		Thiram water dispersible powder	IS: 4766—19
	Aldrin dusting powders	IS: 1308—1984		. Thiram seed dressing formulations	IS: 478319
	Endrin, technical	IS: 1309—1974		Pyrethrum emulsifiable concentrates	IS: 480819
	Ethylone dibromide	IS: 1311—1966		Dichlorves, technical	1S : 4929—19
	Methyl bromide	IS: 1312—1980		Phosphamidon, technical	IS : 4958—196
	Copper oxychloride, technical	IS: 1486—1978		Dichlorves emulsifiable concentrates Dicofol, technical	IS: 5277—19
	2, 4-D Sodium technical	IS: 1488—1985		Dicofol emulsifiable concentrates	IS: 5278—196 IS: 5279—19
	Gama-BHC (Lindane) smoke	IS: 1505—1968		Fenitrothion, technical	IS: 5280—19
	Copper oxychloride dusting powders	IS: 1506—1977		Fenitrothion, emulsifiable concentrate	
	Copper oxychloride water dispersible			Coumafuryl technical	IS: 5526—19
	powder concentrates			Warfarin bait concentrates	IS:5549—19
7.	Cuprous oxide water dispersible pow-	IS: 16651977		. Warfarin sodium technical	IS: 5551—19
	der concentrates			Warfarin, technical	IS:5557—19
28.	Cuprous oxide dusting powders	JS: 16691960		Emulsifiable larvicidal oil pyrethrum	
29.	Cuprous oxide, technical (fungicidal	IS: 1682—1973		based	
	grade)		83.	Phosphamidon water soluble concen-	IS:6177-19
	Insecticidal space spray	IS: 1824—J978		trates	
	Liquid amine salts of 2, 4-D	IS: 1827—1984	84.	Pyrethrum dusting powders	IS: 6178—19
	Malathion, technical	IS: 1832—1978	85.	Heptachlor dusting powders	IS: 6429—198
	Diazinon, technical	IS: 1833—1980		Heptachlor, technical	IS: 6432—19
	Phenylmercury acetate, technical	JS : 2126—1973		Aluminium phosphide formulation	IS: 6438—19
	Stabilized mothoxy othyl mercury	1D:212/1984		Heptachlor emulsifiable concentrates	
6	chloride concentrates Parathion othyl, technical	IS: 2128-1973	-	Sulphur dusting powder	IS: 6444—19
	Ethyl moreury chloride, technical	IS: 2353—1963	90.	Carbaryl water dispersible powder	IS:7121—19
	Formulations based on stabilised	IS: 2354—1963	0.1	Concentrates	10 . 1122 . 100
	mothoxy cthyl mercury chloride	נוסקוריי רענה . מו		Carbaryl dusting powders Fenitrothion dusting powders	JS : 1122—198
	concentrates			Isobornyl thiocyanoucctate (Thanite)	IS: 7126—19 IS: 7158—19
9.	Formulations based on stabilized	IS: 2358—1984	33,	technical	15 , /150—15.
	methoxy othyl mercury chloride con-		9.1	Warfarin sodium salt water soluble	IS: 7168—19
	centrates		,,+,	powder	, , , , , 00—13
0.	Malathion emulsifiable concentrates	IS: 2567-1978	95.	2, 4-D Ethyl esters	IS: 7233—198
1.	Malathion dusting powders	IS: 2568—1978		Carbaryl technical	IS: 7539—19
2.	Malathion water dispersible water	IS: 2569—1978		Trichlorfon dusting powders	IS: 7943—197
	concentrates			Quintozene dusting powders	IS: 7944197
	Methyl parathion, technical	IS: 2570—1980	99.	Trichlorfon, technical	IS: 7945—1,97
	Chlordane emulsifiable concentrates	IS: 2682—1984		Toxaphene cmulsifiable concentrates	IS: 7946—197
	Dizinon emulsifiable concentrates	IS: 2861—1980		Toxaphene dusting powders	IS: 7947—197
6.	Dizinon water dispersible powder.	JS: 2862—1984		Fenthion emulsifiable concentrates	IS: 7948197
_	concentrates		103.	Quintozene water dispersible powder	IS: 7949197
	Chlordane, technical	IS: 2863—1968		concentrates	
	Chloridane dusting powders	IS: 2864—1984		Fenthion, technical	IS: 7950—197
9.	Methyl parathon emul ittable	IS: 2865—1978		Phorate, technical	IS: 7976—197
	concentrates	10		Disulfoton, technical	IS: 7977—197
().	Organo mercurial dry seedressing	IS: 32841984		Quintozene, technical	IS: 7985—197
,	formulations	ID 1303		Formothion technical solution	IS: 8024197
	Wertable sulphur powder	IS: 3383—1982	109	Monocrotophos, technical Formothion emulsifiable concentrates	IS::8075198

1 2	2	1	2	3
111. Propanil omulsifiable concentrates	IS: 8017—1976		ethyllparathion, technical con-	IS: 9377-1980
112. Quinalphos emulsifiable concentrates		-	ntrates	
113. Quinalphos dusting powders	IS: 8029—1985		idemorph emulsifiable concentrates	
114. Propanil, technical	IS: 80711976		opoxur emulsifiable concentrates	IS: 9665—1981
	JS: 80721984		idemorph technical	IS: 96681981
<ol> <li>Monocrotophos water soluble concentrates</li> </ol>		co	4-D Ethyl ester emulsifiable incontrates	IS: 10243—1982
117. Oxydometon-mothyl technical concentrates	I\$: 8258—1976		4-D Ethyl ester water dispersible owders	IS : 10244 1982
118. Oxydemoton-methyl emulsifiable concentrates	IS: 8259—1976 .		ndosulfan granules itrofan granules	IS: 10265—1982 IS: 10266—1982
119. Dalapon-sodium technical	IS: 82671976	176. Ph	nenthoate granules	IS: 10267—1982
120. Dalapon-sodium water soluble	1S: 82861970	177. Ch	hlorfenvinphos, technical	IS: 10268-1982
powder			nlorfenvinphos, technical	IS: 10268—1987
121. Phonthoate emulsifiable concentrates	IS: 8291—1976		iraquat dimethyl sulphate water	IS: 10294—1982
	IS: 8293—1976		luble concentrates	
123. Liquid amino salts of MCPA	IS: 8294—1976		enitrothion water dispersible	IS: 10295—1982
124. Carbondazim (MBC) technical	IS: 8445—1977		owders	
125. Carbandazim (MBC) water dispersible			aptafol water dispensible powders	IS: 10296- 1982
powder concentrates			aptafol technical	IS: 10300—1982
26. Phosalone, ensulsifiable concentrates	IS: 8487—1977		hion emulsifiable concentrates	IS: 10319—1982
127. Phosalone, technical	IS: 8488—1977		opper acetoarsonite	JS: 10355—1982
128. Phosalone dusting powder	1S: 8489—1977	184. Et	thion technical	IS: 10369—19 <b>8</b> 2
129. MCPA, technical	1S: 8494—1977	<b></b>		
130. Propoxur, technical	IS: 84961977		[F.	No. 6(2)/84-EI&EI
131. Paraquat dichloride water soluble	IS: 8497—1972			
concentrates		का.	म्राः 781 — केन्द्रीय गरकार, निर्यात (	क्वालिटी, नियंत्रण ग्री
132. Temephos emulsifiable concentrates	IS: 8498-1977	निरीक्षण)	अधिनियम, 1963 (1963 का 22) की	धारा 17 की उप-धार
133. Temophos, technical	IS: 8701—1978		बड (घ) दारा प्रदत्त णक्तियों का प्रयोग कर	
134. Diuron, technical	IS: 8702—1978	, ,	iत्राणय को ग्रधिसूचना सं. का.ग्रा. <i>उ.</i>	•
135. Diuron water dispersible concentrates			- ·	•
136. Mancozeb, technical	IS: 8707—1978		ं साथ प्रकाशित नाइणकजीव <mark>साट श्र</mark> ौर उन	
137. Mancozeb water dispersil le puwder concentrates	IS: 8708—1978		·) नियम, 1970 का ग्रीर संगोधन करने ानी है, ग्रंथीत् :—	न के <i>सिए</i> नि⊬नीयिख
138. Chlorphyrifes emulsifiable concentrates	IS : 8944= 1978		क्षिप्त नाम तथा प्रारम्भ .	
139. Edifenphos, technical	IS: 8954—1978	(1)	इन नियमों का संक्षिप्त नास न।णकर्जावः	मार प्रयोग जनके निक्रणण
140. Edifonphos, omul-iflable concentrates	IS: 8955—J978	( • /	का निर्यात (निरीक्षण) संगोधन नियम, 19	
141. Nitrofon technical	IS: 8956—1978		का मियान (मिराकाण) संशोधन नियम, 15	186 % 1
142. Nitrofon emulsiflable concentrates	13:8957—1978	(2)	ये राजपत्र मे प्रकाशन की नारीख को प्र	वन होगे।
143. Fluchloralin, technical concentrates	IS: 8956—1978	•		•
144. Fluchloralin omulsifiable concentrages	JS: 8959—1978		राशकाजीवामार ग्रांर उनके निरूपणीं क	
145. Methyl parathion dusting powders	IS: 8960—1978	सिथम, ।	1970 में, <b>ग्र</b> त् <b>सू</b> ची के स्थान पर निस्त	रिलिखिन भनुसूर्चा रखे
146. Chlorpyrifos, technical	IS: 8963—1978	जाएगी, १	धर्थात् :	
147. Nickel chloride, hexahydrate, Pesticidal grade	IS: 9351—1980		''यमुसूर्व(''	
148. Sodium, cyanide, pesticidal grade	JS: 9352 1980	គេ	री एच सी तक्तीकी तथा परिस्कृत ।	
149. Alachlor, technical	1S: 9353—1980			
150. Alachlor emulsifiable concentrates	IS: 9354—1980		र्गाएच सी (एच मी एच) इस्टिंग चूर्ण।	.5
151. Butachlor, technical	IS: 9355— 1980		तीएकासी (एचासीएका) पानी में घुलनणीला	साब्रिन चूर्ण ।
152. Butachlor, emulsifiable concentrates	IS: 9356—1980	4. ¥	दी डी टी तकनीकी।	
153. Triallate, technical	IS: 9357—1980	5. 1	डी डी डम्टिंग चूर्ण।	
154. Triallate emulsifiable concentrates	1S: 9358—1980		•	
155. Phorote granules, encapsulated	1S: 93591980		ष्टों डो टी पानी में घुलनर्शाल सादिता चूर्ण ।	
156. Carbofuran granules, encapsulated	IS: 9360-1980		मच्छर लाखानार्शः तेल ।	
157. Alachlor granules	IS: 9361—1980	8. 3	गामा-ब्री एच सी (लिण्डेन) पायर्म/कृत दाने ।	
158. Butachlor granulos	IS: 93621980	Ω <del>Ξ</del>	डी डीटो पायसीकृत दाने।	
159. Fonthion granules	IS: 9363—1980		एथिले≀न डावलीराईड कार्वन टेटराक्लोराईड ।	<del>दि</del> श्यम ।
160. Trichlorfon granules	IS: 9364—1980			।पन्दी ।
161. Fenitrothion granules	IS: 9365—1980		गामा-क्रीएभ सी (लिण्डेन)।	
162. Quipalphos granules			चूना गधण घोला।	
	IS: 9366—1980			
163. Disulfoton granules, encapsulated	1S: 9366—1980 1S: 9367—1980	13.	पायरेश्चम निस्सारण ।	
164. Carbaryl granules				
<ul><li>164. Carbaryl granules</li><li>165. Diazinon granules</li></ul>	IS: 9367—1980	14-	निकोर्टःन गंधक घोल ।	
<ul><li>164. Carbaryl granules</li><li>165. Diazinon granules</li><li>166. Lindane granules</li></ul>	IS: 9367—1980 IS: 9368—1980 IS: 9369—1980 IS: 9370—1980	14- 1 15- (	निकोर्ट(न संधक घोल । चिन्त फास्फाइड लकनीकी ।	
<ul><li>164. Carbaryl granules</li><li>165. Diazinon granules</li></ul>	IS: 9367—1980 IS: 9368—1980 IS: 9369—1980	14- 1 15- 1 16- 1	निकोर्टःन गंधक घोल ।	

```
18. एल्ड्रेन डिम्टिंग चूर्ण।
                                                                           74 डाइकोफोल, तकनीकी ।
  19 एल्ड्रीन, सकनीकी ।
                                                                           75. डाइकोफोस पायसीकृत दानै ।
  20 एथिलीन आयबोमाईड ।
                                                                           76. फैनीट्रोथियम, सफनीकी ।
  21. में थिल को माइड ।
                                                                           77. फैनीट्रोसियम पायसीकृत दाने ।
  22. कॉपर औक्सीक्लोराइड, सकनीकी ।
                                                                           78. क्यूमाफयूरल, तकनीकी ।
  33. 2, 4-डी सोडियम, तकमीकी।
                                                                           79 बार्फरेन चारे के दाने।

 गामा-बीएच मी (लिण्डेन) धुआकारक जनिता।

                                                                           80. वार्फरेन मोडियम, तकन की।
  25. कॉपर औक्सीक्लोराइड डिस्टिंग चूर्ण।
                                                                           81- वार्फरेन, तकनीकी ।

 कॉपर ऑक्सीक्लोराइड पानी में घुलनशील सांद्रित कुणै।

                                                                           82. पायसंकृत सारवीमाइडल तेल पाइरेद्यम वेग में।
  27. क्यूपरम ऑक्साइड पानी में घुलनशील मॉद्रित चुर्ण।
                                                                           83. फामफेर्म(डोन पानी में घुलनशील वाने ।
  28. क्यूपरम ऑक्साइड डेस्टिंग चूर्ण ।
                                                                           84. पाइरेध्यम डस्टिंग चूर्ण ।
 29. क्यूपरम ऑक्साइड, तकनीकी, (फुफ्ट्रीनाकी श्रेणी)।
                                                                           85. हेप्टाक्लार डम्टिंग चूर्ण।
 30. जगह-जगह कीटनाशी खिडकाव ।
                                                                           86 हेप्टाक्लोर, तकनीकी ।
 31. 2, 4-% का तरल एमिन नमक।
                                                                           87. एव्यूमीनियम फास्फाइड निरूपण ।
 32. में भेशियन, तकनीकी ।
                                                                           88 हेप्टाक्लोर पायर्स1इटन दाने ।
 33 डायजिमीन, तकनीकी ।
                                                                           89. सङ्फर डॉम्टग चूर्ण ।
 34. फिनाइया मर्करी ऐसीटेट, तकनीकी ।
                                                                          90 कारबोरिय पानी में घुलनणील दाने।
 35. स्थायी मैथोक्सी एथिल मर्करी क्लोराइड गोद्रित।
                                                                           91. कारबोरिल इस्टिंग चूर्ण।
 36. पैराधिन एथिल, नकनीकी ।
                                                                           92. फैनीद्रोथियन डिस्टिंग चूर्ण ।

 फिनायल मर्करी क्लोराइड, तकनीकी।

                                                                          93. आइसोबोरनियल थियोमाइएसिटेट (थाइनाइट) तकनीकी।

 एथिय मर्करी क्लोराइड, तकनीकी।

                                                                           94. वार्फरेन सोडियम नमक पानी में घुतनशील चूर्ण।

    स्थाायी मैथोक्सी एथिल मर्करी क्लोराइड पर आधारित निरूपण।

                                                                          95. 2, 4-डी एधिल इस्टर्स ।
 40. मैलाथियन इस्टिंग चूर्ण।
                                                                          96. कारबोरिल, तकनीकी ।

 मैलेथियन पायसीकृत दाने ।

                                                                          97. ट्राईक्लोरफोन, इन्टिंग चूर्ण।
 42. मैंनेथियन पानी में घुलनशील सादित चूर्णा।
                                                                          98. वर्ष/नटोजन डस्टिंग चूर्ण ।

 मिथाइल पैरिश्रयन तकनीकी।

 वृद्धिक्लोरफोन, तकनीकी ।

 44 बनोरेडेन पायमीकृत वाने।
                                                                         100. टोक्साफेन पायसीकृत दाने ।
 45. डायजीनीन पायसीकृत वाने ।
                                                                         101. टोक्साफेन डस्टिंग चूर्ण।

    46. डायर्जीनोन पार्ती में पुलनशैल सादित चूर्ण।

                                                                         103. फेनशियल पायर्गकृत काने ।
 17. सर्वोरेष्टेन तकन की ।
                                                                         103 वदानटोजन पानी में वृदनणील दाने ।
 48. क्लॉरइंन इंग्टिंग चूर्ण।
                                                                         104. फेर्नाथयन, तकनं कं: 1
 49. मिथाइन पैराथियन पायसंकृत दाने ।
                                                                         105. फोरेट, नकनाकी ।
 50. ओरौनोमरक्यूरियल झाई-मॅ/ड-क्रैियग निष्याग ।
                                                                         106. ई/मलकोटन, तकनंक' ।
 51 सिगेनि योग्य गंधक चूर्ण।
                                                                         107. सर्व/नटोजन, तकर्न.की ।
 5.). जिनेब, धकनीर्का ।
                                                                         108. फोरमो(थयन तकनीक) घोष्टा
 53. जिनेव पार्नि में घुलनर्शाल चूर्ण ।
                                                                         109. मोनोकांदीफांस, तकर्नकी।

 जिस्म, तकर्नाकी ।

                                                                         110. फोरमोथियन पायसंकृत दाने ।
 55 जिरम पार्नामें प्रेचुननशील च्र्णा

 प्रापैनील पायमी कृत दाने ।

 56. डाइमेथाट सकनं(की ।
                                                                         113. क्वानलकोस पायसंभ्रत दाने ।
 57. डाइमेथोट पायर्सकृत दाने ।
                                                                         🔢 ३. क्वीनलफोन इस्टिंग भूर्ण।
58. थियामेटोन दान ।
                                                                         114 प्रॉपैनील, तकनेकी ।
59. थियोभेदोन पायमीकृत दाने ।
                                                                         115 वर्त्र∤नम्पकोस, तकर्न/कः ।
60. थाइरम, तकर्नाक<sup>्ष</sup>ि।
                                                                         116. मानाकोटोफोस पार्ना भे भूतनग्रन दान ।
61. 2, 4-श्रं, तकनीके ।

 अतिमार्डमेटन-प्रैथाइल तकनं के आने ।

62. एंडोसल्फन डिस्टिंग चूर्ण।
                                                                         118. ऑक्सीडेमेटन-मैथाइल पायग कृष दाने ।
63. एडोसल्फन पायसंकृत दाने ।
                                                                         119 डालापोन-सोडियम, तकनीर्क ।
6.4. एंडोसल्फन पार्नामें घुत्रनगंल चूर्ण, दाने।
                                                                         1 :: 0. डालापान-पोडियम पानः में धूलनगंःल चुणं।
63. बिनापाकाइल पायसंकृत दाने ।
                                                                         1:1 फैनथॉएट पायर्सकृत दाने ।
                                                                         132. फैनथाएट, भकर्नकः ।
66. मृंडोसल्फन, सक्तिका ।
67. टोक्साफेन, तकर्न<sup>*</sup>की ।
                                                                         1.33. एम ई: पः ए का वरल एमाइन नमक ।
68. थाइरम पार्नः में घुलनगोप चूर्ण।
                                                                        13.1 क(र्वनडाइजिम (एम.व.स.) तक्षनके।
69. थाइरम-सं<sup>°</sup>ड-ईंसिंग निरुषण ।
                                                                        125 कार्यनडाइभिम (एभर्का सः) पान में बुलनमें न चूर्ण दाने।
70. पायरेध्यम पायर्सकृत दाने ।
                                                                        126. फॉमलीन पायमीकृत दाने ।
                                                                         1.27 फासेलान, तॅकनीकॅ≀ा
🕖 अयक्ताराचीश, कार्नक ।
                                                                        128 फोसेलोन इस्टिंग चूर्ण ।
73. फासकामिक्त, तहनीकी ।
73. ढायक्षोरवस पायसीकृत दाने ।
                                                                        129. एम मी वी ए, तक्रवीकी ।
```

```
130 प्रोपोक्सर, नकनीकी ।
 131. पेरायपूट डीक्लोरेड पानी में घुलनशील दाने ।
 132 टेमफोस पायसीकृत दाने ।
 133 टेमफोस' तकनीकी ।
 131 डियुरीन, तकनीकी।
 135 डियुरोन पानी में घुलनणील चुर्ण, दाने।
 136 मैनकोजेब, तकनीकी ।
 137 मैनकोजेव पानी में घुलनणील चुर्ण, दाने।
 138 क्लोरफीरिफोस पायमीकृत दाने ।
 139. एडिफनफोस, मकनीकी ।
140. एडिफनफोस पायसीकृत दाने ।
 141. नाइट्रोफन नकनीकी।
 142. नाइट्रोफन पायमीकृत वाने ।
143 फल्क्लोरोलीन, मकनीकी दाने।
144 फल्क्लोरोलीन पायमीकृत दाने ।
1.45. मैथाइल पैराधियन इस्टिंग चूर्ण।
116 क्लांरफीरिफोस, तकनीकी।
147. नियाल क्लाराइड, हैक्साहाइड्रेट, पैक्टीसाइडल ग्रेड ।
148. सोडियम, साइनाइइ, कीटनाशी ग्रेड ।
149. एलक्लोर, तकनीकी ।
150. एलक्लोर पायमीकृत दाने ।
151. बृटाक्लोर, तक्षनीकी।
152. बुटाक्लोर पायसीकृत दाने ।
153. ट्राईल्लेट, तकनीकी ।
154. ट्राईल्लेट पायसीकृत दाने ।
155. फोरेट दानदार संपृटित ।
156 कारबोफारेन दानेबार संपुटिन ।
157. एलक्सोर वानेदार ।
158. बुटाक्लोर दानेदार ।
159. फैनथियोन दानदार ।
160. ट्राईक्लोरोफन दानेवार ।
161. फैनीट्रोथियान दानेदार ।
162. क्वीनमफोस दानेवार ।
163 डायसल्फोटन दानेदार, संपृटित ।
164. कारबेरियल वानेदार ।
165 डायजिनान दानेदार ।
166 लिण्डेन दानेदार।
167. एल्डीकार्ब दानेदार संपृटित ।
168 मैथाइल पैराधियन, नकर्नाकी दाने ।
169 ट्राईडेमोर्फ पायसीकृत दाने ।
170. प्रोपांक्सर पायमीकृत दाने ।
171. ट्राईडेमोर्फ, तकनीकी ।
172. 2, 4-डी एथिल इस्टर पायमीकृत दाने।
173. 2, 4-डी एथिल इस्टर पानी में घुलनणील चुर्ण।
174 एडायल्फन दानदार ।
175. नाइट्रोफन दानेदार ।
176. फैनथं।एट बानेदार ।
177. क्लारफोनवीनफोस, तकनीकी ।
178 पैराक्यूट डाइमैथाइल सल्फेट पानी में घुलनशील दाने ।
179 फैनीट्रोथियन पानी में घुलनशील चर्ण।
180 कैपटाफोल पानी में घुलनगील चुर्ण।
181. कैपटाफोल, तकर्नाकी ।
182 एथियन पायमीकृत दाने ।
183. कॉपर एमिटोग्रर्मनाइट ।
184 एथियन, तकनीकी ।
185 निकोटीन मल्फेट ।
186. एट्यूमिनीयम फॉनफाउट ह
```

[फाईल सं. 6(2)/84-ई प्राईएउई नी ]

- S.O. 781.—In exercise of the powers conferred by clause (d) of sub-section (2) of section 17 of the Export (Quality Control and Inspection) Act, 1963 (22 of 1963) the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Export of Pesticides and their Formulations (Inspection) Rules, 1970 published with the notification of the Government of India in the Ministry of Commerce No. S.O. 3311 dated the 7th October, 1970, namely:—
- 1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called the Export of Pesticides and their Formulations (Inspection) Amendment Rules, 1986.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- 2. In the Export of Pesticides and their Formulations (Inspection) Rules, 1970, for the Schedule, the following Schedule shall be substituted, namely:—

#### "SCHEDULE

- 1. BHC technical and refined
- 2. BHC (HCH) dusting powders
- 3. BHC (HCH) water dispersible powder concentrates
- 4. DDT technical
- 5. DDT dusting powders
- 6. DDT water dispersible water concentrates
- 7. Mosquito larvicidal oil
- 8. Gama—BHC (Lindane) emulsifiable concentrates
- 9. DDT emulsifiable concentrates
- 10. Ethylene dichloride carbon tetrachloride mixture
- 11. Gama BHC (Lindane)
- 12. Lime sulphur solution
- 13. Pyrethrum extracts
- 14. Nicotine sulphate solution
- 15. Zinc phosphide, technical
- 16. Aldrin, technical
- 17. Aldrin emulsifiable concentrates
- 18. Aldrin dusting powders
- 19. Aldrin technical
- 20. Ethylene dibromide
- 21. Methyl bromide
- 22. Copper oxychloride, technical
- 23. 2, 4D sodium, technical
- 24. Gama—BHC (Lindane) smoke generators
- 25. Copper oxychloride dusting powders
- Copper oxychloride water dispersible powder concentrates
- 27. Cuprous oxide water dispersible powder concentrates
- 28. Cuprous oxide dusting powders
- 29. Cuprous oxide, technical (fungicidal grade)
- 30. Insecticidal space spray
- 31. Liquid amine salts of 2, 4-D
- 32. Malathion, technical
- 33. Diazinon technical
- 34. Phenyl mercury acetate, technical
- Stabilized methoxy ethyl mercury chloride concentrates
- 36. Parathion ethyl, technical
- 37. Phenyl mercury chloride, technical
- 38. Ethyl mercury chloride, technical
- Formulations based on stabilized methoxy ethyl mercury chloride concentrates
- 40. Malathion dusting powders
- 41. Malathion emulsifiable concentrates
- 42. Malathion water dispersible powder concentrates
- 43. Methyl parathion, technical
- 44. Chlordane emulsifiable concentrates
- 45. Diazinon emulsifiable concentrates
- 46. Diazinon water dispersible powder concentrates
- 47. Chlordane, technical
- 48. Chlordane dusting powders

- 49. Methyl parathion emulsifiable concentrates
- 50. Organo mercurial dry-seed-dressing formulations
- 51. Wettable sulphur powder
- 52. Zineb, technical
- 53. Zineb water dispersible powders
- 54, Ziram, technical
- 55. Ziram water dispersible powder
- 56. Dimethoate technical
- 57. Dimethoate emulsifiable concentrates
- 58. Thiometon concentrates
- 59. Thiometon emulsifiable concentrates
- 60. Thiram technical
- 61, 2, 4-D technical
- 62. Endosulfan dusting powders
- 63. Endosulfan emulsifiable concentrates
- 64. Fndosulfan water dispersible powder concentrates
- 65. Binapacryl emulsifiable concentrates
- 66. Endosulfan, technical
- 67. Toxaphene, technical
- 68. Thiram water dispersible powder
- 69. Thiram seed dressing formulations
- 70. Phrethrum emulsifiable concentrates
- 71. Dichlorves technical
- 72. Phosphemidon technical
- 73. Dichlorves emulsifiable concentrates
- 74. Dicofol, technical
- 75. Dicofol, emulsifiable concentrates
- 76. Fenitrothion, technical
- 77. Fenetrothion, emulsifiable concentrates
- 78. Coumafuryl, technical
- 79. Warfarin salt concentrates
- 80. Warfarin sodium technical-
- 81. Warfarin, technical
- 82. Emulsifiable larvicidal oil pyrethrum based
- 83. Phosphamidon water soluble concentrates
- 84. Pyrethrum dusting powders
- 85. Heptachlor dusting powders
- 86. Heptachlor, technical
- 87. Aluminium phosphide formulation
- 88. Heptachlor emulsifiable concentrates
- 89. Sulphur dusting powder
- 90. Carbaryl water dispersible concentrates
- 91. Carbaryl dusting powders
- 92. Fenitrethion dusting powders
- 93. Isobornyl thiocyanencatete (Thanite) technical
- 94. Warfarin sodium salt water soluble powder
- 95. 2, 4-D ethyl esters
- 96. Carbaryl technical
- 97. Trichlorfom dusting powders
- 98. Quinbozene dusting powders
- 99. Trichlorfon, technical
- 100. Toxaphene emulsifiable concentrates
- 101. Toxaphene dusting powders
- 102. Fenthion emulsifiable concentrates
- 103. Quintozene water dispersible powder concentrates
- 104. Fenthion, technical
- 105. Phorate, technical
- 106. Disulfoton, technical
- 107. Quintozene, technical
- 108. Formothion technical solution
- 109. Monocrotophos, technical
- 110. Formethion emulsifiable concentrates
- 111. Propanil emulsifiable concentrates
- 112. Quinalphos emulsifiable concentrates
- 113. Quinalphos dusting powders
- 114. Propanil, technical
- 115. Quinalphos technical

- 116. Monocrotophos water soluble concentrates
- 117. Oxydemeton-methyl technical concentrates
- 118. Oxydemeton-methyl emulsifiable concentrates
- 119. Dalapon-sodium technical
- 120. Dalapon-sodium water soluble powder
- 121. Phenthoate emulsifiable concentrates
- 122. Phenthoate, technical
- 123. Liquid amine salts of MCPA
- 124, Carbendazim (MBC) technical
- 125. Carbondazim (MBC) water dispersible powder concentrates
- 126. Phosalone emulsifiable concentrates
- 127. Phosalone, technical
- 128. Phosalone, dusting powders
- 129. MCPA technical
- 130. Propoxur, technical
- 131. Paraquat dischloride water soluble concentrates
- 132. Termephos emulsifiable concentrates
- 133. Temphos technical
- 134. Diuron, technical
- 135. Diuron water dispersible concentrates
- 136. Mancozeh technical
- 137. Mancozeb water dispersible powder concentrates
- 138. Chlorphyrifos emulsiflable concentrates
- 139. Edifenphos, technical
- 140. Edifenphos emulsiflable concentrates
- 141. Nitrofen, technical
- 142. Nitrofen emulsifiable concentrates
- 143. Fluchloralin, technical concentrates
- 144. Fluchloralin emulsifiable concentrates
- 145. Methyl parathion dusting powders
- 146. Chloryrifos, technical
- 147. Nickel chloride, hexa hydrate, pesticidal grade
- 148, Sodium cynaide, pesticidal grade
- 149. Alachlor, technical
- 150. Alachlor emulsiflable concentrates
- 151. Butachlor, technical
- 152. Butachlor emulsifiable concentrates
- 153. Triallate, technical
- 154. Triallate emulsifiable concentrates
- 155. Phorate granules, encapsulated
- 156. Carbofuran granules, encapsulated.
- 157. Alachlor granules
- 158. Butachlor granules
- 159. Fenthion granules
- 160. Trichlorfon granules
- 161. Fentrothion granules162. Quinalphos granules
- 163. Disulfoton granules, encapsulated
- 164. Carbaryl granules
- 165. Diazinon granules
- 166. Lindane granules
- 167. Aldicarb granules encapsulated
- 168. Methyl parathion, technical concentrates
- 169. Tridemorph emulsifiable concentrates
- 170. Propoxur emulsifiable concentrates
- 171. Tridemorph, technical
- 172. 2, 4-D ethyl ester emulsifiable concentrates
- 173. 2, 4D ethyl ester water dispersible powders
- 174. Endosulfan granules
- 175. Nitrofan granules
- 176. Phenthoate granules

- 177. Chlorfenvinphos, technical
- 178. Paraquate dimethyl sulphate water soluble concentrates
- 179. Fenitrothion water dispersible powders
- 180. Captafol water dispersible powders
- 181. Captafol technical

- 182. Ethion emulsifiable concentrates
- 183. Copper acctoarsenite
- 184. Ethion technical
- 185. Nicotine sulphate
- 186. Aluminium phosphide."

[F. No. 6(2)/84-FI&FP]

का था. 782--भारत के निर्मात व्यापार के विकास के लिए काजू की सिरियां निर्मात में पूर्व क्थालिटी निर्मात और निरीक्षण के प्रार्थत लाने के लिए कियाय प्रस्ताव निर्मात (क्थालिटी निर्मातण और निरीक्षण) निर्मात 1964 के निर्मात में उपनिर्मा (2) की अपेक्षानुभार भारत सर्वार के बोणिज्य मंतालाप के भादेण में. का भ्रा. 3091 तरिक्ष 6 जुलाई 1985 में प्रकाणित किए एए थे.

और उनसे प्रशाबित सभी व्यक्तियों से 1.3 मितम्बर, 1985 तक प्राक्षेप तथा सुन्नाव मांगे गए थे;

और उपन राजपन की प्रतियों जनता की 19 जुलाई, 1985 की उपलब्ध करा दी गयी थे;

और केन्द्रीय संस्थार ने उक्त प्रस्ताव पर जनता से प्राप्त आक्षेपों और रक्षावों पर विचार कर लिया है;

धनः भव, केन्द्रीय सरकार (क्यांनिटी नियंत्रण और निरीक्षण) अधिनियम, 1963 (1963 को 22) की धारा 6 होएं प्रदत्त णिक्त्यों का प्रयोग करते हुए नियत्ति निरीक्षण परिषद के परावर्ण करने के पश्चान अपनी यह राथ होने पर कि उक्त उपनियम के प्रमुखन में आनुभरण में आर भारत के निर्णिक की प्रिमूचना संकालय की प्रिमूचना संकालय की प्रिमूचना संकालय की प्रिमूचना संकालय की किन्द्री हुए, भारत के नियति व्यापार के विकास के लिए ऐसी करना आवश्यक तथा समीचीन है;

- (1) अधिसूचित करना कि काजुकी गिरियां निर्यात से पुर्वे क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण के अधीन होगी।
- (2) इस आवेश की अनुभूची में विए गए विनिर्देशों को काज की गिरियों को मानक जिनिवेंगों के रूप में मान्यता देती है।
- (3) अंतरिष्ट्रीय व्यापार के दौरान काजू की शिरियों के तिर्यात को तब तक प्रतिषिद्ध करता जब तक कि उसके जाय निर्यात (स्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण) प्रतिनियम, 1963 (1963 का 22) की धारा 7 के ब्रधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा स्थापित प्रशिकरण द्वारा दिया गया इस भाषाय वा प्रभाण-पक्ष न हो कि ऐसे काजू की गिरियों मानक निर्निर्वेषों के भन्त्य हैं और निर्यात योग्य हैं।
- 2. इस ब्रावेश को कोई भी बाध भार्श फेलाओं को काजू की शिक्यों के नमूनों के निर्यात पर भूमि, बायु या समृद्र मार्ग द्वारा आसू नहीं होगी। परन्तु यह तब अब कि ऐसे नमूनों का भान-पर्यन्त निःणुक्क मृत्य 250 है. से ब्राधिक नहीं होगा।
- 3. परिभाषाएं: इस स्रादेश में "काजू की गिरियों" से सभी प्रकार की काजू की गिरियां, विना सुलसी, कुलसी हुई, साबत या ट्रकड़े तथा भूनी हुई या वसग लगाई हुई गिरियां भी सभिन्नेत है।
  - 4. यह श्रादेण भारत के राज्यान में प्रकाणन की नारीख से प्रवस होगा।

# भनुसूची

## कान की गिरियों के लिए बिनिवेंश

- ा. सामान्य विभेयनाएं, कात्रु की मिरियां, कात्रुओं को भनकर, छिलका उत्तारकर और छीलकर, (ऐनाकाविषय प्राधिय दिस्ति अने प्रमु ने समान्य की जाएगी
- 2. विणिष्टि विशेषमाणं
- कः धान की गिरियां--सफेद गावतः

श्रेणी श्रभिधान	व्यापारिक साम	रंग/विशेषलाणे	का उंट्∕ 45 । ग्रीम माप विवरण	गश्चिक तम प्रादंता	द्रे हुए दुकड़े	एउ एउ एस जी∤ एन एल जी ग्रिधिकतम	्रिया
1	2	,3	. 1	5	6	7	, 8
¥उन्यु-180	 मफेंद्र साबृत	र्दन सफेद पीला/हरूका सलेटी विशेष ग्राकार	120~180	5	· _	5 (एन गुल एस जी सभा एन उब्ब्य के साथ)	गिरिया ग्रमन, कीट क्षति, फंक्दी, विकम गीविता, जुडे हुए बीजावरण, श्रापित्रभनर बाह्य पदार्थों से पूर्णत्या रहित होगी। यदि छिलन या सूरका- एपन से गिरी के विशेष श्राकार पर पंभाव नहीं पड़ता है तो छिली हुई और भागत, स्रमाई हुई गिरियां भी श्रनुमत हैं।
चरुय्-210	सफेद साब्त	द्रत सफेद पीला/हरूका सलेटी विशेष श्राकार	2011-210	5	5	5 (एन एस एस जी तथा एस <b>डब्</b> न्य के साथ)	गिरियां ग्रसन, कीट, अति, फक्ष्री, बिक्रन गंधिता, जुड़े हुए, बीजाबरण प्रापत्ति- जनक बाह्य पदार्थों से पूर्ण या रहिल होंगी। यदि खिलन या मुरझाएपन से गिरी के विशेष श्राकार पर प्रभाव नहीं पष्टता है तो खिली हुई और भागतः मुरझाई हुई गिरियां भी प्रतुसत हैं।

-1	<b>2</b>	3	. 4	5	6	7	8
<b>र</b> स्य - 240	सफेद साबुत	वंत सफेब पीला/हल्का सलेटी विशेष भाकार	220-240	5	5	5 (एन एल एस खो तथा एस बब्स्यू के साथ)	
<b>बस्य-</b> 280	सफेद साबुत	दंत सफेद पीला/हरूका सलेटी विशेष माकार	260-280	5	;	5 (एन एल एम जीतथा एस डब्स्यूके साथ)	•
<b>४स्त्यू</b> -320	सफेद सामृत	र्वस सफेद पीला/हल्का सलेटी विशेष ग्राकार	30 <del>9</del> <b>32</b> 0	5		5 (एन एल एस जी तथा एस डब्ल्यूके साथ)	
**************************************	स <b>फेद</b> सा <b>बु</b> स	दंत सफेद पीला/हल्का सलेटी विशेष ग्राकार	350-400			5 (एन एस एस जीतथा एस डम्स्यूकेसाथ)	गिरियां ग्रसन, कीट, कित, फर्जूबी विकृतगंधिता, जुड़े हुए बीआवरण, भागतिजनक बाह्य पवायों से पूर्ण- तथा रहित होंगी। यदि छिजन या मुरसाएगन से गिरी के विशेष भाकार पर प्रभाव नहीं पड़ता है तो छिली हुई और भागतः मुरसाई हुई गिरियां भी मनुमत हैं।
श्रक्त्यू-450	सफेव साबुत	वंत सफेद पीला/हल्का सलेटी विज्ञेष आकार	400-450	5	5	s (एन एल एस जी तथा एस डक्स्पू के साथ)	•
डब्स्यू-500	सफेद सा <b>बु</b> त	दंत सफेद पीला/हरका सलेटी विशेष माकार	450-500	5	5	5 (एन एस एस जी तथा एस इन्ह्मू के साथ)	
च. जुलसी हुई	काजूकी गिरिय	गै−–साव्त					
एस डक्ट्यू-	मुलसी हुई/ साबुत	मुष्कक/बोरमा में भूनने या मुखाने के समय प्रधिक गर्मी के कारण गिरियां मुलसी हुई/हस्की या गहरी हो सकती हैं।	_	5	5	7.5 (एन एल जी तथा एस एस डब्स्यू के साथ)	गिरियां ग्रसन, भीट, भिति, फर्फ्वी, विकृतगंधिता, जुड़े हुए बीजावरण भापतिजनक बाह्य पदायों से पूर्णतया रहित होंगी यदि छिलन मुरक्षाएपन से गिरी के विशेष ग्राकार पर प्रभाव नहीं पड़ता है तो छिली हुई और भागतः मुरक्षाई हुई गिरियां भी धनुमस हैं।
एस बन्ह्यू-180	मुलसी हुई/ साबुत	शुष्कक/बोरमा में भूननेयासुखाने के समय प्रक्षिक गर्मी के कारण गिरियां मुलसी हुई/ हल्की यागहरी हो सकती हैं।	170-180	5	5	<ol> <li>5 (एन एल जी तथा एस एस- बब्ल्यू के साथ)</li> </ol>	
एस श्रम्-210	झुलसी हुई/ साबुत	शुष्कक/बोरमा में भूनने या सुक्वाने के समय अधिक गर्मी के कारण गिरियां झुलसी हुई/हस्की या गहरी हो सकती हैं	,	6	5	7.5 (एन एल जीतथा एस एस- बब्स्यू के साथ)	
एस रब्स्यू-240	झुलसी हुई/ साबुत	शुष्ककः/बोरमा में भूनने या सुखाने के समय प्रधिक गर्मी के कारण गिरियां झुल- सी हुई/हस्की या गहरी हो सकती हैं।	220-240	5		7.5 (एन एल एस जी तथा 'एस डब्स्यू के साथ	गिरियां प्रसन, कीट, कारि, फार्नूबी विक्वतगंधिता, जुड़े हुए बीजावरण, प्रापत्तिजनक बाह्य पवार्थों से पूर्ण तया रहित होगी यदि छिलन मुख्या- एपन से गिरी के विशेष धाकार पर प्रभाव महीं पड़ता है तो छिली हुई और धागतः मुख्याई हुई गिरियां भी मनुमत हैं।
एस <b>हरूपू</b> -280	शुलसी हुई/ सामुत	गुष्ककः/योरमा में भुनने या सुखाने के समय मधिक गर्भी के कारण गिरियां भुलसी हुईः/ हल्की या गहरी हो सकती हैं।	260-280	5		7.5 (एन एल एस जीतथा एस डब्स्यूके साथ)	

1	2	3	4	5	6 7	8
एस डब्ल्यू-320	झुलसी हुर्द्/ सायुत	गुष्कक्ष/बोरमामें भूभने या सुखाने के समय प्रक्षिक गर्मी के कारण गिरियो झुलसी हुई/ हल्की या गहरी हो सकती हैं।	300-320	5	5 7.5 (एन एल एर जीतवा एस एस इब्स्यूके साथ)	स गिरिया प्रसन, कीट, कित, फलूंदी, विकृतगंधिता, जुड़े हुए बीजायरण, धापत्तिजनक बाह्य पवार्थों से पूर्णतया रहित होगी यदि छिजन, मुरसाएपन से गिरी के विशेष प्राकार पर प्रभाव नहीं पड़ता है तो छिती हुई और प्रागतः मुरसाई हुई गिरिया भी भनुमत हैं।
एस ४४स्यू-४००	मुलसी हुईं/ साबुत	मुष्कक/बोरमा में भुनने या सुखाने के समय अधिक गर्मी के कारण गिरियां भुलमी हुई/हुल्की या गहरी हो सकती है।	350-400	5	5 7.5 (एन एक ए जी सभा एस डक्स्यू के साथ)	(म
एस डब्ल्यू-450	जुनसी हुई/ साबुत	ण्यक्तक/बोरमा में भूतने या सुखाने के समय प्रधिक गर्नी के कारण गिरिया झुल मी हुई/ हल्की या गहरी हो सकती है।	400-450	5	5 7.5 (एन एल एम जीतया एस एस एस डेक्स्यू केसाथ)	
एस <b>बब्ल्यू-</b> 500	मुलसी हुई/ साबुत	शुष्कक/कोरमां में भूनने या सुखाने के समय प्रधिक गर्मी के कारण गिरियां भुलसी हुई/हल्की या गहरी हो सकती हैं।	450-500	5 '	5 7.5 (एस एल ए श्रीतथा एस एस डब्ल्यूके साथ)	
ग. डेजई काजू	की गिरियाँस	गमूत				
एस एस बस्स्यू	मुनी <b>हुई</b> साबुस घटिया	गिरियो ज्यादा भुभी हुई, कण्बी, मुरक्काई हुई (पीरीवल) चित्ती- बार (करनोरम) रंगहीन तया हल्की मीली हो सकती है	सागू महीं	5	5	गिरियां ग्रसन, कौट, कित, फर्फ्वी, विकृत- गंधिता, जुड़े हुए बीजावरण, भाषत्तिजनक बाहग पवार्थों से पूर्णतया रहित होगी।
की कम्ल्यू	हेजर्ट साबुत	गिरियो अधिक मुनी हुई गहरी, भूरी, गाढी नीसी, चिस्तीवार, रंगहीन तथा काले घब्यों वाली हो सकती है ।है	लागू नहीं	5	<b>ऽ मृ</b> श्य	गिरियां ग्रसन, कीट, क्रांति, फर्जूबी, विकृतसर्गक्षिता, जुड़े हुए वीजावरण, आपत्तिजनक बाहुय पदार्थी से पूर्ण- सया रहित होंगी।
च. काजूकी गि	रेया (सफीव टुव	ह <b>े</b> )				
यों यो	बहस	सफेद/पिला वंत सफेद हल्का सलेटी आड़ी तिरकी टूटी हुई (समान का या असमान) तथा प्राकृतिक रूप से जुड़ी हुई गिरियों	सागू न <b>हीं</b>	5	5 (एसबी)	निरियो ग्रसन, कीट, कित, फर्स्दी, विकृतगंधिता, जुड़े हुए बीजावरण, आपिताजनक बाह्य पवार्थों से पूर्णतया रहित होंगी। यदि छिलन/मुरझाएपन से गिरी के विशेष आकार का प्रभाव नहीं पड़ता है तो छिली हुई और भागतः मुरझाई हुई गिरियों भी अनुमत हैं।
एस	दुकड़े	सफेद/पीला वंत सफेद या हल्का सकेटी/प्राकृतिक रूप में लम्बाई मेंटूटी हुई गिरियां	साग् नहीं	5	5 (एसएस)	गिरिया ग्रसन, कीट झति, फर्जूदी, विकृतगंधिता, जुड़े हुए कीजावरण, आपस्तिजनक बाह्य पदार्थी से पूर्ण-तया रहित होंगी । यदि छिलन/मुरुझाएपन से गिरी के विशेष आकार पर प्रभाव नहीं पड़ता है तो छिली हुई और मागतः मुरझाई हुई गिरियां भी अनुमत हैं।

1	2		4	5	6	7	8
एस बन्हम् यो	सकेद बहे टुकड़े	सफेद/पं ला वंति सफेद या हरूना सलेटो	गिरियां दो से अधिक दुकड़ों में दूटी हुई और 4 छिट्टों बासो /16 एस डब्स्यू जी छलनी 4.75 मि. मी. आई एस छलनी से नहीं निकल सकेगी	5	<b>ग्</b> रम	5 (एसपे: तया एस डब्स्युपे: के साथ)	गिरियां प्रसन, कोट, शिति, फर्फूदी, विक्कत गंधिता, जुड़े हुए की जावरण, आपस्ति- जनक बाह्य पवार्थों से पूर्णतया रहित होंगी । यदि छिलन/मुरझाएपन से गिरों के विशेष आकार पर प्रभाव नहीं पड़ता है तो छिली हुई और भागतः मुरझाई हुई गिरियां भी अनुमत हैं ।
एस इंडस्यू पो	छोटे स नेद दुक्त≩	स नेद/पोलाबंतीः सफेव या हरूका संलटो	एस डब्स्यूपी में विणित से छोटी टूटी हुई गिरियां फिन्तु जो 6 छिद्रों वासी 20 एस डब्स्यूजी छलती/2.80 मि.मी. आई एस छलती से म	5	भूस्य -	5 (एस एस पी तया दी की के साथ)	गिरियां ग्रसम, कीट, क्षति, फ्रफ्टी, विक्रत गिंधिता, जुड़े हुए बीजाकरण, आपत्ति- जनक बाह्य पदायाँ से पूर्णतया रिहत होंगी । यदि छिलन/मुरकाएपन से गिरी के विशेष आकार पर प्रभाव नहीं पड़ता है तो छिली हुई और भागतः सुरक्षाई हुई गिरियों भी अनुमत हैं ।
की को	बेचे) विट्स	सकेद∫पोलोबंतः सकेव म≀ हरका सलेटो	एस डब्स्य, पी में विणित से छोटें टूटो हुई यिदियों और पत्मूलक जो 10 छिन्नों वाली 24 छिन्नों वाली 24 एस डब्स्य जी छलनी/170 मि.मी. आई एस छलनी से न निकल सकों।	5	म्∗म	।% (क्षाज्इका पाउवर)	गिरिया ग्रसन, कीट, झित, फर्फ्दी, विकृत गंजिता, जुड़े हुए बीजाकरण, आपत्ति- जनक बाह्य पदार्थी से पूर्णतया रहित श्लोगी।
इन्. साजुकी गि एस बी	रियों—-भुने <b>हु</b> ए भुने हुए बट्स	दुकड़ें आबी तिरछी दूटी हुई गिरियां (समान रूप तथा बसमान रूप में) नथा प्राकृतिक रूप में जुड़े हुई गिरियां/मुफ्कन/बोरम में भूनने या सुखाने के समय अधिक गर्मी के दौरान गिरियां भूनी हुई/हरकी गहरी हो सकर्त हैं।	r	5	5	7.5 (कीबी)	गिरियां ग्रसन, कीट, क्षति, फफूदी, विकृत गंधिता, जुड़े हुए, बीजावरण, आपत्ति- जनक बाह्य पदार्थी से पूर्णतया रहित होगें। यदि छिजन/मुरसाए- पन से गिरी के विशेष आकार पर प्रभाव नहीं पड़ता है तो छिजी हुई और भागतः मुरसाई हुई गिरियां भी अनुमत होंगें।
एसएस	भुने हुए टुकड़े	प्राकृतिक रूप से लम्बाई में टूटी हुई गिरियां/गुष्कक बोरमा में भूमने सुखाने के समय अधिक गर्मी के कारण दौरान गिरियां	शून्य	5	. 5	5 (डीएस)	गिरियां प्रसन, कीट, क्षति, फर्मूदी, विकृत गंधिता, जुड़े हुए कीजावरण, आपत्ति- जनक बाक्ष्य पदार्थी से पूर्णतया रहित होंगी। यदि छिलन/मुरझाए-

1	2	3	4	5	6	7	8
		भृती हुई हल्की गहरी हो सकती हैं।	ï			1	पम से गिरी के विशेष आकार पर प्रभाव नहीं पड़ता है तो छिली हुई और भागतः मुरझाई हुई गिरियां भी अनुमत होंगी।
ण्सपी	भूने हुए ट्कड़े	मुष्कक / बोरमा में भूतने / सुखाने के समय अधिक गर्मी के वोरान गिरियों भुनी हुई हरकों / गहरी हो सकती है।	दुक है जो 4 कियों वाली 16 एस बरूपूजी छलनं /4.75 मी.मि. आर्षि एस छलनो से न निकल सकें।	5	शूरय	5 (एसपंः) एस तया एत्तप्सपेः के साय	गिरिया ग्रसन, कीट, अति, फर्फूदी, विक्रसंगिधिता, जुके हुए बीजावरण, आपस्तिजनक बाह्य पदार्थी से पूर्ण- तथा रहित होगा। यदि छिलन/ मुरझाएपन से गिरो के विशेष आभार पर प्रभाव नहीं पड़ता है सो छिलो हुई और मुरझाई हुई गिरियाँ भी अनुमत होंगी।
एस एस पे	भुने हुए छोटे दुकार	गुष्कक/बोरमा में भूमने सुखाने के समय अधिक गर्मी के दोरान गिरियां भुनं हुई हरकां/गहरी हो सकता है।	भुने दुकाई से छोटे दुकाई जो 6 छिडों वालेंं/20 एसडब्ल्यूजी छातनी 2.80 मि.मी. छलानी से म	5	भून्य	5 ( <b>इं</b> ।एसपें।)	गिरियां ग्रसन, कोट, धांति, फर्फूबं, विक्कत- गंधिता, जुड़े हुए बीजावरण, आपत्ति- जनक बाह्य. पदार्थी से पूर्णतया रहित होंगी । यदि खिलन/मुरझाएपन से गिरी के विशेष आकार पर प्रभाव नहीं पड़ता है तो छिली हुई और मुरझाई हुई गिरियां भी अनुमत होंगी।
<b>4.</b> 4	।जूकी गिरियां (	(सराध दुकड़े)					
एस <b>प</b> ं,एस	भुनेत्रुए षटिया दुकड़ें	शुष्ककं बोरमा में भूनने सुखाने के समय अधिक गर्मी के दोरान गिरियां भुनों हुई/हल्का गहरी हो सकते हैं।	दुक हो में दूट हुई गिरियां जो 4 छित्रों बालां 16 एस डब्स्यू जी छलतीं 4.75 मि.मी. आई एस छलतीं से न निकल सके।	5	म्र्स्य	5 (केंग्ये तथा की एसपा के साथ)	गिरियां प्रसन, कीट, असि, फर्फूटी, विक्वत गीमता, जुड़े हुए बीजावरण, आपिल- जनक बाह्य पदार्थी से पूर्णतथा रहित होंगी।
बीपी	देजर्ट टुक हे	गिरियां गहरी भुनी हुई गाढ़े भूरे, गाढ़े मीले, जिस्तीदार, रंगहीन ग्रीर काले धक्जों से युक्त हो सकती है।	टुकड़ों में टूटी हुई गिरियां जो बार छिटों बाली/16 एस बस्स्यू जी छलगी/ 4.75 मि. मी. बाई एस छलगी से न निकल सकें।	5	शुस्य	<b>5(बी</b> एसपी)	गिरियां प्रसम, कीट, किति, फर्जुबी, विकृतगंधिता, जुड़े हुए बीजावरण, प्रापत्तिजनक बाह्य पदायों से पूर्णतया रहित होंगी।
ी एसर्ुी	बेजर्ट छोटे दुकड़े	निरियां गहरी भुनी हुई गाढ़े, भूरे गाढ़े नीले चित्तीदार, रंगहीन ग्रीर काले घम्बों से युक्त हो संकती है।	टुकड़ों में टूटी हुई गिरियां जी 6 खिक्रों	5	मून्य	2(छोटे हुकड़े)	गिरियां, ग्रसन, कीट, क्षति, फफूंदी, विकृत- गंधिता, जुड़े हुए बीजावरण, ग्रापत्ति- जनक बाह्य पदार्थों से पूर्णतया रहित होंगी।

`1	2	3	4	5	в	7	8
			बाली/20 एस बक्त्यू जी छलमी 2.80 मि. मी. मार्ड एस छलनी से न निकल सके।				
बीमी	हेजर्ट बट्स	माड़ी तिरछी ट्टी हुई गिरियां (समान रूप सथा घसमान रूप में) प्राकृतिक रूप में जुड़ी हुई, जित्सीवार गांधे भूरे, रंगहीम तथा गांढ़े नीले सथा काले घड्यों से युक्त हो सकती हैं।	भूष्य	5	5	7.5 (डीपी तथा कि डीएसपी के साथ)	गेरियां ग्रसन, कीट, क्षति, फफूंदी, विकृत- गंधिता जुड़े हुए बीजावरण, ग्रापिश- जनक बाद्द्य पदार्थों से पूर्णस्यारहित होंगी।
<b>धी</b> एस <sup>े</sup>	डेजर्ट टुकड़े	टूटी हुई गिरियां प्राकृतिक रूप से टूटी हुई लम्बाई में गिरियां गहरी भूनी हुई, गाढ़े भूरे, नीले पित्तीवार रंगहीन तथा काले हैं घट्यों से युक्त हो सकती है।	शून्य	5	5	5 (बीपी सथा दीएस पीके साथ)	पिरियो ग्रसन, कीट, क्षति, फर्लूची, विकृतगंधिता, जुड़े हुए बीजावरण भापसिजनक साह्य पदार्थों से पूर्णतमा रहित होगी।

एन,एल.जी.— प्रगली निम्न श्रेणी का द्योतक है। एन,एल,एस.जी.— प्रगली निम्न श्रेणी के प्राकार का द्योतक है।

छ. मुनी हुई तथा नमक लगाई हुई काजू की गिरियों के लिए विनिवैंश छ.1 कम्बी सामग्री:~-

छः 1. 1 का जू की गिरियां, जिनमें भूनी हुई, धिना भुनी हुई माजूत गिरियां या दुकड़े सिन्निलित हैं, भूनने तथा नमक लगाने के लिए प्रयोग की जाएंगी ।

छ.1.2 में किसी भी प्रकार के कीट ग्रसन, फफूंबी, वृद्धि, विकृत गंक्षिता सथा वीजावरण की उपस्थिति से पूर्णसमा रिकृत होंगी।
छ.2 तैयार करना:—

छ.2.1 भुनी हुई सथा ममक लगाई हुई काजू की गिरियो किसी भी भाष्यताप्राप्त प्रकाने वाले वर्तन में उनको मूनकर तथा ममक लगा कर या सुखाकर तैयार की जाएगी ।

छ.2.2 पकाने के लिए प्रयुक्त, वर्तन स्टैनलैस स्टील के होंगे ।
छ.3 उत्पाद प्रपेक्षाएं :---

छ.3.1 फेता तथा विकेता के बीच की गयी संविदा में यदा प्रमुबंधित श्रेणी धिभिधान तब तक धनुजात होंगे जब तक कि वे तथ्य या शुर्व्यवदेशन न करते हों।

छ.3.2 रामायनिक विश्लेषण किए जाने पर, काजू की गिरियां मूनकर तथा नमक लगाकर तैयार करने के पश्चात् मिम्नलिखित भारणी में विशित स्वीकृत स्तरों के अंतर्गत होंगी।

- (1) मुक्त बसीय धम्स---0.4% (अौलिक धम्ल के रूप में) निष्कर्षित बसा-भार।
- (2) पैराक्साइ ड मूल्य— निफर्लियत बसा का 2 एम ई की/0.02 कि. ग्राम भूनी हुई और नशक लगी हुई काजू की गिरियों में मुक्त बसा अस्ल और पैराक्साइड मूल्य के प्राक्कलम की पदांति परिशिष्ट में वी गयी निर्धारण पदांति के भनुसार होगी।

छ.3.3 परिरक्षी और सुरुचि कर्मक उसी प्रकार झमुजात होंने जिस प्रकार वे खाद्य झपसिश्रण निर्वारण अधिनियम, 1954 के झधीन सनुक्रेय है ।

#### छ.४ पैक करना :----

छ 4.1 भूमी हुई और समक लगी हुई काजू की गिरियां केता इति ययाविनिर्दिष्ट माकार भीर धन्य अपेक्षाओं क उपभोक्ता बाहानों में पैक की जाएगी।

छ. 4.2 गिरियां संविदा की प्रपेक्षानुधार पन्नी में भी पैक की खा सकेंगी ।

छ.4.3 आधान, नए, साफ और जंग रहित या ग्रम्य किसी भी प्रकार की करित से रहित होंगे।

छ.4.4 गिरियां वैक्यूम वाले श्राष्ट्रामों में या शक्तिय गैस के भाष्यम से पैक की जाएगी ।

छ.4.5 केता की पैकिंग प्रपेक्षाओं के प्रनुसार ग्राष्टान गरते (कार्ड बोर्ड) के डिब्बों में या विस्क्रमित लक्षकी की पेटियों में पैक किए आएंगे।

छ.4.6 प्रत्येक डिम्बे या पेटियों पर निम्नलिखित दशनि के लिए चिन्ह लगाए जाएंगे :---

- (क) उत्पाद का नाम,
- (ख) विनिर्माता का नाम,
- (ग) पीत परिवहन चिन्ह,
- (भ) किलोग्राम में शुद्ध और कुछ भार।

#### छ. 5 मृहर बंद करना :---

छ. 5. 1 पैक किए जाने के पश्चाल प्रत्येक परैचण को परिचय द्वारा विनिविष्ट रूप में उचित रूप से मृहर अंव किया जाएगा।

[फाइल मं. 6/9/83---ई माई एण्ड ईपी]

S.O. 782.—Whereas for the development of the export trade of India, certain proposals for subjecting Cashew Kernels to quality control and inspection prior to export were published as required by sub-rule (2) of rule 11 of the Export (Quality Control and Inspection) Rules, 1964 in the Gazette of India, Part-II, Section-3, Sub-section (ii), dated the 6th July, 1985 under the Order of the Government of India

in the Ministry of Commerce, S.O. 3091 dated the 6th July, 1985;

And whereas the objections and suggestions were invited till the 13th September, 1985, from all persons likely to be affected thereby;

And whereas the copies of the said Gazette were made available to the Public on the 19th July, 1985;

And whereas the objections and suggestions received from the public on the said draft have been considered by the Central Government;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 6 of the Export (Quality Control and Inspection) Act, 1963 (22 of 1963), the Central Government after consulting the Export Inspection Council being of opinion, that, in pursuance of the said sub-rule and in supersession of the notification of the Government of India in the Ministry of Commerce Nos. S.O. 1022 dated the 26th March, 1966 and S.O. 275 dated the 28th January, 1978, it is necessary and expedient so to do for the development of the export trade of India, hereby:—

(1) notifies that Cashew Kernels shall be subject to quality control and inspection prior to export;

- (2) recognises the specifications as set out in the Schedule to this order as the standard specifications for Cashew Kernels.
- (3) prohibits the export, in the course of international trade of such Cashew Kernels unless the same are accompanied by a certificate issued by any of the Agencies established under section 7 of the Export (Quality Control and Inspection) Act, 1963 (22 of 1963) to the effect that such Cashew Kernels conform to the standard specification and are export-worthy.
- 2. Nothing in this Order shall apply to the export of bona fide samples of Cashow Kernels by land, sea or air to prospective buyers provided that no such samples is in excess of f.o.b. value of Rs. 250.
- 3. Definitions—In this order "Cashew Kernels" mean—all types of Cashew Kernels unscorched, scorched, wholes, pieces, roasted and salted kernels.
- 4. This Order shall come into force on the date of its publication in the Official Gazette.

#### SCHEDULE

### SPECIFICATIONS FOR CASHEW KERNELS

1. General Characteristics: Cashew Kernels shall have been obtained through roasting shelling and peoling cashew nuts (Anacardium occidentale linnaeus)

#### 2. Special Characteristics :

Grade Designa- tion	Trade Name	Colour/characteristics	Count/454 gms size description	Max. Mois- ture %	Broken Max %	NLSG NLG Max. %	Remarks
1	2	3	, 4	5	6	7	8
A. CASE	IEW KERNE	LS—WHITE WHOLES					
W-180	White Wholes	White pale wory/light ash characteristic shape	170—180	5	5	5 (NLSG and SW together)	Kornels shall be completely free from infestation, insect damage, mould,
W-210	White wholes	White pale ivory/light ash characteristic shape	200—210	5	5	5 (NLSG and SW together)	rancidity adhering testa objectionable extrançous
W-240	White Wholes	White pale ivory/light ash characteristic shape	220240	5	5	5 (NLSG and SW together)	matter. Scrapped and par- tially shrivelled kernels
W-280	White Wholes	White pale ivory/light ash characteristic shape	260-280	5	5	5 (NLSG and SW together)	also permitted provided such scraping/shrivelling
W-320	White Wholes	White pale/ivory/light ash characteristic shape	300320	5	5	5 (NLSG and SW togother)	does not affect the characteristic shape of
<b>W-4</b> 00	White Wholes	White pale/ivory/light ash characteristic shape	350-400	5	5	5 (NLSG and SW together)	the kernel.
W-450	White Wholes	White pale ivory/light ash characteristic shape	400450	5		5 (NLSG and SW together)	
W-500	Wl ite Wholes	White pale ivory/light ash characteristic shape	450500	5	5	5 (NLSG and SW togother)	
B. SCOI	RCHED CAS	HEW KERNELS-WHO	LE <b>S</b>				
<b>s</b> w	Scorched Wholes	Kernels may be scor- ched/slightly darkened due to over-heating while roasting or dry- ing in drier/borma	N.A.	5	5	7.5 (NLG & SSW together)	Kornels shall be a comple- tely free from infestation, insect damage, mould, rancidity, adhering testa and objectionable extra-
<b>S</b> W-180	Scorched Wholes	Kernels may be a scor- ched/slightly darkened due to over-heating while roasting or dry- ing in drier/borma	170180		5	7.5 (NLG & SSW together)	neous matter. Scrapped and partially shrivelled kernels also permitted provided such scraping/

1	2	3	4	5	6	7	8
SW-210	Scorched Wholes	Kernels may be scor- ched/slightly darkened due to over-heating while reasting or dry- ing in drier/borma	200—210	5	5	7.5 (NLG & SSW together)	shrivelling does not affect the characteristic shape of the kernel.
SW-240	Scorched Wholes	Kernels may be scor- ched/slightly darkened due to over-heating while roasting or dry- ing in drier/borma	220—240	5	5	7.5 (NLG & SSW together)	
<b>\$W</b> -280	Scorched Wholes	Kernels may be scor- ched/slightly darkened due to over-heating while roasting or dry- ing in drier/borma	260—280	5	5	7.5 (NLG & SSW together)	
<b>SW</b> -320	Scorched wholes	Kernels may be scor- ched/slightly darkened due to over-heating while reasting or dry- ing in drier/borma	300—320	5	5	7.5 (NLG & SSW together)	
<b>S</b> W-400	Scorched wholes	Kernels may be scor- ched/slightly darkened due to over-heating while roasting or dry- ing in drier/borma	350400	5	5	7.5 (NLG & SSW together)	
<b>SW—45</b> 0	Scorched wholes	Kernels may be scor- ched/slightly darkened due to over-heating while roasting or dry- ing in drier/borma	400—450	5	5	7.5 (NLG & SSW together)	
<b>S</b> W-500	Scorched wholes	Kornels may be scor- ched/slightly darkened due to over-heating while roasting or dry- ing in drier/borma.	450500	5	5	7.5 (NLG & SSW together)	
C. DESS	ERT CASHI	EW KERNELS—WHOLE	3				
SSW	Scorched wholes second	Kernels may be over scorched, immature, shrivelled (Pririval) speckled (Karaniram) discoloured and light blue.	N.A.	5	5	7.5	Kernels shall be completely free from infestation insect damage, mould rancidity adhering tests and objectionable extra neous matter.
DW	Dossert Wholes	Kernels may be deep scorched, deep brown, deep blue speckled, discoloured and black spotted.	N.A.	5	5		Kernels shall be completely free from infestation insect damage, mould rancidity, adhering tests and objectionable extra neous matter.
D. CASI	IEW KERN	ELS (WHITE PIECES)	_				
B	Butts	White/pale ivery or light ash. Kernels broken crosswise (evenly or unevenly) naturally attached.	N.A.	5	5	5 (SB)	Kernels shall be completely free from infestation insect damage, mould rancidity, adhering tests and objectionable extra neous matter. Scrapped and partially shrivelled kernels also permitted provided such scraping shrivelling does not affect the characteristic shape

TD A D 1	r 11	-800	3(ii)1
IPAK			211111

THE GAZETTE OF INDIA: MARCH 1, 1986/PHALGUNA 10, 1907 [PART II—Sec. 3(ii)]

1	2	3	4	5	6	7	8
s	Splits	White/pale ivory or light ash, kernels, split, naturally lengthwise.	N.A.	5	5	5( <b>S</b> )	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould, rancidity, adhering testa and obejetionable extraneous matter. Scrapped and partially shrivelled kernels also permitted provided such scraping/shrivelling does not affect the characteristic shape of the kernels.
LWP	Large White pioces	White/pale ivory or light ash.	Kernels broken than two pieces and not pass- ing through 4 mesh/16 SWG sieve/4.75 mm. I.S. Sieve	5	Nii	5 (SP and SWP together)	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould, rancidity, adhering testa and objectionable extraneous matter. Scrapped and partially shrivelled kernels also permitted provided such scraping/shrivelling does not affect the characteristic shape of the kernels.
<b>SWP</b>	Small white pieces	White/pale ivory or light ash.	Broken kernels smaller than those described on LWP but not passing through 6 mesh 20 SWG-Sieve/ 2.80 mm I.S. Sieve	5	Nil	5. (SP and SWP together)	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould, rancidity, adhering testa and objectionable extraneous matter. Scrapped and partially shrivelled kornels also permitted provided such scraping/shrivelling does not affect the characteristic shape of the kernels.
вв	Baby Bits	White/pale ivory or light ash.	Plumules and broken kornels smaller than those described as SWP but not passing through a 10 mesh 24 SWG Sieve/ 1.70 mm I. S. Sieve.	5	Nil	1 % (Cashew Powder)	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould, rancidity, adhering testa and objectionable extraneous matter.
E. CA	Shew Rern	ELS—SCORCHED PIECE	S				
SB	Seprehed Butts	Kernels broken cross- wise (evenly or un- evenly) and naturally attached. Kernels may be scorched/slightly darkened due to over- heating while roasting or drying in the drier, borma.		5	5	7 . <b>5 (DB)</b> `	Kernels shall be c mpletely free from infestation, insect damage, mould, rancidity, adhering testa and objectionable extraneous matter scrapped and partially shrivelled kernels also permitted provided such scraping/shrivelling does not affect the characteristic shape of the kernel.

1	2	3	4	5	6	7	8
93	Scorched splits	Kernels split naturally lengthwise, kernels may be scorched slightly darkened due to ever heating while roasting or drying in drier/borma		5	5	7.5 (DS)	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould, rencidity, adhering tests and objectionable extraneous matter scrapped and partially shrivelled kernels also permitted provided such scrapping/shrivelling does not affect the characteristic shape of the kernel.
<b>S</b> P	Soorched Pieces	Kernels may be scorched/slightly darkened due to over heating while roasting or drying in drier/borma.	Pieces not passing through a 4 mesh. 16 SWG sieve 4.75 mm I.S. Sieve	5	Nil <sub>.</sub>	7.5 (SPS & SSP together)	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould, rencidity, adhering testa and objectionable extraneous matter scropped and partially shrivelled kernels also permitted previded such scrapping/shrivelling does not affect the characteristic shape of the kernel.
SSP	Seprehad Small Piccas	Kernels may be seen- ched/slightly darkened due to over heating while roasting or dry- ing in drier/borms.	Pieces smaller than SSP but not passing thr ugh a 6 mosh/20 SWG sieve 2 .80 mm I.S. Sieve.	5	Nil	5 (DSP)	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould, rancidity, adhering testa and objectionable extraneous matter scrapped and partially shrivelled kernels also permitted provided such scrapping/shrivelling does not affect the characteristic shape of the kernel.
F. CAS	SHEW KERN Seprechad Pieces seconds	ELS (DESSERT PIECES  Kernels may be over reprehed immuture, shrivelled (Pirival) speckled (Kuraniram) discoloured and light blue.	Rernel, broken into pieces but not passing through a 4 mesh/16 SWG Sieve 4.75 mm I. S. Sieve	,5	Nil .	7.3 (DP&DSP tagether)	Kernels shall be completely free from infestation on insect damage, mould, rancidity abdering testa and ojectionable extra- neous matter.
DP	Dossert Pieces	Kernels may be deep screeched, deep brown, deep blue, speckled discoloured and black spotted.	Kornels broken into pieces but not passing through a 4 mesh/16 SWG Sieve 4.75 mm I. S. Sieve	5	Nil	7.5 (DSP)	Kernels shall be completely free from infestation insect 'damage, mould, rancidity, adhering testa and objectionable extra- neous matter.
,5 <b>\$</b> ₽	Dossort small picces	Kornels may be deep scorched, deep brown, deep blue, speckled discoloured and black spotted.	Kernels broken into pieces but not passing through 6 mesh/ 20 SWG 2.80 I. S. Sieve	5	Nil	2 (S.n.\ler pieces)	Kernels shall be completely free from infestation insect damage, mould, rancidity adhering testa and objectionable extra- neous matter.
DΒ	Dessort Butts	Kernels broken or asswise (evenly and unevenly) naturally attached, kernels may be deep so rehed, speckled, deep brown disculputed and deep blue & black sp. ffed.	N.A.	5	5	7.5 (DP & DSP togethor)	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould, rancidity adhering testa and objectionable extraneous matter.

Q	1	1
О	T	4

1	2	3	4	5	6	7	8
D <b>S</b>	Dessert Splits	Kernels split naturally lengthwise kernels may be deep scorched, deep brown, deep blue, speckled discoloured & black spitted.	N.A.	5	5	5 (DP & DSP together)	Kernels shall be completely free from infestation insect damage, mould, rancidity, adhering testa and objections ble extraneous matter.

NLG denotes: Next lower Grade. NLGS denotes: Next Lower Size Grade.

- G. Specifications for Roasted and Salted Cashew Kernels.
- G.1 Raw Materials.
- G. 1.1 Cashew Kernels, which shall include scorched, unscorched whole or pieces shall be used for roasting and salting.
- G. 1.2 They shall be completely free from insect infestation of any kind, fungal growth, rancidity and the presence of testa.

#### G. 2 Preparation:

- G.2.1 Roasted and Salted Cashew Kernels shall be prepared by roasting the Cashew Kernels in any of the recognised cooking media and salting, or through the dry roasting and salting process.
- G. 2.2 The cooking utensils used shall be of stainless steel.
  G. 3 Product Requirements
- G. 3.1 The grade designations as stipulated in the contract between the buyer and the seller shall be allowed unless they make any misrepresentation of the facts.
- G. 3.2 The kernels, after the preparation through roasting and salting, on chemical analysis shall be within the acceptance levels shown below:—
  - Free fatty acid—0.4 per cent (As olelc) on the weight of extracted fat.
  - Peroxide value—2mep[0.02 kg. of extracted fat. The
    method of estimation of free fatty acid and peroxide
    value in roasted and salted Cashew Kernels shall
    be as per the method of determination given in the
    Appendix.
- G. 3.3 Preservatives and flavouring agents shall be permitted as admissible under the prevention of Food Adulteration Act, 1954.

#### G. 4 Packing

- G. 4.1 The roasted and salted Cashew Kernels shall be packed in consumer containers bulk tin containers of the size and other requirements as may be specified by the buyer.
- G. 4.2 The Kernel's may also be foil packed if required in the contract.
- G. 4.3 The containers shall be new, clean and free from rusting or any kind of damage.
- G. 4.4 The kernels shall be packed in the containers under vacuum or in the medium of inert gas.
- G. 4.5 The containers shall be packed in cardboard cartons or disinfested wooden cases according to the packing requirements of the buyer.
  - G. 4.6 Each carton or case shall be marked to show:
    - (a) name of the product
    - (b) name of the manufacturer
    - (c) shipping mark
    - (d) net and gross weight in kgs.

#### O. 5 Sealing

G. 5.1 Each consignment after packing shall be suitably sealed as may be specified by the Council.

[F. No. 6(9)|83-EI&EPI

- का. आ. 783.— केन्द्रीय सरकार, निर्यास (क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण) प्रधिनियम, 1963 (1963 था 22) की घारी 17 द्वारा प्रदेश गक्तियों का प्रयोग करते हुए तथा भारत सरकार के व्यक्तियम मंत्रालय की प्रधिसुषना सं. का. धा. 1023 तारीख 26 मार्च, 1966 और का. घा. 276 तारीख 28 जनकरी, 1978 थी उन बातों के सिवाय मंत्रिकारत करने हुए जिन्हें ऐसे अधिक मंग से पहले किया गया है, एतव्द्वारा निव्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात्:—
- 1 संक्षिप्त माम सथा प्रारंभ:—(1) इन नियमों का मंक्षिप्त नाम काजू की गिरियों का निर्यात (क्वालिटी निर्यन्नण अं।र निरीक्षण) नियम, 1986 है ;
  - (2) ये नियम राजपत्र में प्रकाशान की सारीस्थ की प्रवृक्त हों गे।
- 2 परिभाषाएं:---इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से शस्यचा अपेक्षित न हो :---
- (क) "भ्रधिनियम" से निर्यात (श्वालिटी नियंद्वण और निरीक्षण) श्रीधिनियम, 1963 (1963 का 22) भ्रमिप्रेत है;
  - (ख) "परिषद्" से ग्रधिनियम की धारा 3 के ग्रधीन स्थापित निर्यात निरीक्षण परिषद् ग्रमिश्रेत हैं ,
  - (ग) "प्रभिकरण" से अधिनियम की धारा 7 के अधीन मुम्बई, कलकत्ता, कोषीन, दिल्ली और मदास में स्थापित कोई भी अभिकरण प्रभिन्नेत हैं;
  - (ष) "काजू की गिरियां" से सभी प्रकार की जाजू की गिरियां भूजसी हुई, विना भुलसी हुई, साबुत, टुकड़े, भूनी हुई और ममक लगी हुई गिरियां धिभिन्नेत हैं।
- 3 बधालिटी नियंत्रण और निरोक्षण :—निर्यात के लिए धार्धावत काजू की गिरियों का निरीक्षण यह सुनिक्चित करने की दृष्टि से किया जाएगा कि काजू की गिरियां ध्रधिनियम की धारा 6 के ध्रधीन मान्यसा-प्राप्त मानक चिनिवेशों के धनुरूप है, तथा इंग नियमों से संसन्त धनुसूची में जिनिदिष्ट है, या सो,
  - (क) उपाधंध I में विनिर्दिष्ट प्रक्रिया का पालन करते हुए इस प्रयोजन के लिए मान्यताप्राप्त विनिर्देशों के इनुसार परिरुपित उत्पादन के निरीक्षण और परीक्षण के ब्राधार पर,

ਗ

(ख) यह सुनिध्यत करते हुए कि उत्पाद का प्रसरकरण उपाद्यंध-II में विनिर्दिष्ट नियंत्रण के स्तरों का पालन करते हुए प्रसंरकरण के लिभिन्न प्रक्रमों पर नियंत्रणों का प्रयोग करके किया गया है, किया जाएगा। 4 भ्रपील :--(क) ऐला कांई व्यक्ति जो उपाबंध---II के पैरा 2.7 के उपपैरा (4) तथा (5) के भ्रधीन अपने एकड़ के भ्रमुभोदन देने या उपाबंध--II के पैरा 5 के उपपैरा (4) या उपाबंध-II के पैरा 2 के उप-पैरा 5 के भ्रमुभेत निर्मात मोग्यता का प्रभाग-पत्न जारी करने के श्रिक्तिया के देशा से व्यक्तित हो सो वह ऐसे इंकार की सूचमा प्राप्त होने के पन्द्रह दिनों के भ्रीतर, केन्द्रीय सरकार द्वारा

इस प्रयोजन के लिए, नियुक्त कम से कम तीन दिन किन्तु राज्य से अनिधिक जबस्यों से गठिल संबंधित नियोधकों के पैनल के सयोजक को प्रपील कर संकंता

- (ख) दिशोषज्ञों के पैनल की कुल सदस्यता के कम से कम दो तिहार्द सदस्य व्यापार नंडल के सदस्य होंगे।
- (ग) पैनल की गणपूरित तीन से होगी ।
- (घ) धपील प्राप्त होने के 15 दिनों के भीतर निपटा दी जाएगी।

# धनुगूची

# काजू की गिरियों के लिए विनिर्देश

- 1. सामान्य विशेषताएं :----काजू की गिरियां, काजूओं को भूनकर छिलका उतारकर और छीलकर (ऐनाकडियम माधिसडेंटस लिनेधरा) से आप्त की धाएती ।
  - 2. विशिष्टि विशेषताएं :---
  - क काजू को गिरियां-सफेद साबुत :---

श्रेणा संभिधान	व्यापारि नाग	क रंग/विशेषताएं	काउंट/454 ग्राम साप विश्वरण	श्रक्षिक- तम श्राद्वेता —	टूटे <b>हु</b> टुकड़े		<b>टि</b> प्प ग
1	2	3	4	5		7	8
<b>उस्त्</b> 180	मफेद साबुत	दंत सफेद पोला/हल्का सलेटी विभोप भ्राकार	120-180	5	5	5(एनएसएसजी तथा एस <b>ड</b> ब्स्यू के साथ)	गिरिया ग्रसन, कीट, क्षति, फफूदी, विकृत गंधिता, जुड़े हुए बीजावरण, भापति- जनक बाह्य पदाशों से पूर्णसया रहित होंगी । यदि छिलन या भुरक्षाएपन से गिरी के निशेष श्राकार पर प्रभाव नहीं पड़शा है तो छिली हुई और भागतः मुखाई हुई गिरियां भी भनुमत है ।
<b>बन्द</b> पू-210	सफेद सावुत	दंत सफेद पीला/हल्का सलेटी विशेष आकार	200-210	5	5	5 (एनएलएसजी तथा एन डब्स्यू के साथ)	िरिया बसन, कीट, क्षति, फर्फूदी, थिकृत गंधिता, जुड़े हुए बीजानरण, प्रापति- जनक बाह्य पदार्थ से पूर्णातया रहित होंगी । यथि छिलन या मुरझाएपन से गिरी के विशेष प्राकार पर प्रभाव नहीं पड़ता है तो छिली हुई और भागतः भुरकाई हुई गिरियां भी ध्रनुमत हैं।
श्रद्धयू-२४०	सफेद माबुन	वत सफेद पीला/हल्का सलेटी विषेश आकार	220-240	5	5	5 (एन एलएस जी संघा एसडब्ल्यू के सांघ)	
बल्प्स्यू-280	सफेद साबुक्त	वंत सफेद पीला/हल्का ससेटी विशेष श्राकार	260-280	5 5	5	5 (एनएलएस जीतया एसडटल्यू केमाथ)	
डक्स 320	सफेव साबुत	दंस सफेद पीला/हस्का सलेटी विशेष घाकार	300-320	5	5	5 (एनएलएस जीतथा एसडब्स्यू केनाय)	

1	2	3	4	5	6	7.	8
बब्द्यू-400	मफेद सा <b>ब्</b> त	दंत सफेद पीला/हल्का स <b>ले</b> टी विशेष म्राकार	350-400	5	5	5 (गनएलएस जी तथा एसडब्स्यू के साथ)	गिरिया ग्रमन, कीट, क्षांति, फफूंबी, विकृत गंजिता, जुड़े हुए बीजावरण, भागत्ति- जनक बाह्य पदार्थों से पूर्णातया रहित होगी । यदि छिलन या मुरुझाएपन से गिरी के जिलेख भाधार पर प्रकाय नही पड़ता है तो छिली हुई और भागतः मुरुझाई हुई गिरियां भी भतुमत हैं ।
<b>बस्</b> यू-450	<b>सफेंद साबु</b> त	दंत सफेद पीला/हरूका सलेटी ़ विशेष भ्राकार	400-450	5	<b>.5</b>	5(एनएलएम जी सथा एम <b>डस्यू के</b> साथ)	
<b>बस्यू</b> -500	सफे <del>द</del> साबुत	दंत सफेद पीला/हस्का सलेटी विशेष माकार	450-500	5	5	5(एमएलएस भी सद्या एस डब्स्यू के साथ)	
मा. झुल	सी हुई काजू	की गिरियां-साबुतः					
एस डब्स्यू	भुलसी हुई साभृत	गुष्कक बोरमा में भूनने या सुखाने के समय घधिक गर्मी के कारण गिरियां झुलसी हुई/हल्की या गहरी हो सकती है ।		5	5	7.5 (एन एमजी सभा एसएस डब्स्यू के साथ)	गिरियां ग्रान, कीट, क्षति, फफूंदी, विकृत गंधिता, जुड़े हुए बीजावरण, ग्रापित- जनक बाह्य पदार्थों से पूर्णतया रहित होगी । यदि छिलन मुरझाएपन से गिरी के विशेष भाकार पर प्रभाव नहीं पड़ता है तो छिली हुई और भागतः मुरझाई हुई गिरियों भी भनुमत है ।
्सडय्स्यू-180	झुलसी हुई सा <b>बु</b> त	भुष्कक बोरमा में भूनने या सुखाने के समय घ्रधिक गर्मी के कारण गिरियां मुलसी हुई या गहरी हो स़कती हैं।	170-180	5	5	7.5 (एन एलजी तथा एस एस बब्ल्यू के साथ)	
एस डब्ल्यू-210	<b>सु</b> लसी <b>हुई</b> _ सा <b>बु</b> ल	शुष्कक कोरमा में भूनने या सुखाने के समय झधिक गर्मी के कारण गिरिया झुलसी हुई/हल्की या गहरी हो सकती है।	200-210	3	5	<ol> <li>(एन एस जी तथा एसएस डब्स्यू के साथ)</li> </ol>	
एस डब्स्यू-240	मुलसी <b>हुई</b> साबुत	शुष्कक खोरमा में भूनने या सुखाने के समय श्रविक गर्मी के कारण गिरियां झुलसी हुई/हल्की या या गहरी ≩ो सकती है ।	220-240	5	5	7.5 (एम एल एस जी और एस एस डश्स्यू के लाथ)	गिरियां ग्रसन, कीट, क्षति, फर्जूदी विकृतसंधिता, जुड़े हुए बीजाबरण, भापत्तिजनक बाह्य पदार्थों से पूर्णतया रहित होंगी यदि छिलन मुरम्राएपन से गिरी के विशेष भाकार पर प्रभाव नहीं पड़ता है तो छिली हुई और भागतः मुरमाई हुई गिरियों भी भनुमत है।
एस <b>डब्ल्यू-2</b> 80	भुससी दुई सामृत	शृष्कक योरमा में भूतने या मुखाने के समय भ्रधिक गर्मी होने के कारण गिरियां झुलसी हुई/हल्की या गहरी हो सकती है।	<b>260-28</b> 0	5	5	7.5 (एन एल एस जी और एस एस डब्ल्यू के साथ)	-
एस इष्ट्यू-320	भुलसी <b>हुई</b> साबुत	गुष्कक/बोरमा में भूनते या सुखाने के समय मधिक गर्मी के कारण गिरियां झुलसी हुई/हस्की या गहरी हो सकती है।	300-320	5	5	7.5 (एनएक एसंजी और एस एस डस्थू के साथ)	गिरियां ग्रसन, कीट, कित, फफूदी, विकृत गंधिना, जुड़े हुए बीजावरण, भागति- जनक बाह्य पदार्थों से पूर्णतया रहित होगी यदि छिलन मुरझाएपन से गिरी के विशेष माकार पर प्रभाव नही पड़ता है तो छिली हुई और भागतः मुरक्षाई हुई गिरियों भी मनुमत है।

1	2	3	4	5	6	7	8
एस डब्स्यू-400	भुनसी हुई साबुत	गुष्णक/बीरमा में भुनने या सुखाने के समय भ्रधिक गर्मी के फारण गिरियां भुलसी हुई /हल्की या गहरी हो सकती है ।	350-400	5	5	7.5 (एन एन एप जी तथा एस एस डब्ल्यू के साथ)	गिरियो ग्रथन, कीट, क्षति, फफ्ंदो, थिकुत गंधिता, जुड़े हुए वंजिबरण, आपति जनक बाह्य पदार्थों से पुर्णतया रहित होगी यदि छिलन मुरझाएपन से गिरी के विशेष श्राकार पर प्रभाव नहीं एड़ता है तो छिली हुई और भागतः मुरझाई हुई गिरियों भी मनुमस है।
<b>एस ४४</b> ०म्- 450	सुलमी <b>हुई</b> साबुत	मुष्कक /बोरमा में भूतने या सुखाने के समय श्रीक्षक गर्मी के कारण गिरियां भ्रुलसी हुई/हल्की या गहरी हो सकती है।	400-450	5	5	7.5 (एन एलएसजी तथा एस एम <b>ब</b> ल्ल्यू के साथ)	गिरियां ग्रमन, कीट, काति, फर्जूबी, विकृत गंधिता जुड़े हुए बीजाबरण, ग्रापत्तिजनक बाह्य पवार्थों से पूर्टतया रहित होगी यदि छिलन मुरझाएपण से गिरि के विकेष श्राकार पर प्रभाव महीं पड़ता है तो छित्री हुई और भागतः मुरझाई हुई गिरियां भी भनुमत है।
<b>एस डब्स्यू-</b> 500	ज्ञुलसी हुई सा <b>बु</b> त	गृष्कृक/बोरमा में भुनते या सुखाने के समय अधिक गर्भी के कारण गिरियां झुलसो हुई/हुल्की या गहरी हो सकती है ।	450-500	5	5	7.5 (एन. एस एस जी तथा एस एम डब्ल्यू के साथ)	गिरिया ग्रमन, कीट क्षति, फफ्ंदी, बिक्नुत गंक्षिता जुड़े हुए यीजावरण, क्राप्ति- जनक बाह्य पदार्थों से पूर्णतया रहित होगी यदि छिलन भुरक्षाएपन से गिरी के विशेष भाकार पर प्रभाव नहीं पहता है तो छिली और धागतः मुख्लाई हुई गिरियां भी भनुमत है।
ग. डेज	टंकाजूकी गि	रियांसाबुक्तं :					
ए स एस बन्स्य,	भुनी हुई साबुत	गिरियां ज्यादा भुनी हुई कच्ची गुरझाई हुई (पीरोदल) चिसी दार (करमोरम) रंगहीन तथा हरूको नीलो ह्यो सकती हु।	लागू न <b>र्हा</b>	5	5	7.5	गिरियां ग्रसन कोट, क्षति, फफ्रूंदी, विक्रत, गंधिता, जुड़े हुर बीवायरण, आपत्तिजनक बाह्य पदार्थी से पूर्णतथा रहित द्वीगी।
की डब्ल्स्	हेजर्ट साबुत	निरियां अधिक भुनी हुई गहरी, भूरी, गाठी नीली, विक्तीदार रंगहीन तथा कासे धक्की वाली हो सकती है।	लाग <b>ूनह</b> ीं	- 5	5	गूच्य	निरिया ग्रसन, कीट, क्षति, फर्जूदी विकृत गंधिता, जुडे द्वुए बीजानरण आपत्तिअनक वाह्य पदार्थी से पूर्णतय रहित होगी।
च. भाजू	ती गिरियां <u>(</u> स	हेद टुकड़े ) :~					
मी -	<b>ब</b> ट्स	मुकेय/पोला यंत सकेव हल्का सतेटी आई। तिरछी टूटी हुई (समान रूप या असमान) तथा प्राकृतिक रूप से जुड़ी हुई गिरियां।	लाग <b>ूनश्</b> री	5	5	5 (एसको )	गिरियो, प्रसन, कीट, कित, फर्जूदो विकृत, गंधिता, जुड़े हुए बीआवरण आपत्तिअनक <b>बाह्य</b> पदार्थों से पूर्णतय रहिन होंगरे। यदि खिनन/मुरझाएपन से भिरों के विशेष आकार पर प्रभाव नई पड़ता है तो खिनी हुई और भागत मुरझाई हुई गिरियां भी अनुसस है।
<b>. एस</b>	दुकड़े	सफेब/पोला दंती सफेद या हल्का ससेटी/प्राकृतिक रूप में लम्बाई में टूटी हुई गिरिया	लागू नर्ही	5	5	ऽ (एसएस)	गिरियो ग्रमन, कीट, स्नित, फर्फ्यू विक्वत, गोधिना, जुड़े हुए कीजाबरण आपत्तिजनक, बाह्य पदार्थों से पूर्णतय रहित होंगी। यदि किलन/मुरसाएपन गिरी के विशेष आकार पर प्रमाव नह पड़ता है तो किली हुई और भागत मुरसाई हुई गिरियां भी अनुमत है

1	2	3	4	5	G	7	8
<b>एसड</b> ब्स्यूर्यः	सफोद <i>बड़े</i> दुकड़े	सफेद/पीला वंती सफेद या हल्का सक्षेटः	गिरियां वो से अधिक दुक्त को रें दूदी दुई बीर 4 छिद्रों वाली/ 1 6एस डब्स्य जी छलनी 4.75 मि. मी. आईएस छलनी से नहीं निकल सकेंगी	5	शून्य	5 (एसएसपी सथा एगडब्स्पूपी के साथ)	गिरियां प्रसन, कीट, झिन, पर्क्दी, विक्वत, गिंधता, जुड़े हुए की जात्ररण, आपत्तिजनक, बाह्य पदार्थी से पूर्णतथा रिह्न होंगा। यदि छोलनं,मुरझाएवल से गिरी के विशेष आकार पर प्रभाव नहीं पड़ता है तो छिली हुई और भागतः मुरझाई हुई गिरियां भी अनुमत्त हैं।
<b>ए</b> स <b>बल्स्</b> यूपी	छोटे सफेद दुक¥	सफेद/पीलादंती मफेद या हरका समेटी	एल अब्ह्यूपी भे विणित से छोटी दूडा हुई गिरियां किंदु जो 6 छिन्नों 20 एस बब्द्य जो छलनीं/ 2.80 मि. मी. आईएस छ लनीं से न	5	श्रृष्य	5 (एसएसपी सथा बीबी के साथ)	गिरियां, प्रसन कीट, अति, फफ्रूंदी, विकृत, गंधिता, जुड़े हुए बीजावरण, आपत्तिजनक, बाह्य पदार्थों के पूर्णतया रहित श्रांगों । यदि खिलन/मुरक्षाएपन से गिरी के विशेष आकार पर प्रभाय नश्ली पड़ता है तो खिली हुई और भागतः मुरक्षाई हुई गिरियां भी अमुप्रत हैं।
बीबी	वेधी बिद्स	सफेब/पीसा दंती सफेब/हल्का सलेटी	एसडम्स्यूपी में विणत से छोटा टूटी हुई गिरियों और फल्मूलक जो 10 छिद्रों वाली 24 एसडम्स्यूजी छलनी/1.70 मि.मी.आई एस छलनी से न निकस सकें।	5	सून्य	1 % (काजू का पाउडर)	गिरियां ग्रसन, कीट, स्नित फंफूर्वा, विकृत गंधिता, जुड़े हुए बीजावरण, आपत्ति- जनक, बाह्य पदायीं से पूर्णतया रहित होंगी।
स्ट. का	जुकी गिरियां-	-भुने हुए दुक्षड़े :					
<b>एस</b> बी	भृते हुए बट्स	आड़ी तिरछी टूटी हुई गिरियां (समाम रूप सथा असमान रूप में) तथा प्राकृतिक रूप से जुड़ी हुई। ंगिरियां/गुष्कक/ बोरमा में भूनने या सुखाने के समय अधिक गर्मी के दौरान गिरियां भूनी हुई/ हस्की हुरे हो सकती है।	लागृनहीं	5	5		गिरिया ग्रसन, कीट, स्नित, फ्रमूबी, विकृत, गंधिता, जुड़े हुए बीजावरण, आपत्तित्रनक, बाह्य पदार्थी से पूर्णतया रहित होगी। यदि छिनत/पुरक्षाएयन से गिरों के विशेष आकार पर प्रभाव नहीं पड़ता है तो छिली हुई और भागतः मुरक्षाई हुई गिरियां भी अनुमत
एस एस	मृते हुए दुकड़े	प्राक्तितिक रूप से लम्बाई में दूटी बुई गिरिया/शुष्कका/योरमा में भूनने/सुचाने के समय अधिक गर्मी बीरान गिरियां भूनी हुई/हर्की गहरी श्री सकती है।	क्षागून <b>ही</b>	5	5	5 (कीएस)	गिरियां, धसन, कीट, धति, फर्जूबी, विश्वत, गंधिता जुड़े हुए बीआवरण, आपत्तिजनक, बाह्य पत्रायों ने पूर्णतया रहित होगी। यवि छिलन/मुख्झाएपन से गिरी के विशेष आकार पर अभाव नहीं पड़ता है तो छिली हुई और भागतः मुरझाई हुई गिरियां भी अनुभत है।

1	2	3	4	5	6	7	8
ग्मपी	भूते हुए दुकड़े	षुष्कक/बोरमा भे भूतने/मुखाने के समय अधिक गर्मी के दौरान गिरियो भूनी हुई हल्की/गहरी हो समति हैं।	दुत्तके जो 4 छित्रों वाली 16एन डक्ट्यू जी छलनी/ 4.75 मि. मो. आईएस छलमीं मे न	5	 <b>श</b> ृुम्य	5 एसपी)एस तथा एसएसपी के दाथ)	
ए सएसपी	भुने हुए छोटे द्वृषक्	शुष्कक/बोरमा में भूमने/सुखाने के समय अधिक गर्मी के दौरान गिरिया भूनी हुई हरकी/गहरी हो सकती हैं।	भुने दुकड़ें से छोटेटुकड़ें जो 6 लिटों बाली/20 एस बब्ल्यू जी छलनं12.80 मि. मी. छजनी से न निकल सकें।	5	श्रूम्प	5 (स्रेएसमी)	गिरियो ग्रसन, कीट, क्षति, फर्जूदी, विक्रत, गंधिता, जुड़े हुए बीजावरण, आपत्तिकतक, बाह्य पदार्थों से पूर्णतया रहित श्रोंगी। यदि कितन/मुरसाएपन से गिरी के विषय आकार पर प्रभाव नहीं पड़ता है तो , छिली हुई और मुरसाई हुई गिरियां भी अनुमत श्रांगी।
	ष. काजूकी	गिरिया (खराभ दुकड़ें)					
<b>ए</b> सप <b>े</b> एस	मुने हुए षटिया ट्रुफड़े		ट्कड़ों मेंट्टी हुई पिरिपा जो 4 छिद्रों जानी/16 एस डब्ट्यूजा छलनी/4.75 मि.नी. आई एस छलनी से म मिकस सके।	5	श्रून्य	7.5 (डीपी नया डाएतपी के साथ)	गिरियां प्रसन, कीट, झिति, फकूंदी, निक्रत, गंधिना, जुड़े हुग् श्रीजावरण, आपत्तिजनक बाह्य पदार्थों से पूर्णतया रहित श्रोंगी।
<b>डी</b> पी /	ने जर्ट दुक्त इ	गिरियां गहरी भुनी दुई गाड़े भूरे, गाढ़े नीले, शिक्तीदार, रंगहीन और काले घडवों से युक्त हो सकती हैं।	दुक्त्यों में दूटी हुई (मिरिया जो 4 छिप्रों बाक्षी/16 एसडब्स्यूजी छ शनीं/4.75 मि.मी आई एस छलनी से न निकल सर्खें।	5	भून्य	7.5 (डीपी तथा डोण्सर्थाके साथ)	गिरियां ग्रसन, कोट, झति, फलूंदी, विकृत, ांबिका, जुड़े हुए काजावरण, आपत्तिजनक, बाह्य पदार्थों से पूर्णतक्षा रहित होंगो ।
<b>इ</b> ीएसपी	डेजर्ट छोटे टुकड़े	निरियां गहरो भुनी हुई गाढ़े भूरे, गाढ़े ने ले, चित्तीदार, रंगहान ओर काले धड़वें से युक्त हो सकती हैं।	दुक्त हों भे दुट। हुई गिरियां जो 6 डिब्रों वाली/ 20एनडक्स्यू जी डिज्रमी 2.80 मि- मी. आईएस छनना से न	5	•		गिरियां ग्रसन, कोट, झांत, फार्न्से, विक्रन, गंधिता, जुड़े हुए वाजावरण, आपत्तिजनक, बाह्य पदार्थों से पूर्णतमा रहित होंगो ।
की की	हेजर्ट बर्स	आड़ी तिरछीं दूटी हुई िदियां (समान रूप तथा अममान रूप में) तथा प्राकृतिक रूप से जुड़ी हुई, चित्तीयार, गाहे भूरे, रंगहुन तथा गाहे नीले तथा काले धन्नों से युन्त हो सकती है।	निकल सकें। लान <b>्नेद्</b> षें )		5	5 7.5 (क्रेंपी तक्षाप्सपीके नाय)	गिरियां ग्रसन, काट, श्राति, फफूंदो, विक्रा, गंधिता, जुड़े हुए बीजातरण, आपत्तिअनक, बाह्य प्रशंशीं से पूर्णतया रहित होंगी।

1	2	3	4	5	6	7	8
<b>ड</b> ी <b>एं</b> स	<b>डे</b> जटंदुकड़	प्राष्ट्रतिक रूप से लम्बाई में दूटी हुई गिरियां गहरों मुनी हुई, गांखें मूरे, नीले जिलोबार, रंगहीन नया काले धम्बों से युक्त हो सकती हैं।	साग <b>ूनह</b> ीं	5	5	ऽ (कीपी तथा कीपसपी के साथ)	गिरियां, मरान, कोट, सित, फर्नूबो, विक्कन, गंधिता, जुड़े हुए बीजाबरण, आपत्तिसनक, जाह्य पदार्थों से पूर्णेतया रहिन श्वींगो ।
		·					·

एन एल जी:--अगर्ला निम्न श्रेणी का चोतक है। एन एल एस जी:-अगर्ला निम्न श्रेणी के आकार का चोतक है।

भुनी हुई तया नमक लगी हुई काजू की गिरियों के लिए विनिर्देश: छ.। कक्की सामग्री:---

छ.1.1 काणू को गिरियां, जिलमें विना भुनी हुई, भुनी हुई, साबुत गिरियां या दुकड़ें सम्मिनित हैं, भूनने तथा नमक लगाने के लिए प्रमोन की जाएगी।

छ. 1. 2 वे किसी भी प्रकार के कीट ग्रमन, फफूंदी वृद्धि, विकृत गींबता तथा जोजावरण की उपस्थिति से पूर्णतथा रहित होंगी। छ. 2 सैयार करना : —

छ.2.1 भुनो दुई तथा नक्क लगी हुई काजू की गिरियां किसः भी मान्यता प्राप्त प्रकाने जाले जर्तन में उनकी भूनकर तथा नमक सगाक या सुखाकर भूनकर या नमक सगाकर तैयार की जाएगी।

छ. २. २ पकाने के निर्मार पुक्त बर्तन स्टैनलैंस स्टील के होंगे। छ. ३ उत्पाद अपेकाएँ :--

छ.3.1 फेला तथा निकेता के बीच की गयी संविदा में यथा धनुबंधित श्रेणी मिमियान तब तक धनुकात होंगे जब तक कि वे तथ्यों का दुवर्यविदेशन न करते हों।

छ.3.2 रासायनिक विश्लेषण किए जाने पर, काजू की गिरियां मूनकर तथा नमक लगाकर तैयार करने के पश्चीत् नीचे विखाए गए स्वीगृत स्पर्णे के अंतर्गत होगी:—

- (1) मृज्त-वसीय भ्रम्त 0.4% (ऑलिक अम्ल के रूपमें)
   (निष्कर्षित वसा/भार पर)
- (2) पैराक्साइड मूल्य-निष्कित बसा का 2एमईपी/0.02 किलोग्नाम भुनी हुई और नमक लगी हुई काजू की गिरियों में मुक्त सभा प्रमल और पैराक्साइड मूल्य के प्राक्कलन की पछति परिशिष्ट में वी गयी निर्धारण पछति के अनुमार होगी।

छ.3.3 परिरक्षी और सुरुचिकर्मक उसी प्रकार प्रशुकात होंगे जिस प्रकार के खाद्य श्रपमिश्रण निवारण प्रधिनियम, 1954 के मधीन मनुरूप हैं।

#### **छ.** 4 पैक करना : ---

छः 4.1 भुनी हुई और समक लगी हुई काजू की गिरियां केता द्वारा यथा विनिर्दिष्ट और भ्रम्य अपेक्षाओं के शनुसार तथा उपभोक्ता भ्राधानों में एक ही भ्राकार के डिक्बों में पैक को जाएगी।

छ. 4. 2 िरिया मंत्रिया की अपेक्षातुसार पत्नी में भी पैक की जा मक्षेत्र)।

छ.4.3 आधान नए साफ और जंग रहित या ग्रन्य किसी भी प्रकार की क्षति से रहित होंगे।

छ.4.4 विरियां वैक्यूम वाले आधानों में या शक्तिय गैस के माध्यम से पैक की जाएंगी। छ.4.5 केता की पैकिंग अपेकाओं के अनुसार आधान गस्ते (कार्ड बोर्ड) के डिक्बों में या विसंकामित लकड़ी की पेटियों में पैक किए जाएंगे 1

छ.4.6 प्रत्येक बिन्ये या पेटियों पर निम्नलिखिक दर्शान के लिए चिन्ह लगाए काएंगे ।

- (क) उत्पाद का नाम,
- (ख) विनिर्माता का नाम,
- (ग) पोत परिवहन चिन्ह,
- (म) किलोग्राम में शुद्ध और कुल भार,

## छ. ५ मृहर बंद करना:----

छ. 5.1 पैक किए जाने के पश्चात् प्रत्येक परेषण को परिषद् द्वारा विनिर्दिष्ट रूप में उचित रूप से मुहुर बंद किया जाएगा।

#### परिशिष्ट

1. भुनी हुई मौर नमक लगी हुई काजू की गिरियों मे पैराक्साइक मूल के प्राक्कलन की पद्धति :

मिश्रण में 50 ग्राम काजू की गिरियां भीर पाउडर सें।

250 मि. लीटर के बाटदार याक्याकार फलास्क में बूरा सामग्री ले भीर उसमें 150 मि. लीटर क्लोरोफार्म मिलाएं। फलास्क को रात भर हिलित्र (गेंकर) में रखें। भगले दिन दूवण के अंतर्गत ममाने को बूचर फ्लास्क में छान लें। भवसेयों को फिर 100 मि. लीटर क्लोरोफार्म में मिला दें भीर दो घंटे के लिए सोकर में रखें भीर फिर छान लें संयुक्त क्लोरोफार्म भक्त 250 मि. लीटर तक मिलाएं।

निष्कर्षण का 10 मि. लीटर या लगभग 0.5 ग्राम वसा वाला यथोचित एलिकोट भाग पूर्व सुखे ग्रीर तोले गए छोटे दो बीकरों (25 मि. ली. भमता वाले) में निकाला जाए । डिम को जल बर्तन के ऊपर रखने से क्लोरोफार्म वाज्यित किया जाता है। फिर डेगाबियों को 70° में. ग्रे. वाले बैक्यूम भोवन में स्थानांतरित कर दिया जाए। बैक्यूम के भंतर्गत वाष्पीकरण एक बंटे के लिए किया जाएगा। डेगबियां बाहर निकाल ली जाएंगी भीर गोबिक में ठंडी की जाएगी भीर उन्हें तोला जाएगा। डेगबियों को फिर ग्रोबन में 30 मिनट के लिए रखा जाएगा और फिर उठा लिया जाएगा, ठंडा किया जाएगा भीर तोला जाएगा। यह प्रकिया तब तक बोहराई जाएगी जब तक कि दो परिणाम बाधक तोलों का भंतर 5 मि.ग्राम से भ्रधिक नहीं होंगी।

4 ग्राम बना बाले क्लोरोकार्म निष्कर्षण का एलिकोट 500 मि. ली. बाले डाटदार मन्याकार प्रयास्क में डाला जाएगा भौर खेलिएल ऐसिट की अनेकित माला निलाई जाएगी। इसमें से मंतृत्व पोटाणियम भायोडाईड घोल 0.5 मि.ली. निकाला जाएगा भौर घोल को कमी-कभी ठीक एक मिनट के लिए हिलाकर स्थिर रहने दिया जाएगा भौर फिर उसमें 50 मि.ली. धाअुत जल मिला लिया जाएगा। 10.1 एन सोडियम थायोमल्फेट धोर-घोरे मिलाने हुए भीर निरंतर तथा

बलपूर्बंक हिलाते द्वुए इसका अनुमापन करें। अनुमापन लगातार सब तक भारते रहीं अब तक कि उसका पीला रंग बिल्कुल सुप्त न हो जाए. एक अतिणत स्टार्च सूचक का 0.5 मि.ली. मिलाएं और अनुमापन लगातार करते रहीं जब तक कि नीला रंग मुप्त न हो जाए।

#### ट्रिप्पण :

- (1) प्रतिदिन अधिकमक का पूर्ण निर्धारण करे। पूर्ण प्रनुमापन 0.1 एन सांडियम आयोमल्केट के 0.1 मि.सी. से अधिक नहीं होगी।
- (2) अनुमापन क्रारम्भ करने से पूर्व यदि श्रोल का रंग हल्कापीला है तो उस क्रवस्था में स्टार्च सूचक मिलाया जा सकता है।
- (3) यदि अनुमापन 0.1 एन मोडियम थायोमल्फेट घोल के 0.5 मि.ली. से कम है तो 0.1 एन मोडियम बायोमल्फेट घोल का प्रयोग करने हुए निर्धारण को दोहराए।

पैराक्साइड मूल्य निम्नानुसार परिकलित किया जा सकता है। पैराक्साइड मूल्य प्रति 1000 ग्रांस बसा के प्रतुसार पैराक्साइड के मि.ली. मूल्यों के रूप में होगा.

(ए-ब्री) × एन × 1000

इरुप्

जहाँ ए = नभूने का भनुमापन

मी ≔ णून्य

एन≔धायोमल्फेटको साधारणना इक्ल्यूचपरीक्षण के लिए ती गयी वसा का भार 2. मुक्त वसा धम्ल के प्राक्कलन की प्रक्रिया :

लगभग 5 ग्राम वाले क्लोरोफार्भ के एक ऐलिकोट को तीलने वाले शक्याकार फ्लास्क में डाला आएगा । जल तापन पर क्लोरोफार्म बाध्यित किया जाएगा । क्लोरोफार्भ में अवशेष वैक्यूम श्रीयन में वैक्यूम के प्रधीन हटा पिए आएंगे । फ्लास्क को फ्लोरोफार्म रहित बसा के साथ तोला जाएगा ।

फिनोर्ल-(पथालिन का सूचक के रूप मे प्रयोग करते हुए प्रत्कोहल (आसुत) हल्के मोधियम हाईड्रोक्याइड घोल सहित निष्प्रभावित होगा। 50 मि.ली. गर्म बसा में निष्प्रभावित प्रत्कोहल सिलाई जाएगी और फ्लास्क को अच्छी तरह हिलाया जाएगा। 0.1 एन सोडियम हाई-ड्रोक्साइड सहित अनुपालन तब तक करें जब तक कि गुलाबी रंग जो 30 सेकेंड के लिए स्थिर है प्रकट मही।

टिप्पण: यदि अनुमापन 0.1 एन सोडियम हाईड्रोनसाईड कोल 0.5 मि.ली. में कम हो तो 0.02 एन सोडियम हाईड्रोनसाइड घोल प्रयुक्त करने हुए निर्धारणदोहराएं।

मुक्त वसीय भ्रम्ल की गणना निम्तानुसार की जाएशी : नले के कप में मुक्त त्रमीय भ्रम्ल प्रतिणत च्चए × एन × 28.2

डक्ट्य

अत्रां ए चमोडियम हाईड्रोक्साइड घोल का मि.लीटर एक चमोडियम हाईड्रोक्साइड घोल की सामान्यत: तथा डब्ल्य् चपीअण के लिए ली गयी बमा का भार।

उपार्वध-Т

परेप्रणानुसार निरोक्षण की प्रक्रिया

[नियम 3(क) देवाँ]

1565GI/85-6

- 1. निरीक्षण का आधार:
- (1) काज की गिरियों का निरीक्षण यह देखने की दृष्टि से शिया जाएगा कि वह केन्द्रीय सरकार, द्वारा निर्यात (क्वालिटी नियंत्रण भीर निरीक्षण) ग्रधिनियम, 1963 (1963 का 22) की धारा 6 के भ्रधीन मान्यना प्राप्त विनिर्देशों के प्रतृक्ष्य है भीर ममुखित श्रेणी भ्रभिधान लेबल लगाया गया है।
- (2) काजू की गिरियों का निर्यात करने का इच्छुक व्यक्ति स्वा-स्थ्यकर परिसरों में काजू की गिरियों को भूनकर, छिलका उतारकर, सुखाकर/ग्रीर श्रेणीकरण करके उनका परेषण इस हंग से बनाएगा कि परेषण मान्यना प्राप्त श्रेणी विनिर्वेशों में से किसी एक के धनुक्ष हो।
- (3) उपरोक्त उपनियम (2) में विनिधिष्ट रीति में काजू की गिरियो तैयार करने के परचात् निर्योगकर्ता भा. मा. 916 (नव)नतम प्रति) के अनुरूप उन्हें नए साफ सूखे और रिसन सह दिन आधानों में पैक करेगा। प्रत्येक दिन भनी प्रकार से बंद किए जाएंगे। भीर ऐसी रीति से सीन किए जाएंगे जो अभिकरण द्वारा समय-समय पर निनिधिष्ट की जाए।
- (4) टिन इसके पश्चात् श्रेणी श्रिमधान लेवलों से चिन्हित किया जाएगा भीर नालीदार तन्तु बोर्ड डिब्बों में पैक किया जाएगा । सीलबंद टिन में पैक करने के लिए प्रयुक्त नालीदार तंतु बोर्ड दोहरी तह के नालीदार तंतु बोर्ड का होगा को 25 कि. ग्राम भंतर्थन्तु के लिएभा.मा. -2771 भाग-1(नदीनतम प्रति) के श्रनुसार उचित होगा।
- (5) श्रेणी श्रमिश्रान लेक्नों का प्रयोग करने का इच्छुक निर्यात-कर्ता ऐसे लेक्नों की उपेक्षाओं की स्वीकृति श्रमिकरण के निकटतम कार्यालय से प्राप्त करेगा ।
- (6) एक डिस्में में केवल एक ही श्रेणी की काजूकी गिरियों को पैक किया जाएगा।
  - 2. निरीक्षण की प्रकिया :
- (1) काजू की गिरियों का निर्यात करने का इच्छुफ निर्यातकती निर्यात के लिए झाशयित परेषण की विशिष्टियां देते हुए झिक्करण को या उसके द्वारा इस निमित्त प्राधिकृत अभिकरण के किसी अधिकारी को झाबेदन देगा ।
- (2) उपनियम (1) के अधीन ध्रावेदन नियान के लिए लदान के ध्रारम्भ की नारीका से कम से कम सान दिन पहले (भुनी हुई तथा नमक लगी हुई काजू की गिरियों की देशा में 15 दिन पहले) दिया जाएगा ।
- (3) उप-नियम (2) में निर्मादिष्ट ग्राबंदन की प्राप्ति पर, ग्राधिकरण निर्यात निरीक्षण परिषद् द्वारा इस निमित्त समय-समय पर जारी किए गए अनुवेगों के अनुसार अपना यह समाधान करने की दृष्टि से काजू की गिरियों ने परेषण का निरीक्षण करेगा कि परेषण का उपरोक्त नियम 1.1 में निर्मादिष्ट नियमों के अनुमार श्रेणीबद्ध, लेखन तथा पैक किया गया है। निर्यातकर्ता ग्राभिकरण की ऐसा निरीक्षण करने के लिए सभी ग्रावण्यक सृषिद्याएं देगा।
- (4) यदि निरीक्षण के पश्चात् धाधकरण का यह समाधान हो जाता है कि निर्यात की जाने वाली काज़ की गिरियों का परेषण नियम (1) में बिनिर्विष्ट विनिर्वेशों की धपेक्षाओं के अनुरूप है तो वह पूचना प्राप्त होने के नात दिन के (भूनी हुई तथा नमक लगी हुई काजू की गिरियों की दशा में 15 दिनों के भीतर) यह घोषित करने वाला प्रमाण-पत्न जारी करेगा कि परेषण निर्यात योग्य है।
- (5) जब प्रभिकरण का इस प्रकार का समाधान नहीं होता है, तो वह उक्त सात दिन (भूनी हुई तथा काजू नमक लगी हुई काजू की की गिरियों की वणा में 15 दिनों की) उक्त प्रवधि के भीतर, ऐसा प्रमाण-पत्न जारी करने से इंकार कर देगा और ऐसे इंकार की सूचना उसके कारणों सहित लिखित रूप में निर्यातकर्ता को देगा।

- (6) प्रमाणन के पण्यात् भी स्रक्षितरण को परेपण की क्वालिटी मंद्रारण के किसी स्थान पर, अभिवहन के दौरान या उसके यस्तुतः लदान से पूर्व पत्तनों पर पूनः निर्धारित करने का अधिकार होगा।
- (7) यदि इनमें में किसी भी प्रक्रम पर यह पाया जाता है कि गरेगण मानक विनिर्वेशों के घनुरूप नहीं है तो मूल रूप से जारी किया गया निरीक्षण प्रमाण-पन्न वापिस लें लिया जाएगा।
  - निरीक्षण का स्थान :

इन नियमों के प्रयोजन के लिए निरीक्षण निर्यातकर्ता के उस परिसर पर किया जाएका जहां माल निरीक्षण के लिए प्रस्थापित किया जाना है, परन्तु यह जब तक कि परिसर में निरीक्षण के लिए पर्याप्त सृबि-धाएँ विश्वमान हों।

## अपायंध (∏) [नियम 3 (ख) देखें]

उत्पादन के दौरान क्यांिलटी नियंत्रण के लिए प्रसंस्करण यूनिटों द्वारा खानाए जाने वाले नियंत्रण स्तर । क्यांिलटी नियंत्रण .

श्रीभाषारण द्वारा भृतुक्षीदित केवल प्रमंस्करण पूनिटें ही निर्यात वे लिए काजू की गिरियों का प्रमंस्करण करने के पात होंगे तथा ऐसा भृतुक्षीदन प्राप्त करने के लिए एक यूनिट के पास नामे विनिर्विष्ट न्यूनशम सुविधाएं होनी चाहिएं:

## संभएक पृतिटें :

सामान्य : प्रक्षिकरण द्वारा अनुमोदित केवल संभरण यूनिटें ही निर्यात के लिए कच्ची काजू की गिरियों की प्रसंस्करण करेंगी । यूनिट में विद्यमान कीट विज्ञान संबंधी पत्लुघों के प्रति विषेक्षकर निर्देश में म्वच्छता फ्रींर स्वाम्थ्यकर दणाक्षों का न्याय निर्णयन करने घीर निर्यात के लिए काजू की गिरियों का प्रसंस्करण करने के लिए उपलब्ध म्यूनतम मुबिधाशों की पर्याप्तना का निर्धारण करने के लिए संभरक यूनिटें/ गास्था कारखाने प्रक्षिकरण द्वारा मृत्यांकन किए जाने के मधीन होंगे। संप्रक यूनिट के पास नीचे विनिर्दिष्ट न्यूनतम सुविधाएं होगी:

- 1.1 परिवेश श्रीर निर्माण: (1) यूनिटों का परिवेश प्रसंस्करण-कर्ता के वस्तुगत निर्पत्रण के अवीन है ऐसा होगा, जिसमे स्थच्छन। मंबंधी कोई समस्या नहीं होगी।
  - (2) भवत के लेड, संतोबजनक रूप में रखें आएं में।
- (3) कार्य करने वाले कक्षों को संदूषण के किसी भी जोबिय से बजाने के लिए ग्रन्छी बगा में रखा जाएगा।
- 1.2 । संस्करण क्षेत्र : (1) कच्ची गिरी के गोदास और प्रसं-स्करण कन्न इस प्रकार के होते जिसके प्रभावणाली प्रति-पिडक नवा पोक्रकदृरण संकियाएं भुविद्याएं वी जा सके।
- (१) प्रमंस्परण कदों में, कृतकों, पक्षियों तथा सजाितयों का प्रवेश रोकने के लिए व्यवस्थाएं उपगव्य होंगें।
  - (3) सभाकार्यक्षेत्रों में अक्छारोशनाहोंगी।
- (4) खाद्य उत्पादों के भंडारकरण के लिए प्रयोग किए गए केंद्र या कक्ष तथा डिब्बे उनमें पृथक और सुभिन्न होंगे, जो अखाद्य सामग्री के लिए प्रयोग फिए जाते हैं।
- (5) भभी बर्तन, द्रे, मेज की सनह, जो सामग्री के संपर्क में आती है प्रशांग से पूर्व उसके पक्काल और प्रशंग के अंतरालों के वीरास जब भा ग्रावहयक हो साफ की आएगी।
- 1.3 प्रसाधन सुविधा: (1) यूनिट में विधि के झधीन यथा अपेक्षित पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था की जाएगी। प्रगाधनों में भावृत तथा पर्याप्त पानी के प्रवाय का प्रबंध किया जाएगी।
- 1.4 कार्मिकों का स्वास्थ्य तथा स्वच्छताः (1) संयंत्र का प्रवंत्र संद्रष्ट यह सुनिश्चित करेगा कि किसी भी ऐसे व्यक्ति को जिसके कारे में यह

- जानकारी हो कि वह संचारी रोग से पीड़ित है, यूनिट के किसी भी क्षेत्र में कार्य करने की ब्रन्,मित न वी जाए।
- (2) प्रसम्करण क्षेत्र में कार्य करने वाले सभी व्यक्ति कार्य करने सभय भ्रवनी अध्यक्ति शकाई रखेंगे।
- (3) कार्यकर्ता प्रत्येक प्रमुपस्थिति के पश्चात प्रसंस्करण कक्ष में प्रकेश करने से पूर्व अपने हास धोएंगे।
- (4) प्रसंस्करण कक्ष में किसी भी रूप में तथाकू का अबाना, यूकना नथा प्रयोग प्रतिषद्ध होगा।
- 1-5 परिचहन मुविधाएं: (1) यह सुनिम्चित किया जाएगा कि पूर्व प्रसंस्कृत तथा परिकिपन उत्पादों को पैक किए जाने वाले केछों में पालिथिन के स्तर वाले/जंगरहित धासु के डिब्बों में परिवहन किया जाएगा।
- 1.6 निरीक्षण प्रक्रिया: (1) संभरक यूनिटों के निर्धारण के प्रयोधन के लिए निर्यातकर्ता परिषद् द्वारा विहित प्रोफार्मा में, संभरक यूनिटों के स्यौरे प्रभिक्षरण को लिखिन रूप में नेगा।
- (2) ऐसी सूचना प्राप्त होने पर प्रशिक्षरण के अधिकारी यूनिट में प्रमंस्करण के लिए उपलब्ध स्वच्छना तथा स्वास्थ्यकर दशाओं और सुविधाओं का स्यायनिर्णयम करने के लिए संभारण यूनिटों में जाएंगे।
- (3) यदि यह गाया जाता है कि यूनिट में इन नियमों से यहा-विनिर्विष्ट न्यूनिम मुविधाएं उपलब्ध हैं और स्वास्थ्यकर तथा स्वष्ण्यता दक्षाए संतोषजनक है ज़िर कोई संदूषण समस्या दिखाई नहीं देती है जो अभिकरण यूनिट का अनुमोदन कर देना तथा नियीन के लिए काजू की गिरियों का प्रसंस्करण करने के लिए उसे अनुजात कर देना।
- (4) यदि यह पाया जाता है कि यूनिट में न्यूनंतम स्वच्छता संबंध। और स्वास्थ्यकर दशाएं नहीं है तो प्रसंस्करणकर्ता को उस यूनिट में निर्मात के लिए काजू की गिरियों का प्रसंस्करण करने के लिए अनुजात नहीं किया जाएगा।
- (5) वह यूनिट जिसका अनुसोवन नहीं किया गया है या जिसका अनुसोवन वापिस से लिया गया है, बोवों का सुधार करने के पण्चास किर मे अनुसोवन आप्त करने के लिए नए सिरे मे श्रावेदन दे सकता है।
- (6) यवि किसी भी समय, किसी भी कारण से उत्पाद को जिनिवेंगों के अनुरूप बनाने में कठिनाई आती है या यदि श्रीभक्षरण द्वारा ऐसा निदंश विया जाता है तो श्रीभक्षरण को सूचना देकर नियप्ति के लिए उत्पाद की नियंत्रित कर दिया आएगा।
- (7) निर्यात के लिए प्रसंस्करण केवल तभी पुनः धारम्म किया जाएगा जब ग्रमिकरण उसका लिखित ग्रनुमंदिन कर दें।
- (8) भूतना, सुखाना, छिलका उनारता, श्रेणीकरण, भंडारकरण इत्यादि जैसी प्रसंस्करण प्रक्रिया यूनिट के अनुभवी कार्मिक के पर्यवेक्षणाश्रीन स्वास्थ्य-कर दकाओं में की जाएगी।
- (१) प्रसंस्करण संकियाओं, जैसे भूननः जब भः आवश्यक सकक्का जाए. अभिकरण के प्रधिकारियों की जांच के अधीन होंगे।
- 1.7 प्रसंस्करण: (1) यह सुनिष्णित किया जाएता कि आध्ययक प्रतिपीडक तथा ,पीडकहरण उपाय कालिकतः तथा अस कभी अभिकरण के अधिकारियों द्वारा सुझाव विया आए, किए जाते है।

## 2.0 पैक फरने के केन्द्र:----

भामास्य: अभिकरण द्वारा अनुमादिन पैक किए जाने वाले केन्द्र ही निर्यात के लिए काजू की गिरियों को पैक करने के पान होंगे।

2.1 ऐसे भनुमोदित पैक किए जार्न के केन्द्र केन्नल सनुमोदित संभारक यूनिटों से ही निर्यान के लिए पैक की जार्न वाली निरियों से प्राप्त करेंगे। धनुमोदन प्राप्त करने के लिए पैक करने बाले केन्द्र के पास नीच निनिधिद्धः स्यूनसम मुविधाएं होनी काहिएं।

- १ १९८० । १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० | १९८० |
- (1) भवनः स्थायो/भर्त्वस्थायी बनःबट कः होगा तथा श्रव्छा दशा म रखाजाएगा।
- (2) उस परिसर के जो प्रसंस्करणकर्ती के यस्तुनत नियंत्रण के अर्धाम है, श्रामपास किसी भी प्रकार को दलदल, कूड़े का ढेर, या पशुप्रह नेहीं होगा जो किसी भी प्रकार की सफाई की समस्याओं को उत्पन्न कर सकता है।
- (3) काम करने वाले परिसरों को संदूषण के फिली भी जोखिम से बचाने के लिए ग्रच्छी वशा में रखा जाएगा।
- 2.3 प्रसंस्करण क्षेत्र: (1) प्रसंस्करण कक्षों मे कीटाणुओं, छलकों, पक्षियों तथा राजातियों के प्रवेण का निरावण करने के लिए उपाय किए जाएंगे।
  - (2) सभी कार्य क्षेत्रों में प्रच्छी रीशनी होगी।
- (3) खाद्य उत्पादों के भंडारकरण के लिए प्रयोग फिए गए क्षेत्र या कक्ष उनसे पृथक और सुभिन्न होंगे जो अखाद्य सामग्री के लिए प्रयोग किए जाते हैं।
- (4) प्रसंस्करण फियाओं के दौरान काम करने के क्षेत्र में से अपिशब्द सामग्री शीध्र हटाई जाएगी।
- (5) सभी बर्तन, दे तथा मेज की सतह जो काजू की गिरियों के संपर्क में शाती है प्रयोग के पूर्व, उसके पण्चात् और प्रयोग के अंतरालों के दौरान जब भी ग्रावण्यकता हो साफ की जाएगी।
- (6) क्षेत्रों को भरते के लिए प्रयुक्त भभी छोटे पाझ जैसे हूँ, बाउल और बर्तन लकड़ी के धानिरिक्त संभारण सामग्री से बने होंगे सथा उनकी सतत्त्व दरारों से मुक्त होंगी।
- (7) प्रसंस्करण संक्रियाओं के दौरान काम करने के क्षेत्रों से भ्रमणिष्ट सामग्री कीच्र हटाई अप्गी।
- (8) पैकिंग/भरीई ब्रनुभाग के प्रवेश पर हाथ धोन की मुविधा जैसे हाथ धोने के पाल, तथा साबुन की मुविधा होंगी।
- 2.4 मशीनरी: (1) पैकिंग केन्द्र के पास 26" ऊचाई के बैक्यूम को निकालने के योग्य एक विटा पैक उपकरण काम कपने की श्रव्छी दशा में होगा। यैक्यूमीकरण के बैरित डिक्बों में से निकाली गयी बैक्यूम उपवर्णित करने के लिए मैज के साथ विटापैक लगीया जाएगा।
- (2) पैकिंग केन्द्र से भराई अनुभाग में वातीय बाहरी पदार्थ पूचकर्ता (पी एस एम एम) का प्रबंध किया जाएगा जो गिरियों के साथ विद्यमान बाह्य पदार्थ का पूचक करेगा। काजू की गिरियों को भरने का संपूर्ण कार्य केवल पी एस एस एस द्वारा किया जाएगा।
- (3) स्थास्थ्य दशाओं के अधीन रखे गए पैकिंग केन्द्रों में निरियों को अनुकूल रक्कने के लिए आवश्यक शीतलन सुविधाएं होंगी।
- 2.5 प्रसाधन मुविधाएं: (1) सफाई संबंधों पर्याप्त प्रसाधन सुविधाओं का प्रबंध किया जाएगा। प्रसाधनों में साबुन तथा पर्याप्त पानी का प्रबंध किया जाएगा।
- 2. 6 कर्नजिनियों का स्वास्थ्य और स्वच्छता , (i) संगते प्रबंध मंडल यह सुनिश्चित करेगा कि किला भी ऐसे व्यक्ति को जिसके बारे में यह जानकारी हो कि वह संजारी रोग से पीड़िन है, यूनिट के किसी भी क्षेत्र में काम करने की अनुनित न दी जाए।
- (2) प्रसंस्करण क्षेत्र में कार्य करने वाले सभी व्यक्ति कार्य करते. समय भूपनी भ्रत्यधिक सफाई रखेंगे।
- (3) कार्यकर्ता प्रत्येक धनुपथिति के पक्कात् प्रसंस्करण कक्ष भे प्रकेण रते से पूर्व अपने हाज जोएंगे।

- (4) प्रसंस्करण कक्ष में किसी भी रूप में तंत्राकृ का जवाना, यूकना तथा उसका प्रयोग करना प्रतिषिद्ध होगा।
  - (5) प्रसंस्करण कक्षा में खाना रखने नाले डिक्के नहीं रखे जाएँगे।

- (6) प्रबंध मंडल भराई सथा पैकिंग धनुभागों में कार्य कर पहें कर्मचारियों को स्वच्छ एप्रेन नथा हैड गियर देगा।
- 3.7 पैक करने नाले केन्द्रों का अनुसादनः (1) निर्यात करने के लिए काजू की गिरियों को पैक करने का इच्छुक प्रसंस्करणकर्ती अपने ऐसा करने के आण्य की मूचना लिखित रूप में अभिकरण द्वारा विहित प्रीफार्सी में वैगा।
- (?) ऐसी सूजना प्राप्त होने पर, श्रिभकरण के अधिकारी पैकिंग यूनिट में यह देखते के लिए आएंगे कि यूनिट में प्रमंस्करण के लिए सुविद्याएं उपलब्ध हैं।
- (3) यदि यह पाया जाता है कि यूनिट में न्यूनकम विहित सुविधाएं हैं तो पूनिट को काजू की गिरियों को निर्यात के लिए पैक करने के लिए अनुमोदित कर दिया जाएग।।
- (4) या यह पाया जाता है कि यूनित में न्यूततम विक्रित मुक्कियाएं नहीं हैं तो यूनिट को काजू की गिरियों को निर्यात के लिए पैक आरने के लिए प्रनुमोदित नहीं किया जाएता।
- (5) किसी यूनिट को दिया गथा प्रनुमीदन क्षम से कम दो मास को धविश्व की मूचना के पश्चान् निस्निलिखित कारणों से वापिस ने लिया जाएगा:---
- (i) यदि उपस्कर तथा मंगीनरः अ**श्रक्त**, काम करने कः वशा में नहों:
- (ii) यवि यूनिट के. स्वास्थ्यकर गणा मफोई संबंधा वशाएं सतीवजनक न हों:
- (iii) यदि संभरण यूनिटकी स्वन्छना तथा स्वास्थ्यकर दणा सतीय-जनक नहीं है तथा अभिकरण के अधिकारियों ने कीट विज्ञान सर्वेक्षण मे कीट ग्रमन के मामनों को देखा है;
- (iv) यदि प्रसंस्करणकर्ता ने पश्चिद द्वारा जारी किए गए नियमों के उपभंधों का प्रतिक्रभण किया है या जानवृक्षकर प्रतिक्रभण करने का प्रयस्न किया हो।
- (6) प्रसंस्करणकर्ण की अनुमोदन की पैसे वर्णपस लेके के बारे में लिखित रूप में सूचना दी जाएगी।
- (7) अब विटा पैक मणीन काम करने की विहित दशा में न हो तो युनिट में विटा पैक कार्य नहीं किया जाएगा।
- (४) यह यूनिट जिनका अनुमोदन वापिस ले लिया गया है दोकों की मुझारन के पश्चीत् फिर से अनुमोदन प्राप्त करने के लिए नए सिरे से धारेदन-पक्ष देगी।
- (9) यदि किसी भी यूनिट को किसी भी समय कारण से अवेकाओं की प्रनुक्ष्यता बनाए रखने में कोई कठिनाई हो या अभिकरण द्वारा निर्देश क्या गया हा की अभिकरण को सूचिन करने हुए निर्यान के लिए उत्पादन निर्याबन कर दिया आएगा।
- (10) निर्यात के लिए प्रसंस्करण को केवल तथी पुनः भारस्थ विध्या जाएना जब वह निजित रूप में अभिकरण द्वारा अनुमोदित कर विधा जाएना।
- 2.5 काजू की िरियों की पैंकिंग तथा भराई: (1) निर्यात के लिए काजू की गिरियों को पैक करने का इच्छुक निर्यात्मक्ती उत्पादन के बीगान क्यातिटी नियंत्रण के आपों के स्तरों का प्रयोग करते हुए इन नियमों में निर्वाट काजू की गिरियों की प्रक्रियाओं के पश्चीत् उन्हें भारतीय भानक 916 (नवीनवम प्रति) के अनुस्थ तए भाफ सूखें और रिमन सह आधारों में पैक करेगा। प्रत्येक दिन भली प्रकार से बंद किए जाएंगे और ऐसी रोति में सीलबद किए जाएंगे जो अभिकरण द्वारा समय-समय पर विनिर्दिट की जाए

- (2) दिन इसके परचात श्रेणी श्रीभधान, लेबसों से चिन्हित किया जाएगा तथा नासीधार तंतु बोर्ड के डिब्बों में पैक किया जाएगा। संलबंद डिब्बों की पैकिंग के लिए प्रयुक्त नालीदार फाइबर बोर्ड दोहरी नालीदार फाइबर बोर्ड का होगा जो भा.मा. 2771, भाग 1 (नवीनतम प्रति) के **ध**नुसार 25 किलोग्राम तक के भार के लिए उपयुक्त होगा।
- (3) श्रेणी प्रशिधान लेक्लों को प्रयोग करने का इच्छक निर्यातकर्ता ऐसे लेबलों की घपेक्षाधों की स्वीकृति घिमकरण के निकटतम कार्यालय से प्राप्त करेगा।
- (4) एक डिब्बे में केवल एक ही श्रेणी की काज की गिरियों को पैक किया जाएगा।
- 3. संयुक्त यूनिट: (1) एक संयुक्त काजू की कारखाने में जिसमें निर्यास के लिए काजू की गिरियों का प्रसंस्करण करने तथा पैक करने दोनों की सुविधाएं हैं, ब्रनुमोदन प्राप्त करने के लिए संभरक युनिट तथा पैकिंग केन्द्र की निर्धारित मुबिधाएं होनी चाहिएं। ऐसी यूनिटों के लिए एक संयक्त अनुमोदन पर्याप्त होगा ।
- 4. मभिलेखों का रखा जाना: (1) काजु की गिरियों के प्रसंस्करण पर प्रभावी नियंत्रण सुनिश्चित करने के लिए प्रसंस्करण कर्ता संबंधित परिसरों पर भावस्थक अभिलेख/रिजिस्टर रखेगा भीर यह अभिकरण के भधिकारियों को निरीक्षण के लिए अब भी भपेक्षित हो, उपलब्ध कराए आएंगे।
- 5. निरीक्षण की प्रक्रिया: (1) काजू की गिरियों के परेवण का निर्याप्त करने का इच्छक निर्यातकर्ता इस निमिन विहिन श्रोफार्मा में ग्रमिकरण को लिखित रूप में मुचना देगा श्रीर ऐसी सुचना के साथ इस ग्रामय का घोषणा-पत्न भी देगा कि काजू की गिरियों के परेषण का अधिकरण द्वारा इस संबंध में तथा विहित उत्पादन के दौरान क्वालटो नियंक्रण उपायों के स्तरों को अपनाते हुए प्रसंस्करण किया गया है।
- (2) ऐसी सूचना लवाई के लिए प्रमाण पत्न की प्राप्ति की प्रपंक्षित तारीन्द्र से कम से कम तीन कार्य दिवस पूर्व, काजू की गिरियों के उस मामले में जब प्रायोगिक परीक्षण न हो तथा पांच वर्ष पूर्व जब प्रयोग-शाला परीक्षण हों, दी जाएगी। भूनी हुई नमक लगी काज की गिरियों के मामले में ऐसी सूचना धवधि दस कार्य दिवस होगी।
- (3) ऐसी मूचना प्राप्त होने पर, यदि प्रशिकरण का समाधान हो जाता है कि निर्यात किए जाने वाला परेषण विनिविध्ट मानकों के ग्रनुरूप है तो वह नियतिकर्ता यह घोषणा करते हुए प्रमाणपत्र जारी करेगा कि परेषण नियसि योग्य है।
- (4) जब ग्रिभिकरण का इस प्रकार का समाधान नहीं होता है तो वह ऐसे प्रमाण-पत्र जारी करने से इंकार कर देगा तथा ऐसे इंकार किए जाने की सचना उसके कारणों सहित लिखित रूप में निर्यातकर्ता की देगा।
- (5) निरीक्षण के प्रयोजन के लिए भिकरण के भिक्षकारी की संयक्त भ्रभिलेखों भीर उन परिसरों तक पहुंच होगी जहां काज की गिरियां का प्रसंस्करण, पैकिंग तथा भंडारकरण किया जाता है।
- (6) प्रमाणन के पश्चाल भी भ्रभिकरण को परेषण की क्वालिटी भं बारकरण के किसी स्थान पर, अभिवत्न के दौरान या पत्तनों पर उसके वस्तुतः लवान सं पूर्व पुनः निर्धारित करने का ग्रधिकार होगा।
- (7) यदि इनमें से किसी भी प्रक्रम पर यह पाया जाता है कि परेवण मानक विनिर्देशों के धनुरूप नहीं है तो मूल रूप से जारी किया गया निरीक्षण प्रमाण पत्न बापिस ले लिया जाएगा।

[फाइल सं. 6(9)/83-ई घाई एंड ई पी] एन.एम. हरिहरन, निवेशक

पाद टिप्पण:

का. आ. 1022 और 1023 सारीख 26-2-1966

फा. आ. 2/5 तार्**ख** 28-1-1978

- S.O. 783.—In exercise of the powers conferred by section 17 of the Export (Quality Control and Inspection) Act, 1963 (22 of 1963) and in supersession of the notifications of the Government of India in the Ministry of Commerce Nos. S.O. 1023, dated the 26th March, 1966 and S.O. 276 dated the 28th January, 1978 excepts as respects things done or omitted to have been done before such supersession, the Central Government hereby makes the following namely :--
- 1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called the Export of Cashew Kernels (Quality Control and Inspection) Rules, 1986.
- (2) They shall come into force on the date of publication in the Official Gazette.
- 2. Definitions, -- In these rules, unless the context otherwise requires.
  - (a) "Act" means the Export (Quality Control Inspection) Act, 1963 (22 of 1963);
  - (b) "Council" means the Export Inspection Council established under section 3 of the Act:
  - (c) "Agency" means any one of the agencies established under section 7 of the Act at Bombay, Calcutta, Cochin, Delhi and Madras;
  - (d) "Cashew Kernels" means all type of Cashew Kernels scorched, unscorched, wholes, pieces, roasted and salted kernels.
- 3. Quality Control and Inspection,—The inspection of Cashew Kernel's intended for export shall be carried out with a view to ensure that Cashew Kernels conform to the standard specifications recognised under section 6 of the Act and specified in the schedule appended to these rules, either,
  - (a) on the basis of inspection and testing of finished products us per specifications recognised for this purpose by adopting the procedure specified in Annexure-1.

## OR

- (b) by ensuring that the product has been processed by exercising the controls at different stages of processing by following the levels of controls as specifled in Annexure-II.
- 4. Appeal.—(a) Any person aggrieved by the refusal of the Agency to accord approval for his unit under sub-paras (4) and (5) of para 2.7 of Annexure-II or to issue a certificate of exportworthiness under sub-para (4) of para 5 of Annexure-II or sub-para (5) of para 2 of Annexure-I may within fifteen days of recipt of the communication of such refusal by it, prefer an appeal to the convener of the concerned panel of experts consisting of not less than three, but not more than seven members, appointed for the purpose by the Central Government;
  - (b) atleast two-thirds of the total membership of the Panel of Experts shall consist of trade members;
  - (c) the quorum of the Panel shall be three;
  - (d) the appeal shall be disposed of within 15 days of its receipt.

## **S**CHEDULE

## SPECIFICATION FOR CASHEW KERNELS

- 1. General Characteristics: Cashow Kernels shall have been obtained through reasting shelling and peeling cashow nuts (Anacardium of accidental Cinneous)
- 2. Special characteristics

## CASHEW KERNELS-WHITE WHOLES:

Grade- designation	Trade Name	Colour/characteristics	Count/454 gms size description	Max. Mois- ture	Broken Max°/	NLSG NLG Max. %	Remarks
<u> </u>	2	3	4	5	6	7	8
W-180	White Wholes	White pale ivory/light ash characteristic	170180	5	5	5 (NLSG & SW together)	Kernels shall be completely free from infestation, in- sect damage, mould, ran-
W-210	White Wholes	White pale ivory/light ash characteristic shape	.200210	5	5	5(NLSG AND SW together)	cidity, adhering testa ob- jectionable extraneous
W-240	White wholes	White pale ivory/light ash characteristics shape	220240	5	5	5(NLSG & SW together)	matter. Scrapped and partially shrivelled kernels
<b>W-2</b> 80	White wholes	White pale ivery/light ash characterties—shape	260-280	.5	5	5(SLSG & SW together)	also permitted provided such scrapping/shrivelling
W-320	White wholes	White pale ivory/light ash characteristic shape	300320	5	5	5(NLSG & SW together)	does not affect the charac- teristic shape of the
W-400	White wholes	White pale/ivery/light ash characteristic shape	350-400	5	5	5(NLSG & SW togother)	kernels.
W-450	White Wholes	White pale ivory/light ash characteristics shape	<b>400</b> —450	5	5	5(NLSG & SW together)	
<b>W</b> -500	White Wholes	White pale ivery/light ash characteristic shape	450500	5	5	5(NLSG & SW together)	
B. SCOR	CHED CAS	HEW KERNELS - WHOLI	E <b>S</b>				
sw	Searched wholes	Kernels may be so 'rehed/ slightly darkened due to over-heating while roas- ting or drying in drier/ borma.	N.A.	5	5	7.5(NOSG & SSW together)	Kernels shall be completely free from infestation, in- sect damage, mould, rancidity, adhering tests and objectioncable extra-
SW-180	Search d wholes	Kernels may be scorched/ slightly darkened due to over-heating while roas- ting or drying in drier/ borma.	L 70180	5	5	7.5(NLSG & SSW together)	neous matter. Scrapped and partially shrivelled kernels also permitted provided such scrapping/shrivelling does not affect the characteristic shape of the kernel.
<b>SW-2</b> 10	Searched wholes	Kernels may be scorched/ slightly darkened due to over-heating while reas- ting or drying in drier/ borma.	200—210	5	5	7.5 (NLSG & SSW together)	
<b>\$W-2</b> 40	Seprehed wholes	Kernels may be scorched/ slightly darkned due to over-heating while roas- ging of drying in drie!/ borma.	220240	5	5	7.5 (NLSG & SSW together)	
SW-280	Scorched wholes	Kernels may be scorched/ slightly darkened due to over-heating while reas- ting or drying in drier/ borma.	260280	5	5	7.5 (NLSG & SSW together)	
<b>SW</b> -320	Scorched wholes	Kornels may be scorched/ slightly darkened due to over-heating while reasting or drying in drier/borma.		5	5	7.5 (NLSG & SSW togother)	

1	2	3	4	5	6	7	8
SW 400	Searched wholes	Kernels may be scorched/ slightly darkened due to over-heating while reasting or drying in drier/borma.	350—400	5	5	7.5 (NLSG & SSW together)	
<b>SW</b> -450	Scorched wholes	Kernels may be scorched/ slightly darkoned due to over-heating while roas- ting or drying in drier/ borma.	400450	5	5	7.5 (NLSG & SSW together)	
SW-500	Scorched wholes	Kernels may be searched/ slightly darkened due to over-heating while roas- ting or drying in drier/ borma.	450500	5	. 5	7.5 (NLSG & SSW together)	
C. DESS SSW	ERT CASH! Seprended wholes Seconds	EW KERNELS—WHOLES Kernels may be over scorched, immature, shrivelled (Pirival) speckled (Karaniram) discoloured and light blue.	N.A.	5	5	7.5	Karnels shall be completely free from infestation, in- sect damage, mould, rancidity, adhering testa and objectionable extra- noous matter.
DW	Descert whale	Kernels may be deep so arched, deep brown, deep blue, speckled, discoloured and black spotted.	N.A.	5	5	N.A.	Kernels shall be completely free from infestation, in- sect damage, mould, rancidity, (adhering testa and objectionable extra- neous matter.
D. CASI	Butts	ELS (WHITE PIECES)  White/pale ivery or light ash, kernels broken crosswise (evenly or unevently) naturally attached).	N.A.	5	5	5( <b>SS</b> )	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould rancidity, adhering testa and objectionable extraneous matter. Scrapped and partially shrivelled kernels also permitted provided such scrapping/shirvelling does not affect the characteristic shape of the kernels.
S	Splits	White/pale ivory or light ash, kernels split naturally length- wise.		5	5	5( <b>SS</b> )	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould rancidity, adhering testa and objectionable extraneous matter. Scrapped and partially shrivelled kernels also permitted provided such scrapping/shrivelling does not affect the characteristic shape of the kernels.
LWP	Large White Pieces	White/pale ivory or light ash  I.S. Sieve	Kernels broken than two pieces and not pass- ing through 4 mesh/16 SWG sieve/ 4.75 mm.	5	Nii	5(SP&SWP together)	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould rancidity, adhering testa and objectionable extraneous matter. Scrapped and partially shrivelled kernelsalso permitted provided such scrapping/
		1.3. 516 / 6					shrivelling does not affect the characteristic shape of the kernels.

1	2	3	4	5	6	7	<u></u>
SWP	Small White Pieces	White/pale ivory or light ash	Broken Kernels smaller than those des- oribed on LWP but not passing through 6 mesh 20 SWG Sieve/ 2.80 mm I. S. Sieve.		5	5(SPS & BB rogether)	Kernels shall be completely free from infestation, insect demage, mould rancidity, adhering testa and object onable extraneous matter. Scrapped and partially shrivelled kernels also permitted provided such scrapping shrivelling does not effect the characteristic shape of the kernels.
ВВ	Baby bits	White/pale ivory or light ash	Plumules and broken kernels smaller than those described as SWP but not passing through a 10 mesh 24 SWG Sieve/1.70 mm. I.S. Sieve.	5	Nil	1 % (Cashew powder)	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould, rancidity adhering testa and objectionable extraneous matter.
E.	CASHEW KERNI	ELS SCORCHED PIECES					
SB	Seprehed Butts	Kernels broken crosswise (evenly or unevenly) and naturally attached. Kernels may be scorched/slightly darkened due to over heating while roasting or drying in the drier/borma.	N.A.	5	5	7.5 (DB)	Kernels shall be completely free from infestation insect dumage, mould rancidity, adhering testa and objectionable extra neous matter. Scrapped and partially shrivelled kernels also permitted provided such scrapping shrivelling does not affect the characteristic shape of the kernel.
\$3	Seerchod splits	Kernels split naturally long thwise, kernels may be scorched/slightly darkened due to overheating while roasting or drying in drier/ borma	N.A.	5	5	7.5 (DS)	Kernels shall be completely free from infestation, in sect damage, mould, ran cidity, adhering testa and objectionable extraneou matter. Scraped and partially shrivelled kernel also permitted provided such scrapping/shrivelling does not affect the characteristic shape of the kernel.
SP	So yeched pieces	Kernels may be scorched slightly darkened due to overheating while roasting or drying in drier/borma.	Pieces not passing through a 4 mesh 16 SWG sieve 4.75 mm. I.S. Sieve.	5	Nil	7.5 (SPS & SSP together)	Kernies shall be completely free from infestation insect damage, mould rancidity, adhering test and objectionable extraueous matter. Scrappes and partially shrivelled kernels also permitted provided such scrapping shrivelling does no affect the characteristic shape of the kernel.

1	2	3	4	5	6	7	8
SSP	So riched small ploes	Keinels may be scorched/ slightly derkened due to eve heating while reasting or drying in drier/borms.	Pieces r-smaller than SSP but not passing through a 6 mesh/20 SWG Sieve 2.80 mm L.S. Sieve.	•	Nil	5 (DSP)	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould, rancidity, abdering testa and objection ble extraneous metter. Scrapped and partially shrivelled kernels also permitted provided such scrapping/shrivelling does not affect the characteristic shape of the kernel.
F. CASI	HEW KERNE	LS (DESERT PIECES)					
SPS	Scorched pieces seconds	Kernels may be over- scorohed immature, shrive- lled (Pirival) speckled (Karaniram) discoloured and light blue.	Kernels broken into pices but not passing through a 4 mesh/16 SWG sieve 4.75 mm. L.S. Sieve	5	Nil	7.5 (DP & DSP together)	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould, rancidity adhering testa and objectionable extra- neous matter.
DB	Dessert pieces	Kernels may be deep scorched, deepbrown deep blue, speckled, discoloured and black spotted.	Kernels broken into pieces but not passing through a 4 mesh/16 SWG sieve 4.75 mm. I.S. Sieve.	*	Nil	7.5 (DP & DSP 1 together)	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould, rancidity adhering testa and objectionable extraneous matter.
DSP	Dessert small picces	Kornels may be deep scorched, deep brown deep blue, speckled, discoloured and black spotted.	Kernels broken into picces but not passing through a 6 mesh/20 SWG 2.80 mm. I.S. Sieve	<b>.</b>	Nil	2 (smallor piec.)	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould, rancidity adhering testa and objectionable extranecus matter.
ĎВ	Dessert Butts	Kernels broken crosswise (evenly and unevenly) naturally attached kernels may be deep scorched, speckled deep brown, dis- coloured and deep blue and black spotted.	N.A.	5	5	7.5 (DP & DSP together)	Kernels shall be completely free from infestation, insect damage, mould, rancidity adhering testa and objectionable extra- neous matter.
D\$	Dessert splits	Kernels split naturally lengthwise kernels may be deep scorched, deep brown, deep blue, speckled, dis- coloured and black spotted.	N.A.	5	5	S(DP & DSP together)	Kornels shall be completely free from infestation, insect damage, mould, rancidity adhering testa and objectionable extra- neous matter.

NLG denotes :

Next Lower Grades
Next Lower Size Grade.

- G. Specifications for Roaster and Salted Cashew Kernels. G. 1 Raw Materials.
- G. 1.1 Cashew Kernels, which shall include scorched unscorched whole or pieces shall be used for roasting and sulting.
- G. 1.2 They shall be completely free from insect infestation of any kind, fungal growth, rancidity and the presence of testa.
- G. 2 Preparation:

- G. 2.1 Roasted and Salted Cashew Kernels shall be prepared by roasting and Cashew Kernels in any of the recognised cooking media and salting, or through the dry roasting and salting process.
  - G. 2.2 The cooking utensils used shall be of stainless steel.
    G. 3 Product Requirements
- G. 3.1 The grade designations as stipulated in the contract between the buyer and the seller shall be allowed unless they make any misrepresentation of the facts.

- G. 3.2 The Kernels, after the preparation through rousting and salting, on chemical analysis shall be within the acceptance levels shown below :—
  - Free (atty acid = 0.4 per cent (As oleic) on the weight of extracted fat.
  - Peroxide Value—2 m.c.p./0.02 kg of extracted Int.
     The method of estimation of free fatty acid and reroxide value in roasted and salted C.shew Kernels shall be as per the method of determination given in the Appendix.
- G. 3.3 Preservatives and flavouring agents shall be permitted as admissible under the prevention of Food Adultration Act, 1954.

#### G. 4 Packing

- G. 4.1 The roasted and safted Cashew Kernels shall be packed in consumer containers, bulk tin containers of the size and other requirements as may be specified by the buver.
- G. 4.2 The Kernels may also be foil packed if required in the contract.
- G. 4.3 The comminers shall be new, clean and free from rusting or any kind of damage.
- G. 4.4 Ther Kernels shall be packed in the containers under vacuum or in the medium of inert gas.
- G, 4.5 The containers shall be packed in cardboard cartons or disinfected wooden cases according to the packing requirements of the buyer.
  - G. 4.6 Each carton or case shall be marked to show :-
    - (a) name of the product
    - (b) name of the manufacturer
    - (c) shipping mark
    - (d) net and gross weight in kgs.

#### G. 5 Scaling

G. 5.1 Each consignment after packing shall be suitably sealed as may be specified by the Council.

#### APPENDIX

1. Procedure for estimation of peroxide value in Roasted and Salted Cashew Kernels.

Weigh 50 gms, of Cathew Kernels and Powder in Grinder.

Take the powdered material in 250 ml, stopered conical flask and add 150 ml, of chloroform, keep the flask in shakar over night. Next day the slurry is filtered in a Buchaner flask under suction. The residue is then mixed with 100 m², of chloroform and kept in a shaker for two hours and filtered. The volume of the combined chloroform extracts is than made upto 250 ml.

10 ml. each of the extract or suitable aliquot portion containing about 0.5 gm, fat is pipetted out into two previously dried and weight smaller beakers (25 ml. capacity), chloroform is evaporated off by keeping the dishes on water bath. Then the dishes are transferred to a vacuum oven maintained at 70°C. Evaporation under vacuum is carried out for one hour. Dishes are taken out, cooled in a desicator and weighed. The dishes are again kept in the oven for 30 minutes, then taken out, cooled and weighed. This process is renear until the difference between the two consecutive weighings is not more than 5 mg.

Al'quot of the chloroform extract containing about 4 gm, of fat is taken in a 600 ml, stoppered conicol flask and required quantity of clacial acetic acid 0.5 ml of saturated potassium iodide solution is piretted out into this and the solution is allowed to stand with occasional shaking for exactly one minute and then 50 ml, distilled water is added. Titrate this with 0.1N Sodium thiosulphate adding

it gradually and with constant and vigorous shaking. Titration is continued until the yellow colour has almost disappeared, 0.5 ml. of 1 per cent starch indicator is added and the titration continued until the blue colour just disappears.

#### NOTE:

- (1) Confluct Hank determination of the reagent daily. Blank nuration should not exceed 0.1 ml, or 0.1N Sodium the alphate.
- (2) If the colour of the solution is light yellow before the sort of tirition, starch indicator may be added at that stage.
- (3) If the titration is less than 0.5 ml, of 0.1N Sodium thiosulphate solution repeat the determination using 0.01N Sodium thiosulphate solution.

The perovide value may be calculated as under :-

Perovide value as milli equivalent of peroxide per 1000 g.

fat  $(A - B) \times N \times 1000$ 

w

Where: A=Titration of samples

B = Blank

N=Normality of thiosulphate

W=Weight of fat taken for test

2. Procedure for estimation of Free Fatty Acid.—An aliquot of the chloroform containing about 5 g, of fat is taken in a weighed conical dask. Chloroform is evaporated off on a water bath. Traces of chloroform is removed under vacuum in the vacuum oven. Flask is weighed with chloroform free fat.

Absolute alcohol (Distilled) is neutralised with dilute Sodium hydroxide solution using phenolphalein as indicator. To the fat 50 ml, of hot neutralised alcohol is added and the flask is shaken well. Titrate with 0.1 N Sodium hydroxide till a pink colour which is stable for 30 seconds appeared.

#### NOTE

If the titration is less than 0.5 ml, of 0.1 N Sodium hydrovide solution, repeat the determination using 0.02N Sodium hydroxide solution.

The free fatty acid may be calculated as under: Free fatty acid as oleic, percentage  $= A \times N \times 28.2$ 

w

Where A = ml of the sodium hydroxide solution solution

N = Normality of the sodium hydroxide solu-

W = Weight in gms, of fat taken for test.

## ANNEXURE—I

[Sec Rule 3(a)]

#### PROCEDURE FOR CONSIGNMENTWISE INSPECTION

- 1. Basis of inspection. (1) Inspection of Cashew Kernels shall be corried out with a view to seeing that the same conforms to the specifications recognised by the Central Government under section 6 of the Export (Quality Control and Inspection) Act. 1963 (22 of 1963) and that the proper grade designation tabel has been affixed.
- (2) Any person desiring to export Cashew Kernels shall presure a consignment of Cashew Kernels by roasting, peeling, drving and grading in hygienic premises so as to make the consignment conform to any one of the recognised grade specifications.

- (3) After preparing the cashew kernels in the monner specified in sub-rule (2) above, the exporter shall pack the same in new, clean, dry and leak-proof tin container conforming to IS:916 (latest version). Each tin shall be securely closed and sealed in such manner as may be specified by the Agency from time to time.
- (4) The tin shall thereafter be marked with grade designation lable and packed in corrugated fibre board cartons. The corrugated fibre board used for packing sealed tins shall be of double wall corrugated fibre board suitable for a mass content of 25 kgs, as per S:2771 Part-I (latest version).
- (5) Exporters intending to use grade designation labels shall contain their requirements of such labels from nearest office of the Agency.
- (6) Cashew Kernels of only one grade shall be packed in a carton.
- 2. Procedure for inspection; (1) Any exporter intending to export Cashew Kernels shall submit an application to the Agency or an officer of the Agency authorised in this behalf by the Agency, giving particulars of the consignment intended to be exported.
- (2) An application under sub-rule (1) shall be made out not less than seven days (15 days in the case of roasted and salted Cashew Kernels) before the date of commencement of loading for export,
- (3) On receipt of the application referred to in sub-rule (2) the Agency shall inspect the consignment of Cashew Kernels are per the instructions issued by the Export Inspection Council in this behalf from time to time, with a view to satisfying itself that the consignment has been graded, labelled and packed in accordance with the rules referred to in rule 1.1 above. The exporter shall provide all necessary facilities to the Agency to enable it to carry cut such inspection.
- (4) If after inspection, the Agency is satisfied that the consignment of Cashew Kernels to be exported complies with the requirements of the specifications referred to in rule 1, it shall, within seven days (15 days in the case of roasted and salted cashew kernels) of the receipt of intimution, issue a certificate declaring the consignment as exportworthy.
- (5) When the Agency is not so satisfied, it shall within the said period of seven days (15 days in the case of roasted and salted Cashew Kernels) refuse to issue such certificate and communicate such refusal to the exporter in writing along with the reasons therefor.
- (6) Subsequent to certification, the Agency shall have the right to reassess the quality of the consignment at any rince of storage, in transit, or at the ports before its actual shipment.
- (7) In the event of the consignment being found not conforming to the standard specifications at any of these stages, the certificate of inspection originally issued shall be withdrawn.
- 3. Place of Inspection:—Inspection for the nurpose of these rules shall be carried out at the premises of the exporter where the goods are offered for inspection, provided adequate facilities exist therein for inspection.

#### ANNEXURE-II

[See rule 3 (b)]

CONTROL LEVELS FOR INPROCESS QUALITY CONTROL TO BE ADOPTED BY THE PROCESSING UNITS

Quality Control.

Only processing units approved by the Agency shall be eligible for processing Cashew Kernels for export and sub-

- mit to qualify for such approval, shall have the following minimum facilities:---
- 1. Feeder Units:—General—Only feeder units approved by the Agency shall process raw cashewnuts for export. In order to adjudge the sanitary and hygicnic conditions with special reference to entomological aspects prevailing in the unit and assess the adequacy of the minimum facilities available to process Cashew Kernels for export, the feeder units branch factories shall be subjected to an evaluation by the Agency. A feeder unit shall have the minimum facilities as specified below:—
- 1.1 Surroundings and construction.—(1) The surroundings of units, which are under the physical control of the processor, shall be such as not to pose any sanitary problems.
  - (2) The building shed shall be maintained satisfactorily.
- (3) The working rooms shall be maintained in good repair to prevent any risk of infestation.
- 1.2 Processing Areas.—(1) The rawnut godowns and the processing rooms shall be such as to permit effective anti-infestation, and dis-infestation operation.
- (2) Arrangements shall be available to prevent entry of rodents birds and the like into the processing room.
  - (3) All the working areas shall be well lighted.
- (4) Areas of compartments and the containers used for the storage of edible products shall be separated and distinct from those used for inedible materials.
- (5) All the utensils, trays and table surface which come into contact with material shall be cleaned before, after and during intervals of use as often as necessary.
- 1,3 Toilet Facility.—(1) Adequate toilet facilities as required under the law shall be provided in the unit, Soap and plentiful supply of water shall be provided at the toilet.
- 1.4 Personnel health and Hygiene.—(1) Plant management shall take care to ensure that no person while known to be affected with a communicable disease is permitted to work in any area of the unit.
- (2) All persons working in the processing areas shall maintain a high degree of personal cleanliness while on duty.
- (3) The workers shall wash their hands before entering the processing room after each absence.
- (4) Chewing, spilling and use of tobacco in any form shall be prohibited in the processing rooms.
- 1.5 Transportation facilities.—(1) It shall be ensured that pre-processed and finished products are transported to the packing centres only in polythene laminated non-rusting metallic container.
- 1.6 Procedure of Inspection.—(1) For the purpose of assessment of feeder units, the exporter shall inform the Agency in writing, in the proforma prescribed by the Council, the details of the feeder units.
- (2) On receipt of such information, the Agency officers, shall visit the feeder units in order to adjudge the sanitary and hygienic conditions and facilities for processing available in the unit.
- (3) If the unit is found to have the minimum facilities as specified in these rules and the hygienic and sanitary conditions are satisfactory and no infestation problems noticed, the Agency shall approve the unit and permit it to carry out processing of Cashew Kernels for export.
- (4) If the unit is found not have the minimum sanitary and hygienic conditions, the processor shall not be allowed to process Cashew Kernels for export in that unit,
- (5) A unit which is not approved or whose approval has been withdrawn may after rectifying the defects, make fresh application to the Agency for getting fresh approval.

- (6) If, at any time, there is any difficulty in maintaining the conformity of the product to the specification for any reason or if so directed by the Agency, production for export shall be suspended under intimation to the Agency.
- (7) The processing for export shall be resumed only after the same is approved by the Agency in writing.
- (8) The processing operations such as roasting, drying, peeling, grading, storage etc. shall be carried out in hygienic conditions under the supervision of experienced personnel of the unit.
- (9) The processing operations such as roasting shall be subjected to check by the Agency officers as often as found necessary.
- 1.7 Processing.—(1) It shall be ensured that necessary anti-infestation and dis-infestation measures are carried out periodically and, as and when suggested by the Agency officers.
- 2.0 Packing Centre:—General , Only packing centres approved by the Agency shall be eligible for packing Cashew Keinels for export.
- 2.1 Such approved packing centres shall obtain kernels for packing for export from approved feeder units only. A packing centre to qualify for approval shall have minimum facilities as specified below;
- 2.2 Surroundings, Construction and layout;—(1) The building shall be of permanent/semi-permanent construction and kept in good repair.
- (2) The surroundings which are under the physical control of the processor shall not have any swamps, dumps or animal housing nearby which might pose any sanitary problems.
- (3) The working premises shall be kept in good repair to prevent any risk of infestation,
- 2.3 Processing areas.—(1) Measures shall be adopted to protect against entry of insects, rodents, birds and the like into the processing rooms.
  - (2) All the working areas shall be well lighted.
- (3) Areas or compartments used for the storage of edible products shall be separate and distinct from those used for inedible materials.
- (4) Waste material shall be frequently removed from the working areas during processing operations,
- (5) All the utensils, trays and table surface which come in contact with Cashew Kernels—shall be cleaned before, after and during intervals of use as often as necessary.
- (6) All small receptables like trays, bowls, and usensils used in filling areas shall be of non-corrodicle materials other than wood, and shall also have smooth surface from crevices.
- (7) Rejected materials shall be frequently removed from the working areas during processing operation.
- (8) Hand washing facility such as wash basin and soap shall be provided at the entrance to the packing/filling section.
- 2.4 Machinary.—(1) The packing centre shall have a vitapack equipment in good working condition capable of drawing a vacuum of 26" Hg. The vitapack shall be fitted with a guage to indicate the vacuum drawn from the tins during vacuumisation.
- (2) The packing centre shall be provided with a pneumatic foreign matter segregator (PFMS) in the filling section to segregate any foreign matter that may be present with the kernels. The entire filling operations of Cashew Kernels shall be done only through PFMS.
- (3) The packing centre shall have necessary cooling facilities for conditioning the kernels, maintained under hygienic conditions.

- 2.5 Toilet Facility.—(1) Adequate toilet facilities of sanitary type shall be provided. Soap and plentiful supply of water shall be provided at the toilets.
- 2.6 Personnel Health and Hygiene.—(1) Plant management shall take care to ensure that no person while known to be affected with a communicable disease is permitted to work in any area of the unit.
- (2) All persons working in the processing area shall maintain a high degree of personal cleanliness while on duty.
- (3) The workers shall wash their hands before entering the processing rooms after each absence.
- (4) Chewing, spitting and use of tobacco in any form shall be prohibited in the processing rooms.
  - (5) Lunch boxes shall not be kept in the processing rooms.
- (6) The management shall provide clean approna and head gears to the employee working in the filling and packing section.
- 2.7 Approval of packing centre.—(1) A processor intending to pack Cashew Kernels for export shall inform his intention to do so in writing, in the proforma prescribed by the Agency in this behalf.
- (2) On receipt of such information, the Agency officers shall visit the packing unit in order to adjudge the facilities for processing available in the unit.
- (3) If the unit is found to have the minimum prescribed facilities, the unit shall be approved to pack Cashew Kernels for export.
- (4) If the unit is found not to have the minimum prescribed facilities, the unit shall not be approved to pack Cashew Kernels for export.
- (5) The approval so accorded shall be withdrawn in respect of unit for the following reasons, after giving a notice of minimum period of two months.
  - (i) If the equipments and machinery are not in good working condition;
  - (ii) If the sanitary and hygienic conditions of the unit are not satisfactory;
  - (iii) If the sanitary and hygienic conditions of the feeder unit are not satisfactory and cases of infestation have been reported in the entomological survey by the Agency officers;
  - (iv) If the processor has voilated or deliberately attempted to violate the provision of the rules issued by the Council.
- (6) Such withdrawal of approval shall be intimated in writing to the processor.
- (7) No vitapacking work shall be undertaken in the unit, when the vitapack machine is not in the prescribed working condition.
- (8) A unit, whose approval has been withdrawn, may, after rectifying the defects, take a fresh application to the Agency for obtaining fresh approval.
- (9) If at any time, there is any difficulty for unit in maintaining the conformity to the requirements for any reason or if directed by the Agency, production for export shall be suspended under intimation to the Agency.
- (10) The processing for export shall be resumed only after the same is approved by the Agency in writing.
- 2.8 Filling and packing Cashew Kernels.—(1) An exporter intending to pack Cashew Kernels for export shall after preparing the Cashew Kernels in this behalf specified in these rules exercising the levels of inprocess quality control measures shall pack the same in new, clean, dry and leak-proof tin containers conforming to IS.916 (Latest version). Each tin shall be securely closed and sealed in such manner as may be specified by the Agency from time to time.

------

(2) The tins shall, thereafter, be marked with grade designation labels and packed in corrugated fibre board cartons. The corrugated fibre board used for packing scaled tins shall be double wall corrugated fibre board suitable for mass content of 25 kgs. as per IS:2771-Part-I (Latest Version).

- (3) Exporters intending to use grade designation labels shall obtain their requirements of such labels from the nearest office of the Agency.
- (4) Cashew Kernels of only one grade shall be packed in a carton.
- 3. Composite Unit.—(1) A composite Cashew factory having facilities for both processing and packing of Cashew Kernels for export shall have the prescribed facilities of the feeder units and the packing centre to be eligible for approval. For such units, a composite approval will be sufficient.
- 4. Maintenance of records.—(1) Necessary records/registers shall be maintained by the processor at the respective premises in order to ensure effective control of the processing of Cashew Kernels and these shall be made available to the Agency officers for inspection as and when required.
- 5. Procedure of Inspection.—(1) An exporter intending to export a consignment of Cashew Kernels shall give intimation to the Agency in writing in the proforma prescribed in this behalf and submit alongwith such intimation a declaration to the effect that the consignment of Cashew Kernels has been processed adopting the levels of in-process quality control measures as prescribed by the Agency in this regard.
- (2) Such intimation shall reach the Agency office not less than three working days prior to the required date of receipt of certificate for shipments in the case of Cashew Kernels involving no laboratory tests and five working days when laboratory tests are involved. In the case of roastedl salted Cashew Kernels such notice period shall be ten working days.
- (3) On receipt of such intimation, if the Agency is satisfied that the consignment to be exported complies with the specified standards, it shall issue a certificate to the exporter declaring the consignment exportworthy.
- (4) When the Agency is not so satisfied, it shall refuse to issue such certificate and communicate such refusal in writing to the exporter alongwith the reasons therefor.
- (5) For the purpose of inspection, the Agency officer shall have access to relevant records and 'premises where processing, packing and storage of Cashew Kernels are carried out'.
- (6) Subsequent to certification, the Agency shall have the right to reassess the quality of the consignment at any place of storage, while in transit or at the ports before its actual shipment.
- (7) In the event of the consignment being found not conforming to the standard specifications at any of these stages, the certificate of inspection originally issued shall be withdrawn.

[F. No. 6(9)[83-EI&EP] N. S. HARIHARAN, Director

#### Foot Note:

- S.O. 1022 and 1023 dated 26-2-1966.
- S.O. 275 dated 28-1-1978.

## मुख्य नियंत्रक, आधात-नियंति का कार्यालय

नर्र दिवल; 21 मन्यर , 1986

#### धादेश

का. ब्रा. 7812—में उन्हर्गणनल याम्य्टर नेटबर्फ (इन्हिंग) प्रा. ित., एपं-43, साउब एक्पंट्यन, नई दिल्ली-49 की गायन बीमा भाड़ा मुरूप की संनक्ष्म यूनी के प्रभूगार अमरीका से शायेदन की अपनी बिदेशी मुद्रा बचन के बंतर्गन पित्रपत मान्य का प्राथान करने के लिए 21,14,200/भ्यम् (बीबीस सान्ध जीवह हजार है। सी ६, मान्न (श्रमगीका डालर 21,7689) मूल्य का एक श्रायान लाइसेंस सं. पी./सं. जी/ 2086340, दिनांक 23-3-83 विका गया था।

- 2 फर्म ने अब उक्त याइनेंस की अनुलिप सीमा णुरक प्रयोजन प्रति जारी करने का इस धाक्षार पर आवेदन निका है कि यह भी प्रवस्त सी, पालम के पान पंजीकृत करवाने के बाद नहा बांकिक रूप के 17,22,185/-ए. मुल्य का उपसार करने के बाद, खो गई है ।
- 3 याने नर्क के समर्थन में शायंदन ने 1935—98 ती आमत-नियति जिसाबिधि पुरनक के प्रथ्याय-2, पैरा 86 में यथा प्रपेशित एक णाप पत्न बाखिन किता है। मैं, तदनुसार, संबुद्ध हूं कि पार्टी कारा आसाथ लाइसेंस सं. पीं, सी जी/2036310 दिनांक 23-3-83 की सून साम शुक्त प्रायोजन प्रति खो गई है। यथा समाधित आयात नियंवण आदेश 1955, दिनांक 7-12-1955 को उप धारा (9 सी) सी के अंतर्गन प्रदेस अधिकारों का प्रयाग करते हुए भें, इन्हर्र्सणनल कम्प्यूटर नेटब्स (इन्हिया) प्रा. लि., नई दिन्की को जारी की गई आयात लाइसेंस सं. पी./सी जी/2086310 दिनांक 23-3-83 की उसत मूल सीमा शुक्क प्रायोजन प्रति की एतद्द्रारा स्ट्रंड किया जाता है।
- 4. फर्म को उ≆त लाउमेंय की श्रतुलिय सीमा शुरूक प्रायोजन प्रति को श्राम से जारी किया जा रहा है।

[मि. सं. 1960/82/6/भाई एन एस ए/मी जी.~4] पान बैंक, उप मुख्य नियंत्रक, मायात-नियांत . क्रते मुख्य नियंत्रक, भाषात-नियांत

(Office of the Chief Controller of Imports & Exports)

New Delhi, the 24th January, 1986

## ORDER

- S.O. 784.—M/s. International Computer Networks (India) Pvt. Ltd., F-43, South Extension, New Delhi-49 were granted an import licence No. P[CG]2086340 dated 23-3-83 for import of CIG, as per list attached for c.i.f. value of Rs. 24.14,200 (Rupees Twenty four Lakhs fourteen thousand and two hundred only) (US S 247689) from USA under applicant's own foreign exchange savings abroad.
- 2. The firm has applied for issue of Duplicate Customs purposes copy of above mentioned licence on the ground that the same has been lost after having been registered with CWC, Palam and utilized partly i.e. Rs. 17,22,184.
- 3. In support of the contention, the licensee has filed an affidavit as required in para 86 of Chapter II of Hand Book of Import-Export Procedures 1958—88. I am accordingly satisfied that the original customs purposes copy of Import Licence No. P[CG]2086340 dt. 23-3-83 has been lust by the party. In exercise of the power conferred under subclause 9(cc) of the Import Control Order, 1955 dt. 7-12-1985 as amended the sail original customs purposes copy of Import licence No. P[CG]2086340 dated 23-3-83 issued to M/s. International Computer Networks (India) Pvt. Ltd., New Delhi is here by cancelled.
- 4. A duplicate customs purposes copy of the said licence is being issued to the firm separately.
  - [F. No. 1960|82|6|INSA|CG. IV]
    PAUL BECK, Dy. Chief Controller of Imports & Exports
    for Chief Controller of Imports & Exports

नई विल्ती, 11 फरवरी, 1986

#### भादेश

का. था. 785—श्रीमती मनोरमा भटनागर, एग-54, येटर है नाज-1, नई दिल्ली-110013 की इसुन्नू नैभिनी अंग्र-कार 4 डीर संग्रन 4 सिनिन्दर द्वीलन 1500 यार एच द्वी द्वीलन संग्रन कार के श्रायात तरने के लिए केवल 66,500/- चपए के सूच्य का एक सीमा सूच्य निहासी गर्माट स. पी/जै/3052070, दिनांक 15-7-1985 टिपा गया था। यावेचन ने नीमा यूच्य निहासी प्रसिट की अनुलिप प्रति जारी करने के लिए इस प्राधार पर अवदेशन किया है कि मूल सीमा यूच्य निहासी प्रसिट स्थानामन्त्रभूम हा गई है। याने यह भी उरलेख किया ग्या है कि मूल सीमा यूच्य निहासी प्रसिट को किया गया है कि मूल सीमा यूच्य निहासी प्रसिट को किया गया यूच्य देन निहासी प्रसिट के मूल सीमा यूच्य का विल्कुल भी संस्कृपोजन नहीं किया गया है।

2. प्रथमे तर्ज के सामर्थन में लाइसेंसधारी ने उपर्युक्त त्यायिक प्राधिक करों के सम्मुख विदियन प्रपंथ लेकर एक प्राध्य पत्र दाखिल किया है। तदनुसार, में संतुष्ट हूं कि सीमा णुल्क निकासी परिमट से. पी. जैं। 3052070, दिनांक 15-7-85 की मूल प्रति क्रानेदेख होता खो गई है। समय-समय पर यथासंगोधिन अधिक (नियंत्रण) आदेश, 1955 दिनाफ 7-12-35 के उन बंड 9 (मा मा) के अस्तर्भन प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए श्रामती मनोरमा भटनागर को दिए गए उचन सीमा शुल्क लिकासी परिमट सं. पी. जें/3052070 दिनोंक 15-7-85 की मूल प्रति को एनदहारा रह किया जाता है।

3. पार्टी को सोगा शुक्ता निकामी परिभट को अनुलिप प्रति को ब्रतन से जारो किया ना रहा है।

> [फाइल नं. ए/बी-21/85-86/वी एल एग/3115] एन. एस. कृत्यान्ति, उम मुख्य नियंत्रक, प्रत्यात-निर्यात कृते मुख्य नियंत्रक, प्रायाद-निर्यात ।

## New Delhi, the 11th February, 1986 ORDER

S.O. 785.—Mrs. Manorama Bhatnagar, S-54, Greater Kailash-I. New Delhi-110048, was granted a Customs Clearance Permit No. P/J/3052070 dated 15th July, 1985 for Rs. 66,500 only for import of Isuzu Gemini R-Car 4 door Scdan 4 Cylinder Diesel 1500 RHD Deluxe Model Car. The applicant has applied for issue of Duplicate copy of the above mentioned Customs Clearance Permit on the ground that the original CCP has been misplaced lost. It has further been stated that the original CCP was not registered with any Customs authority and such the value of the CCP has not been utilised at all.

- 2. In sepport of her contention, the licensee has filed an affidavit duly sworn before appropriate judicial authority. I am accordingly satisfied that the original CCP No. P/J/3052070 dated 15th July, 1985 has been lost by the applicant. In exercise of the powers conferred under Sub-Clause 9(cc) of the Import (Control) Order, 1955 dated 7th December, 1955 as amended from time to time, the said original CCP No. P/J/3052070 dated 15th July, 1985 issued to Mrs. Manorma Bhatnagar.
- 3. A duplicate copy of the Customs Clearance Permit is being issued to the party separately.

[F. No. A/B-21/85-86/BLS/3115]
N. S. KRISHNAMURTHY, Dy. Chief Controller of Imports & Exports for Chief Controller of Imports & Exports.

... -- -- -- -- -- -- -- (संयुक्तः मुद्दप नियंत्रक स्राथाण-निर्मात नार्यालय) (तन्द्रीय साक्ष्मेंन कोव)

सर्व दिल्ली, उ. सबस्बर, १५५७ (गिरस्की आदेश)

का. ब्रा. 7५६०-सर्वयी नोहारिका ध्लेड्डोनिका प्राक्ष्मिट सिमिटेड वी-75 में 79 भीर नी-31. नेम्डर-VI नीएडा नाम्नलेस (जिला गानियाबाद) यू.पी. की एक ब्रामान लाइसँग ग. पी/एम्/1961265 दिनाफ 2-7-81 का 6,23,376/- म. के निए श्रायान नीति 1984-56 में प्रवेत्तिका अन्य श्राप्त की मधी के आगान के प्रधान दिवस गया है।

आवेदक पर्न के उन कथन के समर्थन में बब एक एएए-एव आगात-नियान की कार्यानिय पुलिच्या 1985—88 के पैरा 86 के अनर्धन यस्तुत किया है। जिसमें उन्होंने कहा है कि उनन लाइगेप की चर्टम अयोजन कार्या सहारक सीमा प्रमाण, नई बिचनों के 10न पंजीनन कराने के दश्यार धार योगिया रूप है 3,76,930/- क. की बहाना राणि उपगोग करन के प्रमान कहाँ खो गए है:

हर्माकीर कमस्य प्रयोगन आगी तकामा राणि ए (३,७०,५३०/- नी करने के निम्न अमेरिन हैं।

ग्रन. ग्रामान-व्यापार नियत्रण ग्रादेश 1955 दि. २-12-55 (सथा संजीभित) की वारा ७ (डि.) में पदन्त यधिकारियों का प्रयोग करते हुए में उपयोक्त लाइसेंस में. पी. रींग. 1960266 दि. 2-7-84 की मृत कस्टरा प्रयोजन कार्या की परिस्त करते का ब्रादेश देता हो।

श्रावंदक की प्रार्थना पर यात प्राप्तान-निर्मान की कार्य विधि पुस्तिका 1985-88 के पैना 86 की श्रमुलार उत्तत आह्वसेंस मा पी/एस 1960266 कि. 2-7-84 की कस्टम प्रयोजन कार्यो की अनुलिपि (जूरोकेट कार्यो) जारी करने पर विवार किया जायेगा।

[सं. यू-मी/प्रतमं/प्रथि/ 5/ए एम- 8 र/एम्- 1/मी एल ए/ 2541-50] एम. एल. चीर्ान, उप मृख्यं नियंत्रक श्रामात-निर्योत कृते संयुक्त मृख्यं नियंत्रक, श्रामात-निर्यात

(Office of the Jt. Chief Controller of Imports & Exports)

New Delhi, the 5th November, 1985 CANCELLATION ORDER

S.O. 786.—M./s. Niharika Flectronics Pvt., Ltd. B-76 to 79 and B-35, Sector VI. Noida Complex. (Dist. Chaziabad) LIP, was granted an import licence No. P;Si1960266 dated 2-7-84 for Rs. 6.27,376 for import of items of Appendix 3-A and 4-A of Import Policy for 1984-85, required for manufacture of Colour Television sets.

The applicant has filed an affidavit as required under para 86 of Hand Book of Import & Export Procedure, 1985-88 wherein they have stated that the Custom Purpose Copy of the above licence has been lost after having been registered with the Asstt. Collector of Customs, New Delhi and utilised partly leaving a balance of Rs. 3,76,830.

A duplicate Custom Purpose Copy is required by the firm to cover the balance value of Rs. 3,76,830.

In exercise of the powers conferred on me under subclause 9(d) in the Import Trade Control Order, 1955 date 17-1255 as amended upto date, I cancel the Customs Purpose of the above licence.

The applicant (licencecy is now being issued duplicate Customs Purpose Copy of import licence No. P|S|1960266 dt. 2-7-84 for Rs. 6,23,376 in accordance with the provision of paragraph 86 of Hand Book of Import Export Procedure. 1985—88.

[No. UP/others/Prop./5|AM-85|AU.I|CLA|2541 to 50 S L. CHOHAN, Dy. Chief Controller of Imports & Exports.

for Jt. Chief Controller of Imports & Exports.

## लाख और नागरिक पर्ति मंत्रालय

(नागरिक पूर्ति विभाग)

भारतीय मानक संस्था

नई दिल्ली, 3 फरवरी, 1986

का. ग्रा. 787 --- भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन चिन्ह) विनियम 1955 के विनियम (7) के उपविनियम (3) के प्रनुसार भारतीय मानक संस्था हारा अधिमूचित किया जाता है कि बनस्पति की प्रति इकाई मृहर लगाने की फीस अनुसूची में दिये गये स्थीनों के अनुसार निर्धारित की गई है। यह फीस 1985-10-01 से लागु होगी:

v	ন	Ħ	=
~	٠.	ч	- 1

कम सं.	उत्पाद/उत्पाद की श्रेणी	तत्संबंधी भारतीय मानक की संख्या और शीर्ष	क प्रति एकाई	मुहर लगाने की फीम
1	2	3	4	5
1.	बनस्पनि	IS: 10633-1983 बनस्पति की विणिष्टि	एक टन	20.00 ሚ.
	and many on the second of the second second of the second			[सं. मी एम डी/13: 10]

## MINISTRY OF FOOD AND CIVIL SUPPLIES

(Department of Civil Supplies)

#### INDIAN STANDARDS INSTITUTION

New Delhi, the 3rd February, 1986

S.O. 787, In pursuance of sub-regulation (3) of regulation of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Regulations, 1955, the Indian Standards Institution, hereby, notifies that the marking fee per unit for Vanaspeti details of which are given in the Schedule hereto annexed, has been determined and the fee shall come into firce with effect from 198;-10-01.

#### THE SCHEDULE

SI. Product/Class of Product No.	No. and Title of Relevant Indian Standard	Unit	Marking fee per unit
1 2	3	4	. 5
1. Vanaspati	IS:10633-1983 Specification for Vanaspati.	One Tonne	Rs. 20.00
و در کار مساوی و وی در در ویست و به در باشد است و بیش به ویست و بیش در باشد و بیش و بیش و بیش و بیش و بیش و بیش		~	

[No. CMD/13:10]

का.ब्रा. 788.--भारसीय मानक संस्था (प्रमाणन विन्ह) विनियम 1955 के नियम 4 के उपनियम (1) के ब्रनुसार भारसीय मानक संस्था द्वारा ब्रधि-सचित किया जाता है कि को मानक जिन्ह उसके डिवारन, शास्त्रिक विवरण तथा तस्तंबद्या भारतीय मानक के शीर्षक महित नीचे ब्रानुमुणी में विया गया है. बह निर्धारित कर दिया गया है।

यह भारतीय मानक संस्था/प्रमाणन जिल्ह/प्रधिनियम 1952 और इसके प्रधीन बने नियमो तथा विनियमों के निश्मित्त 1985-10-01 से लाग होगा: श्चनुमूची

उत्पाद/उत्पाद की थेणी । तस्त्रंबंधी भारतीय मानक की संख्या और वीर्षक । मानक चिन्ह की विज्ञानन और शास्त्रिक विवरण मानक चिन्ह का डिजाइन ५ म ŧi. 1 5 IS: 10633-1983 बनस्पति की विशिष्टि मारतीय मानक संस्था का मोनोपाम, जिसमे बनस्पति "ISI" अक्षर होते हैं स्तन्म (2) में दिखाई गई निश्चित गेली और परस्पर सम्बद्ध प्रनुपात में तैयार फिया गा है। डिजाइन में निर्देशन के धनुसार उसके ऊपर भारतीय मानक संस्था तया नीचे "वनस्पति" मन्द अंकित है ।

[संख्या सी एम श्री/13:9]

बी.एन. निह, अपर महानिदेशक

S O. 788.—In pursuance, of sub-rule (1) of rule 4 of the Indian Standards Institution (Certification Marks Rules, 1955 the Indian Standards Institution, hereby, notifies that the Standard Mark, design of which together with the verbal description of the design and the title of the relevant Indian Standard is given in the Schedule here to annexed, has been specified.

This standerd Mark for the purpose of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Act, 1952 and the Rules and Regulations framed the reunder, shall come into force with effect from 1985-10-10;

## THE SCHEDULE

SI. No.	Design of the Standard Mark	Product/Class of Product	No, and Title of the Relevant Indian Standard	Verbal description of the design of the Standard Mark
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1. IS	: 10633	Vanaspāti	IS:10633,1983 -Specification for Vanaspati.	The monegram of the Indian Standards Institution, consisting of letters 'ISI', drawn in the exact style and relative proportions as indicated in Col. (2); the number of the Indian Standard being superscribed on the top side and the words 'VANASPATI' being subscribed under the bettom side of the monegram as indicated in the design.

(1)

29.

30.

31.

32.

33.

(2)

0103212

0103313

0103414

0103515

0113316

[No. CMD/13:9] B. N. SINGH, Addl. Director General

(3)

1986-03-31

1986-03-31

1986-03-31

1986-03-31

1986-03-31

का. झा.	789समय	समय पर	संगोधित	भारतीय	मानक
संस्था (प्रभाणन	चिह्न) विनिय	म 1955 र	हे विनियम	s के <b>उ</b> पवि	निय म
(1) के भनुसार					
है कि जिन 48				में दिए गर	र हैं.
उनका भ्रमील,	1985 में नी	करण विश्वा	जासा है।		

 -
ч і

					1 200-03-34
	<b>ग्र</b> मुस्थी		34.	0115623	1986-03-31
			<b>3</b> 5.	0122721	1,986-03-15
त्रम संख्या	सी एम /एस	बैध : सम	36.	0123420	1986-03-31
क्रम सच्या	•	4 W . 14	37.	0133928	1986-03-31
	<b>संद</b> धा		38.	0140824	1986-03-31
7.5	(a)	(3)	39.	0153833	1986-04-15
(1)		(3)	40.	0158540	1985-06-30
1.	0000707	1986-03-31	41.	0165941	1986-03-31
2.	0015013	1986-04-30	42.	0166034	1986-03-31
3.	0017017	1986-03-31	43.	0166943	1986-04-15
4.	0017118	1986-03-31	44.	0178041	1986-04-15
5.	0017219	1986-03-31	45.	0187244	1986 03-31
6.	0017421	1986-03-31	46,	0187648	1986-03-15
7.	0039128	1986-03-31	47.	0187749	1985-03-31
8.	0039229	1986-03-31	48.	0191538	1986-03-31
9.	0039330	1986-03-31	49.	0193441	1985-03-31
10.	0039635	1986-03-31	50.	0194343	1986-03-31
11.	0039835	1986-03-31	51.	0194544	1986-03-31
12.	0042117	1986-03-31	52.	0194645	1986-03-31
13.	0042218	1986-03-31	53.	0195243	1986-03-31
14.	0051522	1986-03-31	54.	0195748	1986-04-30
15.	0057534	1986-03-31	55.	0200311	1986-01-31
16.	0057635	1986-03-31	56.	0210011	1985-04-30
17.	0060826	1986-03-31	5 <b>7</b> .	0225226	1986 02 15
18.	0060927	1986-03-31	58.	0228939	1986-03-15
19.	0061929	1986-03-31	59.	0230522	1 <b>9</b> 86-03-31
20.	0062527	1986-03-31	60.	0231726	1986-03-31
21.	0067133	1986-03-31	61.	0233528	1986-03-31
22.	0077843	1986-03-31	62.	0241628	1986-03-31
23.	0102109	1986-03-31	63.	0246335	1986-03-31
24.	0102210	1986-03-31	64.	0247539	1986-03-31
25.	0102311	1986-03-31	65.	0251126	1986-04-15
26.	0102412	1986-03-31	66.	0262030	1986-03-31
27.	0102816	1986-03-31	67.	0262131	1986-03-31
26.	0103111	1986-03-31	68.	0263133	1986-03-31

(1)	(2)	(3)	(i)	(2)	(3)
69.	0263234	1986 03 31	135.	0510619	1986-03-15
70.	0270635		136.	0513534	1986-03-31
		1985-10-31	137.	0514536	1986-04-15
71.	01.76849	1986-03-31	138.	0517138	1986 64-15
72.	0276950	1986-03-31	139.	0522030	1986-03-31
73.	0277447	1986-03-31	140.	0522131	1986-03-31
74.	0796552	1986-03-31	141.	0522232	1986-03-31
75.	03/00416	1986-03-31	142.	0522333	1986-03-31
76.	0301418	1986-03-31	143.	0522434	1986-03-31
77.	0208533	1986-03-31	144.	0526139	1986-03-31
78.	0342019	1986-03-31		0536344	1986-03-31
79.	0324329	1986-03-31	145.		1986-03-31
80,	0034433	1986-03-31	146	. 0537045	•
81.	0335738	1986-03-15	147.	0546044	1986-03-31
82.	0336336	1986-03-15	148.	0559558	1986-03-31
83.	0336242	1986-03-31	149.	0569258	1986-02-15
84.	0338138	1986-(14-15	150.	0580347	1986-04-15
85.	0340630		151.	0584557	1985-10-31
		1986-03-31	152.	0589163	1986-02-15
86.	0344436	1986-02-15	153.	0590552	1986-02-15
87.	0349345	1986-03-31	154.	0590653	1986-02-15
88.	0349446	1986-03-31	155.	0591655	1986-02-28
89.	0359146	1986-03-31	. 156.	0593659	1986-02-28
90.	0371742	1986-03-31	157.	0597465	1986-03-31
91.	0373039	1986-02-28	158.	0597070	1986-03-31
92.	0373645	1986-03-15	159.	0599570	1986-03-15
93.	0374647	1986-03-15			1986-03-15
94.	0375245	1986-03-31	160.	0599671	
<b>9</b> 5.	0376449	1986-03-31	161.	0599772	1986-03-15
96.	0376550	1986-03-31	1.62.	0600731	1986-03-15
97.	0.76954	1986-03-31	163.	0601430	1986-03-31
98.	0377148	1986-03-31	164.	0602028	1986-03-31
99.	0377350	1986-03-31	165.	0602533	1986-04-30
100.	0377451		166.	0602634	1986-04-20
	0177552	1986-03-31	167.	0602836	1986-03-31
101.		1986-03-31	168.	0603131	1986-03-31
102.	0377956	1986-03-31	169.	0603535	1986-06-30
103.	0382242	1986-04-30	170.	0603939	1986-04-15
104.	0382343	1986-04-30	171.	0604052	1986-04-15
105.	0382545	1986-04-30	1 <b>72.</b>	0604436	1986-04-30
106.	0387959	1986-04-15	173.	0604638	1986-03-31
107.	0394855	1986-03-31	174.	0606137	1986-04-30
108.	0403729	1985-09-30			1986-04 30
109.	0419845	1986-03-31	175.	0607240	1986-04-30
110.	0422733	1986-02-28	176.	0611736	
111.	0425032	1986-04-30	177.	0613235	1986-03-31
112.	0426741	1986-03-31	178.	0651243	1986-04-3 <sub>0</sub>
113.	0428644	1986-03-31	179,	0672554	1986-01-31
114.	0428947	1986-03-31	180.	0675560	1986-03-31
15.	0429646	1986-04-15	181.	0680654	1986-03-15
116.	0430025	1986-04-15	182.	0682153	1986-03-15
17.	0430023		183.	0682254	1986-03-31
117-	0430328	1986-04-15	184.	0683256	1986-03-15
		1986-04-15	185.	0683860	1986-03-15
119.	0431734	1986-04-15	186.	0683862	1986-03-15
120.	0436441	1986-05-15	187.	0684965	1986-03-15
21.	0457247	1986-03-31	188.	0685765	1986-03-31
22.	0457954	1986-04-15	189.	0696969	1986-03-31
23	0486456	1986 <b>0</b> 4 1 <i>5</i>	190.	0687264	1986-03-31
124.	0490147	1986 02-28	191,	0687486	1986-03-31
25.	0490548	1986-02-28	192.	0688286	1986-03-31
126.	0490649	1986-02-28			
127.	0492350	1985-12-31	193.	0689268	1986-03-31
128.	0493554	1986-04-30	194.	0689571	1986-04-30
129.	0498059	1986-03-31	195.	0689672	1986-03-31
130.	0504432		196.	0689773	1986-04-15
		1986-04-30	197.	0690859	1986-04-30
31.	0509644	1986-04-15	198.	0690960	1986-04-30
132.	0509745	1986-03-31	199.	0691053	1986-04-30
133 <b>.</b> 134.	0510023	1936-04-15	200.	0692156	1986-03-31
	0510124	1986-04-15	201.	0693562	1986-04-15

.)	(2)	(3)	(1)	(2)	(3)
202.	0694867	1986-04-15	270.	0864563	1985-04-3
03.	0697368	1986-04-15	271.	0866365	1986-04-3
)4.	0708953	1986-03-31	272.	0867771	1986-03-3
05.	0711134	1986-04-15	273.	0670255	1986-03-3
)6.	0716750	1986-03-31	274.	0895473	1986-03-3
)7.	0736958	1986-04-15	275.	0896879	1986-01-1
08.	0737455	1985-11-30 1986-03-31	276.	0897477	1986-01-1
09. 10.	0741850	1986-02-15	277.	0909963	1985-11-1
11.	0750649 0752249	1986-02-13	278.	0912750	1986-03-1
12.	0752855	1986-02-15	279.	0926155	1985-08-1
13.	0758459	1986-02-13	280.	0927561	1986-03-1
14.	0758059	1986-02-28	281. 282.	0930954	1986-01-1
15.	0758968	1986-03-31	282.	0947163 0948872	1986-02-2
16.	0763759	1986-03-31	284.	0950657	1986-03- 1986-03-
17,	0765157	1986-03-31	285.	0953562	1986-03-
18.	0765864	1986-04-30	285. 286.	0953865	1986-03-
19.	0766462	1986-03-31	287.	0954160	1986-03-
20.	0766664	1986-03-31	288.	0954665	1986-03-
21.	0768668	1986-04-15	289.	0954766	1986-03-3
22.	0768769	1986-04-15	290.	0954968	1986-03-
23.	0769770	1986-04-15	291.	0955061	1986-03-
24.	0772053	1986-04-30	292.	0955263	1986-03-
25.	0772457	1986-04-30	293.	0955364	1986-03-
26.	0774158	1986-05-15	294.	0956366	198y-03-
27.	0779370	1086-01-31	295.	0956467	1986-03-
28.	0794164	1986-08-31	296.	0957873	1986-03-
29.	0739568	1986-01-31	297.	0957974	1986-03-
30.	0795166	1985-08-31	298.	0958168	1986-03-
31.	0820341	· 1986-04-15	299.	0960054	1986-04-
32.	0821444	1986-04-15	300.	0960660	1986-08-
33.	0827456	1986-04-30	301.	0961056	1986-04-
34.	0836861	1986-02-28	302.	0961258	1986-03-
35.	0840549	1986-08-31	303.	0961359	1986-03-
36.	0842351	1986-03-15	304.	0961460	1986-04-
37.	0842654	1986-03-15	305.	0961965	1986-04-
38.	0846460	1986-03-31	306.	0962260	1986-08-
39.	0846864	1986-04-15	307.	0962361	1986-04-
40.	0848060	1986-03-31	308.	0962563	1986-04-
41.	0848464	1986-03-31	309.	0963565	1986-04-
42.	0849365	1986-03-31	310.	0964163	1986-04-
43.	0849769	1986-03-31	311.	0971059	1985-05-
44.	0850146	1986-03-31	312.	0979883	1986-07-
45.	0850249	1986-03-15	313.	1001512	1986-03-
46.	0851150	1986-03-31	314.	1026831	1986-03-
47.	0851251	1986-03-31 1986-03-31	315.	1039941	1986-02-
48.	0851352	1986-03-31 1986-03-31	316.	1040017	1985-09-
49.	0851655 0852657	1986-04-15	317.	1040118	1986-03-
50.	0852359	1986-04-15	318.	1041019	1986-03- 1986-03-
251.	0853558	1986-03-31	319.	1041221	
.52. .53.	0853659	1986-04-15	320.	1041827	1986-03- 1986-03-
:53. :54	0853661	1986-04-15	321. 322.	1042930 1045027	1986-03-
.54 !55.	0853962	1986-03-31	322. 323.	1046635	1986-03-
.55. 56.	0856261	1986-04-15	323. 324.	1047536	1986-03
50. 57.	0856362	1986-04-15	324. 325.	1048437	1985-04
57. 58.	0859772	1986-04-15	325. 326.	1050424	1986-03
.50. .59.	0859873	1986-04-15	320. 327.	1050525	1986-03
.59. .60.	0860454	1986-04-15	327. 328.	1051850	1986-03
261.	0860555	1986-04-15	329.	1054634	1986-03
262.	0860656	1986-04-15	329. 330.	1055151	1986-03
262. 263.	0660858	1986-04-15	330. 331.	1056840	1986-03
264.	0861961	1986-04-15	331. 332.	1057034	1986-03
265.	0862256	1986-04-15	332. 333.	1057236	1986-03
266.	0862862	1986-04-15	333. 334.	0157436	1986-03
	0863056	1986-04-15			
267. 268.	0863258	1986-04-15	335.	1058541	1986-03

930	1111	JAZETTE OF INDIA: MARCHI,	.1,2,00, 1, 11,1,1	20011110, 170	TAKI II—BEC. 34.
(1)	(2)	(3)	(1)	(2)	(3)
337.	1060025	1986-03-31	404	1181439	1986-04-30
338.	1060124	1986-03-31	404. 405.	1181742	1986-04-30 1986-04-30
339.	1060225	1986-03-31	405. 406.	1181944	1986-04-30
340.	1060326	1986-03-31	407.	1187350	1985-05-15
341.	1060427	1986-03-31			
342.	1060528	1986-03-31	408.	1235537	1985-09-15
345.	1060730	1986-03-31	409.	1255543	1985-12-31
344.	1062330	1986-04-15	410.	1263946	1986-01-15
345.	1062653	9186-04-15	411.	1264645	1986-01-15 1 <b>9</b> 86-01-15
346.	1063029	1986-03-15	412.	1266144	
347.	1063332	1986-04-15	413.	1267550	1986-01-31
348.	1063938	1986-04-15	414.	1276854	1986-02-15
349.	1064334	1986-04-15	415.	1279355	1986-02-28
350.	1064538	1986-04-15	416.	1279557	1986-02-28
351.	1065033	1986-04-15	417.	1279658	1986-02-28
352.	1068140	1986-04-15	418.	1281544	1 <b>9</b> 86-02-2 <b>8</b> 1 <b>9</b> 86-02-2 <b>8</b>
353,	1071432	1986-03-31	419. 420.	1283952	1986-02-28
354,	1071533	1986-04-30		1284045 1284247	1986-03-15
355.	1072737	1986-04-30	421.		1986-03-15
356.	1074135	1086-03-31	422.	1284651	1986-03-15 1986-03-15
357,	1083136	1986-04-30	423,	1285249	
358.	1085039	1986-05-31	424.	1285451	1986-03-15
359	1088550	1985-06-15	425.	1285552	1986-03-15
360.	1119434	1986-04-15	426.	1285855	1986-03-15
361	1119838	1985-09-30	427.	1286352	1986-03-15
362,	1132729	1985-11-30	428.	1287455	1986-03-15
363.	1133428	1985-11-30	429,	1290949	1986-03-15
364.	1134834	1985-11-30	430.	1291042	1986-03-31 1986-03-31
365.	1133432	1985-11-30	431.	1291143	1986-03-31
366.	1150630	1986-01-31	432.	1291648	1986-03-31
367.	1150731	1986-01-31	433.	1291 <b>7</b> 49 12918 <b>5</b> 0	1986-03-31
368.	1153333	1986-02-15	434. 435.	1291830	1986-03-31 1986-03-31
369.	1155842	1986-02-15	435. 436.	1292145	1986-03-31
370.	1156137	1986-03-31	436. 437.	1292549	1986-03-31
371.	1156339	1986-02-15		1292549	1986-03-31
372.	1156541	1986-02-15	438. 439.	1292751	1986-03-31
373.	1156642	1986-02-15	439. 440.	1293147	1986-03-31
374.	1156844	1986-02-15	440. 441.	1293450	1986-03-31
375.	1161130	1986-02-15	442.	1093753	1986-03-31
376.	1161837	1986-02- <b>28</b>	443.	1294048	1986-03-31
377.	1163033	1986-02-28	444.	1294250	1986-03-31
378.	1163740	1986-02-28	445.	1294553	1986-03-15
379.	1163942	1986-02-28	446.	1295555	1986-03-31
380.	1165744	1986-02-28	447.	1295656	1986-03-31
381	1166342	1986-02-28	448.	1296052	1986-06-30
382.	1166443	1986-02-28	449.	1296355	1986-03-31
383.	1167041	1986-02-28	450.	1296658	1986-03-31
384.	1168043	1986-03-15	451.	1296759	1986-03-31
385.	1168144	1986-03-15	452.	1296860	1986-03-31
386.	1168851	1986-03-15	453.	1296961	1986-03-31
387.	1171739	1986-03-15	454.	1-97155	1986-03-31
388.	1172842	1986-03-31	455.	1 <b>2</b> 97256	1986-03-31
389.	1174139	1986-03-15	456.	1297357	1986-03-31
390.	1174442	1986-03-31	457.	1297458	1986-03-31
391.	1174644	1986-03-31	458.	1297559	1986-03-31
392.	1175141	1986-03-31	459.	1297660	1986-03-31
393. 394.	11 <b>7</b> 5343 11 <b>7</b> 5646	1986-05-15	460.	1298157	1986-03-31
394. 395.	1175747	1986-03-31	461.	1298359	1986-03-31
		1986-03-31	462.	1298561	1986-03-31
396.	1175949	1986-09-30	463.	1298965	1986-03-31
397. 398.	1176244 1176446	1986-04-15	464.	1299058	1286-03-31
399.	1176749	1986-03-15 1086-04-15	465.	1299664	1986-03-31
400.	1177044	1986-04-15	466.	1299967	1986-03-15
400. 401.	1180437	1986-04-15	467.	1300017	1986-03-15
401.	1180437	1986-04-15	468.	1300926	1986-04-15
403.	1181338	1986-0 <b>4</b> -30 1986-04-30	469,	1301019	1986-04-15
<del>-:</del>	1101330	1200-04-30		·	

(1)	(2)	(3)	(1)	(2)	(3)
470.	1301120	1986-04-51	23.	0102109	1986-03-31
471.	1301322	1986-04-15	24.	0102210	1986- <del>0</del> 3-31
<b>47</b> 2.	1301423	1 <b>9</b> 86-04-15	25.	0102311	1986-03-31
473.	1301524	1986-04-15	26.	0102412	1986-03-31
<b>47</b> 4.	1301625	1986-04-15	27.	0102816	1986-03-31
475.	1301827	1986-04-15	28.	0103111	1986-03-31
476.	1301928	1986-04-15	29.	0!03212	1986-03-31
477.	1302021	1986-04-15	30.	0103313	1986-03-31
478.	1302625	1986-04-15	31.	0103414	1986-03-31
479.	1302627	1986-04-15	32.	0103515	1986-03-31
480.	1302930	1986-09-15	33.	0113316	1986-03-31
481.	1303023	1986-04-15	34.	0115623	1986-03-31
482.	1303225	1986-04-15	35.	0122721	1986-03-15
483.	1303730	1986-04-31	36.	0123420	1986-03-31
484	1303831	1986-04-15	37.	0133928	1986-03-31
485.	1304025	1986-04-15	38.	0140824	1986-03-31
486.	1304126	1986-03-31	39.	0153833	1986-04-15
487.	1304227	1986-04-15	40.	0158540	1985-06-30
488.	1304530	1986-09-30	41.	0165941	1986-03-31
489.	1334631	1986-04-15	<b>4</b> 2.	0166034	1986-03-31
490.	1304833	1986 <del>-04</del> -15	43.	0166943	1986-0 <b>4-</b> 1 <b>5</b>
491.	1305229	1986-04-15	44.	0178041	1986-04-15
492.	1305936	1986-04-30	45.	0187244	1986-03-31
493.	1306433	1986-04-30	<b>4</b> 6.	0187648	1986-03-15
494.	1307132	1986-04-30	47.	0187749	1985-03-31
495.	1307334	<b>1986-04-30</b>	48.	0191538	1986-03-31
496.	1309035	1986-08-31	49.	0193441	1986-03-31
		, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	70	0194342	1986-03-31
	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	•_1	ου.		
		[सं. सी. एम. की. / 13: 12]	50. 51.		1986-03-31
		[सं. सी. एम. की. / 13: 12] वी. एन. सिंह, अपर महानिवेशक	50. 51. 52.	0194544 0194645	1986-03-31 1986-03-31
	O 780 - In nu	वी. एन. सिंह, अपर महानिवेशक	51. 52.	0194544	1986-03-31
		बी. एन, सिंह, अपर महानिषेशक suance of sub-regulation (1) of	51. 52. 53.	0194544 0194645 0195243	1986-03-31 1986-03-31
Rogul	lation 8 of the Ind	बी. एत. सिंह, अपर महानिषेशक suance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification	51. 52. 53. 54.	0194544 0194645 0195243 0195748	1986-03-31 1986-03-31 1986-04-30
Regul Mark	lation 8 of the Indi (s) Regulations 195	बी. एत. सिंह, अपर महानिषेशक suance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Cortification 55, as amended from time to time, the	51. 52. 53. 54. 55.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311	1986-03-31 1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31
Rogui Mark Indiai	lation 8 of the Indi is) Regulations 195 n Standards Institu	बं। एत सिंह, अपर महानिषेशक suance of sub-regulation (I) of an Standards Institution (Certification is, as amended from time to time, the ttion, hereby, notifies that 496 licences,	51. 52. 53. 54. 55. 55.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311	1986-03-31 1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31
Rogul Mark India: partic	lation 8 of the Indi is) Regulations 195 in Standards Institu culars of which a	बं। एत सिंह, अपर महानिषेशक suance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification is, as amended from time to time, the attion, hereby, notifies that 496 licences, tro given in the following Schedule,	51. 52. 53. 54. 55.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311	1986-03-31 1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30
Rogul Mark India: partic	lation 8 of the Indi is) Regulations 195 in Standards Institu culars of which a	बं। एत सिंह, अपर महानिषेशक suance of sub-regulation (I) of an Standards Institution (Certification is, as amended from time to time, the ttion, hereby, notifies that 496 licences,	51. 52. 53. 54. 55. 55.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011	1986-03-31 1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31
Rogul Mark India: partic	lation 8 of the Indi is) Regulations 195 in Standards Institu culars of which a	बं। एत सिंह, अपर महानिषेशक suance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification is, as amended from time to time, the ation, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, ing the month of April 1985:	51. 52. 53. 54. 55. 55. 56. 57.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226	1986-03-31 1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15
Rogul Mark India: partic	lation 8 of the Indi is) Regulations 195 in Standards Institu culars of which a	बं। एत सिंह, अपर महानिषेशक suance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification is, as amended from time to time, the attion, hereby, notifies that 496 licences, tro given in the following Schedule,	51. 52. 53. 54. 55. 55. 56. 57.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939	1986-03-31 1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-15
Regul Mark Indian partic have	lation 8 of the Indies) Regulations 193 in Standards Institution and the color of which a been renewed duri	बं। एत सिंह, अपर महानिषेशक suance of sub-regulation (I) of an Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the ttion, hereby, notifies that 496 licences, tre given in the following Schedule, ing the month of April 1985:	51. 52. 53. 54. 55. 55. 56. 57. 58.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522	1986-03-31 1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-15
Regul Mark Indian partic have	lation 8 of the Indi is) Regulations 195 in Standards Institu culars of which a	बं। एत सिंह, अपर महानिषेशक suance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification is, as amended from time to time, the ation, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, ing the month of April 1985:	51. 52. 53. 54. 55. 55. 56. 57. 58. 59.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628	1986-03-31 1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-15 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have l	lation 8 of the Indies) Regulations 193 in Standards Institution and the color of which a been renewed duri	बं। एत सिंह, अपर महानिषेशक suance of sub-regulation (I) of an Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the ttion, hereby, notifies that 496 licences, tre given in the following Schedule, ing the month of April 1985:	51. 52. 53. 54. 55. 55. 56. 57. 58. 59. 60.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528	1986-03-31 1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-15 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have l	lation 8 of the Indies) Regulations 19:  n Standards Instituted and the standards of which a been renewed during CM/L No.	बं. एक. सिंह, अपर महानिषेशक resuance of sub-regulation (1) of ian Standards Institution (Certification is, as amended from time to time, the ution, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, ing the month of April 1985: SCHEDULE Valid upto	51. 52. 53. 54. 55. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628	1986-03-31 1986-04-30 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have l	lation 8 of the Indies) Regulations 193 in Standards Institution and the color of which a been renewed duri	बं। एत सिंह, अपर महानिषेशक suance of sub-regulation (I) of an Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the ttion, hereby, notifies that 496 licences, tre given in the following Schedule, ing the month of April 1985:	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335	1986-03-31 1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-15 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have Sl. No.	lation 8 of the Indias) Regulations 19: n Standards Institutulars of which a been renewed during CM/L No.	बं. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक resuance of sub-regulation (1) of ian Standards Institution (Certification is, as amended from time to time, the ution, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, ing the month of April 1985:  SCHEDULE  Valid upto	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126	1986-03-31 1986-04-30 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have Sl. No. (1)	lation 8 of the Indias) Regulations 19: a Standards Institutulars of which a been renewed duri:  CM/L No.  (2)  0000707	बं। एक सिंह, अपर महानिषेशक suance of sub-regulation (I) of an Standards Institution (Certification is, as amended from time to time, the ation, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, ang the month of April 1985:  SCHEDULE  Valid upto  (3)	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030	1986-03-31 1986-04-30 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have Sl. No. (1)	lation 8 of the Indias) Regulations 193 n Standards Institutuals of which a been renewed during CM/L No.  (2)  0000707 0015013	बं। एक सिंह, अपर महानिषेशक suance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification is, as amended from time to time, the ation, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, ang the month of April 1985:  SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31 1986-04-30	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131	1986-03-31 1986-04-30 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1986-02-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have SI. No. (1)	lation 8 of the Indias) Regulations 19: In Standards Institutionals of which a been renewed during the CM/L No.  (2)  0000707  0015013  0017017	बं. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक resultance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification is, as amended from time to time, the attion, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, and the month of April 1985:  SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31 1986-04-30 1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133	1986-03-31 1986-04-30 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partice have b	lation 8 of the Indias) Regulations 19: In Standards Institutionals of which a been renewed during the CM/L No.  (2)  0000707  0015013  0017017  0017118	बं. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक resultance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification is, as amended from time to time, the attion, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, and the month of April 1985:  SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31 1986-03-31 1086-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133 0263234	1986-03-31 1986-04-30 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1986-02-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regui Mark (Indian partic have)	lation 8 of the Indias) Regulations 193 n Standards Institutuals of which a been renewed durished to the control of the contro	बं. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक resultance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification is, as amended from time to time, the ation, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, and the month of April 1985:  SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31 1986-03-31 1086-03-31 1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133 0263234 0270635	1986-03-31 1986-04-30 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have	lation 8 of the Indias) Regulations 193 In Standards Institutionals of which a been renewed during the CM/L No.  (2)  0000707  0015013  0017017  0017118  0017219  0017421	बं. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक resultance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification is, as amended from time to time, the attion, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, and the month of April 1985:  SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133 0263234 0270635 0276849	1986-03-31 1986-04-30 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have	lation 8 of the Indias) Regulations 19: In Standards Institutionals of which a been renewed during the control of the control	बं. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक result of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification is, as amended from time to time, the attion, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, and the month of April 1985:  SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133 0263234 0270635 0276849 0276950	1986-03-31 1986-04-30 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have	lation 8 of the Indias) Regulations 19: In Standards Institutionals of which a been renewed durished to the control of the con	बं. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक sauance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the ation, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, and the month of April 1983: SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133 0263234 0270635 0276849 0276950 0277447	1986-03-31 1986-04-30 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1986-01-31 1986-02-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have	lation 8 of the Indias) Regulations 193 In Standards Institutionals of which a been renewed durished to the control of the con	बं. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक sauance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the ation, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, ing the month of April 1983: SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133 0263234 0270635 0276849 0276950 0277447 0296552	1986-03-31 1986-04-30 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1986-01-31 1986-02-15 1986-03-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have Sl. No. (1) 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9.	lation 8 of the Indias) Regulations 193 n Standards Institutuals of which a been renewed durished to the control of the contro	बं. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक sauance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the ation, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, ing the month of April 1985: SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133 0263234 0270635 0276849 0276950 0277447 0296552 0300416	1986-03-31 1986-04-30 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have Sl. No. (1) 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10.	lation 8 of the Indias) Regulations 193 In Standards Institutionals of which a been renewed durished to the control of the con	बं. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक sauance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the ation, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, and the month of April 1985: SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133 0263234 0270635 0276849 0276950 0277447 0296552 0300416 0301418	1986-03-31 1986-04-30 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have Sl. No. (1) 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12.	lation 8 of the Indias) Regulations 193 In Standards Institutionals of which a been renewed durished to the control of the con	बं. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक sauance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the ation, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, ing the month of April 1985: SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133 0263234 0270635 0276849 0276950 0277447 0296552 0300416 0301418 0308533	1986-03-31 1986-04-30 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have SI. No. (1) 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12.	lation 8 of the Indias) Regulations 193 In Standards Institutionals of which a been renewed durished to the control of the con	बं. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक suance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the ation, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, ing the month of April 1985: SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133 0263234 0270635 0276849 0276950 0277447 0296552 0300416 0301418 0308533 0312019	1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1986-01-31 1986-02-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have SI. No. (1) 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13.	lation 8 of the Indias) Regulations 193 In Standards Institutionals of which a been renewed durished to the control of the con	बं. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक suance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the ation, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, ing the month of April 1985: SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133 0263234 0270635 0276849 0276950 0277447 0296552 0300416 0301418 0308533 0312019 0324329	1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have Sl. No. (1) 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.	lation 8 of the Indias) Regulations 193 In Standards Institutionals of which a been renewed durished to the control of the con	बं. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक suance of sub-regulation (1) of an Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the ation, hereby, notifies that 496 licences, are given in the following Schedule, ing the month of April 1985: SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133 0263234 0270635 0276849 0276950 0277447 0296552 0300416 0301418 0308533 0312019 0324329 0334433	1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1986-01-31 1986-02-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have Sl. No. (1) 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.	lation 8 of the Indias) Regulations 195 In Standards Institutionals of which a been renewed during the color of the indias of th	बं. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक result of sub-regulation (1) of ian Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the tition, hereby, notifies that 496 licences, tre given in the following Schedule, ing the month of April 1985: SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133 0263234 0270635 0276849 0276950 0277447 0296552 0300416 0301418 0308533 0312019 0324329 0334433 0335738	1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have Sl. No. (1) 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.	lation 8 of the Indias) Regulations 195 In Standards Institutionals of which a been renewed during the color of the indias of the indias of which a been renewed during the indias of th	बं. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक result of sub-regulation (1) of ian Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the ition, hereby, notifies that 496 licences, ire given in the following Schedule, ing the month of April 1985: SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31 1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133 0263234 0270635 0276849 0276950 0277447 0296552 0300416 0301418 0308533 0312019 0324329 0334433 0335738 0336336	1986-03-31 1986-04-30 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have Sl. No. (1) 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17.	lation 8 of the Indias) Regulations 195 In Standards Institutionals of which a been renewed durished the standards of which a standards of which a standards of the standar	बंद. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक result of sub-regulation (1) of ian Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the ition, hereby, notifies that 496 licences, ire given in the following Schedule, ing the month of April 1985: SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133 0263234 0270635 0276849 0276950 0277447 0296552 0300416 0301418 0308533 0312019 0324329 0334433 0336336 0336942	1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-15 1986-03-31
Regul Mark (ndian partic have) Sl. No. (1) 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17.	lation 8 of the Indias) Regulations 195 In Standards Institutionals of which a been renewed durished the standards of which a standards of which a standards of the standar	बंद. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक result of sub-regulation (1) of ian Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the tition, hereby, notifies that 496 licences, tre given in the following Schedule, ing the month of April 1985: SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262131 0263133 0263234 0270635 02776849 0276849 0276950 0277447 0296552 0300416 0301418 0308533 0312019 0324329 0334433 0336336 0336942 0338138	1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have Sl. No. (1) 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18.	lation 8 of the Indias) Regulations 193 In Standards Institutionals of which a been renewed durished the standards of the st	बंद. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक result of sub-regulation (1) of ian Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the ition, hereby, notifies that 496 licences, ire given in the following Schedule, ing the month of April 1985: SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262030 0262131 0263133 0263234 0270635 0276849 0276849 0276950 0277447 0296552 0300416 0301418 0308533 0312019 0324329 0334433 0336336 0336942 0338138 0340630	1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-31
Regul Mark Indian partic have Sl. No. (1) 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18.	lation 8 of the Indias) Regulations 195 In Standards Institutionals of which a been renewed durished the standards of which a standards of which a standards of the standar	बंद. एक. सिंह, अंपर महानिषेशक result of sub-regulation (1) of ian Standards Institution (Certification 55, as amended from time to time, the tition, hereby, notifies that 496 licences, tre given in the following Schedule, ing the month of April 1985: SCHEDULE  Valid upto  (3)  1986-03-31	51. 52. 53. 54. 55. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83.	0194544 0194645 0195243 0195748 0200311 0200311 0210011 0225226 0228939 0230522 0231726 0233528 0241628 0246335 0247539 0251126 0262131 0263133 0263234 0270635 02776849 0276849 0276950 0277447 0296552 0300416 0301418 0308533 0312019 0324329 0334433 0336336 0336942 0338138	1986-03-31 1986-04-30 1986-01-31 1986-01-31 1986-01-31 1985-04-30 1986-02-15 1986-03-31

(1)	(2)	(3)	(1)	(2)	(3)
88.	0349446	1986-03-31	154.	0590653	1986-02-15
89.	0359146	1986-03-31	155.	0591655	1986-02-28
<b>9</b> 0.	0371742	1986-03-31	156.	0593659	1986-02-28
91.	0373039	1986-02-28	157.	0597465	1986-03-31
92.	0373645	1986-03-15	158.	0597970	1986-03-31
93.	0374647	1986-03-15	159.	0599570	1986-03-15
94.	0375245	1986-03-31	160.	0599671	1986-03-15
95.	0376449	1986-03-31	161.	0599772	1986-03-15
96.	0376550	1986-03-31	162.	0600731	1986-03-15
97.	0376954	1986-03-31	163.	0601430	1986-03-31
98.	0377148	1986-03-31	164.	0602028	1986-03-31
99.	0377350	1 <b>98</b> 6-03-31	165.	0602533	1986-04-30
100.	0377451	1986-03-31	166.	0602634	1986-04-30
101.	0377552	1986-03-31	167.	0602836	1986-03-31
102.	03 <b>77956</b>	1 <b>98</b> 6-03-31	168.	0603131	1986-03-31
103.	0382242	1 <b>98</b> 6-04-30	169.	0603535	1986-06-30
104.	0382343	1986-04-30	170.	0603939	1986-04-15
105.	0382545	1986-04-30	171.	0604032	1986-04-1
106.	0387959	1986-04-15	172.	0604436	1986-04-30
107.	0394855	1986-03-31	173.	0604638	1986-03-31
108.	0403 <b>729</b>	1985-09-30	174.	0606137	1986-04-30
109.	0419845	<b>1986-03-31</b>	175.	0607240	1986-04-30
110.	0422733	1986-02-28	176.	0611736	1986-04-30
111.	0425032	1986-04-30	177.	0613235	1986-03-3
112.	0426741	1986-03-31	178.	0651243	1986-04-30
113.	0428644	1986-03-31	179.	0672554	1986-01-3
114.	0428947	1 <b>98</b> 6-03-31	180.	0675560	1986-03-3
115.	0429646	1986-04-15	181.	0680654	1986-03-1
116.	0430025	1986-04-15	182.	0682153	1986-03-1
117.	0430328	1986-04-15	183.	0682254	1986-03-3
118.	0431128	1986-04-15	184.	0683256	1986-03-1
119.	0431734	1986-04-15	185.	0683660	1986-03-1
120.	0436441	1986-05-15	186.	0683862	1986-03-1:
121.	0457247	1 <b>986-</b> 03-31	187.	0684965	1986-03-1
122.	0457954	1986-04-15	188.	0685765	1986-03-3
123.	0486456	1986-04-15	189.	0686969	1986-03-3
124.	0490447	1986-02-28	190.	0687264	1986-03-3
125.	0490548	1986-02-28	191.	0687466	1986-03-3
126.	0490649	1986-02-28	192.	0688266	1986-03-3
127.	0492350	1985-12-31	193.	0689268	1986-03-3
128.	0493554	1 <b>98</b> 6-0 <b>4-</b> 30	194.	0689571	1986-04-3
129.	0498059	1986-03-31	195.	0689672	1986-03-3
130.	0504432	1986-04-30	196.	0689773	1986-04-1
131.	0509644	1986-04-15	197.	0690859	1986-04-3
132.	0509745	1986-03-31	198.	0690960	1986-04-3
133.	0510023	1986-04-15	199.	0691053	1986-04-3
134.	0510124	1986-04-15	200.	0692156	1986-03-3
135.	0510629	1986-03-15	201.	0693562	1986-04-1
136.	0513534	1986-03-31	202.	0694867	1986-04-1
137.	0514536	1986-04-15	203.	0697368	1986-04-1
138.	0517138	1 <b>98</b> 6-04-15	204.	0708953	1986-03-3
139.	0522030	1 <b>98</b> 6-03-31	205.	0711134	1986-04-1
140.	0522131	1986-03-31	206.	0716750	1986-03-3
(41.	0522232	1986-03-31	<b>2</b> 07.	0736958	1986-04-1
142.	0522333	1986-03-31	208.	0737455	1985-11-3
143.	0522434	1986-03-31	209.	0741850	1986-03-3
144.	0526139	1986-03-31	210.	0750649	1986-02-1
145.	0536344	1986-03-31	211.	0752249	1986-02-2
146.	0537043	1986-03-31	212.	0752855	1986-02-1
147.	0546044	1986-03-31	213.	0756459	1986-02-2
148.	0559558	1986-03-31	214.	0758059	1986-02-2
	0569258	1986-02-15	215.	0758968	1986-03-3
	0580347	1986-04-15	216.	0763759	1986-03-3
	0584557	1985-10-31	217.	0765157	1986-03-3
	0589163	1986-02-15	218.	0765864	1986-04-3
153.	0590552:	1986-02-15	219.	0766462	1986-03-3

(1)	(2)	(3)	(1)	(2)	(3)
220.	0766664	1986-03-31	286.	0953865	1986-03-31
221.	0768668	1986-04-15	287.	0954160	1986-03-31
222.	0768769	1986-04-15	<b>2</b> 88.	0954665	1986-03-31
223.	0769670	1986-04-15	289. 290.	0954766 0954968	1986-03-31
224.	0772053	1986-04-30	290. 291.	0955061	1986-03-31 1986-03-31
225.	0772457	1986-04-30	292.	0955263	1986-03-31
226. 227.	0774158 0779370	1986-05-15 1986-01-31	293.	0955364	1986-03-31
228.	0794164	1986-08-31	294.	0956366	1986-03-31
229.	0794558	1986-01-31	295,	0956467	1986-03-31
230.	0795166	1986-08-31	296.	0957873	1986-03-31
231.	0820341	1986-04-15	297.	0957974	1986-03-31
232.	0821444	1986-04-15	298.	0958168	1986-03-31
233.	0827456	1986-04-30	299. 300.	0960054 096066 <b>0</b>	1986-04-15
234.	0836861	1986-02-28	301.	0961056	1986-08-31 1986-04-15
235.	0840549	1986-08-31	302.	0961258	1986-03-31
236. 237.	0842351 0842654	1986-03-15 1986-03-15	303.	0961359	1986-03-31
238.	0846460	1986-03-13	304.	0961460	1986-04-15
239.	0846864	1986-04-15	305.	0961965	1986 04-15
240.	0848060	1986-03-31	306.	0962260	1986-08-31
241.	0848464	1986-03-31	307.	0962361	1986-04-15
242.	0849365	1986-03-31	308.	0962563	1986-04-15
243.	0849769	1986-03-31	309. 310.	0963565	1986-04-30
244.	0850148	1986-03-31	310.	0964163 0971059	1986-04-30
245.	0850249	1986-03-15	312.	0979883	1985-05-31 1985-07-15
246.	0851150	1986-03-31	313.	1001512	1986-03-31
247.	0851251	1986-03-31	314.	1026831	1986-03-31
248. 249.	0851352 0851655	1986-03-31 1986-03-31	315,	1039941	1986-02-28
250.	0852657	1986-04-15	316.	1040017	1985-09-30
251.	0852859	1986 04-15	317.	1040118	1986-03-15
252.	0853558	1986-03-31	318.	1041019	1986-03-15
<b>25</b> 3.	0853659	1986-04-15	319. 320.	1041221 1041827	1986-03-15
254.	0853861	1986-04-15	320. 321.	1042930	1986-03-15
255.	0853962	1986-03-31	322.	1045027	1986-03-15 1986-03-15
256.	0856261	1986-04-15	323.	1046635	1986-03-15
257. 258.	0856362 0859772	1986-04-15	324.	1047536	1986-03-15
259.	0859873	1986-04-15 1986-04-15	325.	1048437	1986-04-15
260.	0860454	1986-04-15	326.	1050424	1986-03-1 <b>5</b>
261.	0860555	1986-04-15	327.	1050525	1986-03-15
262.	0860656	1986-04-15	328. 329.	1051830 1054634	1986-03-31
263.	0860858	1986-04-15	329. 330.	1055131	1986-03-31
264.	0861961	1986-04-15	331.	1056840	1986-03-31 1986-03-15
265.	0862256	1986-04-15	332.	1057034	1986-03-15
266.	0862862	1986-04-15	333.	1057236	1986-03-15
267. 268.	0863056 0863258	1986-04-15 1986-04-15	334.	1057438	1986-03-15
269.	0863460	1986-04-15	335.	1058541	1986-03-31
270.	0864563	1986-04-30	336.	1059341	1984-04-15
271.	0866365	1986-04-30	337.	1060023	1986-03-31
272.	0867771	1986-03-31	338. 339.	1060124 1060225	1986-03-31
<b>2</b> 73.	0870255	1986-03-31	339. 340.	1060326	1986-03-31
274.	0895473	1986-03-31	3-11.	1060427	1986-03-31 1986-03-31
275.	0896879	1986-01-15	342.	1060528	1986-03-31
276.	0897477	1986-01-15	343.	1060730	1986-03-31
27 <b>7</b> .	0909963 0912750	1985-11-15	344.	1062330	1986-04-15
278. 279.	0912730	1986-03-31 1985-08-15	345.	1062633	1986-04-15
280.	0927561	1986-03-15	346. 217	1063029	1986-03-15
281.	0930954	1986-01-15	347. 348.	1063332 1063938	1986-04-13
282.	0947163	1986-02-28	34e. 349.	1064334	1986-04-15
283.	0948872	1986-03-15	3 <b>5</b> 0.	1064536	1986-04-15
284.	0950657	1986-03-15	351.	1065033	1986-04-15 1986-04-15
285.	0953562	1986-03-31	352.	1068140	1986-04-15

					U [I ARL JI	
(1)	(2)	(3)	(1)	(2)		(3)
353.	1071432	1986-03-31	419.	1283952		1986-02-28
354.	.1071533	1986-04-30	420.	1^84045		1986-02-28
3 <b>5</b> 5.	1072737	1986-04-30	421.	1 84247		1986-03-15
356.	1074135	1986-03-31	4°2.	1~84651		1986-03-15
357.	1083136	1986-01-30	423.	1285249		1986-03-15
<b>35</b> 8.	1085039	1986-05-31	424.	1 85451		1986-03-15
359.	1088550	1985-06-15	425.	1~85552		1986-03-15
360.	1119434	1986-04-15	426.	1285855		1986-03-15
361.	1119838	1985-09-30	427.	1286352		1986 <b>-</b> 03-15
362.	1137729	1985-11-30	428.	1287455		1986-03-15
363.	1133428	1985-11-30	429.	1290949		1986-03-15
364.	1134834	1985-11-30	430.	1291042		1986-03-31
365.	1135432	1985-11-30	431.	1791143		1986-03 <b>-</b> 31
36 <i>6</i> .	1150630	1986-01-31	432.	1291648		1986-03-31
367.	1150731	1986-01-31	433.	1291749		1986-03-31
368.	1153333	1986-02-15	434.	1291850		1986-03-31
369.	1155842	1986-02-15	435.	1290044		1986-03-31
370.	1156137	1986-03-31	436.	1 392 1 4 5		1986-03-31
371.	1156339	1986-02-15	437.	1291 549		1986-03-31
<b>37</b> 2.	1156541	1986-02-15	438.	1792650		1986-03-31
373.	1156642	1986-02-15		1792751		1986-03-31
374.	1156844	1986-0 <sup>-</sup> -15	440.	1293147		1986-03-31
375.	1161130	1986-02-15	441.	1293450		1986-03-31
376.	1161837	1986-0°-28 1986-02-78	442. 443.	1293753		1986-03-31 1986-03-31
377.	1163033	1986-07-^8	443. 444.	1794048 1294750		1986-03-31
378. 379.	1163740 1163942	1986-02-28	445.	1~94553		1985-03-31
380.	1165744	1986-02-28	416.	1295555		1935-03-31
381.	1166342	1986-07-78	447.	1295656		1986-03-31
382.	1166443	1986-0 <sup>-28</sup>	448.	1796052		1986-06-30
383.	1167041	1986-02-28	449.	1296355		1986-03-31
384.	1168043	1986-03-15	450.	1296658		1986-03-31
385.	1168144	1986-03-15	451.	1^96759		1986-03-31
386.	1168851	1986-03-15	457.	1~96860		1986-03-31
387.	1171739	1986-03-15	453.	1^96961		1986-03-31
388.	1172842	1986-03-31	454.	1^97155		1986-03-31
389.	1174139	1986-03-15		1~97~56		1986-03-31
390.	1174442	1986-03-31	456.	1297357		1986-03-31
391.	1174644	1986-03-31	457.	1^97458		1986-03-31
392,	1175141	1986-03-31	458.	1287559		1986-03-31
393.	1175343	1986-05-31	459.	1297660		1986-03-31
394,	1175646	1986-03-31		1^98157 1^98359		1986-03-31 1986-03-31
395.	1175747	1986-03-31	461. 462.	1298561		1986-03-31
396.	1175949	1986-09-30 1986-04-15	463.	1798965		1986-03-31
397. 398.	11 <b>7</b> 6244 1176446	1986-03-15	464.	1299058		1986-03-31
399.	1176749	1986-04-15		1299664		1986-03-31
400.	1177044	1986-04-15	466.	1299967		1986-03-31
401.	1180437	1986-04-15		1300017		1986-03-15
402.	1180639	1986-04-30	468.	1300926		1986-04-15
403.	1181338	1986-04-30	469.	1301019		1986-04-15
404.	1181439	1986-04-30		1301120		1986-04-15
405.	1181742	1986-04-30	471.	1301322		1986-04-15
406.	1181944	1986-04-30	47?.	1301423		1986-04-15
407	1187350	1985-05-15	<b>47</b> 3.	1301524		1986-04-15
408.	1235537	1985-09-15		1301625		1986-04-15
409.	1255543	1985-12-31		1301827		1986-04-15
410.	1263946	1986-01-15		1301928		1986-04-15
411.	1264645	1986-01-15		130 021		1986-04-15 1986-04-15
412.	1266144	1986-01-15	478.	1302526 1302627		1986-04-15
413.	1267550	1986-01-31	479. 480.	1302627		1986-09-15
414.	1276854	1986-02-15	480. 481.	1303023		1986-04-15
415.	1279355	1986-07-28	482.	1303025		1986-04-15
416.	1279557	1986-02-28		1303730		1986-04-15
417.	1279658	1986-02-28 1986-02-28		1303831		1986-04-15
418.	1281544	1900-02-18				
		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·				

(1)	(2)	(3)
485.	13040°5	1986-04-15
486.	1304126	1986-03-31
487.	1304227	1986-01-15
488.	1304530	1986-09-30
489.	1304631	1936-04-15
490.	1304833	1986-01-15
491.	1305219	1986-04-15
49°.	1305936	1986-01-30
493.	1306433	1986-04-30
494.	1307132	1986-04-30
495.	1307334	1986-04-30
496.	1309035	1986-08-31

[No. CMD/13:12]

B.N. SINGH, Add. Director General

## विवेश मंत्रालय

## मई दिल्ली, 12 फरवरी, 1986

का. घा. 790---राजनयिक एवं कॉंगिनी घधिकारी (भाषक एवं कुक्क) घितियम 1948 (1948 का 41वां) की घारा 2 के खंड (क) के घनुपालन में केन्द्र सरकार इसके द्वारा, मेदान स्थित भारत के प्रधान कॉसलायास में सहायक श्री खें, एन. गुलाटी को 17-1-86 से कॉसली एजेंट का कार्य करने के लिए प्राधिकृत करती है।

[संख्या टी--- 4330/1/85] प्रार. वयाकर, उप सचिव

## MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS New Delhi, the 12th February, 1986

S.O. 790.—In pursuance of the clause (a) of Section 2 of the Diplomatic and Consular Officers (Oaths and Fees) Act, 1948 (41 of 1948), the Central Government hereby authorise Shri J. N. Gulati, Assistant in the Consulate General of India, Medan, Indonesia to perform the duties of Consular Agent with effect from 17th January, 1986.

[No. T. 4330/1/85] R. DAYAKAR, Dy. Secy.

## कर्जा मंत्रालय

## (कीयला विभाग)

## नर्ष दिल्ली, 7 फरवरी, 1986

## शुद्धि-पञ्च

का. मा. 791:—-जबिक, कोयला बारी क्षेत्र (म्रजॅन भीर विकास) मिशिनियम, 1957 (1957 का 20) की बारा 7 की उपधारा (1) के भ्रधीन जारी भीर भारत के राजपत्त (म्रसाधारण) के भाग-II, खंख 3, उप-खंड (ii) में पृष्ठ सं. 1 से 8 तक प्रकाशित भारत सरकार के भूतपूर्व इस्पात, खान भीर कोयला मंत्राक्षय (कोयला विभाग) की प्रधिसूचना का. मा. सं. 21 (म) दिनांक 15 जनवरी, 1985 क्षारा केन्द्रीय सरकार ने उस मिश्स्थिना से संलग्न मनुसूची में उल्लिखित जमीनों के मधिमुहण के मपने भ्राथय की सूचना दी थी ;

ं भीर जबकि केन्द्रीय सरकार की जानकारी में यह लाया गया है कि राजपत में उक्त मधिसूचना के प्रकाशन में मुद्रण की कुछ प्रशुद्धियां रह गई हैं;

इसलिए, प्रव उन्त प्रधिनियमं की धारा 7 की उप-धारा (1) द्वारा प्रवत्त कांक्तयों का ग्रीर इस संबंध में ग्रन्य सभी क्षमता प्रदायक

- (1) "1धी रिकर कोरुडफीलस" के स्थान पर "ईब रक्हर कोल-फील्ड्स" पढ़िए झौर "जिला साम्बलपुर (उड़ीसा)" के स्थान पर "जिला सम्बलपुर (उड़ीसा)" पढ़िए झौर जहां कहीं यह शब्ब प्रमुक्त झुझा हों वहां सम्बलपुर पढ़िए ।
- (2) कम सं. 7 में ग्राम स्तंम के नीचे "खन्सामहल" के स्थान पर "खुण्टमहल" पढ़िए ग्रीर जहां कहीं यह शब्द प्रयुक्त हुन्ना हो वहां "खुण्टमहल" पढ़िए ।
- (3) कुडालोई प्राम में मर्जित किए जाने वाले प्लाट सं. में-"2348 (भाग)" के स्थान पर "2348" पक्किए ।
- (4) "लखनपुर ग्राम में प्रजित किए जाने वाले प्लाट सं. यह शब्द "2350/3420 (भाग)....." के स्टान पर "1352 (भाग)" ......." के पहले पढ़िए ।
- (5) सोल्दीया ग्राम में ग्रांजित किए जाने वाले व्लाट सं; में "9395" के स्थान पर ("93 सं 95" पितृष् भीर "104 (भाग), 107 (भाग)" के स्थान पर "104 (भाग) से 107 (भाग)" पितृष्।
- (6) कुमुराकोई ग्राम में ग्रांजित किए जाने वालें प्लाट सं. में "1044, 1046" के स्थान पर "1044 से 1046" पढ़िए।

पुष्ठ 3 पर--"368/1831" के स्थान पर 368/1931" पिकृए ।

- (7) खालिकापाली धाम में कॉजित किए जाने वाले प्लाट सं. में "1 414" के स्थान पर "1 से 414" पढ़िए और "46/427" के स्थान पर "48/427" पढ़िए और "355, 4551" के स्थान पर "355/455" पढ़िए ।
- (8) कारलाजोरी ग्राम में मर्जित किए जाने वाले प्लाट संख्या में— "1 331," के स्थान पर "1 से 331" पढ़िए मीर "61/36," के स्थान पर "61/356" पढ़िए मीर "18/376" के स्थान पर "19/376" पढ़िए ।
- (9) "उल्डा" ग्राम में भजित किए जाने वाले प्लाट संख्या में— के स्थान पर "उबवा" पढ़िए धौर "281 (भाग), 284 (भाग)" के स्थान पर "281 (भाग) से 284 (भाग)" पढ़िए घौर "313 (भाग), 316 (भाग)" के स्थान पर "313 (भाग) से 316 (भाग)" पढ़िए घौर "599 (भाग) 602 (भाग)" के स्थान पर "599 (भाग) से 602 (भाग)" पडिए घौर "775/1402" के स्थान पर "775/1502" पढ़िए। {
- (10) टमगोस्माल ग्राम में मिनत किए जाने वाले प्लाट संक्या में— के स्थान पर "टिगिस्माल" पिकृए और "301 (भाग), 304 (भाग)" के स्थान पर "301 (भाग) में 304 (भाग)" पिकृए और "24/1186" के स्थान पर "124/1186" पिकृए।
- पृष्ठ 4 पर—"606/105" के स्थान पर "606/1205" पिहए मौर 
  "599/1208" के स्थान पर "594/1208" पिहए मौर 
  "469/227" के स्थान पर "469/1227" पिहए मौर 
  "988/127" के स्थान पर "988/1271" पिहए मौर 
  "378/117" के स्थान पर "378/1317" पिहए मौर 
  "4 9/1 325" के स्थान पर "469/1325" पिहए मौर 
  "478/132" के स्थान पर "478/1329" पिहिए मौर 
  "543/131" के स्थान पर "543/1331" पिहिए मौर

"563/1833" के स्थान पर "563/1333" पढ़िए भौर "180/1342" के स्थान पर "189/1342" पढ़िए भौर "291/1345" के स्थान पर "293/1345" पढ़िए ।

- (11) "खेराकुनी" ग्राम में क्रांजित किए आने वाले प्लाट संख्या मे-के स्थान पर "खेराकुनी" पढ़िए क्रीर "562/1551" के स्थान पर "362/1551" पढ़िए क्रीर "43/16/18" के स्थान पर "43/1618" पढ़िए क्रीर "1037/1711" के स्थान पर "1039/1711" पढ़िए।
- (12) संसा वर्णन में:--

रेखा "घ 5-घ 6-घ 7-घ 8-घ 9-घ 9-घ 9-घ 10" के स्थान पर "घ 5-घ 6-घ 7-घ 8-घ 9" पढ़िए ।

- (13) "घ16-घ17" रेखा में "हिन्गीस्मल" के स्थान पर "टिग्स्माल" पष्टिए । घौर "982" के स्थान पर "2982" पढ़िए घौर "2385, 2385" के स्थान पर "2385, 2388, 2387" कि स्थान पर "खेराकुनी" के स्थान पर "खेराकुनी" पढिए।
- (14) रेखा ख-ग 12 में "2841, 283" के स्थान पर "284, 282, 283" किथों।
- (15) रेखा ग 12-ग 11 में "1340, 1362" के स्थान पर "1340, 1363, 1362" लिखें।

जिन जमीनों के लिए उपयुक्त गुद्धि-पन्न जारी किया गया है उनमें के किसी जमीन से हितबढ़ कोई व्यवित इस प्राप्तिमुचना के आरी होने के तीस दिन के भीतर, कोयला धारी क्षेत्र (भ्रार्जन और विकास)) प्रधिनियम, 1957 (1957 का 20) की धारा 8 की उप-धारा (1) के प्रनुपार, प्रकृत पूरी भूमि प्रथवा उसके किसी भाग के प्रधिग्रहण के संबंध में प्रथवा ऐसी पूमि में भ्रयवा उस पर किन्हों प्रधिकारों के संबंध में प्रापत्त प्रस्तुत कर सकता है।

[सं. 19/37/83-सी एल/सी ए]

## MINISTRY OF ENERGY

(Department of Coal)

New Delhi, the 7th February, 1986

## CORRIGENDUM

S.O. 791.—Whereas, by the notification of the Government of India in the late Ministry of Steel, Mines and Coal (Department of Coal) No. S.O. 21(E) dated the 15th January, 1985 published in the Gazette of India, Extra-Ordinary, Part II, Section 3, Sub-section (ii), at pages 1 to 8, issued under sub-section (1) of section 7 of the Coal Bearing Areas (Acquisition and Development) Act, 1957 (20 of 1957), the Central Government gave notice of its intention to acquire the lands described in the Schedul- appended to that notification;

And whereas, it has been brought to the notice of the Central Government that certain errors of printing nature have occurred in the publication of the said notification in the Gazette.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 7 of the said Act and of all other powers enabling it in this behalf, the Central Government hereby amends the Schedule appended to the said notification as follows:—

#### In the Schedule-

#### at page-6,

(1) plot numbers to be acquired in village Kudloi-

for '2981 (Part) to 2985 (Part)' read "2981 (Part) to 2984 (Part)";

- (2) plot numbers to be acquired in village Soldiafor "144.855" read "44|855".
- (3) plot numbers to be acquired in village Kusuraloj-
  - (a) for "123|1811" read "125|1811";
  - (b) for "321|1826" read "321|1836";
  - (c) for "397|184", read "397|1844";

#### at page-7,-

- (1) plot numbers to be acquired in village Ubdafor "1348 to 1363" read "1340 to 1363";
- (2) plot numbers to be acquired in village Tingismal-
  - (a) for "Tinoismal" read "Tingismal";
  - (b) for "368 (Part)" read "336 (Part)";
  - (c) for "528|1233" read "529|1233";
  - (d) for "977!1251" read "877|1251";
  - (e) for "11|1256" read "117|1256";
  - (f) for "111|30, 38|1281, 86|1282, 98|1293"; read "111|1280, 88|1281, 88|1282, 88|1283";
  - (g) for "1068|1290" read "1060|1290";
  - (h) for '923|1303" read "923|1308";
  - (i) for "874|39" read "874|1339";
- (3) plot numbers to be acquired in village Khairakuni-
  - (a) for "1561" read "62|1561";
  - (b) for "3|1579" read "6|1578"::
  - (c) for "966|1590" read "956|1590";
  - (d) for "397|1635" read "397|1636";

#### at page-8,

## in Boundary Description-,

- (a) in line C2-D-D1-D2-3D for "3D" read "D3";
- (b) in fine D15-D16—for "835" read "838" and for "Soldiand" read "Soldia and".

Any person interested in any land in respect of which the above corrigendum has been issued may, within thirty days of the issue of this notification object to the acquisition of the whole or any part of the said land, or of any rights in or over such land in terms of sub-section (1) of section 8 of the Coal Bearing Areas (Acquisition and Development) Act, 1957 (20 of 1957).

[No. 19|37|83-CL|CA|

#### नई विल्ली, 12 फरवरी, 1986

का. मा 792.--केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि इससे उपाबद्ध अनुसूची में उल्लिखित मूमि में कोयला प्रमिप्रात किए जाने की सम्भावना है;

भतः, केन्द्रीय सरकार, कोयला धारक क्षेत्र (मर्जन और विकास) मिद्रिनियम, 1957 (1957 का 20) की भारा 4 की उपधारा (1) हारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, उस क्षेत्र में कोयले का पूर्वेक्षण करने के भ्रपने प्राथय की सूचना देती है; प्रम अधिसूचना के अधीन आने वार्ले क्षेत्र के रेखांक स. सी-1(ई) III/ई आर/303-1085 नागिश्व 11 अस्तूबर, 1985 का निरीक्षण वेस्टर्ने कोलफेन्डच विभिन्देन, (राजस्व अनुभाग), कोयला एस्टेट, सिबिन लाइन्स, नागपुर-140001 के कार्यालय में या कलन्दर, शहडील (मध्य अवेश) के कार्यालय में → ग्रथवा कोयला नियंत्रक, 1-काउस्मिल हाउस स्ट्रीट, कलकना के कार्यालय में किया जा सकता है।

इस ग्रानियूचना के ग्राधीन श्राने वाली भूमि में हिनबद्ध कोई व्यक्ति उत्तर श्राधिनियम की धारा 13 की उपक्षारा (7) में निर्दिष्ट सभी नक्सों, **बाटीं** और श्रान्य दस्तालेजों को, इस ग्राधिसूचना के राजयब में प्रकाणन की नारीख से नक्ष्वे दिन के भीतर राजस्य ग्राधिकारी, वेस्टर्म कोलफीन्क्स लिमिटेड, कोयला एस्टेट, सिविल लाइन्स, नागपुर-440001 को भेत्रेगा।

श्रनुसूभी बटुरा स्थाक मोहागपुर कायला क्षेत्र जिला शहडोल (सध्य प्रदेश)

(पूर्वेक्षण के लिए वर्णित भामि)

 क्रम सं	ग्रॉम	साधारण सं.	<b>महमी</b> ल	<u>जिला</u>	क्षीत है, धटर में	डि·पणिया <u>ं</u>
1,	— साबो	903	—	भाजडील	54.348	— — भाग
2	बकहो	369	गोहागपुर	शहडोल	177.021	भाग
3.	बक्शी	639	ग्रन् <b>पपु</b> र	शहडोल	556 290	भाग
4.	चाका	239	साहायपुर	<b>ম</b> র্ডীশ	240 474	भाग
5	खमरीध	179	सोहागपुर	पाउडील	53.995	भाग
6.	बट्रा	649	सोहागपुर	सहडोल	446,408	भाग
7.	बिछिया	716	सोहागपुर	गहधोल	404.057	भाग

कुल क्षेत्र: 1932 593 हैक्टर (लगभग) या 4775.54 एक च (लगभग)

सीमा वर्णन .

क-ख रेखा बिन्दु 'क' से ब्रारम्भ होती है और साबो ग्राम से होकर गुजरती है. फिर नदी को पार करनी है और चाका, खमरो वि**ष्ठिया ग्रामों** से होकर जानी है और खैरबाना और बिश्विया ग्रामों की सम्मिलिय सीमा पर बिस्दु 'ख' पर मिलती है।

ख–ग रेखा बिछीया याम से होकर जानी है फिर बटुरा और रामपुर ग्रामों की सम्मिलित सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्धु ''ग'' पर मिलसी है।

ग⊸घ रेखा अट्रा ग्राम से होकर जाती है, सोन नक्की को पार करती है, फिर बकडी, बकको ग्रामों से होकर जाती है और बकहो ग्राम में बिन्दु ''घ' पर मिलती है ।

.–क रेखा बकहो ग्राम में होकर जाती हैं<mark>. फिर साबो ग्राम में</mark> होकर जाती हैं और उसी ग्राम में श्रारम्भिक **यिन्दु** "क" पर मिलती है !

[सं. 13015/29/85-सी.ए.] टी.मी.ए. श्रीनिवागन, निदेशक

New Delhi, the 12th February, 1986

S.O. 792.—Whereas it appears to the Central Government that coal is likely to be obtained from the lands mentioned in the Schedule hereto annexed;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 4 of the Coal Bearing Areas (Acquisition and Development) Act, 1957 (20 of 1957), the Central Government hereby gives notice of its intention to prospect for coal therein;

The plan bearing No. C-1(E) III[ER]303-1085 dated the 11th October, 1985 of the area covered/by this notification can be inspected at the Office of the Western Coalfields Limited (Revenue Section), Coal Estate, Civil Lines, Nagpur-440001 or at the Office of the Collector, Shabdol (Madhya Pradesh) or at the Office of the Coal Controller, I. Council House Street. Calcutta,

All persons interested in the lands covered by this notification shall deliver all maps, charts and other documents referred to in sub-section (?) of section 13 of the said Act to the Revenue Officer, Western Coalfields Limited, Coal Estate Civil Lines, Nagpur-440001 within ninenty days from the date of publication of this notification.

# THE SCHEDULE BATURA BLOCK SOHAGPUR COALFIELD DISTRICT SHAHDOL (MADHYA PRADESH) (Lands notified for prase pection)

Scrial Village Number	General Number	Tehsil	District	Area In hectures	Remarks
1. Sabo	963	S hagpur	Shahdol	54.348	Part –
2. Bakho	369	Sphagpur	Shahdol	1 <i>7</i> 7 0^1	Part
3. Bakhi	639	Anuppur	Shahdol	556.290	Part
4. Chaka	289	Schagpur	Shahdo!	240.474	Part
5. Khamraudh	179	Sohagpur	Shahdel	53.995	Part
6. Batura	649	Sahagpur	Shahd d	446.408	Part
7. Bichbia	716	Schagpur	Shahdol	404 057	Part

Total Area: 1932.593 hactares: (approximately)
or 4775.54 acres (approximately)

#### Boundary description :

- A-B lines starts point 'A' and passes through village Sabo, then crosses Sone River and proceeds through villages Chaka, Khamraudh, Bichhia and meets on the common boundary of villages Khairban and Bichhia at point 'B'
- B-C Line passes through village Bichhia, then proceeds along the common boundary of villages Batura and Rampur and niects at point 'C'.
- C-D Line passes through villages Batura, crosses River, then proceeds through villages Bakhi, Bakho and meets in village Bakho at point 'D'.
- D-A Line passes through village Bakho then proceeds through village Sabo and meets in the same village at starting point 'A'.

[No. 43015]29[85-CA] T. C. A. SRINIVASAN, Director

## पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय

नई दिल्ली, 19 फरवरी, 1986

का.चा, 793---यत. केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होना है कि लोकहित में यह बावश्यक है कि उत्तर प्रदेश में हजीरा-बरेली-जगदीणपूर तक पेट्रोलियम के परिवहन के लिए पाइपलाइन भारतीय गैम प्राधिकरण सि. द्वारा बिछाई जानी चाहिए।

भौर यमः प्रतीस होता है कि ऐसी लाइनों को विछाने का प्रयोजन िलिए एनद्पाबद्ध भनुमुची में वर्णित भिम में उपयोग का झिंधकार श्रमित करना धावस्यक है।

श्रतः श्रव पेट्रोलियम श्रौर खनिज पाइपलाइन (भृमि में उपयोग के अधिकार का धर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रवेत्त लक्ष्तियों का प्रयोग करते हुए केस्ट्रीय सरकार ने उस में उपयोग का अधिकार भजित करने का अपना आणय एसद्कारा घोषित किया है।

बशर्ने कि उक्त भूमि में हिनबड़ कोई व्यक्ति उस भूमि के नीचे पाइप लाइन बिछाने के लिए बाक्षेप सक्षम प्राधिकारी, भारतीय गैस प्राधिकरण लि., बी-58/बी, अलीगंज, लखनऊ-226020 यु.पी. को इस ग्राधिसूचना की तारीख से 21 दिन के भीतर कर सकेगा।

योर ऐसा प्राक्षेप हरन कामा हर प्राप्ति विनिधिस्टा, यह भी कथन करेगा कि क्या वह चाहता है कि उसकी मुनवाई व्यक्तिगरा रूप से ही या किसी विधि व्यवसायी की मार्फत ।

मनुसुभी

हाजिरा-अरेली-जगदीशपुर गैस पाइपलाइन प्रोजेक्ट

 जिला	 तहमील	 परगना	 ग्राम	गाटा	ग्रजित रकवा एकड में	– विवरण
मार्स्स	.— मोठ	में।ठ	सरेगा	238	0	02
				327	0	20
-						J-10 4 -A -A-1

[मं. O-14016/5/84-जीपी]

#### MINISTRY OF PETROLEUM & NATURAL GAS

New Delhi, the 19th February, 1986

S.O. 793.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajra-Bareily to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein:

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification. object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd, H.B.J. Pipeline Project B-58|B, Aliganj, Lucknow-226020, U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

## **SCHEDULE**

Supplementary Notification u/s 3(1) H.B.J. Gas Pipe Line Project

District	Tahsil	Parguna	Village	Plot No.	Area in cores	Remarks
1	2	3	4	5	6	7
Jhansi	Math	Moth	Serva	2 38 32 7	0 02 0 20	
				3 <b>4</b> /	0 -0	

[No. O-14016/5/84-GP]

श्रिधिसुचना की तारीस्थ से 21 दिन के भीतर कर सकेगा।

ग्रीर ऐसा ब्राक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिर्दिग्टनः यह भी कथन करेगा कि क्या बह चाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिगत रूप से हो या किसी विधि व्यवसायों की मार्फन ।

**प्रन्मु**ची

हाजिया-अरेकी-जगदीशपर गैस पाइपलाइन प्रोजेक्ट

जिला	तहमील	परगना	ग्राम	स्रजित रकवा एकड्र में	विवरण
<u>जालौन</u>	कोच	 कोच	खेड़ा बेडा	()	0.3

[सं. O-14016/32/84-जी पी]

का.ग्रा. 794.──यतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रमीत होता है कि लंकिहित में यह आवण्यक हैं कि उत्तर प्रदेश में हजीरा-बरेली-जगदीशपर तक पैट्रोलियम के परिवहन के लिए पाइपशाइन भारतीय गैम प्राधिकरण लि० द्वारा विधाई जानी चाहिए।

भीर यसः प्रतीत होना है कि ऐसी लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिए एनद्पाबद्ध धनुसूची में वर्णिन भूमि में उपयोग का प्रधिकार ग्रिजित करना भावस्यक है।

भनः अब पेट्रोलियन भीरस्वनिज पाइपलाइन (भूमि में अधिकारक। अर्जन ) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) का धारा 3 का उपजारा(1) द्वार। प्रदक्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केखाय सरकार ने उसमें उपयोग का अधिकार अजित करने के। अपना आशय एतद्द्वार, घोषित किया है।

-बागर्ते कि उक्त भूमि में हितबद्ध कोई व्यक्ति उस भूमि के नीचे पाइप लाइन बिछाने के लिए आश्रीप सक्षम प्राधिकारी, भारतीय गैग प्राधिकरण लि., बी-58/बी, श्रलीगंज, लखनऊ-226020, यु.पी. की दस S.O. 794.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajra-Barcily to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India 1.td.

And whereas it appears that for the purpose of Jaying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the

I and) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein;

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd. II.B.J. Pipeline Project B-58 B, Aliganj Lucknow-226020 U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

#### SCHEDULE

## Supplimentry notification u/s 3(1) H.B.J. Pipe Line

Distt.	Tahsil	Pargana	Village	Plot no.	Area in seres	Remarks
	~ <del>~</del>			·		· · - · · ·
Jhalaun	K mch	Konch	Khembera	3	0 - 03	
		•		- <b>-</b>	, <del></del>	·

[No. O-14016/32/84-GP]

का. प्रा. 795.—यतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह घाषश्यक है कि उत्तर प्रदेश में हजीरा-बरेली-जगवीणपुर तक पेट्टोलियम के परिवहन के लिए पाइपलाइन भारतीय गैस प्राधिकरण लि. द्वारा बिछाई जानी चाहिए।

भीर यतः प्रतीत होता है कि ऐसी लाइनों को विछाने का प्रयोजन के लिए एतद्पाबद्ध भनुभूची में वर्णित भूमि में उपयोग का प्रधिकार प्रजिस करना भ्रावश्यक है।

अतः अब पेट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमं, में उपयोग का अधिकार का अर्जन) अधिनियम 1962(1962 का 50) कार्युधारा 3 का उपधारा (1) हारा प्रदत्त मक्तियों को प्रयोग करते हुए केन्द्रीय मधकार ने उस में उपयोग का अधिकार अजित करने का अपना आगय एननदाश वंशिकत किया है।

बार्स कि उक्त भूमि में हिन्बद्ध कोई व्यक्ति उस भूमि के नीचे पाइप-लाइन बिछाने के लिए श्राक्षेप मक्षम प्राधिकारी, भारतीय गैस प्राधिकरण लि. बी-58/बी, भ्रानीगंज, लखनऊ-226020 यू०पी० को इस ग्राधिसुचना की तारीख से 21 विन के भीतर कर मनेगा।

भीर ऐसा भ्राक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिदिष्टि : यह भी कथन करेगा कि क्या वह चाहता है कि उसकी मुनवाई व्यक्तिगत रूप से हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फत ।

> धनुमूची हाजिरा-बरेली-जगदीशपुर गैस पाइप लाइन प्रोजेक्ट

 जिसा	तहमील	परगना	ग्राम	गाटा संख्या	ग्रजित रकवा एकड् में	विवरण
_ झांसी	- <i></i> - मांसी	 मांसी	जुगर-	932	0-12	_
			वाह्य	949	0+03	
				1148	0-10	
				1461	0-04	

S.O. .—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajra-Bareily to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now therefore, it exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein:

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd. H.B.J. Pipeline Project B-58[B, Aliganj Lucknow-226020 U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

## SCHE DULE

Supplimentry Noti leation U/s 3(1) H.B.J. Gas Pipe Line Project

District	 Tahsil	Parg ma-	Village ,	Plot No.	Area in cores	Remarks
Jh msi	 Jh msi	Jhansi	Dang trwihn	932	0-12	-
JH (115)				940	0-03	
				1148	0-10	
				1461	0-04	•
•						

[No. O-14016/37/84-GP]

का .भा . 796.—यतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि कोकिह्त में यह प्रावश्यक है कि उत्तर प्रवेश में हजीरा-अरेली-अगर्शशपुर तक प्रदेशियम के परिवहन के लिए पाइपलाइन भारतीय गैन प्राधिकरण कि . द्वारा बिछाई जानी चाहिए।

और यतः प्रतीत होता है कि ऐसी लाइनो को बिछाने का प्रयोजन के लिए एतद पाबद्ध अनुसूची में वर्णित भूमि में उपयोग का अधिकार अजित करना भावण्यक है।

भतः ग्रज पैट्रोलियम भीर खिनिश पाइप लोइन (भूमि में उपयोग के मधिकार का श्रर्जन) श्रीधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा उ को उपधारा (1) द्वारा प्रवत्त शक्तियों को प्रयोग करने हुए केन्द्रीय सरकार ने उस में उपयोग का श्रीधकार श्रीजन करने का अपना श्राणय एनंद्र द्वारा घोषित किया है।

बंशतें कि उत्ता भूमि में हिनबड़ कोई व्यक्ति उस भूमि के तीचे पाइप लाइन बिछाने के लिए प्राक्षेप सक्षम प्राधिकारों, भारतीय गैम प्राधिकरण लि. बी-58/बी, श्रक्षीगज, लखनऊ-226 020 यू.पी. को इस श्रिधिसूचना की सारीख से 21 दिन के भीतर कर सकेगा।

श्रीर ऐसा श्राक्षेप करने वाला हर व्यक्ति वर्निदिष्टतः यह भी कथन करेगा कि क्या वह चाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिगत रूप से हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फत।

## श्रनुसूची हजीरा-अरेली-जगदीणगुर पाइप लाइन प्रोजेक्ट

जिला	 परगना	तहसीज	ग्राम का	गाटा म	 खिया	विवरण
			नाम		गया	
					रक्षा	
इटावा	, धारीमा	भ्रोरैटया	<b>ग्रा</b> नेपूर	260	u- 20	
-		-	 [स .	G-14	016/49	/84-जीप <sub>ं</sub> ]

S.O. 796.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajra-Bareily to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now therefore, it exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein;

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd. H.B.J. Pipeline Project B-58|B, Aliganj Lucknow-226020 U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

#### SCHEDULE

		I jira-Barr <b>e</b> jly-Ja	ngdjshpur Pipe Li	ne Projet	· ·			
Distt.	Pargana	Tahsil	Village	Plot No.	Area in acquired	Remarks		
Etawah	Auriya	Auriya	Ane Pur	260	0^0			

[No O-14016/49/84-GP]

का. मा. 797.—यतः केन्द्रीय मरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह मावश्यक है कि उत्तर प्रदेश में हजीरा-बरेली-जगदीशपुर तक पैट्रोलियम के परिवहन दें लिए पाइपलाइन भारतीय गैम प्राधिकरण कि. द्वारा बिछाई जानी चाहिए।

भीर यक्षः प्रतीत होता है कि ऐसी क्षाइमों को बिछाने का प्रयोजन के क्षिए एतद पाबद अनुगुकी में वर्णिस भूमि में उपयोग का श्रधिकार फिजत करना भोषश्यक है।

ग्रतः अब पैट्रोलियम ग्रौर खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के श्रीधकार का भ्रजन) भ्रिधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रवत्त भिक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने उस में उपयोग का भ्रिधकार प्रजित करने का भ्रपना प्राशय एक्रतदक्षारा चौषित किया है।

श्रामों कि उक्त भूमि में हिराबद्ध कोई व्यक्ति उस भूमि के नीचे पाइप लाइन बिछाने के लिए प्राक्षेप सक्षम प्राधिकारी, भारतीय गैरा प्राधिकरण लि. बी-58/बी, प्रालीगज, लखनऊ-226020 यू.पी को इस धिमुचना की हारीख से 21 दिन के भीतर कर सकेगा।

भौर ऐसा भाक्षेप करने बाला हर व्यक्ति विनिर्विष्टक्षः बहु भी कथन करेगा कि बया बहु चाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिगत कप ने हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्कत । हतीरा-बरेली-जगदीणपुर गग पाइप लाइन प्रांजैक्ट

प्रनसूनी

8 A	1.1a.c.dl2.	व्यामपुर गग	पाइप	শাহ্ন স	। जक्ट	
निषा	नह्मील	परगना	ग्रास	गाटा संख्या	ग्रमित रकवा एकड् मे	विवरण
गांसी	मोंड	- मॉर	र् <b>ग</b> 	316	0.02	
			[सं. (	O-1401	6/63/84	~ ;–जीपी}

S.O. 797.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajra-Bareily to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto,

Now therefore, it exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government bereby declares its intention to acquire the right of user therein;

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Ga<sub>5</sub> Authority of India Ltd. H.B.J.

Pipeline Project B-58/B, Aliganj, Lucknow-226020 U.P.

.-- -

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

SCHEDULE
Supplementary Notification u/s 3(1) H.B.J. Gas Pipe Line Project

District	Tehsil	Parg to 3	Vill. g.	Plot N ·	A, rs, a	inacres		Remarks	
1		3	4	5	,	6		7	_,,:=
Jhansi	Moth	Moth	Aira	316	09	02			
			<del>-</del> . <del></del>			[N>	O-140	016/63/8/	GP]
	8.—यतः केन्द्रीय <b>म</b> रकारः यक है कि उत्तर प्रदेश र		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	2	3	4	- 5	 6	
	रबहुन के सिए पाइपसाइ						155	0,11	
लि. इारा विकाई ज	(नी चाहिए।			-			684	0.29	
भीर यन प्रतीन हो	ता है कि ऐसी लाइनो की बि	। छाने के प्रयोजन के लिए।	'নিখ্				124	0.02	
उपाबद्ध धनुसूर्या में वर्णिः	त भूमि में उपयोग का <mark>ऋधि</mark> क	रि ग्रिजित करना ग्रावश्यक	ई।				379	0.02	
सनः अब पैट्राविक	त्य और खनित पह्मिला	इन (भूमि में उपयोग	- <del>Ц</del> т				522	0.62	
	(अधिनियम, 1962) (। इ.स. एउटा अलिस्टो ड			- ,		  सं. O	- -14016	 १६६/४ <b>१</b> -जी	 रिपी]

S.O. 798.—Whereas its appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajra-Bareilly to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas

Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein;

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority. Gas Authority of India Ltd. H.B.J. Pipeline Project. B-58 B, Aliganj, Lucknow-226020 U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

# प्रनुसूची हाजिरा-बरेली-जगदीशपुर गैस पाइप लाइन प्रोजैक्ट

करेगा कि क्या वह चाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिगत रूप से

3 की उपधारा (।) द्वारा प्रदक्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए केन्द्रीय सरकर ने उपनें उपयोग का ऋधिकार श्राजित करने का प्रपना स्राक्षय

श्रमनों कि उपन भूमि में हिनबद्ध कोई व्यक्ति उस भूमि के नीचे पाइपलाइन विष्ठाने के लिए प्राक्षेप सक्षम प्राधिकारी, भारतीय गैस प्राधिकरण

भीर ऐसा भाक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिविष्टतः यह भी कथन

सि. बी-58/बी, प्रालीगंज, लखनऊ-226020 य०पी० को इस प्रधिसूचना की

एसब्हारा घोषित किया है।

नारीखासे 21 दिन के भीनर कर सकेगा।

हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फत ।

- जিলা	क्षडसील	य <b>रग</b> ना	ग्राम	गाटा संख्या	ः भ्रतित स्करा	विवरण
,				<b>स</b> न्य। · _	रकरा एकड़ मे	
1	:	3	4	5	6	7
_ द्रांसी	झांभी	भसि	रक्षवा	123	0.20	
_ ,	1-			150	0,22	

## SCHEDULE

Supplimentary Notification u/s 3(1) M.B.J. Gas Pip Line Project

District	Tahsil	pargana	Vill∗ <b>g</b> ¢	Plot No.	Are sin acres	R marks
i	2	3		5	6	7
Jhansi	Jhansi	Jhunsi	Rakra	123	0-20	
				150	0	
				1.55	0-11	
				684	0—¬9	
				124	0-0?	
				379	00.2	
				512	0 -62	

का. श्रा. 799 .—यतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीस होता है कि लोकहिन में यह प्रावायक है कि उत्तर प्रदेण में हजीरा-बरेली-जगबीशधुर तक पैट्रोलियम के परिवहन के लिए पारपलाइन भारतीय गैस प्राधिकरण लि. द्वारा बिछाई जानी चाहिए।

भीर यतः प्रतीसहोता है कि ऐसी लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिए एनद्उपाबक अनुसूची में वर्णित भूमि में उपयोग का अधिकार फर्जित करना प्रावश्यक है।

धनः श्रव पैट्रोलियम श्रीर खनिल पाइप लाइन (भूमि में उपयोग के श्रीधकार का श्रवंत) (अधिनियम, 1962) (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शिक्तारों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने उस में उपयोग का अधिकार श्रीवित करने का श्रपता आणय एसद्वारा घोषित किया है।

बणर्त कि उक्त भूमि में हिन्सद्ध कोई व्यक्ति उम भूमि के नीचे पाइप लाइन बिछाने के लिए आक्षेप सक्षम प्राधिकारी, भारतीय गैंग प्राधिकरण लि. बी-58/बी, भ्रालीगंज, गखनऊ-226020 यू.पी. को ईस अधिसूचना की सार ख से 21 दिन के भीतर कर सकेगा।

स्रीर ऐसा भ्राक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिर्दिष्टन, यह भी . .कथन करेगा कि क्या वह चाहना है कि उसकी सृतवाई व्यक्तिगत रूप : से हो या किसी विधि व्यवासायी की मार्फत ।

## मन्सूर्चा

,	हाजिया-सरेसी-जगर्द	।भापुर ⊀ैस	पाइप न	।इन प्रोजी	<del>र</del> ट	
जिला	नहसील	- परगना	यान	गाद्वा	म् म्रानिन	 विवरण
				म ख्या	रक्षवा	
					एक्; म	
झामी	सांगी	मांगी	राजापुर	484	0 19	
	•		[सं .	O-140	 16/67/8	- ः4-जीपी∫

S.O. 799.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajira-Bareilly to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein;

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd. H.B.J. Pipeline Project B-58[B, Aliganj Lucknow-226020 U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

### SCHEDULE

## Supplimentary Notification u/s 3(1) M.B.J. Gas Pipe Line Project

District	Tahsil	Pargana	Village	Plot No.	Area in acres	Remarks
1	2	3	4	5	6	7
Jhansi	Jhansi	Jhansi	Rajapur	484	0.19	

[N v. O-14016/67/84-GP]

का. मा. 800 .—यतः केन्द्र.य सरकार को यह प्रतीत होता है कि मोकहित मे यह प्रायण्यक है कि उत्तर प्रदेण में हजीरा-बरेली-जगवीशपुर तक पैट्रोलियम के परिवहन के तिए पाइपलाइन भारतीय गैस प्राधिकरण लि. द्वारा बिछाई जानी चाहिए।

और यतः प्रतीत होता है कि ऐसी लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिए एतद्उपाबद्ध प्रश्नुची में वर्णित भूमि में उपयोग का ग्रधिकार प्रजित करना श्रावश्यक है।

यक्षानें कि उक्त भूमि में जितवब कोई व्यक्ति उस भूमि के तीचे पाइप लाइन बिछाने के लिए आक्षेप सक्षम ेप्ताधिकारी, भारतीय गैस प्राधिकरण लि. बी-58/बी, ग्रतीगंज, लगखनऊ-226020 यू. पी की इस ग्रधिस्पन्न की तारीख से 21 दिन के भीतर कर संकंगा।

और ऐसा द्याक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिर्विष्टन: यह भी कथन करेगा कि क्या वह चाहना है कि उमकी मुनवाई व्यक्तिगत रूप से हो या किसी विधि व्यनसायी की मार्फता।

## **ग्रनुमू**ची

# हाजिरा-सरेली-अगदीणपुर गैस पाइप लाइन प्रोजैक्ट जिला नहसील गरमना ग्राम गाटा ग्रजित विवरण संख्या रुक्तवा एकड़ में झीसी मीठ मीठ श्रमिलया 121 0-02 रहेट

S.O. 800.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajra-Bareilly to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto:

Now therefore, it exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein;

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd. H.B.J. Pipeline Project B-58|B, Aliganj Lucknow-226020 U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

## SCHEDULE

Supplementary notificat	or u/s 3(1) H.B.J. Gas Pipe Lii	٠.

	Supple	mentary notificatio	op_u/s_3(1)_H.B.J.	Gas Pipe Lire		
District	Tahsil	Pergana	Vill-ge	Plot No.	Area Interes	Remarks
Jh n i	Moth	Moth	Imi liya Estate	בי - <u>ו</u> יו	002	

[No. O-14016/68:84-GP]

का. श्रा 801:--यमः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकप्रित में यह भावण्यक है कि उत्तर प्रदेश में हजीरा-बंरेली-जगदीशपुर तक पैट्रोलियम के परिवहन के लिए पाइपलाइन भारतीय गैप प्राधिकरण लि, द्वारा बिकाई जाना बाहिए।

और यत प्रतीस होता है कि ऐसी लाइसों को बिछाने के प्रयोजन के लिए एनदपाबद्ध श्रनमची में वर्णित भिम में उपयोग का श्रधिकार श्रिक्ति करना श्रावण्यक है।

अत. अस पेट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकारका अर्जन) अधिनियम, 1962 (1662 का 50) की धारा 3 को उपधारा (1) द्वारा प्रदक्त शक्तियों को प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार न उस में उपयोग का अधिकार अर्जित करने का अपना आगय एतद्द्रारा घोषित किया है।

ब्रमर्ने कि उक्त भूमि में हिनकड़ कोई व्यक्ति उस भूमि के नीचे पाइप लाइन बिछाने के लिए ग्राक्षेप सक्षम प्राधिकारी, भारतीय गैस प्राधिकरण लि. बी-58/बी, घलीगंज, लखनऊ-226020य्.पी. को इस श्रिधिसूचना की न(रीखा से 21 दिन के भीतर कर सकेगा।

और ऐसा प्राक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिर्विष्टतः यह भी कपन करेगा कि क्या बह चाहता है कि उसकी मृतवाई व्यक्तिगत रूप से हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फत।

#### **प्रन्**युची हाजिरा-बरेली-जगदीणपुर गैस पाइप लाइन प्रोजैक्ट अक्रिय विकरण जिल्ह **नहर्मा**य परभना गाटा सं. रक्तम ग्राम एक इ.स मंरूपा संस्था जाल त कोच कोच कानपुर [मं. O-14016/82/84-जीमी]

appears to the Central Govern-S.O. 801,---Whereas it ment that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajra-Bareily to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now therefore, it exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein:

Provided that any person interested in the said land may; within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd. H.B.J. Pipeline Project B-58 B, Aliganj Lucknow-226020 U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

## **SCHEDULE**

Supplementary notification u/s 3(1) H.B.J. Gas Pipe Lines.

District	Tahsil	Pargani	Villag.	Plot No.	Arca in scres	Remarks
Jhalaun	Konsh	Konch	Gora <b>K</b> aranp	our 1	0-03	···

[No. O-14016/82/84-GP] अनुसूचे:

कार्रार्व 803:---यतः केन्द्रीय सरकार की यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह आवश्यक है कि उतर प्रवेश में हजीरा -बरेली-जगदीशपूर तक पैट्रोलियम के परिवहन के निर्य पाइपलाइन भारतीय गैम प्राधिकरण मि० द्वारा बिछाई जानी चाहिया।

और यतः प्रतीत होता है कि ऐसी लाइनों को बिछाने का प्रयोजन के लिये एतदूपाबद्ध अनुसूची में विणित भूमि में उपयोग का अधिकार अजिन करना आवण्यक है।

अत अब पेट्रोंलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के म्र(धकार का अर्जन) | अधिनियम, 1962 | ( 1962 का 50 ) की धारा 3 को उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त मक्तियो को प्रयोग करते हुए केन्द्रोय सरकार में ज्य में उपयोगका अधिकार अधिक करने का अपना आगाय एशदहारा घोषित किया है।

बार्ने कि उक्त भूमि में हितबद्ध कोई ध्यक्ति उस भूमि के नीचे पाइप लाइन बिछाने के नियं आक्षेप मक्षम प्राधिकारी, भारतीय गैग प्राधिकरण लि  $= \hat{a}' + 5R/\hat{a}'$ , अलीगज, लखनऊ-226020 युर्वार की इस अजिम्बना की नारीख से 31 दिन के भीतर कर सकेगा।

अ।र ऐसा आक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिविष्टतः यह भी कथन हरेगा कि क्या वह चाहरा है कि उसकी सनवाई ब्यक्तिगम रूप ने हो या किसी विधि ध्यवनार्यः की मार्फतः।

हाजिरा-बरेली-जगदीणपुर गैस पाइप लाइन प्रोजिक्ट

 जिला	<b>नहमील</b>	परगना	: ग्राम		ं—ः रक्तवा इड्में) सं	 विवर्ण
जार्लान <sub>्</sub> —	जानीन 	जा <b>ल</b> ोन	मिह्नेना 	395	0-04	

[मं O-14016/175/84-जी •पी ०]

S.O. 802.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajra-Bareily to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein:

Provided that any person interested in the said land

may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd. H.B.J. Pipeline Project B-58[B, Aliganj Lucknow-226020 U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

#### SCHEDULF

Supple nertary Noti ic. tion u/s 3(1) H.B.J. Gas Pipe Lin. Proj et

District	Tahsil	Pargana	Village	Plot No.	area in acres	Remarks
Jalaun	Jalaun	Jalaun	Mihaum	395	004	
-,				~	[No. 0-	-14016/175/84-GPL

क्षावआं 6803 --- यतः केर्न्यः य सरकार को यत् प्रतीत होता है कि लोकप्तित में यह आवश्यक है कि उत्तर प्रदेश में हुने रा-बरेशा-जगदी शतुर तक पैट्टोलियम के परिवहन के लिखे बाह्यलाइन भारकीय गैम प्राधिकरण लिंव द्वारा विकार्ट आनी चाहिया।

और यक्त प्रकीत होता है कि येकी लाइमों को बिकाने के प्रयोधन के लिये एतदूपाबक अनुसूची में बर्णित भूमि में उनगीय का अधिकार अजिल करनी अधिक्यक हैं।

अतः अब पेट्रोलियम् और खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम 1963 (1962 का 50) को धारा 3 की उपधार। (1) धारा प्रवत्त मन्तियों को प्रयोग जरते मृत के द्वीय सरकार ने उस में उपयोग था अधिकार अजित करने को अपना आधाय एमद्वारा पौषित किया है।

बगतें कि उका भूमि में हिन्दांड कोई व्यक्ति इस भूमि के निर्धे पाईप लाइन बिछाने के लियें आक्षेप सक्षम प्राधिकारी , भारतीय गैंस प्राधिकरण लिए बी-58/4, अजीएंज, लखनऊ-3.160204्रिं० की इस अधिस्थना की नारीख में -2.1 दिस के भीतर कर सकेगा।

और ऐसा आक्षेप करने वाला हर न्यक्ति विनिद्धिरटतः यह भी कथन करेगा कि क्या वह चाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिग४ रूप से हो या किसे विधि व्यवसायी की मार्फन। अनुसूर्यः हाजिरा-बरेर्न-जगदीकपुर गैस पाइप लाइन प्रोजेस्ट

রি <b>শা</b>	तहमं.स	परभना	ग्राभ	गाटा संक्ष्या	अजित रक्षमा एकड्रमें	विवरण
जामीन	करिश्र	कोंच	<b>अन्त्रम</b> िरा	709	0-01	
				893	0 - 0.1	
,				925	0-0.2	
				239	0-01	
				9:0	0-12	
					-	

[मं० O-14016/177/84-जी०पी०]

S.O. 803.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajra-Bareily to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein;

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of his notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd. II.B.J Pipeline Project B-58/B. Aliganj Lucknow-226020 U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

## SCHEDULF

Supple nentary notification u/s 3(1) H.B.J. Pipe Line

District	Tahsil	Parg- na	Village	Plot No.	Area in a cres	R marks
- : ·	2 .	3	4	5	6	7
Jhylaun	Kinch	Konch	Khakses	709	0 01	
				892	0 01	
				925	0 02	
				239	0 01	
		1		9~0	0 12	

[No. O-14016/177/84-GP]

जिला

अश्यीन

का • आ • 804: — यतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह आवश्यक है कि उत्तर प्रदेश में हजीरा – बरेली — जगवी गपुर तक पैट्रोलियम के परिवहन के लिये पाइपलाइन भारतीय गैम प्राधिकरण लि॰ बारा बिछाई जानी चाहिये।

और यतः प्रतीत होता है कि ऐसी साइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिये एनदुपाबद्ध अनुसूची में बर्णित भूमि में उपयोग का अधिकार अर्जित करना आवश्यक है।

अतः अब पेट्रोलियम और जितिश पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम, 1952 (1962 का 50) की धारा 3 का उपवार (1) द्वारा पदत्त शिक्तियों को प्रयोग करने हुए केर्द्ध य संस्कार न उस में उपयोग काअधिकार अजित करने का अपना आगय एतदद्वारा घोषिस किया है।

बगारें कि उक्त भूमि में हिनवद कोई अपकिन उम भूमि के नाचे पाइपलाइन विछाने के निये आक्षेप सक्षम प्राधिकारो,भारता गैमप्राधिकरण निरु बो-58/बी, अलोगंज, लखनऊ-126020 यूर्णीर को इस अधिसूचना की क्षारीख से 21 दिन के भीतर कर सकेगा।

और ऐसा आक्षेप करने बाला हर व्यक्ति विनिर्दिष्टन यह भी कथन करेगा कि क्या यह नाहता है कि उसकी सुनवार्ड व्यक्तिगत रूप से क्षेत्र या किसी विश्वि व्यवसायी की सार्फन।

# अनुसूर्यः हर्भारा-वरेसः - जगदीलपुर गैस पाइप लाइन प्रोजेक्ट तह्नांक परगना ग्राम अजित रकवा विवरण (एकड् में) गाटा मं जालीन जालीन तेतारपुर 117 0-02

[सं. O-14016/183/84-जीं०पी०]

S.O. 804.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajra-Bareily to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein:

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd. H.B.J Pipeline Project B-58/B, Aliganj Lucknow-226020 U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

#### SCHEDULE

## Supplimentarry Notification u/s 3(1) H.B.J. Gas Pipe Line Project

District	Tahsil	Pargana	Village	Plot No.	Area in acers.	Remarks
1	2	3	4	5	6	7
Jalaun	Jalaun	Jalaun	Tatarpur	117	0 02	

[No. O-14016/183/84-GP]

का०आ० 805 — मतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह आध्यक्ष है कि उत्तर प्रदेश में हजीरा-बरेली-जगदीक्षपुर तक पैट्रोलियम के परिवहन के लिये पाइपलाइन भारतीय गैस प्राधिकरण लि० द्वारा विद्याद जानी वाहिये।

और यत: प्रतीत होता है कि ऐसी लाइनों को विद्यामे के प्रयोजन के लिये एसदुराबद्ध अनुसूची में वर्णिय भूमि में उपयोग का अधिकार अर्जित करना आवश्यक है।

अतः अब पेट्रोलियम और खानिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा उका उपधार। (1) द्वारा प्रवत्न शक्तियों को प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने उस में उपयोग का अधिकार अर्जित करने का अपना आंग ए॰ ब्हारा घोषित किया है।

बणतें कि उपन भूमि में हितबद कोई ध्यक्ति उस भूमि के नीचे पाइप लाइन बिछाने के लिये आक्षेप सक्षम प्राधिकारी , भारतीय गैम प्राधिकरण लिं० बी-58/बी, अलीगंज, लखनऊ-226020 यू०पीं० को इस अधिस्वना की तारीख से 21 दिन के भीगर कर सकेगा।

और ऐसा आक्षेपा करने याला हर व्यक्ति विनिर्दिष्टत. यह भी केथन करेगा कि क्या वह चाहता है कि उसका सुनयाई व्यक्तिगत रूप मे **डो** या किसी विधि व्यवसायों की मार्फता

1565GI/85---10

अनुगूची हर्जीरा-बरेली-जगदीमपुर गैस पाइपलाइन प्रोजेक्ट

जिला	तहसील	परगना	ग्राम	अजित रक्ष (एकड़ गोटा सं		विवरण
जार्नान	आलीम	जालीन	गोरा राठौर	245	0-09	- <del></del>

S.O. 805.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajra-Bareily to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User In the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government

hereby declares its intention to acquire the right of user therein

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to

the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd. H.B.J. Pipeline Project B-58|B, Aliganj, Lucknow-226020, U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

#### SCHEDULE

Supplementary Notification u/s 3(1) H.B.J. Gas Pipe Line Project

District	Tahsil	Pargana	Village	Plot No.	Area in Acres	Remarks
Jalaun	Jalaun	Ja la un	Gora Rathour	245	009	
	· /-				N > Q-14016/1	87/84-GP]

का०आ० 806. --यत. केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह अविश्यक है कि उत्तर प्रतेश में हर्ते.रा-बरेली-जगदीशपुर तक पैट्रोलियम के परिवहत के निये पाइपताइन भारतीय गैम प्राधिकरण लि० द्वारा बिछाई जानी चाहिये ।

और यतः प्रतीत होता है कि ऐने लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिये एतदुपाबद्ध अनुसूची में बॉणित भूमि में उपयोग का अधिकार अजित धरना आवश्यक है।

अतः अब पेट्रोलियम आरं खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) ख्वारा प्रदत्त सक्लिणों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने उस में उपयोग का अधिकार अभित करने का अपना आशाय एकब्द्रारा घोषित किया है।

धारते कि उक्त भूमि में हिनबद्ध कोई व्यक्ति उस भूमि के नीचे पाइप लाइन विछाने के लिये आक्षेप सक्षम प्राधिकारी, भारतीय गैम प्राधिकरण लि॰, बी॰-58/बी, अलीगंब, लखनऊ-236020, गू॰पी॰ की इस अधिमुच्या की गार्रक से 31 दिन के भीतर कर सकेगा।

और ऐसा अक्षेप करने दाला हर व्यक्ति विनिविष्टत: यह भी कथन नरेगा कि क्या यह चाहना है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिगत रूप से हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फन। अ**सुम्**चः

हाजिया -बरेली-जगदेश्व रूप्येस पाइच लाइन प्रोजेस्ट जिला तहर्मील प्रश्ना ग्राग गाटा अधित विवरण संख्या रक्तवा एकह में जालौन कींच फींच प्रयोलायो 353 0-35 113 0-03 239 0-02

[ र O-14016/238/84-जीं वर्षा ]

S.O. 806.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajra-Barcily to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act. 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein:

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd., H.B.J. Pipeline Project, B-58|B, Aliganj; Lucknow-226020, U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

#### SCHEDULE

Supplimentary Natification u/s 3(1) H.B.J. Pipe Line Project

District	Tahsil	Pargana -	Village	Plot No.	Area in Acres	Remerks
Jalaun	<b>K</b> _nch	Konch	Keonlari	253 112 292	0-35 0-03 0-02	

[No.O-14016/288/84-GP]

का० आ० 807.—यतः केम्ब्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह आवश्यक है कि उत्तर प्रदेश में हगीरा—बरेनी—जगवीशपुर तक पैट्रोलियम के परिवहन के निये पाइपलाइन भारतीय गैस प्राधिपारण लि० द्वारा बिछाई जानी पाहिये।

भीर यतः प्रतीत होता है कि ऐसी लाइमों को बिछाने के प्रयोजन के लिये एतदुपाषद्व अनुसूर्णः में वर्णित भूमि में उपयोग का अधिकार असि करना आयश्यक है ।

अतः अब पेट्रोलियम् आरं क्निज पाइपलाइन (भ्रम से उपयोग को अञ्चलारं का अर्जन) बिबनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्यारा प्रवत्तः हिवत्यों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने उस में उपयोग का अधिकार् बर्जित करने का अपना नालगु एसन्ब्राग घोषित किया है।

बगर्ते कि उक्त भूमि में हिन्दबर कोई व्यक्ति उस भूमि के नंदि पाइप लाइन बिछाने के लिये आक्षेप सक्षम प्राधिकारी, भारतीय गैस प्राधिकरण लिंक, बें∵58/बी, अलीगण, सखातऊ-226020,यूव्यांकिको इस अधिस्थाना की तारीखा से 21 दिन के भीतर कर सकेगा।

और ऐसा आक्षेप करने दाता हर व्यक्ति किनिविष्टतं. यह भी कथन करेगा कि क्या यह चाहता है कि उसकी युनशई व्यक्तिगत व्या से ही या किसी विश्वि व्यवसार्यः की सार्कतः

#### अनुसूर्यः

हाजिया बरेली-जगवीकपुर गैम पाइप लाइन प्रोजेक्ट

जिला	महसं'ल	परगता	ग्राम	गाटा	 अजित	 विवरण
, , , , ,	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,			संख्या	रकवा	
					एक दुई	Ť
 जामीन	 कोच	 कोंच	अटा	258	0-01	
				[#a-140	14/204	 o.a-ची:11ी:1

[मै०-14016/306/84-जीपी]

S.O. 807.-Whereas it appears to the Central Governrient that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajra-Bareily to Jagdishpur in Uttar Fradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the

Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government rereby declares its intention to acquire the right of user therein:

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd., H.B.J. Pipeline Project, B-58 B, Aliganj, Lucknow-226020, U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

#### SCHEDULE

Supplimentry Notification u/s 3(1) H.B.J. Pipe Line Project

District	Tahsil	Pergana	Village	Plat No.	Aice in Acres	Remarks
Jalaun	Konch	Konch	Ats	258	001	<del></del>
	- · · · · · ·				(No. O. 140	16/306/84-CDI

[No. O-14016/306/84-GP]

का. ग्रा. 808:---यतः केन्द्रीय सरकार को यद प्रतीप होता है कि, लोकहिंत में यह ब्रावण्यक है कि उत्तर प्रदेश में हजीरा-अरेली-अगदीणपुर पैट्रालियम के परिवहन के लिए पाइपलाइन भारतीय प्राधिक ए लि. द्वारा विछाई जानी चाहिए।

और यम प्रसास होता है कि ऐसी लाईमी को बिछाने के प्रयोजन के लिए एतवुपावद्ध अनुसूची में वर्णित भूमि में उपयोग का मधीकार श्रक्तिस करना मावस्थक है।

ग्रत: ग्रब पैट्रोलियम और खनिज पाईपलाईन (भूमि में उपयोग के मधिकार का मर्जन) मधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वार। प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने उस में उपयोग का अधिकार अर्जित करने का अपना भागम एतव्हारा घोषित फिया है:

बशर्ते कि उका भूमि में हिन्ताद कोई व्यक्ति उस भूमि के नीचे पाईप लाईन बिळाने के लिए आक्षेप सक्षम प्राधिकारी, भारतीय गैंग प्राधिकरण लि., बी.-उऽ/बो, भानीगंज, लखनऊ 226020,म ू. पी. को इन ग्राधिमूचना की नारीख से 21 दिन के भीगर कर मकेगा।

और ऐसा प्राक्षीर करने बाला हर व्यक्ति विनिधिष्टतः यह भी कथन करेगा कि क्या गह भाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिगत रूप से हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फत ।

ग्रनुसूची हाजिरा--बरेली---जगदीशपर गैस पाईप लाईन प्रोजेक्ट

্ जिला	तहसीय	परगना	ग्रामा		र्घाजित रकवा एकड्रमे	•	विवरण
जालीन	कोंच	कोंच	ेरपुरा	31	()	1 2	
-		-		[संO-	14016 / 3	08 /8	

S.O. 808.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajra-Bareily to Jägdishpur in Uttar Pradeh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government bareby declares its intention to acquire the right of user Land) Act, 1962 (30 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein .

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pineline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd; H.B.J. Pipeline Project, B-58|B, Aligani, Lucknow-226020, U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

#### SCHEDULE

Supplimentary Natification u/s 3(1) H.B.J. Pipe Line Project

District	Tahsil	Pargana	Village	Plot No.	Arca in Acres	Remarks
Jalaun	Konch	K 'nch	Raipura	31	0—12	
,					· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	<del></del>

INO. Q-14016/308/84-GP]

का. भा. 8-09:---यतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होगा है कि लोकहित-में यह मावश्यक है कि उत्तर प्रदेश में हजीर-बरेली-अगदीशपुर तक पेट्रोलियम के परिवहन के लिए पाइपलाईन भारतीय गैस प्राधिकरण लि. द्वारा बिछाई जानी भाहिए।

और यत प्रतीय होता है कि ऐसी लाईमीं की बिछाने के प्रयोजन के लिए एनदपाबद्ध प्रनुपुची में वर्णित भूमि में उपयोग का प्रधिकार फ्रॉजिन करमा भ्रायस्यक है ।

धात: भव पेट्रालियम और खानिज पाइपलाईन (भूमि में उपयोग के भधिकार का मर्जन) भधिनियम, 1982 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त लिक्तयों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय

मरकार ने उस में उपयोग का मधिकार मर्जित करने का अपना मानय एनदद्वारा घोषित किया है:

बगर्ले कि उक्त भूमि में हितवद्भ कोई व्यक्ति उस भूमि के तीचे वाइप लाइन बिछाने के लिए ग्राक्षेप मक्षम प्राधिकारी, भारतीय गैस प्राधिकरण लि., बी-58/बी. घलीगंज, लखनऊ-226020, यू. पी. को इस प्रक्षिपूचना की नारीखा से 21 दिन के भोतर कर सकेगा।

और ऐसा घाक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिविष्टतः यह भी कचन भरेगा कि क्या वह चाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिगत रूप से हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फता।

#### प्रनुसूची

#### हाजिरा-बरेली-जगदीशपुर गैस पाइप लाइन प्रोजेक्ट

जिला धहसील	परगना	<b>ग्रा</b> म 		लिया गया रक्तवा (एकड़ में)	
 जालौन कोंच	· कोंच	तिसरा- परस राग	58 T	38	

[संख्या O -- 14016/310/84-जी पी]

S.O. 809.—Wherens it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajra-Bareily to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein:

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd.; H.B.J. Pipeline Project, B-58|B, Aliganj, Lucknow-226020, U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

#### SCHEDULE

# Supplementry Notification u/s 3(1) H.B.J. Gas Pipe Line Preject

District	Tahsil	Pargana	Villa go	Plot No.	Area in Acres	Remarks
2-0-1						
Jalaun	Konch	Konch	Titraparsram	58	38	

[No. O-14016/310/84-GP]

का. मा. 810—यतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि श्रोकहित में यह भावश्यक है कि उत्तर प्रदेश में हुजीरा-बरेली-जगवीशपुर तक पेट्रोलियम के परिवहन के लिए पाइपलाइन भारतीय गैस प्राधिकरण लि. द्वारा बिछाई जानी चाहिए।

और यतः प्रतीत होता है कि ऐसी लाईनों को बिछाने के प्रयोजन के लिए एतदुपाबद्ध धनुसूची में वर्णित भूमि में उपयोग का भधिकार ग्राजिस करना भावस्थक है।

धतः धव पेट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के धारिकार का धर्जन) धिधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रवत्त गक्तियों को प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार ने उस में उपयोग का धिधकार धिजत करने का अपना आगर एसदुद्वारा घोषित किया है:

बगर्ते कि उक्त भूमि में हितबद्ध कोई व्यक्ति उम भूमि के मीचे पाइप लाइन बिछाने के लिए श्राक्षेप सक्षम प्राधिकारी, भारतीय गैस प्राधिकरण लि., बी-58/बी, चलीगंज, लखनऊ—226020, यू. पी. को इस घिम्मुजना की तारीख से 21 बिन के भीतर कर सकेगा।

और ऐसा घाओप करने वाला हर व्यक्ति विनिर्दिष्टत: यह भी कथन भरेगा कि क्या यह चाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिगत रूप से हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फत।

## धनुसूची हाजीरा-धरेली-जगदोशपुर गैस पाइप लाइन प्रोजेक्ट

जिला	तहसील	परगना	ग्राम	_	मर्जित रक्या (एकड़ में)	विवरण
जासीन	जलौन	जालीन	रोमई- मुस्त- किल	754	0-08	<u>.                                    </u>

[सं. O-14016/313/84-जी.पी.]

S.O. 810.—Whereas it sppears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajira-Bareily to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein:

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd; H.B.J. Pipeline Project, B-58|B, Aliganj, Lucknow-226020, U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

#### SCHEDULE

# Supplementary Notification u/s 3(1) H.B.J. Gas Pipe Line

District	Tahsil	Pargana	Village	Plot No.	Area in acres
Jalaun	Jalaun	Jalaun	Remomustkil	754	0-08
			<del></del>		<u> </u>

मीर यतः प्रतीत होता है कि ऐसी लाईमों को बिछाने के प्रयोजन के लिए एतदुवाबद धनुसूची में बर्णित मूनि में उपयोग का मिक्कार मिलस करना मानश्यक है।

धत: अब पेट्रोलियम भीर खेनिज पाइपल।इन (भूमि में उपयोग के सिक्षकार का अर्थन) प्रिवित्यम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रवक्त गक्तियों को प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने उस में उपयोग का अधिकार अर्जित करने का अपना आशय एनद्द्वारा घोषित किया है।

श्रगतें कि उक्त भूमि में हितबद कोई व्यक्ति उस भूमि के नीचे पाइप नाईन बिछाने के लिए आक्षेप सक्षम प्राधिकारी, भारतीय गैस प्राधिकरण लि. बी. 58 बी, प्रतीगंज नखनऊ-226020, यू. पी. का इस प्रशिक्षण को तारीख से 21 दिन के भीतर कर सकेगा।

न्नीर ऐसा न्नाक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिधिष्टतया यह भीकथन करेगा कि क्या वह चाहता है कि उसकी धृनवाई व्यक्तिगत रूप से हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फत।

#### धनुष्यी वीशपुरपाइप लाइन प्रीजेक्ट

	स्ताज	रा-बरला-५	मागपाशपुर 	4144	লাছ্য সাধাৰত	
 जिला	परमना	तहसील	ग्राम का	गाटा	लिया गया	भन्य विवरण
			नाम	₹.	र <b>कवा</b>	

**इंटाका फोरेय्या फोरेय्या जमुहा** 149 0-63

[स. O-14016/336/84-जी पी]

S.O. 811.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajira-Bareily to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto:

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein;

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd; H.B.J. Pipeline Project, B-58 B, Aliganj, Lucknow-226020, U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

# SCHEDULE Hajira-Barejlly-Jagdesh Pur Pipe Line Project

District	Pargana	Tahsil	Village	Plot No.	Area in acres	Remarks
Etawah	Auriya	<b>A</b> uriya	Jumha	149	0—63	<del></del>
		<del></del>			·/ /	

[No. O-14016/336/84-GP]

का. आ. 812:— यतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि जोकहिल में यह प्रावश्यक है कि उत्तर प्रवेश में हजीरा-भरेली-जगदीशपुर तक पेट्रोलियम के परिवहन के लिए पाईपलाइन भारतीय गैस प्राधिकरण लि. द्वारा विछाई जानी चाहिए।

और यत: अतीत होता है कि लाईनों को बिछाने के प्रयोजन के लिए एतदुपाबद धनसूची में विणित भूमि में उपयोग का श्रीविकार श्रजित करना श्रावश्यक है।

भ्रत: मन पेट्रोलियम भीर खिनिज पाइपलाईन (भूमि में उपयोग के अधिकार का मर्जन) मधिनियम, 1962 (1962 का 50) की घारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदक्ष गक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने उस में उपयोग का श्रीधकार मिलत करने का प्रपना शागय एतदुद्वारा चौषित किया है।

बंशरों कि उनत भूमि में हितथक कोई व्यक्ति उस भूमि के तीथे पह्यप्लाईन बिछाने के लिए माक्षेप सक्षम प्राधिकारी, भारतीय गैस प्राधि-करण लि., वी 58 | बी, अलीगंज, लखनऊ-226020, यू. पी. को-इस मधिसूचना की तारीख से 21 दिन के भीतर कर सकेगा।

और ऐसा प्राक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिर्दिष्टतः यह भी कवन करेगा कि क्या यह पाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिगत रूप से हो या किसी विधिव्यवसायी की मार्कतः

# ग्रमुभूकी हाजिरा-वरेली-जगवीशपुर गैस पाईप लाईन प्रोजेक्ट

जिला तहसील परगना ग्राम गाटासं. ग्रांजित रक्षा विवरण (एक्ष में) आलोग जालीन जालीन वधावली 23 1-02 विवास

S.O. 812.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajira-Bareily to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the

Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein;

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification,

object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd. H.B.J Pipeline Project B-58/B, Aliganj Lucknow-226020 U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

#### **SCHEDULE**

# Supplementary Notification u/s 3(1) H.B.J. Pipeline Project

District	Tehsil	Pargana	<b>V</b> illage	Piet No.	Area in acres	Remjuks
				<del></del>		<del></del>
Jalaun	Jalaun	Jajaun	Baghawali D	1ve.fa 23	102	

[No. O-14016/410/84-GP

का. मा. 813: — यत: केल्बीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि सोकहित में यह प्रावण्यक है कि उत्तर प्रदेश में हजीरा-बरेली — जगदीणपुर तक पेंट्रोलियम के परिज्ञहन के लिए पाईपलाईन भारतीय गैम प्राधिकरण नि. द्वारा जिछाई जानी चाहिए।

श्रीर यत: प्रतीत हो है कि ऐसी लाईनों को बिछ।मे के प्रयोजन के लिए एसद्पाबद्ध झनसूसूची में वर्णित भूमि में उपयोग का श्रीधकार झिंबत करना श्राबद्धक है।

प्रत: पेट्रोलियम ग्रीर खनिज पाईपलाईन (भूमि में उपयोग के धिक-कार का ग्रजंन) प्रधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रवत्त मिल्लयों को प्रयोग करते हुए केन्द्री य सरकार ने उस में उपयोग का ग्रिक्षिण ग्रजित वरने का श्रपना ग्राणय एलबद्वारा श्रीयिल किया है।

बगर्ते कि उक्त भूमि में हितबद कोई व्यक्ति उस भूमि के नीचे पाइप लाईइन बिछाने के लिए ग्राक्षेप मक्तम प्राधिकारी, पारतीय गैस प्राधिकरण लि. बी-58 बी, ग्रलीगंज, लखनऊ 226020 यू. पी. को इस ग्रथिसुचना की तारीख में 21 दिन के भीतर कर सकेगा।

और ऐसा प्राक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विभिविष्टमः यह भी सम्मन् करेगा कि क्या वह चाहता है कि मुनवाई व्यक्तिगत रूप से हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फत।

# धनसूची हाजिरा-वरेली-जनदीकपर गैस पाईप लाईन प्रोजेस्ट

जिला	तहमील	परगना	ग्रामा		गाटासंख्या	मर्जित
						रकवा (एकड़ में)
1	2	3	4	4	6	7
वासीम	जासीम	<b>ज</b> ः सीम		59.4	1182	0 59
					1169	

[सं.-O 14016-432 | 84 / जी .पी.]

S.O. 813.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport, of Petroleum from Hajra-Bareily to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the Schedule annexed hereto.

Now therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein;

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Cimpetent Authority, Gas Authority of India Ltd. H.B.I. Pipeline Project B-58/B, Aliganj, Lucknow-226020 U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

#### SCHEDULE

# Supplementry Notification u/s 3(1) H.B.J. Gas Pipe Line Project

Distlict	Tahsil	Pargana	Village Chuck No.	Plot No.	Area in acres	Remarks
					——————————————————————————————————————	
			Chaki			
Jalaun	Jala un	Jalaun	Chuck	1182	059	
			No. 594	1169		
	يسد ادراد المحال المساول المراجع المرا				-4-1-4-2-4-2-4-4-4-4-4-4-4-4-4-4-4-4-4-4	

का.भा. 814 यतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित
में यह बावश्यक है कि मध्यप्रदेश राज्य में हजीरा से बरेली से जगवीशपुर
तंक पेट्रोलियम के परिवहन के लियें पाइप लाइन भारतीय गैस प्राधिकरण
लिं. द्वारा <mark>बिष्ठाई जा</mark> नी चाहिये।

श्रीर अतः यह प्रतीत होता है कि ऐसी लाईनों की विष्ठाने के प्रयोजन के लिये एतद् उपायक भनुसूची में वर्णित भूमि में उपयोग का मधिकार मजित करना प्रावश्यक है।

श्रतः श्रव पेट्रोलियम श्रीर खनिज पाइप लाइन (भूमि में उपयोग के मिश्रकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की घारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त सिक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार में उसमें उपयोग का अधिकार अर्जित करने का अपना भागम एतंद् द्वारा धोषित किया है।

बगर्ने कि उक्त भूमि में हितबद्ध कोई व्यक्ति, उस भूमि के नीचे पाइप लाइम बिछाने के लिए भाक्षेप सक्तम प्राधिकारी, तेल तथा प्राकृतिक गैस भाषोग, एच.बी.जे. पाइप लाइन 45, भुभाष नगर सोबेर रोड, उर्जन (म.प्र.) 456001 को इस भ्रधिसूचना की तारीख 21 विनों के भीतर कर सकेगा।

हीर ऐसा झाक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिर्दिष्टता यह भी कथन करेगा कि क्या वह यह चाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिगत रूप से हो या किसी विश्व व्यवसायी की मार्फत।

े ए म.बी.जे. गैस पाइप लाइन प्रोजेक्ट धाम पायगा; तहसील पिछोर; जिला शिवपूरी; राज्य (सध्य प्रदेश)

	भनुस्	ren't	51	1012	0,010
			52	1013	0.020
धेतु.क.	खमरा नं.	अपयोग मधिकार मर्जन का क्षेत्र	53	1015	0.010
•		( <b>हेक्टे</b> र्स में )	54	1071	0.040
		3	55	1072	0.010
<u> </u>	2		56	1040	0.060
1	480	0.140	57	1041	0.020
2	479	0,240	58	1044	0,030
3	4 5 5	0.030	59	1045	0.080
4	456	0,030	60	906	0.010
5	478	0.360	61	1034	0.030
6	473)	٥.070 )	62	1046	0.080
7	474 }	0.080	63	1047	0.020
8	( 475	v. <b>08</b> 0)	64	1048	0.060
9	476	0.110	65	905	0.020
10	467	0.010	66	907	0.010
11	468	0.040	67	908	0.073
12	483	0.030	€8	894	0.050
13	434	0.010	69	896	0.030
14	600	0.180	70	1066	0.010
l <b>5</b>	<b>601</b>	0.010	71	1067	0.060
16	603	0.150	72	1068	0.030
17	604	0.140	73	1069	0.010
1.8	605	0.030	74	1070	0.073
19	607	0.030	75	1163	0.040
2.0	608	0.020	76	1164	0.030
21	606	0.030	77	1101	0.060
22	610	0.200	78	1102	0.030
23	615	0.330	79	1103	
24	616	0,030	80		0.040
2.5	618	0.160		1093	0.020
26	620	0.100	81	1094	0.080
27	621	0,440	8 2	1095	0.010
28	659	0.030	83	1097	0.130

98 6] બાલ્યુન 10	, 1907	859
1	3	3
29	943	0.330
30	944	0.010
31	945	0.010
32	629	0.020
33	946	0.170
34	950	0.080)
35	951	0.040
36	964	0.240
37	965	0.030
38	956	0.020
39	957	0.030
40	963	0.130
41	1039	0.050
42	962	0.150
43	958	0.020
44	977	0.010
4 5	917	0.080
46	916	0.030
47	918	0.130
48	919	0.140
49	1010	0.020
50	1011	0.021
51	1012	0,010
52	1013	0.020
53	1015	0.010
54	1071	0.040
55	1072	0.010
56	1040	0.060
57	1041	0.020
E 0	1044	0.020

_	-
v	<i>K</i> / 1
$^{\circ}$	1111

	<del></del>	OF INDIA: MARCH 1, 1	Andrew Control of the least		07 [PART 11—SEC. 3(ii)
1	2	3	1	2	
84	891	0.010	25.	618	0.160
85	892	0.010	26. 27.	610 621	0.100
86	893	0.010	28.	659	0.440 0.030
17	872	0.070	29.	943	0.330
38	890	0.060	30. 31.	944	0 010
39	1117	0.030	32.	945 629	0.010 0.0 <sup>0</sup> 0
10			33.	946	0.170
	1096	0.080	34.	950	0.080
ोग फुल क्षेत्रफल		6,427	35.	951	0.040
	·		36.	964	0.240
	<u>l</u>	मं . O-14016/534/86ज.प।]	37.	965	0.030
S.O. 814.—V	Whereas it appears	to the Central Government	38. 39.	956 957	0.020
at it is nece	essary in the public	interest that for the trans-	40.	963	0.030
		-Barilly to Jagdishpur in	41.	1039	0.130
	India Limited.	should be laid by the Gas	42,	962	0.050
		for the avenue of loving	43,	958	0.150 0.0 <sup>-</sup> 0
		for the purpose of laying acquire the right of user in	44.	977	0.010
	ribed in the Schedu		45.	917	0.080
Now, there	efore in exercise o	f the powers conferred by	46.	916	0.030
		3 of the Petroleum and	47.	918	0.130
		of Right of User in the	48,	919	0.140
		) the Central Government acquire the right of user	49.	1010	0.0.0
erein;	es as intention to	acquire the fight of user	50.	1011	0 071
	aut any person inter	ested in the said land may,	51,	1012	0 010
		this notification, object to	52.	1013	0.010
laying of	the pipeline under	the land to the Competent	53.	1015	0.010
		Commission, HRI Gas Pipe	54.	1071	0.040
ne. 45. Siibt	hash Nagar, Sanwer	Road, Ujjain (M.P.).	55.	1072	0.010
And every		ch an objection shall also	56,	1040	0.060
And every	ally whether he wis	ch an objection shall also hes to be heard in person	57.	1041	0.020
And every	ally whether he wis practitioner.	hes to be heard in person	57. 58.	1041 1044	0.020 0.030
And every	ally whether he wis	hes to be heard in person	57. 58. 59.	1041 1044 1045	0.020 0.030 0.080
And every ate specifica by legar p	ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN	hes to be heard in person  E PROJECT	57. 58. 59. 60.	1041 1044 1045 906	0.020 0.030 0.080 0.010
And every ate specifica by legar p	ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tobsil: Pichhore,	hes to be heard in person  E PROJECT  District: Shivpuri (M.P.)	57. 58. 59.	1041 1044 1045	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030
And every ate specifica by legal p	ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN	hes to be heard in person  E PROJECT  District: Shivpuri (M.P.)	57. 58. 59. 60.	1041 1044 1045 906 1034	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080
And every ate specifica by legar p	ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tobsil: Pichhore,  CHED	hes to be heard in person  E PROJECT  District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acqui-	57. 58. 59. 60. 61. 62.	1041 1044 1045 906 1034 1046	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.0°0
And every ate specifica by legal p  Village Paygr	ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tobsil: Pichhore,  CHED	hes to be heard in person  E PROJECT  District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in	57. 58. 59. 60. 61. 62.	1041 1044 1045 906 1034 1046	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.0 <sup>-</sup> 0 0.060
And every ate specifica by legal p  Village Paygr	ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tobsil: Pichhore,  CHED	hes to be heard in person  E PROJECT  District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acqui-	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.0°0 0.060 0.0°0
And every ate specifica by legal p  Village Paygr  S. Survey	ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tabsil: Pichhore,  CHED  7 No.	hes to be heard in person  E PROJECT  District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.010 0.060 0.010
And every the specifica by legal p  //illage Paygr	ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tobsil: Pichhore,  CHED  No.	hes to be heard in person  E PROJECT  District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.0°0 0.060 0.0°0 0.010
And every the specifica by legal p  //illage Paygr	ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tobsil: Pichhore,  CHED  No.	hes to be heard in person  E PROJECT  District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.010 0.060 0.010 0.073 0.050
And every te specifica by legal p  Village Paygra  Survey  1	ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tobsil: Pichhore,  CHED  No.	hes to be heard in person  E PROJECT  District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.0°0 0.060 0.0°0 0.010
And every the specifica by legal p  //illage Paygra  S. Survey  No.  1 2	ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tobsil: Pichhore,  CHED  No.	hes to be heard in person  E PROJECT  District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.0°0 0.060 0.0°0 0.010 0.073 0.050 0.030
And every the specifica by legal p  Village Paygra  S. Survey  No.  1 2. 3. 4.	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2  480 479 455 456	hes to be heard in person  E PROJECT  District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140 0.240	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.0°0 0.060 0.0°0 0.010 0.073 0.050 0.030
And every the specifical by legal property of the specifical by legal property.  S. Survey No.  1. 2. 3. 4. 5.	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tobsil: Pichhore,  CHED  No.  2  480 479 455 456 478	hes to be heard in person  E PROJECT  District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.030 0.360	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.0°0 0.060 0.0°0 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060
And every ate specifica by legal p  Village Paygra  S. Survey  No.  1  2.  3.  4.  5.  6.	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2  480 479 455 456 478 473	hes to be heard in person  E PROJECT  District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.030 0.0360 0.070	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030
And every ate specifica by legal p  Village Paygra  S. Survey  No.  1. 2. 3. 4. 5. 6. 7.	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2  480 479 455 456 478 473 474	hes to be heard in person  E PROJECT  District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.030 0.0360 0.070 0.080	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069 1070	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010
And every the specifical by legal property of the specifical by legal property.  S. Survey No.  1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8.	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2  480 479 455 456 478 473 474 475	hes to be heard in person  E PROJECT  District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.030 0.0360 0.070 0.080 0.080	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069 1070 1163	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073
And every the specifical by legal p le	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2  480 479 455 456 478 473 474 475 476	District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.036 0.070 0.080 0.080 0.080 0.110	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069 1070 1163 1164	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073
And every the specifical by legal p  //illage Paygra  Survey  1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 0.	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2  480 479 455 456 478 473 474 475 476 467	District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.036 0.070 0.080 0.080 0.080 0.110 0.010	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069 1070 1163 1164 1101	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.050
And every the specifical by legal p  //illage Paygra  Survey  1.  2.  3.  4.  5.  6.  7.  8.  9.  0.  1.	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2  480 479 455 456 478 473 474 475 476 467 468	District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.036 0.070 0.080 0.080 0.010 0.010 0.040	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069 1070 1163 1164 1101	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.010 0.073
And every the specifical by legal p p legal p	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2  480 479 455 456 478 473 474 475 476 467 468 483	District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.0360 0.070 0.080 0.080 0.080 0.010 0.010 0.040 0.030	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069 1070 1163 1164 1101 1102	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.073 0.010 0.073
And every ate specifica by legal p Paygrams. Survey No.  1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11.	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2  480 479 455 456 478 473 474 475 476 467 468 483 434	District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.0360 0.070 0.080 0.080 0.080 0.010 0.010 0.040 0.030 0.030 0.010	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069 1070 1163 1164 1101 1102 1 103 1093	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.080
And every ate specifica by legal p Paygrams. Survey No.  1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14.	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2  480 479 455 456 478 473 474 475 476 467 468 483 434 600	District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.0360 0.070 0.080 0.080 0.010 0.010 0.040 0.030 0.030 0.010 0.010 0.010 0.010 0.0180	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069 1070 1163 1164 1101 1102 1103 1093 1094	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073
And every ate specifica by legal p leg	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2.  480 479 455 456 478 473 474 475 476 467 468 483 434 600 601	District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.0360 0.070 0.080 0.080 0.010 0.010 0.040 0.030 0.030 0.010 0.010 0.180 0.010	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069 1070 1163 1164 1101 1102 1103 1093	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.040 0.050 0.050 0.050 0.050 0.050 0.050 0.050 0.050 0.050 0.050 0.050 0.050 0.050 0.050
And every ate specifica by legal p leg	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2.  480 479 455 456 478 473 474 475 476 467 468 483 434 600 601 603	District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.0360 0.070 0.080 0.080 0.010 0.010 0.040 0.030 0.030 0.010 0.010 0.180 0.010 0.150	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 83.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069 1070 1163 1164 1101 1102 1103 1093 1094 1095	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.010 0.073 0.010 0.073 0.010 0.073 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010
And every ate specifica by legal p leg	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2.  480 479 455 456 478 473 474 475 476 467 468 483 434 600 601 603 604	District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.0360 0.070 0.080 0.080 0.010 0.010 0.040 0.030 0.010 0.180 0.010 0.150 0.150 0.140	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 83. 84.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069 1070 1163 1164 1101 1102 1103 1093 1094 1095	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.010 0.073 0.010 0.073 0.010 0.073
And every the specifical by legal p p legal p le	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2.  480 479 455 456 478 473 474 475 476 467 468 483 434 600 601 603 604 605	District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.0360 0.070 0.080 0.080 0.010 0.010 0.040 0.030 0.030 0.010 0.180 0.010 0.150 0.140 0.030	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 83. 84. 85. 86. 87.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069 1070 1163 1164 1101 1102 1103 1093 1094 1095	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.073 0.010 0.073 0.010 0.073 0.010 0.073 0.010 0.073 0.010 0.073 0.010 0.073 0.010 0.070 0.010 0.010 0.010
And every ate specifica by legal p leg	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2.  480 479 455 456 478 473 474 475 476 467 468 483 434 600 601 603 604 605 607	District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in  Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.0360 0.070 0.080 0.080 0.010 0.010 0.040 0.030 0.030 0.010 0.180 0.010 0.150 0.150 0.140 0.030 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.030 0.010	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 83. 84. 85. 86. 87. 88.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069 1070 1163 1164 1101 1102 1103 1093 1094 1095 1097 891 893	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.040 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030
And every ate specifica by legal p leg	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2.  480 479 455 456 478 473 474 475 476 467 468 483 434 600 601 603 604 605 607 608	District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.0360 0.070 0.080 0.080 0.110 0.010 0.040 0.030 0.030 0.010 0.180 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 83. 84. 85. 86. 87. 88.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069 1070 1163 1164 1101 1102 1103 1093 1094 1095 1097 891 893 893 87 890 1117	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.060 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.040 0.073 0.040 0.070 0.060 0.030 0.010 0.070 0.010 0.070 0.010 0.070 0.010 0.010 0.070 0.010 0.010 0.010 0.010 0.010 0.010
And every ate specifica by legal p p legal p l	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2.  480 479 455 456 478 473 474 475 476 467 468 483 434 600 601 603 604 605 607 608 606	District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.0360 0.070 0.080 0.080 0.110 0.010 0.010 0.040 0.030 0.030 0.010 0.180 0.010 0.150 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.010 0.0150 0.010 0.0150 0.010 0.0150 0.010	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 83. 84. 85. 86. 87. 88.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069 1070 1163 1164 1101 1102 1103 1093 1094 1095 1097 891 897 893 87	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.073 0.050 0.030 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.073 0.040 0.073 0.040 0.030 0.010 0.073 0.040 0.030 0.010 0.070 0.020 0.080 0.010 0.130 0.010 0.010 0.010 0.010 0.010 0.010
And every ate specificate by legal p  Village Paygra  S. Survey  No.  1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8.	Ally whether he wisoractitioner.  HBJ GASPIPELIN  1. Tohsil: Pichhore,  CHED  No.  2.  480 479 455 456 478 473 474 475 476 467 468 483 434 600 601 603 604 605 607 608	District: Shivpuri (M.P.)  ULE  Area to be acquired for R.O.U. in Hectares  3  0.140 0.240 0.030 0.030 0.0360 0.070 0.080 0.080 0.110 0.010 0.040 0.030 0.030 0.010 0.180 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150 0.140 0.030 0.010 0.150	57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 83. 84. 85. 86. 87. 88.	1041 1044 1045 906 1034 1046 1047 1048 905 907 908 894 896 1066 1067 1068 1069 1070 1163 1164 1101 1102 1103 1093 1094 1095 1097 891 893 893 87 890 1117	0.020 0.030 0.080 0.010 0.030 0.080 0.070 0.060 0.070 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.050 0.030 0.010 0.060 0.030 0.010 0.073 0.040 0.030 0.010 0.073 0.040 0.030 0.010 0.073 0.040 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.030 0.010 0.010 0.010 0.010 0.010 0.010 0.010 0.010

का. आं. 815— मतः केन्द्रोय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह प्रावश्यक है कि मध्यप्रदेश राज्य में हर्जारा से बरेली से जगदोशपुर पेट्रोलियम के परिवहन के लिय पाइप लाइन गैस ध्यारिट. प्राफ इंडिया द्वारा बिछाई जानी चाहिय।

भीर, यतः, यह प्रतीत होता है कि एसी लाईनों को बिछाने के प्रयोजन के लिय एतवपाबद भनुसूची में वींणत भूमि में उपयोग का मधिकार भींजत करना मावश्यक है।

मतः, प्रव, पेट्रोलियम भौर खनिज पाइप लाइन (भूमि में उपयोग के भिष्ठकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) का धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रवत सिक्तियों का प्रयोग करते हुए कन्द्रीय सरकार ने उसमें उपयोग का अधिकार अर्जित करने का अपना आशय एतद्द्वारा भौषित किया है।

बनतें कि उक्त मूमि में हितबद्ध कोई व्यक्ति. उस भिम के नीचे पाइप लाइन बिछाने के लिए आक्षेप मक्तम प्राधिकारा, तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग, उपन को० जे० पाईप लाईन 45, सुभाष नगर, संबेररोड, उज्जैन (म.प्र.) 456001 को इस प्रधिसूचन। की तारीख स 21 विनों के भीतर कर सकेगा।

भौर ऐसा माक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिदिय्टलमा यह भी कथन करेगा कि क्या वह यह बाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिगत हो या किसी विधि व्यवसायी को मार्फत।

अनुसूर्यः एवः बोः जे.गैस पाइप लाइन प्रोजेक्ट

ग्रमः वैसाचीड़ा; <u> </u>	तहसीलः महिवपूरः	,	मध्य ग्देश
अनुष्क. खसरा	नं .	उपयोग अधिकार अर्जन का (हैक्टस	
1	2	3	
1	83	0.	160
2	94	0.:	180
3	8 5	0.2	200
4	86	0.0	080
5	87/1	0.1	120
6	71	0.1	110
7	73	0.0	0:20
8	74	0.5	140
9	90	0.1	80
10	91	0.0	020
11	95	0.0	005
12	.96	0.5	00
13	103	0.1	70
14	103/2	0.1	00
15	-108/5	0.2	30
16	-108/6	0.2	80
17	-108/3	0.2	40
18	-1 o 7/3	0.1	40
19	-109	0.0	20
20	-115/1	0.3	00
21	-168/1	0.2	40
22	1 1 6	0.1	50
23	-167/4	0.2	
2,4	-167/5	0.2	80
25	-167/1/1/	0.1	
26	-167/1/1	0.3	00
27	167/2	0.0	

1	2	3
28	167/3	
29	164	0.0:0
30	165	0.0:0
31	175	0.060
32	176	0.050
33	177	0.130
34	178	0.040
35	179	0.320
36	188	0.010
37	189	0.240
38	190	0.330
39	186/2	0.010
40	191	0.010
41	192	0.450
42	197	0.005
43	107/1	0.100
44	72/1	0.250
45	72/2	0.160
46	108/4/2	0.050
योगः कुल क्षेत्रफल		7.090

[सं .O-14016/535/86-जेप:]

S.O. 815.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of petroleum from Hazira-Bareilly to Jagdishpur in Madhya Pradesh State pipe line should be laid by the Gas Authority of India Limited.

And, whereas, it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the Schedule annexed hereto.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petrolaum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962) the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein;

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Oil and Natural Gas Commission, HBJ Gas Pipe Line, 45, Subhash Nagar, Sanwer Road, Ujjain (M.P.).

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

	SCHE	DULE		
	HBJ GAS PIPEL	INE PROJECT		
Village :	Belakheda Tehsil : Mal	hidpur District : Ujjain Sta M.		
S. Survey No. No.		Area to be acquired for R.O.U. in Hectares	i-	
1		3		
1.	83	0.10	50	
2.	84	0 18	30	
3.	85	0.70	00	
4.	86	0 08	30	
5.	87/1	0.13	20	
6.	71	0 11	0	
7.	73	0.020		

	<del></del>	
1	2	3
8.	74	0.440
9.	90	0.180
10.	91	0.020
11.	95	0.005
12.	96	0,500
13,	103	0.170
14.	<b>—102/2</b>	0.100
15.	108/5	0.230
16.	108/6	0.280 ~
17.	108/3	0.240
18.	107/3	0.140
19.	109	0.0 0
20.	<b>—</b> 115/1	0.300
21.	168/1	0.240
2?.	<b>—</b> 116/	0.150
23,	<b>—1</b> 67/4	0.240
24.	<b>→</b> 167/5	0.280
25.	167/1/1/2	0.180
26,	<b></b> 16 <b>7/1/1</b>	0.200
2 <i>7</i> .	167/2	0.060
28.	167/3	_
29.	164	0.020
30.	165	0.020
31.	175	0.060
32.	176	0 050
33.	177	0.1~0
34.	178	0.040
35.	179	0.370
36.	188	0 010
<b>37.</b>	189	0.240
38.	190	0.330
39.	186/2	0.010
40.	191	0 0 10
41.	19י	0.450
<b>4</b> .٦.	197	0 005
43.	107/1	0.100
44.	72/1	0.250
45.	<b>7</b> 2 /2.	0.160
46.	108/4/2	0.050
Т	intel Arca	7.090

[No. O-14016/535/86-GP]

का .आ . 816.—यतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह आवश्यक है कि मध्यप्रदेश राज्य में हजीरा से बरेली से जनदीलपुर पेट्रोलियम के परिवहन के लिये पाइप लाइन गैस अधारिटी आफ इंडिया द्वारा बिछाई जानी चाहिये।

और यतः यह प्रतीत होता है कि ऐसी लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिये एनद्पाबद अनुसूची में वर्णित भूमि में उपयोग अधिकार अर्जित करना आवश्यक है।

अतः अब पेट्रोलियम और खनिज पाइप लाइन (भूमि में उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रद्वत कक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्र य सरकार ने उसमें उपयोग का अधिकार औजत करने का अपना आस्त्र एतद्वारा घोषिन किया है।

बजतों कि उक्त भूमि में हितबब कोई व्यक्ति उस भूमि के नीचे पाइप लाइन विछाने के लिए आसीप ससीम प्राधिकारों तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग, एच भी जे. पाइप लाइन 45, सुभाषनगर सीवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) 456001 जो इस अधिसूचना की तारीख 21 विनों के भीतर करसकेगा। जीर ऐसा आक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिधिष्टता यह भी कथन करेगा कि क्या यह यह बाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिगत हो या किसी विधि व्यवसाय। को मार्फत।

एव.बी.जे. येस पाइप लाइन प्रोजेस्ट

अनुसूचा					
अन् क.	खसरानं.	उपयोग अधिकार अर्जन का क्षेत्र (हैक्टस <sup>°</sup> में)			
1.	560	0.01			
$2_{ullet}$	56?	0.016			
3.	684	3.320			
4.	680	0.116			
5•	670	0.100			
6.	675	0.218			
7.	677	0.526			
8.	731	0.130			
योगः कुल क्षेत्रफल	<del></del>	4.418			

S.O. 816.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of petroleum from Hazira-Barilly to Jagdishpur in Madhya Pradesh State pipe line should be laid by the Gas Authority of India Limited.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in teh land described in the Schedule annexed hereto:

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962) the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein;

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Oli and Natural Gas Commission, HBI Gas Pipe Line, 45, Subhash Nagar, Sanwer Road, Ujjain (M.P.).

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be hear in person or by legal practitioner.

HBJ GAS PIPELINE PROJECT

Villago: Kesar Bardi Tchsil: Petlawad Distt.: Jhabua State M.P.:

SCHEDULE						
S. No.	Khasra No.	Area to be acquired for R.O.U. (In Hectares)				
1.	560	0 010				
2.	562	0.010				
3.	684	3.370				
4.	680	0.110				
5,	679	0 100				
6.	675	0.218				
7.	677	0 5 0				
8.	731	0 130				
	Total Area	4.418				
		Tat- O 14016/626/06 OD				

[No. O-14016/536/86-GP]

का.आ.817.—यतः केन्द्रिय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह आवश्यक है कि गुजरात राज्य में उमेराट से हजीरा तक पेट्रोलियम के परिवहन के लिए पाइपलाइन तेल तथा प्राकृतिक गैस अधिग द्वारा बिछाई जानी सहिए।

ओर यतः यह प्रतीत होता है ति ऐसी लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिये एनपुनाबद अनुभूनों में वर्गित भूमि में उपयोग का अधिकार अजित करना आवश्यक है।

अतः अब पेट्रोलियम और खिनिज पाइयनाइन (भूमि में उपयोग के अधिकार का अर्जेन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपयारा (1) द्वारा प्रवत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्र य सरकार ने उसमें उपयोग का अधिकार अजित करने का अपना आश्रय एतद्वारा घोषित किया है।

बगतें कि उक्त भूमि में हितबद कोई व्यक्ति, उस भूमि के निवेपाइप लाइन बिछाने के लिए आक्षेप सक्षम प्राधिकारी, तेल तया प्राकृतिक गैस आयोग, हजीरा प्रोजेक्ट, 60, सुआय नगर सोसायटी, बोडवाडे रोड, सुरत को इस अधिसूचना की तारीख से 21 दिनों के भीतर कर सकेगा।

और ऐसा आक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिर्देष्टकः यह भी कथन करेगा कि क्या वह यह वाहता कि उसकी सुनवाई व्यक्तिगत हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फत।

अनुसूची उमराट से हजीरा तक पाइप-लाइन विछाने के लिए

राज्य:गुजरात; जिला:सुरत; तालुक: चोरासी

— गांव	स्लाक्षनं,	हेक्टर	भार	<b>सेर्ग्ट</b> ंयर
भाटपोर	333	0	68	80
		[सं. मो-14016	543/8	छ-जीवो ]

S.O. 817.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of petroleum from Ubharat to Hazira in Gujarat State pipeline should be laid by the Oil and Natural gas Commission.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the Schedule agnexed hereto:

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipeline (Acquisition of Right of User in the Land) Act. 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein;

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Oil and Natural Gas Commission, Hazira Project, 'Prahar' 60, Subhash Nagar Society, Ghod-Dod Road, Surat.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by a legal practitioner.

#### **SCHEDULE**

#### PIPELINE FROM UBHARAT TO HAZIRA

State : Gujarat District : Surat Taluka : Chorasi

Village	Block No.	Hoctare	Are	Contiare
Bhatpore	333	0	68	80
		[No. O-140	16/543	/86-GP

का. आ. 818.— यनः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीन होता है कि लोकहिन में यह आवश्यक है कि उत्तर प्रदेश में हजीरा—अन्ती—जगदीशपुर तक पेट्रोलियम के परिवहन के लिए पाइनलाइन भारतीय गैस प्राधिकरण लि. द्वारा किछाई जानी माहिए।

भीर यतः प्रतीत होता है कि एंसी लाइनों को बिछाने का प्रयोजन के लिए एतद्वपाबद्ध प्रनुसूची में वणित भूमि में उपयोग का प्रधिकार प्रजित करना प्रावश्यक है!

घतः मत पेट्रोलियम भीर खतिज पाइन लाइन (मूमि में उपयोग के मधिकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदन्त सक्तियों को प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने उस में उपयोग का मधिकार अर्जित करने का मपना श्रासय एनद्वारा घोषित किया है।

बार्सों कि उन्त भूमि में हितबढ़ कोई ध्यक्ति छम भूमि के नीचे पाइप लाइन बिछाने के लिये धाक्षेप सक्षम प्राधिकारी, भारतीय गैस प्राधिकरण लि. बी-58 वी, धलीगंज लखनऊ-226020 यू. पी. को इस प्राधिक्तरण की तारीख से 21 दिन के भीतर कर सकेगा।

भौर एसा भाक्षेप करने वाला हर श्वक्ति विनिर्दिष्टतः यह भी कथन करेगा कि क्या वह चाहता है कि उपकी मुनताई व्यक्तिगत रूप से हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्कत।

घतुसूची हाजिरा–बरेली–जगदीशगुर गैस पाइप लाइन प्रोजेक्ट

জিলা -	तहसोल	परगना	ग्राम	गाटा संख्या	धर्मित रकम एकड़ में	विवरण
मांसी	शोसी	झांसी	<b>ब</b> छौनी	502	0-22	
				553/2	0-12	
				1106	0-01	
		[सं. O−1	2016/9	 6/84-फ्री	एन जी	

S.O. 818.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroleum from Hajira-Bariely to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipcline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein;

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the raying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd. H.B.J. Pipeline Project B-58 B, Aliganj, Lucknow-226020 U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

#### SCHEDULE

Supplementary Notification U/S. 3(i)H.B.J. Gas Pipe Line Project

District	Tehsil	Pargana	. Village	Plot No.	Area in acres	
1	2	3	4	5	6	7
Jhansi	Jhansi	Jhansi l	Bachauni	502 553/2 1106	0—22 0—12 0—01	

[No. O-12016/96/84-ONG-D 4]

का. था. 819:----पतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रगीत होता है कि लोक--हित में यह प्रावश्यक है कि उत्तर-प्रदेश में हजीरा--धरेली--जगदीणपुर तक पेट्रोलियम के परिवहन के लिए पाइप लाइन भारतीय गैस प्राधिकरण लि. द्वारा बिछाई जानी चाहिए।

ग्रीर यतः प्रतीस होता है कि ऐसी लाइनों को बिछाने का प्रयोजन के लिए एतवुपायद्ध ग्रनुसूची में विणित भूमि में उपयोग का ग्रधिकार भजिस करना आवश्यक है।

धतः घव पेट्रोलियम भीर खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के प्रशिकार का प्रजैन) (मिश्रिनियम 1962) 1962 का 50 की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त सक्तियों को प्रयोग करते हुए केर्न्छा सरकार ने उसमें उपयोग का प्रधिकार प्रजित करने का धवना प्राप्त र एतदृश्वारा घोषित किया है।

बशर्में कि उक्स भूमि में हितबढ़ कोई व्यक्ति उस भूमि के निवे पाइप लाइन बिटाने के लिये ग्राक्षेप सक्षम प्राधिकारी भारतीय गैंस प्राधिकरण लि. बी-58 बी भ्रलीगंज लखनऊ-226020 यू. पी. की इस ग्राधिसुबना की तारीख से 21 दिन के भीतर कर सकेगा।

भीर ऐसा भाक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिर्दिष्तः यह भी करने करेगा कि क्या यह चाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिगत रूप से हो या किसी विश्वि व्यवसायी की सार्फत ।

धनुसूची हाजिरा-अरेली-जगदीणपुर गैस पाइप लाइन प्रोजेक्ट

जिला	सहसीस	परगना	ग्राम	गाटा संख्या	र्घाजत रकबा एकड्र में	विवरण
झांसी	भांसी	भांसी	पनावर	गी		
			कशा	2510	0-07	
				2598	0-11	
				256.6	0-04	
				2617	0-02	
				2618	0-50	

[मं. O-12016/96/84- मो एन जी-की4)

S.O. 819.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroluem from Hajra-Bariely to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein;

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the Jaying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd. H.B.J. Pipeline Project B-58|B. Aliganj, Lucknow-226020 U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner

#### **SCHEDULE**

Supplementary Notification U/s 3(i) H.B.J. Gas Pipe Line Project

District	Tahsil	Pargan	a Village	Plot No.	Area in acres	Re- marks
	2	3	4	5	6	7
Jhansi	Jhansi	Jhansi	Punavali	2566	004	
			Kala	2617	0-02	
			·	2618	0-50	
				2510	007	
				2598	0—11	

[No. O-12016/96/84-ONG-D4]

का. मा. 820:—यतः केन्द्रीय सरकार की यह प्रतीत होता है कि लोक-हित में यह धावम्यक है कि उत्तर प्रदेण में हृतीश-वरेली-जगदीणपुर तक पेट्रोलियम के परिवहन के लिए पाइप लाइन भारतीय गैस प्राधिकरण लि. द्वारा बिछाई जानी चाहिए।

भीर यतः प्रतीत होता है कि एसी लाइनों को विखाने का प्रयोजन के लिए एतदुपाबढ़ भ्रनुसूची में विणित भूमि में उपयोग का प्रधिकार अर्जित करना भावस्यक है।

भतः भव पेट्रोलियम और खनिज पाइप लाइन (भूमि में उपयोग के सिक्षकार का भर्जन) भीधनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (i) द्वारा प्रवन्त शक्तियों को प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने उसमें उपयोग का भिक्षकार भिज्ञत करने का भ्रवना भाष्य एसवृद्वारा घोषित किया है।

बशर्ते कि उक्त पूमि में हिसबद कोई व्यक्ति उस भूमि के शीचे पाइप लाइन बिटाने के लिये प्राक्षेप सक्षम प्राधिकारी भारतीय गैस प्राधिकरण लि. बी-58 बी ब्रलीगंत्र लखनऊ-226020 यू. पी. को इस अधिसुचना की तारीखा से 21 दिन के भीतर कर सकेगा।

ग्रीर ऐसा भाक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिदिब्दतः यह भी कथन करेगा कि क्या वह चाहता है कि उसकी सुनवार्ड व्यक्तिगत कप से हो या किसी विश्वि व्यवसायी की मार्फत ।

भ्रमुसूची हाजिरा – बरेसी - जगदीशपूर गैस पाइप लाइन प्रोजेस्ट

जिला	नहमील	प्रशना	चाम	गाटा सं .	श्राज्ञित रकवा एकड़ में	विवर <b>ण</b>
—— - जालीन	कोंच	कोंच	भदेवरा	329	0-01	
				9.9	0-02	
				100	0-03	
				405	0-03	
				335	0-03	
				49	0-02	
				380	0-72	

S.O. 820.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of Petroluem from Haira-Bariely to Jagdishpur in Uttar Pradesh State Pipeline should be laid by the Gas Authority of India Ltd.

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipeline, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the Section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in the Land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein;

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the Jaying of the pipeline under the land to the Competent Authority, Gas Authority of India Ltd. H.B.J. Ploeline Project B-58/B, Aligani, Lucgknow-226020 U.P.

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by legal practitioner.

SCHEDULE
Supplementary Notification U/S 3(1) H.B.J. Pipe Line

Distt.	Tehsil	Pargana	Villago	Plot No.	Area in acres	Re- marks
1	2	3	4	5	6	7
Jhaluar	ı Kon	ch Konc	h Bhadow	ara 329	001	
				99	002	
				100	003	-
				405	0-03	
				335	003	
				49	002	
				380	072	

[No. O-14016/113/114/85-GP]

का. था. 821:—यनः भारत सरकार की अधिसूचना के द्वारा जैसा कि यहां संलग्न प्रनुसूची में निर्दिष्ट किया गया है और पेट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि के उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधि—नियम, 1962 के खंड 6 के उपखंड (1) के अंतर्गन प्रकाशित किया गया है, गुजरात राज्य में उकत विनिधिष्ट भूमि में स्थान स्थल सं. उभाराट से हजीरा तक पेट्रोलियम परिवहन के लिए भूमि उपयोग के अधिकार अजित किए गए हैं।

तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग ने उपयुक्त प्रधिनियम की धारा 7 की उपधारा (1) के खंड (i) में विनिर्दिष्ट कार्य दिनांक 31--8-85 से समाप्त कर दिया गया है।

मतः मन पेट्रोलियम पाइप लाइन (भूमि के उपयोग के मधिकार का मर्जन) नियम 1963 के नियम 4 के प्रतिनंत सजम प्राधिकारी एतड्द्रारा उक्त तिथि को कार्य समापन की तिथि मधिमुचिन करने हैं।

धनुसूची उभराट से हुजीरा तक पाइप लाइन कार्य समाप्ति

			<del></del>	
मैक्सालीय का	गाव	का.मास.	भारत के राजवहा	कार्य समाप्ति की
नाम			में प्रकाशन की	तिथि
			বিথি	

पेट्रोलियम मामबोर तहु॰ चोरासं। जिला ॰ सुरत 94 224. 4. 8431. 8. 85

प्र. टा. खेंगार, गुजरात सुरत घौर वलनाड जिला से लिए नियमान्तर्गत सक्षम प्राधिकारी [मं. O-12016/116/83 थ्रोड/जी. पी]

एम०एस० श्रीनिवासन, निवेशक/(एन जो)

S.O. 821.—Wehreas by the notification of Government of India as shown in the schedule appended hereto and issued under sub section (1) of section 6 of the Petroleum & Minerals Pipeline (Acquisition of Right of user in land) Act, 1962 the right of user has been acquired in the lands specified in the schedule appended thereto for the transport of petroleum from Ubhrat to Hazira in Gujarat State.

And whreas the Oil & Natural Gas Commission has terminated the operations referred to in clause (i) of subsection (1) of section 7 of the said Act on 31-8-1985.

Now therefore under Rule 4 of Petroleum Pipelines (Acquisation of right of usor in land) Rules, 1963, the Competent Authority hereby notifies the said date as the date of termination of operation to above.

# SCHEDULE Termination of Pipeline from Ubhrat to Hazira

Name of Ministry	Villago	S.O. No.	Date of publication in the Gazette of India	Date of termina- tion of operation
Petrole um	Bhimpore Tal: Chorasi Dist: Surat	942	24-4-84	31-8-85

#### (P.T. KHENGAR)

Competent Authority under the act for Surat & Varsad Districts in Gujarat State. [No. 12016/116/83-PROD/GP] M.S. SRINIVASAN, Director (NG)

# स्वास्थ्य और परिचार कल्याण मंत्रालय

नर्ध दिल्ली, 17, फम्बरी, 1980

का.मा 822:—भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषव् म्रिधितयम, 1970 (1970 का 48) की धारा 14 की उपधारा (2) द्वारा प्रदर्भ पश्चियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय मरकार भारतीय विकित्सा केन्द्रीय परिषद् से परामर्थ करते के बाद एनद्झारा अका प्रधितयम की द्वितीय मनुसूची में निम्नलिखित और संगोधन करती है, भ्रयांत्:—

उक्त अनुसूची के भाग 1 में हिमाचल प्रदेण विश्वविद्यालय शिमला से संबंधित कम सच्या 24ग के सामने कालम 2,3 भीर 4 के अधीन मौजूदा प्रविध्टियों के बाद कमण: निम्नितिख्ति भीर प्रविध्टियां रखी जाए, अर्थात :-

1 2	3	4	
<ol> <li>"धायुर्वेदाचार्य भाषः भायुर्वेदिकः सर्जेरी)</li> </ol>		करने	भगस्त 1985 परीक्षा उत्तीर्णे पर प्राप्त की
			8XI I

[सं. भार --12015/18/85- ए. है.] आर. एस. माथुर, मनर सनिव

मोट: भारतीय चिकित्मा कंन्द्रोप परिषद् प्रावितियन, 1970 (1970 का 48) की दितीय अनुसूची को बाद में निम्नतिखित द्वारा संशोधित किया गया है:-

का. मा. सं. 4068 दिनोक 30 नवस्वर, 1979
 का. मा. सं. 2635 दिनोक 18 सितस्कर, 1980

- 3 का. घा. मं. 2313 विनांक 20 धगस्त, 1981
- 4 का मा. सं. 2134 विनांक 22 प्रगस्त, 1981
- 5. का. था. मं. 137 विनांक 24 दिसम्बर, 1981
- 6. का. भा. मे. 639 दिनांक 25 जनवरी, 1982
- 7. का. श्रा. सं. 661 दिमांक 2 फरवरी, 1982
- 8. का. घा. सं. 973 दिनांक 20 फरवरी, 1982
- 9. का. धा. मं. 354(ई) दिसांक 6 मई, 1983
- 10 का. था. सं. 3550 दिनांक 5 सितम्बर, 1983
- 13. का. मा. सं. 804(ई) विनांक 11 नवस्वर, 1983
- 12 का घा सं. 462(ई) वितक्ति 23 जून, 1984
- 13. का. ग्रा. सं. 1911 दिनांक 17 भारील, 1985
- 14. का. ग्रा. सं. 2745 दिनांक 29 मई, 1985
- 15 का. भा, सं. 3404 दिनोक 5 जुलाई, 1985
- 16 का. भा. सं. 4057 विनोक 14 ग्रगस्त, 1985
- 17. का. था. स. 5603 विनांक 2 विसम्बर, 1985
- 18. का. मा. सं. 5671 दिसांक 5 दिसांबर, 1985

#### MINISTRY OF HEALTH & FAMILY WELFARE

#### New Delhi, the 17th February, 1986

S.O. 822.—In exercise of the powers conferred by subsection (2) of section 14 of the Indian Medicine Central Council Act, 1970 (48 of 1970), the Central Government, after consulting the Central Council of Indian Medicine, hereby makes the following further amendment in the Second Schedule to the said Act, namely:—

In Part I of the said Schedule against serial number 24C relating to the Himachal Pradesh University, Simla, under columns 2, 3 and 4, after the existing entries, the following further entries shall respectively be inserted, namely:—

1	2	3	4
	"Ayurvedacharya (Bachelor of Ayurvedic Medicine and Surgery	B.A.M.S.	Degree obtained by passing examination held in August 1985 only"

[No. R-12015/18/85-AE] R. S. MATHUR, Under Secy.

NOTE: The Second Schedule to the Indian Medicine Central Council Act, 1970 (48 of 1970) has been subsequently amended vide:—

- 1. S.O. No. 4068, dated the 30th November, 1979.
- 2. S.O. No. 2635, dated the 18th September, 1980.
- 3. S.O. No. 2313, dated the 20th August, 1981-
- 4. S.O. No. 2314, dated the 22nd August, 1981.
- 5. S.O. No. 137, dated the 24th December, 1981.
- 6. S.O. No. 638, dated the 25th January, 1982.
- 7. S.O. No. 661, dated the 2nd February, 1982.
- 8. S.O. No. 973, dated the 20th February, 1982.
- 9. S.O. No. 354(E), dated the 6th May, 1983.
- 10. S.O. No. 3550, dated the 5th September, 1983.
- 11. S.O. No. 804(E), dated the 11th November, 1983.
- 12. S.O. No. 462(E), dated the 23rd June, 1984.
- 13. S.O. No. 1911, dated the 17th April, 1985.
- 14. S.O. No. 2745, dated the 29th May, 1985.
- 15. S.O. No. 3404, dated the 5th July, 1985.
- 16. S.O. No. 4057, dated the 14th August, 1985.

17. S.O. No. 5603, dated the 2nd December, 1985.18. S.O. No. 5671, dated the 5th December, 1985.

#### \_\_\_\_\_

#### शहरी विकास मंद्रालय

#### नई दिल्ली, 6 फरवरी, 1986

ता. भा. 823.—भत. केश्रीय सरकार का नीचे लिखे क्षेत्रों के बारे में दिल्ली की बृहत योजना में कपितय संशोधन करने का प्रस्ताव है जिसे विल्ली विकास मिधिनियम, 1957 (1957 का 61) की धारा 44 के उपबन्धों के भनुसार दिनांक 8-9-84 को नोटिस संख्या एक ं 20(5)/83 एम. पी. के साथ प्रकाशित किया गया था जिसमें उक्त नोटिस की तारीख से 30 दिन के भीतर उक्त मिधिनियम की धारा 11-क की उपधारा (3) में मेथेसित मापित्यां/सुझाब मागे गए थे।

त्रीर यतः उक्त संशोधन के वंदि में कोई भापति/सुझाय प्राप्त नहीं हुमा है।

मतः प्रव केन्द्रीय सरकार उन्त भिधिनियम की धारा 11-क की उपधारा (2) द्वारा प्रवत्त गनितयों का प्रयोग करते हुए एतव्दारा दिल्ली की गृहत योजना में भारत के राजपन्न में इस प्रधिमूचना के प्रकाशन की तारीख से निम्नलिखित संगोधन करती है, प्रयति :---

#### संगोधन :

"गांव जफरपुर के समीप भीर गांव उजवा को जाने वाली सङ्क के उत्तर में स्थित लाभग 7.9 हैक्ट. (19.5 एकड़) क्षेत्र का भूमि उनयोग सानीण लपयोग जोन/कृषि हरित' पट्टी से खबलकर 'सार्थ-शीक एक अर्ध-तःक्षेत्रनिक सुविदासों' (सस्वताल) में किया जाता हैं।"

> [संख्या के 13011/12/78-डी. डी. 1 (ए)/IIए] एच. के. घोष, डेस्क धार्धकारी

#### MINISTRY OF URBAN DEVELOPMENT

New Delhi, the 6th February, 1986

S.O. 823.—Whereas cectarin modification, which the Central Government proposes to make in the Master Plan for Delhi regarding the areas mentioned hereunder, were published with Notice No. F. 20(5)/83-MP dated 8th September, 1984 in accordance with the provisions of section 44 of the Delhi Development Act, 1957 (61 of 1957) inviting objections/suggestions, as required by sub-section (3) of section 11-A of the said Act, within thirty days from the date of the said notice;

And whereas no objections or suggestions have been received with regard to the aforesaid modifications;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2) of Section 11-A of the said Act, the Central Government hereby makes the following modifications in the said Master Plan for Delhi with effect from the date of publication of this notification in the Gazette of India, namely:—

### MODIFICATIONS

"The land use of an area measuring about 7.9 Hectares (19.5 acres) located near village Zaffarpur and situated on the north of road leading to village Ujwa, is changed from 'Rurar Use' Zone/'Agricultural Green Belt' to 'Public and Semi-public facilities' (Hospital)."

[No. K-13011/12/78-DDI(A)/IIA] H. K. GHOSH. Desk Officer

#### श्रम मंत्रालय

नई दिल्ली, 3 फरवरी, 1986

का. घा. 824.—प्रोद्योगिक विवाद प्रिवित्यम, 1947 (1947 का 14) को घारा 17 के धनुसरण में, केन्द्रीय भरकार, इलाहाबाद बैंक शखनऊ के प्रवंधतंत्र से सम्बद्ध नियोजकों भीर उनके कर्मकारों के बीच, धनुबंध में निविष्ट धौद्योगिक प्रिवाद में केन्द्रीय सरकार भौद्योगिक प्रिवाक करण, कानपुर के पंचाट को प्रकाशित करती है।

# MINISTRY OF LABOUR (Department of Labour)

New Delhi, the 3rd February, 1986

S.O. 824.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Kanpur as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the Allahabad Bank, Lucknow and their workmen.

BEFORE SHRI R. B. SRIVASTAVA, PRESIDING OFFI-CER, CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL CUM-1.ABOUR COURT, KANPUR

I.D. No. 211/84

Reference No. L-12012/94/D-II(A)
Dated 15th November, 1984

In the matter of dispute between

Shri Shitla Prasad C/o General Secretary U.P. Bank Employees Union, 165, Sobatiabagh, Allahabad.

#### AND

The Deputy General Manager, Allahabad Bank Hazaratganj, Lucknow.

#### APPEARANCE:

Shri V. N. Sekhari—for the workman. Shri M. K. Verma—for the management.

#### AWARD

1. The Central Government, Ministry of Labour, vide its notification No. L-12012/94/84/D. II(A) dated 15th November, 1984, has referred the following dispute for adjudication:

Whether the action of the management of Allahabad Bank Lucknow in relation to their Baraundha branch District Mirzapur in terminating the services of Shri Shitla Prasad Ex-peon-cum-Farrash with effect from 30th April, 1982 is justified? If not, to what relief is the workman concerned entitled?

- 2. The case of the workman is that he worked for 373 days as temporary peon-cum-farrash at Baraundha branch of the management bank in District Mirzapur and was terminated w.e.f. 30th April, 1982 without assigning any reason in utter disregard of the provisions of the I.D. Act. It is further alleged that the workman belongs to scheduled caste and was sponsored by the employment exchange Mirzapur in clear vacancy of full time peon-cum-farrash at Baraundha branch of the bank in response to the banks letter dated 10th January, 1981. The workman has completed 373 days of work during the period from 12th January, 1981 to 30th April, 1982 out of which he has completed 294 in 12 consequtive months on or before his termination w.e.f. 30th April, 1982. That the workman was not given any appointment letter under para 495 of the Sastri Award and that he was also not given any termination letter under para 522(5) of the Sastri Award. It is further alleged that the workman was retrenched with effect from 30th April, 1982 and no retrenchment compensation was paid to the workman. It is further alleged by the workman that the bank has adonted unfair labour practice and depied the genuine claim of the workman for permanent employment in subordinate cadre i.e. peon because of their policy of hire and fire. In the end the workman has requested for his reinstatement in service with full back wages.
- 3. The bank management has contested the claim of the workmen on the ground that the workman has never raised any demand what so ever with the bank and as such there was

no occasion for the management of the bank to turn down the demand; that the reference order is bad in law as the subject matter of dispute does not come within the meaning of industrial dispute and that the rest of the paras of the claim statement of the workman have been denied by the management and in the end the management has requested to reject the claim of the workman.

- 4. Rejoinder to the written statement has been filed by the workman. The workman has averred that according to the banks own certificate dated 8th July, 1982 the workman worked for 300 days in 1981 and 73 days in 1982 i.e. total 373 days as full time peon-cum-farrash at Baraundha branch of the bank management.
- 5. Affidavit of Shri M. K. Verma dated 24th September, 1985 is on record on behalf of the bank management and 24th October, 1985 was fixed for cross of the management witness in this case. On 24th October, 1985 counsel for the parties were present. Management representative moved an application for filing a settlement in this case hence the case was adjourned to 25th November, 1985 for filing settlement. On 25th November, 1985 parties filed settlement duly verified by the representative for the workman Shri V. N. Sekhar and Shri Rajiv for the management. The settlement is dated 25th November, 1985 and reads as follows:
  - It is agreed that the workman concerned Sri Shitla Prasad will be absorbed with prospective date here after in the permanent vacancy of peon-cum-farrash in terms of settlement dated 13th May, 1982 arrived at between the management of Allahabad Bank and All India Allahabad Bank Employees Coordination Committee.
  - It is further agreed that the workman concerned said Shri Shitla Prasad voluntary relinquishes his claim of back wages, dues of past services or any right or claim or any benefits connected with past services under this reference.
  - It is further agreed that Shri Shitla Prasad will submit bank's printed application from duly completed seeking permanent employment in the banks service in the cadre of peon-cum-farrash within a week of this settlement.
  - 4. It is further agreed that Shri Shitla Prasad will be absorbed as aforesaid within 20 days of submission of duly completed banks printed application.
  - Thus this fully and finally resolves the entire dispute, in reference No. 211/84.

It is also praved by the parties in the terms of settlement that the award be given in the fight of the terms of settlement.

As the parties have filed settlement in the instant case and the management has agreed to absorb the workman in service according to the terms of settlement hence there remains no dispute between the parties.

- 7. I, therefore, give my award in the light of terms of settlement holding that the workman will be absorbed in the service within 20 days after submitting application to the management.
  - 8. I, therefore, give my award accordingly.
- 9. Let six copies of this award be sent to the government for publication.

Dated: 16-1-1986.

R. B. SRIVASTAVA. Presiding Officer [No. L-12012/94/84-D.II(A)]

# नई दिल्ली, 18 फरवरी, 1986

का. था. 825.— औधोगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनसरण में केन्द्रीय सरकार, इस्लाबाद बैंक के प्रबंधलंत्र से सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्म-कारों के बीच, अनबंध में निर्दिष्ट औद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार औद्योगिक उधिकरण, कानपुर के पंचाट को प्रकाशित करसी है, जो केन्द्रीय सरकार को 4-2-86 को प्राप्त नुआ था।

#### New Delhi, the 18th February, 1986

S.O. 825.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Kanpur as shown in the Annexure in the Industrial Dispute between the employers in relation to the Allahabad Bank and their workmen, which was received by the Central Government on the 4th February, 1986.

BEFORE SHRI R. B. SRIVASTAVA PRESIDING OFFICER CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL CUM-LABOUR COURT, KANPUR

Reference No. L-12012|26|84-D-II(A) dt. 19-7-84

Industrial Dispute No. 193/1984.

In the matter of Dispute between:

Shri Manoj Kumar Clo Shri P. N. Tewari 165 Sohbatia Bagh Allahabad.

#### AND

The Dy. General Manager, Allahabad Bank, Hazaratganj, Lucknow.

#### APPEARANCE:

Shri V. N. Sekhari and Shri P. N. Tewari for the workman.

Shri Rajeev and Shri M. K. Verma-for the Management.

#### AWARD

- 1. The Central Government, Ministry of Labour, vide its notification No. L-12012|26|84-D-II(A) dt. 19-7-84 has referred the following dispute for adjudication to this tribunal;
  - Whether the action of the management of Allahabad Bank in relation to their Hindi Sahitya Sa-mellan Branch, Allahabad interminating the services of Shri Manoj Kumar, Peon-cum-Farrash w.e.f. 24-12-82 is justified? If not to what relief is the workman concerned entitled?
- 2. The case of the workman is that he was appointed in the bank management on 27th January, 1982 and was terminated by the bank on 24th December, 1982 and during the span the workman has completed more than 240 days work. It is further averred by the applicant that he was neither given appointment letter nor termination letter. At the time of termination the applicant was also not given notice, notice pay or retrenchment compensation. The workman has further averred that the bank management has not maintained the register of casual workman, thus the bank management has violated the provisions of section 25 FG and H and also the provisions of Sastri Award and in the end the workman has prayed for his reinstatement with full back wages.
- 3. The bank management has contested the claim of the workman on the ground that he never raised any demand with the bank and as such there was no occasion for the management to turn down the demand of the workman. That the workman was engaged as casual labour on daily basis, therefore section 25F of the ID Act has no relevancy in this case and it is consequently prayed the claim of the applicant be dismissed.
- 3. The workman has filed rejoinder to this written statement of the bank management and has reiterated his earlier contention as is alleged in the claim statement.
- 4. In the instant case after the close of the cross of the management witness the case was fixed for affidavit evidence of the workman on 25-11-1985 and on that date parties to the case filed settlement in this case and requested that the case be decided in terms of settlement. The settlement is dated 25-11-85 and is duly verified by the parties representatives which run down as under;

- 1. It is agreed that the workman concerned Shri Manoj Kumar will be absorbed with perspective date hereafter in the permanent vacancy of peon-cum-fatrash in terms of settlement dated 13-5-82 arrived at between the management of Allahabad Bank and All India Bank Employees Coordination Committee.
- 2. It is further agreed that the workman concerned Shri Manoj Kumar voluntarily relinquishes his claim of back wages dues of past services or any right or claim or any benefits connected with past services under this reference.
- 3. It is further agreed that Shri Manoj Kumar will submit bank's printed application form duly completed seeking permanent employment in the bank's service in the cadre of peon-cum-farrash within a week of this settlement.
- 4. It is further agreed that Shri Manoj Kumar will be absorbed as aforesaid within 20 days of submission of duly completed banks printed application.

  5. Thus this fully and finally resolves the entire dispute,

in reference No. 193|84.

- 6. Taking into consideration, the terms of settlement dated 25-11-85, duly verified by the parties and also considering their request to decide the case in terms of the settlement, I therefore, give my award holding that the concerned workman will be absorbed in the service of the bank management on the terms laid down in settlement.
  - 7. I, therefore, give my award accordingly,

Dated: 28th January, 1986

R. B. SRIVASTAVA, Presiding Officer

[No. L-12012(26)|84-D.II(A)]

#### नर्ष दिल्ली, 19 फरवरी, 1986

का. भा. 8:26.—मौद्योगिक विवाद मधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के घनुसरण में केन्द्रीय सरकार, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के प्रबन्धतंत्र से सम्बद्धः नियोजकों भीर उनके कर्मकारों के बीच, भनुबन्ध में निर्विष्ट भौद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार भौद्योगिक भन्नि-करण, कानपुर के पंचाट को प्रकाशित करती, जो केन्द्रीय सरकार को 4-2-86 की प्राप्त हुमा था।

New Delhi, the 19th February, 1986

S.O. 826.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Kanpur as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the Union Bank of India and their workmen, which was received by the Central Government on the 4th February, 1986.

BEFORE THE PRESIDING OFFICER CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL-TRIBUNAL-CUM-

LABOUR COURT, KANPUR

Reference No. L-12012 122 81-D-II(A) dt. 2nd Dec. 1981

Industrial Dispute No. 184 of 1981

Name of the workman.—Shri Uma Shanker,

. Name of the Industry.--- Union Bank of India.

STATE: UTTAR PRADESH

#### APPEARANCE:

Shri V. N. Sekhari — for the workman, 36|1 Kailash Mandir, Kanpur.

Shri Satya Pal—for the management, AGM, Union Bank of India, Zonal Office, Clark Awadh Hazaratgani, Lucknow.

#### AWARD

1. The Central Government, Ministry of Labour Vide its notification no. L-12012|133|81. D-II(A) dt. 2nd December, 1981 has referred the following dispute to this Tribunal for adjudication:

Whether the action of the Management of Union Bank Of India, in not absorbing Shri Uma Shanker on the post of sub staff and terminating his services from 19-7-80 (AM) is justified? If not, to what relief is the workman concerned entitled?

2. The case on behalf of workman Shri Uma Shanker is that he entered in the management bank as sub staff on 10-11-79 and continued to work till 19-7-80 with artificial breaks when his services were terminated. Thus the actual service rendered by him as follows;

10-11-79 to 1-2-80 -84 days 3-7-80 to 31-5-80 -90 days 5-6-80 to 15-6-80 -11 days 23-6-80 to 19-7-80 -27 days

Thus the workman in all had worked for 212 days. It averred that he worked against a permanent vacancy, that the workmen was not given any appointment letter or termination letter violating the provisions of paras 495 and 522 of Sastri Award. As regards payment for the services rendered by the workman it is averred that the workman was paid at the rate of basic wage of Rs. 116 per month for the period 10-11-79 to 1-2-80 and from 3-3-80 to 1-5-80 but for the remaining period it is alleged that from 5-6-80 to 15-6-80 and again from 23-6-80 to 19-7-80 he was paid at the rate of Rs. 5 per day as daily rated workman. It is further averred that on retrenchment of the workman fresh hands were appointed by the bank management thus violating the provisions of section 25 of the I.D. Act and that persons appointed after the termination of workman were regularised and absorbed in permanent service of the bank managenent and in this way the workman was discr-minated and denied permanent absorption. In the circumstances the termination of the workman idegal, unreasonable and the workman be reinstated in service with full back

- 3. The management admits that the workman worked for 83 days from 10-11-79 to 31-1-80 and not dil 1-2-80 and from 3-3-80 to 31-5-80 for 90 days but for the rest of the period it is alleged that the workman was water boy on daily wages for 38 days for which he was paid at the rate of Rs. 5 per day. The management, however, admits that concerned workman was appointed purely on temporary baths for 173 days against temporary vacancy and not against permanent vacancy as alleged. The management has denied that any provision of paras 495 and 522 of Spetri Award was violated and it is further alleged that no violation of section 25 G and H is being committed and thus the termination of the workman has been legal and justified
- 4. In the rejoinder it was urged on behalf of the workman that deliberate artificial breaks to the workman were given in the service to deprive him benefits of continuous It was further averred that the work of water boy is also a work of sub staff and hence continue that period also service rendered as sub staff is valid and justified. It is further averred that it was the practice of the respondent bank to appoint a person for a short duration terminating his services without any reason and appoint another person. It has been pleased that after the termination of the workman on 1-2-80 one Kare Deen was appointed who continued to work till 2-3-80 and then again that Kare Deen was terminated and Uma Shanker was appointed on 3-3-80 and continued till 31-5-80 and on termination of the workman on 31-5-80 one Jagat Chateriee was engaged on daily rate for four days i.e. 1-6-80 to 4-6-80 and from 5-6-80 workman was appointed who continued till 15-6-80 and from 16-6-80 to 22-6-80 one Rajendra Kumar was appointed and from 26-6-80 to 19-7-80 the workman was again appointed who continued till 19-7-80 and thereafter in place of workman Shri Uma Shanker several other persons were appointed and that junior to the workman were continued in service of the bank management even after his termination. In the end

- it is averred that there was a need of permanent sub staff and after the termination of the workman Shri Uma Shanker fresh hands were recruited and who eventually absorbed in the services of the bank and thus the bank has yiolated the provision of section 25 G and H of the I.D.. Act.
- 5. In support of its contention the management has filed affidavit evidence of Shri S. L. Verma Manager Personnel and Industrial Relation of the bank's Zonal Office at Lucknow. He admitted that the temporary appointment of the workman for 173 days in two spells was on the basis of joint appointment and termination letter and again admits that the workman worked for 38 days as daily rated worker at the rate of Rs. 5 per day. In cross examination the witness admits that one Shri Ajit Singh temporary workman was taken in banks scrvice through regular process of recruitment as fresh hand and that he has no knowledge if he is working with the workman. He further admits that there is no test for recruitment of sub staff only their names have to be sponsored from the local employment exchange and they are interviewed on that basis. He has denied to have any knowledge as to who was appointed after the termination of the workman. He has no knowledge if one Tapeshwari Yadav temperary peon appointed on 1-7-80 and was allowed to continue even after the service of the workman was continued. He has denied that the workman was doing other duties of banks poon. He has expressed his ignorance that Kare Deen, Shesh Narain and others who were junior to the workman were regularised. The witness further admits that the bank had opened new branches after the termination of the workman and that persons who have worked more than 90 days and 240 days were regular sed. He has no knowledge if any register of temporary employee was maintained in the branch or any service book is maintained for them.
- 6. On the other hand, the workman has given his affidavit evidence and testified his case of the claim statement and rejoinder. He denied that the appointment letter for the entire period was given to him and also that no termination letter was given to him for the period and that he did not work in any leave vacancy. He has named one Jagat Chaterjee and several others who were temporary like him and later they were made permanent. The workman has further averred that in view of agreement dt. 19-12-78 that temporary workman who have worked between 90 to 240 days will be considered on merits of each case, were absorbed in permanent service of the bank management. He has averred that beside working as water boy he also performed other duties of sub staff and that dispite opening of new branches and his application subsequent to his termination he was not given appointment hence he raised industrial dispute.
- 7. In cross examination he deposes that he was given appointment letter few days after his appointment and in all he got one appointment letter. He admits that his initial appointment was temporary. He further admits that during his tensure no one was appointment as permanent. In the end he has admitted that after July 80 he is working privately and getting Rs. 300 per month.
- 8. The workman has admitted having received the first ampointment letter which has been proved by the management witness and is Annexure B of the management's affidavit. In this letter it is sperifically written that he was appointed for one mouth and after 9-12-79 his services will stand automatically terminated without given notice for 14 days. As regards the other appointment letter Ext. Annexure A of the management affidavit, there is oath against oath nothing has been filed to show that it was really delivered to the workman, thus after the termination of the service of the workman on 31-5-80 he should have been given a termination letter, 14 days notice or notice pay as required under para 522 (4) of the Sastri Award. It is not disputed that the name of the workman was not spensored from the Emrloyment Exchange. Reference has been made to Banks circular no. 2018 dated 16-11-78, whereby it was notified by the DGM of the bank management that recruitment in sub staff cadre in public sector bank irrespective of the nature and duration of vacancy has to be made only through the employment exchange. Thus it is clear that the workmans appointment could be made only through employment exchange. It has not come in evidence that the appointment of the workman was temporary on any permanent

1565 GI|85- 12

vacancy. The management should have given 14 days notice on 31-5-80 to the workman before his termination or notice pay when Shri Jagat Chaterjee was engaged at his place. The management has not denied that the Jagat Chaterjee was not appointed after the termination of the workman, if the managemen required temporary hand it should have continued the workman even after 15-6-80 and not appointed Rajendra Kumar from 16-6-80 as averred by the workman in rejoinder's paragraph 4. After having appointed the workman again on 23-6-80 his services could be terminated on 19-7-80 after giving him notice and notice pay but instead of the same management appointed a number of persons junior to him mentioned from Serial B to J in the said paragraph 4 of the rejoinder of the workman and thus contravening the provisions of section 25H of the I.D. Act and retaining Tapeshwari Yadav who was junior to him having appointed him on 1-7-80 and allowing him to continue till 29-7-80, thus the provision of section 25G was also contravened on this count.

- 9. The work of water boy in the banking industry is one of the job of the sub staff and engaging such sub staff on daily wager of Rs. 5 and not giving them scale rate is also illegal when the work of water boy is a work of continuing nature in the banking industry. Thus in any view of the matter, the appointment of the workman in the first two spells as welf as in the later two spells was temporary approintment in the banking industry, his services were terminated without notice or notice pay as required under para 522(4) of the Sastri Award and without complying the provision of section 25G and H of the I.D. Act is illegal.
- 10. The result is that the workman is entitled to reinstatement in service with full back wages subject to adjustment of earning admittedly made by him during the period.
- 11. I, therefore, hold that the action of the management of Union of Bank of India, in not absorbing Shri Umn Shanker on the post of sub staff and terminating his services from 19-7-80 (A.M.) is not justified, and is entitled to be reinstated in service as temporary with full back wages.
  - 12. I, therefore, give my award accordingly.

R. B. SRIVASTAVA, Presiding Officer [No. L-12012(133)|81-D-II(B)]

का. मा. 8:7.— प्रौग्रोगिक विवाद प्रवितियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के धनुमरण में केन्द्रीय सरकार, यूनियन बैंक प्रॉफ इंडिया के प्रबन्धतन्त्र से सम्बद्ध नियोगकों और उसके कर्मकारों के बीच, धनुबन्ध में निर्विष्ट श्रीद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार श्रीद्योगिक प्रधिकरण, कानपुर के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 4-2-86 को प्राप्त हुआ था।

S.O. 827.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947); the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Kanpur as shown in the Annexure in the Industrial Dispute between the employers in relation to the Union Bank of India and their workmen, which was received by the Central Government on the 4th February, 1986.

#### BEFORE SHRI R. B. SRIVASTAVA PRESIDING OFFICER CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL-CUM-LABOUR COURT, KANPUR

Reference No. L-12012/76/80-D.II(A) dt. 6-11-81.

Industrial Dispute No. 171/1981.

In the matter of dispute between;

Smt. Kamla C/o The Secretary. UP Bank Employees Union 36/1 Kailash Mandir, Kanpur, Uttar Pradesh.

#### AND

The Assistant General Manager, Union Bank of India, Hotel Clarks Awadh, Hazaratgani, Incknow. APPEARANCES:

Shri V. N. Sekhari-for the workman, Shri Satya Pal-for the Management.

#### AWARD

1. The Central Government, Ministry of Labour, vide its notification No. L-12012|76|80,D-II(A) dt. 6th November, 81, has referred the following dispute for adjudication to this Tribunal;

Whether the action of Union Bank of India Management, in relation to its Branch at Birhana Road Kanpur in offering only full sleaves woolen sweater worth Rs. 60 by way of winter uniform to Smt. Kamala, full time sweepress since November, 1977 is justified? If not to what relief is the workman concerned entitled?

- 2. It is common ground that Smt, Kamla is full time sweepress at the management Birhana Road Branch and that till 1977 she was given winter uniform on the same scale as was supplied to the male sweeper of the establishment. That thereafter, the management decided to give only a full sleaves woolen sweater worth Rs. 60 to the full time female sweeper while full winter uniform worth Rs. 210 was given to the other male sweeper of the management bank. Later the limit was raised from Rs. 210 to 275 in the year 77 but the celling limit for the female sweepers was fixed at Rs. 60 which discrimination is illegal and obviously affects the service condition of the female sweepers, hence prayer to bring her at par.
- 3, It is admitted by the management that till January, 1976 the male and female sweepers were supplied uniform worth Rs. 210. That in view of para 17.1 of the Bipartite Settlement it is only laid down that one set of woolen uniform once in three years will be given to sub staff of the management. It was with this view that the management vide us circular dated 4-11-77 decided that the female members of the sub staff will be supplied woolen sweater of full sleaves upto maximum cost of Rs. 60 per sweater and later that limit of Rs. 60 has been raised to Rs. 100. That the management has not made any change in the prices of woolen uniform to the disadvantage of female employees hence there is no question of any notice under section 9A of the ID Act. That in view of para 17.7 of the bipartite settlement no discrimination has been made.
- 4. In the rejoinder the workman has submitted that at par with the male sub staff who are provided a pair of pant coat and trousers and a cap, the fenate sub staff are also entitled to wooflen coat sari blouse and cap or scarf. Further fixing a limit of Rs. 60 for purposes of tweater was illegal and unjustified and there should not be discrimination on that account i.e. on the account of sex.
- 5. The management has filed six documents i.e. staff circulars of different dates of the bank management regarding uniform ranging from 1960 to February, 1985. The circular dated 14-11-77 prescribed woolen uniform for male comprising of a coat trousers wherein in the case of female only woolen sweater with full sleaves are prescribed. It was also laid down that the cost of the uniform of male may go maximum upto Rs. 275 and in the case of female maximum upto Rs. 60. In circular No. 2787 dated 25-2-75, the rate of woolen uniform for female employee was raised from 100 to 150.
- 6. The management witness Shri S. L. Verma admitted in cross examination that upto 1976, the amount for uniform for female was Rs. 210 and it was Rs. 210 in the case of male also. It was later in the year 1977, the amount of female uniform was reduced to Rs. 100 whereas the uniform allowance for male members was not reduced. He further admits that in case of male uniform allowance was raised from Rs. 210 to Rs. 275 and he further states that w.e.f. 14-11-77 the limit for winter uniform has been raised to Rs. 300 and in the case of female its maximum limit is Rs. 150. In the end he has admitted that excent cost of uniform, the male and female sub staff are allowed same allowances and this discrimination in cost of woolen uniform for female is because of certain tradition in our Indian Society for uniform meant for male and female.

- 7. After this evidence the workman choose not to lead any evidence and suressed that he should not be indiscriminated no account of sex as taid down in our constitution. It must uniform is provided to make and temale both they should be allowed same maximum limit for purpose of winter uniform and in the case of female it should not be indiscriminated that they should only put on full sleaves sweater to a limit of half of that of the male members of their category. This discrimination of the management on the face appears to be unjust. The female members are entitled to purchase proper winter clothings in that maximum limit to save them from incliment weather. If male members of the sub staff are allowed to put on coat trousers and cap as part of the dress the female also can spent that much limit in purchasing proper dress for themselves which comprises of woolen salwar, kammeez, and full sleaves coats or sweater within that amount.
- 8. In these circumstances, I hold that the action of the management bank in relation to its branch at Birhana Road Kanpur in offering only full sleaves woolen sweater worth Rs. 60 by way of winter uniform to the workman since November, 1977 is not justified. The result is that the management will reimburse her to bring her at par with the male sub staff as regards the amount spent on winter uniform.
  - 9, I, therefore, give my award accordingly.

R. B. SRIVASTAVA, Presiding Officer [No. L-12012(76)|80-D.II(A)]

Dated: 27th January, 1986

का. भा. 828.— भौद्योगिक विवाद प्रधितियम, 1947 (1947 का 14) की भारा 17 के मनुसरण में केन्द्रीय सरकार, भारतीय स्टेट बैंक के प्रबन्धतन्त्र से सम्बद्ध नियोजकों भौर उनके कर्मकारों के बीच, प्रनुबन्ध में विनिर्दिष्ट भौद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार प्रोद्योगिक धिकरण, कानपुर के पचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 7-2-86 प्राप्त हुमाया।

S.O. 828.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Kanpur and shown in the Annexure in the Industrial Dispute between the employers in relation to the State Bank of India and their workmen, which was received by the Central Government on the 7th February, 1986.

BEFORE SHRI R. B. SRIVASTAVA PRESIDING OFFICER CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL CUM LABOUR COURT KANPUR.

Reference No. L-12012|278|82-D.II(A) dt. 6-12-84 Industrial Dispute No. 220 of 1984

In the matter of dispute between:

Shri Mahendra Prakash Clerk Puranpur Branch Clo The General Secretary, State Bank of India Staff Association (Kanpur Circle) Commercial Exchange Building, 24 Mahatma Gandhi Marg, Hazaratganj, Lucknow.

#### AND

The Chief General Manager, State Bank of India (Law Department) Halwasjaya Palace, 24, Mahatma Gandhi Marg, Hazaratganj, Lucknow.

#### APPEARANCE:

Shri V. N. Sekhari, representative—for the workman.
Shri Mahesh Chandra, representative—for the Management.

#### AWARD

1. The Central Government, Ministry of Labour, vide its notification No. L-12012/278/82-D.II(A), dated 6th November, 1984, has referred the following dispute to this tribunal for adjudication;

- Whether the action of the management of State Bank of India, 1.He, Lucknow, in terminating the services of Smil Manondra Plakash Clork, Phranpur Branch, W.e.I. November, 1979 is justified? If not, to what rener is the conceined workman entitled?
- 2. The case of the workman Shri Mahendra Prakash is that he joined the management bank's service on 2/-/-68 and was posted at Puranpur Branch (Phibmit) branch of the management bank. He was later on continued and drew his regard indicatents the july, 19/0. He was later on issued a memo on 24-0-/8 by branch Manager Phranpur. Branch charging mint that two bogus entries for ks. Ou each have been made by him under his authentication when he was ometating as itemer sub accountants, resulting an increase of ks. 120 in the recurring deposit account No. 9/ of Shri Sakuswat Ari khan and afterwards the entire balance was paid by closing the account by himself and thereafter the account of ks. 120 was credited in the atoresaid account to adjust the irregularity.
- 3. The workman replied the memo and stated that due to rush of work he failed to recollect as to how the entries in question were authenticated by him. That despite reply the workman was chargesheeted on 13-7-79 to which the workman submitted his reply. The management did not replied that explanation and communicated the workman that one Shri R. P. Sharma was appointed as Enquiry Officer to noid an enquiry in the matter on 20-8-79. Enquiry officer to noid an enquiry in the matter on 20-8-79. Enquiry officer to noid an enquiry in the matter on 20-8-79 and the branch manager obtained a statement of workman to the effect that the enquiry would be detended by him personally. The E.O. completed the enquiry on the same day i.e. 20-8-79 without anording proper and reasonable opportunity of defence to the workman. E.O. gave his finding on 31-8-79, according to which harges against the workman were said to have been proved. The Bank's Regional Manager vide letter dated 22-9-79 communicated the punishment to the workman as under;

Upon consideration of the enquiry proceedings and the findings of the enquiry officer, I have entatively decided that you be dismissed from the bank's service without notice. Before, however, I taken a final decision, I give you an opportunity to make further submission within one week of receipt by you of this letter failing which I will conclude that you have nothing to say further in the matter.

The workman replied the Regional Manager but the Regional Manager did not revise the punishment of dismissal and communicated his orders vide letter dated 16-11-79, that the workman preferred an appeal against the dismissal order which was dismissed on 13-3-80. The workman again represented against the dismissal to the Cheif General Manager but the same was not considered, he consequently raised an Industrial Dispute before ALC (Central) and failure of conciliation, the present reference was made by the Government for adjudication.

4. It is alleged that the termination of the workman is illegal and unjust and is liable to be set aside on the following grounds namely; (i) mistake invouting work can not be treated as misconduct and if it is conceded for the sake of arguments it would be a minor misconduct (ii) workman was not given reasonable opportunity to make defence and enquiry was concluded in hurry in a preplaned and blose manner which enquiry can not be called fair and reasonable; (iii) that the enquiry officer was not properly appointed, (iv) that the explanations of the workman to the charge sheet was not considered and the enquiry was expedited in a preplaned decision to dismiss the workman, (v) that the enquiry officer acted as prosecuting officer and not as independent enquiry officer, (vi) that the enquiry officer himself put questions by way of cross examination and that the relevant material evidence was shut out to the workman and relevant pass book was not produced, (vii) that the findings of the enquiry officer is not based on legal evidence and is simply based on punishment (viii) that the enquiry officer nor punishing authority and banks management including Chief General Manager applied their mind and did not consider the submissions made by the workman, hence the punishment of dismissal is illegal. Lastly it is prayed that the enquiry be set aside and he be reinstated in service.

- 1. The management has admitted his appointment, confirmation and that he was served with a memo and ultimately enquiry officer was appointed who communicated about holding of enquiry but the management, however, denied that the branch manager obtained statement from the workman that he would defend the enquiry personally rather the workman of his own accord opted to defend his enquiry that he was given full opportunity to cross examination the witness and defend his case and as no further time was sought for any further defence, the enquiry was completed on that very day. The management thereafter, admits that the workman after the findings of the enquiry officer punishment of dismissal of service was given to him against which he filed an appeal and the same was rejected.
- 6. In the rejoinder it was reiterated by the workman that he was not given full and proper opportunity to defend his case.
- 7. In support of its case, management filed affidavit evidence of Shri V. K. Agrawal an officer of the management bank and dealing with staff matters. He has averred that the workman while working as clerk at material branch received from one Sakhawat Ali Khan a sum of Rs. 60 twice in the year 1978 for deposit in R.D.A.c. No. 97, which amount he embazelled after making fictitious entry in the account of the customers on 2nd May and 7th June, 1978. He also authenticated said entries though he was not empowered to do so. These fictitious entries being recorded in the customers account on maturity on 19th July 1978, he was paid total amount. This act of the workman amounted to gross misconduct for which he was chargesheeted on 13th July, 1979 and in the departmental enquiry charges were fully proved against the workman. On these charges were fully proved against the workman opted to defend his enquiry himself and was efforded full opportunity to submit his defence. The enquiry proceedings completed the same day after recording the proceedings of the enquiry. The management witness has admitted that the pass book was not produced by the workman through his witness Shri Sakhawat Ali,
- 8. The management has filed the photo copy of the ledger sheet of Shri Sakhawat Ali to show that in the ledger sheet of Sakhawat Ali two entries of Rs. 60 each were made on 2nd May and 7th June, 1978. It is paper No. Ext-M-1. The management has further filed memo Ext. M-2 whereby workman was informed that during the course of balancing two bogus entries of Rs. 60 which were made under your authentication and that the entire balance including the forged entries were paid to the account holder Shri Sakhawat Ali by closing the account by yourself thereafter amount of Rs. 120 was credited in the aforesaid account to adjust irregularity. The above intention clearly shows your fraudulent intention, please clarify your position. During the enquiry, the workman told the enquiry officer that when he balanced ledger in the month of June this two entries dated 2-5-78 and 7-6-78 were not there in the ledger. On being questioned that as to who made the entries in the ledger by enquiry officer, the workman told him that he made the entries in the ledger with the help of pass book of the account holder. The workman however admitted before the E.O. that he did not officiate as officer Grade II on 2-5-78 and 7-6-78. On being questioned as to why he authenticated these fictitious entries in the relevant dates in the ledger, workman stated that these entries were authenticated by him on 10-7-78 when the account was closed and balance was paid to the account holder. He admitted that these two entries were made by him in the ledger on 10-7-78 as they were appearing in the pass book and that he did not refer the voucher and the day book. On being questioned by E, Officer as to whether he altered the date 12-5-78 to 2-5-78 knowingly and authenticated the cutting when he admits the balancing on 10th July, 1978 the witness stated that it was done in hurry to dispose of party. The workman had taken the plea that he had made entries with the permission of passing officer Shri R. U. Siddiqi. Before the enquiry officer when the workman questioned Stri R. U. Siddiqui suggesting that he made entries with his permission Shri Siddiqi replied that it was totally wrong and as responsible officer he could have

- allowed such entries with the help of pass book in the ledger. Shr. Sakhawat Ali had told before the enquiry office; that he always use to tender the pass book at the counter when ever he deposit the money but some times he used to get money deposited through workman and hand over pass book because transaction at the bank were carried out with great delay.
- 9. In this case no preliminary issue was pressed and framed hence the question that it was not fair proper stands waived rather the proceedings before the enquiry officer are admitted. It is the case of the workman that at the time of final payments to the account holder Shri Sakhawat Ali on 10-7-78, the entries of 2nd May and 7th July 78 each of Rs. 60 were not in the ledger though those entries were in the pass book and it was on the basis of pass book entry that he scored out 12th and made it to read as 2 so as to read the entry of 2nd May and July when he made entry of 7th June and drew final balance and adding the interest of that day. According to the workman he consulted the branch Manager Mr. Siddiqi who signed the closing voucher and signed the ledger on 10-7-78. On the date of closing balance i.e. 10-7-78 cash was not paid to the account holder Shri Sakhawat Ali but the whole amount was transferred to his saving bank account No. 2895 on 10th July 78 as is evident from the extract of saving bank account Ext. W-1. It was at the time of tallying the ledger on 14-8-78 that the mistake was deducted and the amount of Rs. 120 admittedly not deposite do n 2-5-78 and 7-6-78 was paid to the party concerned on 16-8-78 to make good the deficiency which deposite is mentioned in the copy of ledger Ext. M-1.

The workman stated in cross examination that when pass book was brought to him on 10-7-78 the entries of 2-5-78 and 7-6-78 were already authenticated in the pass book by Shri R. U. Siddiqi. The workman has not men-tioned this fact in his reply to the memo that the matter was referred for payment on the instruction of branch manager. this was a very material fact which should have been mentioned there. He admits that he is not able to give any reason why he did not mention this fact in the reply. He denied the suggestion that branch manager had not given him any suggestion/instruction. When suggested in cross examination that branch manager had not gave any suggestion to post such a entries the workman stated that it was wrong to say so. He denied the suggestion that he himself had made fictitious entries in the ledger and the pass book and embazelled the amount. Though the account holder Shri Sakhawat Ali appeared before the enquiry Officer he was not produced in this court. The pass book in which the entries of 2-5-78 and 7-6-78 were made and admittedly authenticated under signatures of Shri Siddiqi branch manager has not been produced. Had that been produced it would have been clear as to who authenticated their deposit. The workman says that he summoned the vouchers to verify deposit of Rs. 60 each of 2nd May and 7th June but they were not produced as it was in the strong room. The workman has not shown his bonafide by summoning the register. Be it as it may the fact remains that he made entries in the ledger without any orders in writing of the branch manager and authenticated the entries in the ledger himself instead of branch manager. It is not disputed that at all relevant time the workman was the clerk on recurring deposit counter.

10. The statement of Shri Sakhawat Ali account holder before the enquiry officer that at times he used to leave the money and pass book with the workman and collected it after some times lend support that the entry in the pass book must have been made by him. Had the same been produced showing that it was authenticated by the branch manager Shri Siddiqi it could be said that he is absorbed and the branch manager must have signed the deposit entry after having seen payment voucher. In the absence of payment voucher and the pass book it is difficult to believe the contention of the workman that in the pass book entries were already there duly authenticated and it was on the basis of that and that the verbal permission of branch manager Mr. Siddiqi without referring to the original voucher of payment made entries of dated 2-5-78 and 7-6-78 in the ledger of Rs. 60 each on 10-7-78. It leads to one and only one inference that the workman himself received the manager of the relevant dated as per deposition of Shri Sakhawat Ali account holder and the entry was made in the pass book by himself without actual depositing the amount in

the bank by vouchers and when the workman pressed for payment he made fictious entries in the ledger by scoring out entry of 12th may and taken shelter under the verbal samenon given by branch manager Shri Siddiqi regarding making entries in the ledger of the above two dates and finalising the payments.

- 11. The workman has failed to show that how prejudice was caused to him during the enquiry, when question of facts are not disputed there is no question of prejudice.
- 12. The workman has further failed to show that the inding of the enquiry officer is perverse. The test of perversity is that the finding may not be supported by legal evidence. Yet another case of perversity is that when the findings are such which no reasonable person could have arrived on the basis of materials before him. In the instant case it being admitted that the workman was manning the recurring deposit counter on the relevant dates including 2-5-78 and 7-6-78. Further the pass book is not forth coming to show that the entries of 2-5-78 and 7-6-78 were authenticated by branch manager, no voucher of the relevant dates have been summoned to show that actually no amount was deposited by the account holder that day. The account holder Shri Sakhawat Ali in his statement stated that he used to leave money and pass book with the workman and collected its letter. The workman and collected it later. The workman's admission that he found the entries of relevant dates i.e. 2-5-78 and 7-6-78 in the pass book and on the basis of same made entries in the ledger himself, after making certain correction in the ledger on 10- -78 under verbal instructions of the branch manager Shri Siddiqi who has denied having given any instruction before the enquity officer lends to only one and one inference that it was the workman who pocketed the two amounts given by the account holder on 2-5-78 and 7-6-78 about which the entries was there in the pass book and made entries in the ledger on 10-7-78 without verifying the vouchers or without written order from the branch manager or from the passing officer, to my mind, only workman has drawn that entries on the relevant dates and no one else, and received the amount from the account holder on the two relevant dates referred above. It is amply clear that only workman has passed entries of the two amounts and none else as on the relevant time workman was handling the recurring deposit counter.
- 13. Under these circumstances, it is crystal clear that the workman has nocketed the two amounts of Rs. 60 each on the selevant dates i.e. 2-5-78 and 7-6-78 by making falsentries in the 1'dger without depositing the same. Further the wo kman himself has closed the account of the necount holder Shri Sakhawat Ali on 10-7-78 under his signature after authenticating the entries for which he was not empowered to do so. Thus the workman has failed to prove his case and the management has substantiated his case by cogent and reliable evidence.
- 14. Thus for the reasons discussed above, I accordingly hold that the action of the management having been terminated the services of the workman on the basis of above enquiry in which there was no question of prejudice is fair and proper and justified.
- 15. I, therefore, hold that the action of the bank management of State Bank of India LHO Lucknow, in terminating the services of Shri Mahendra Prakash Clerk Puranpur Branch w.e.f. November, 1979, is justified. The result is that the workman is not entitled to get any relief.
  - I, therefore, give my award accordingly.

R. B. SRIVASTAVA, Presiding Officer [No. L-12012(278) /82-D.Π (A)]

#### नई दिल्ली, 20 फरवरी, 1986

का. भा. 829.—भौद्योगिक विवाद मधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के भनुसरण में केन्द्रीय सरकार, बैंक भ्रांफ बड़ौदा के प्रबन्ध-तन्त्र से सम्बद्ध नियोजकों भीर उनके कर्मकारों के धीच, भनुमन्ध में निर्विष्ट भौद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार भौद्योगिक भधिकरण, कामपुर के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 7-2-86 को प्राप्त हुआ था।

#### New Delhi, the 20th February, 1986

S.O. 829.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Kanpur as shown in the Annexure A in the Industrial Dispute between the employers in relation to the Bank of Baroda and their workmen, which was received by the Central Government on the 7th February, 1986.

#### ANNEXURE 'A'

BEFORE SHRI R. B. SRIVASTAVA PRESIDING OFFICER CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL-CUM-LABOUR COURT KANPUR

Reference No. L-12012|129|84-D.H(A) dt. 17-10-1984 Industrial Dispute No. 208 of 1984 In the matter of dispute.

#### BETWEEN

Shri O. P. Gupta Clo Shri J. C. Dhavan, 8|75 Arya Nagar, Kanpur;

#### AND

The Regional Manager, Bank of Baroda, Lucknow Region 19 Way Road, Laxmi Tractor Building, Lucknow.

APPEARANCE:

Shri J. C. Dhavan—for the workman. Shri A. N. Verma—for the management,

#### AWARD

- 1. The Central Government, Ministry of Labour, vide its Notification No. L-12012|129|84-D.II-A dated 17th October, 1984, has referred the following dispute for adjudication to this tribunal;
  - "Whether the action of the management of Bank of Baroda, Lucknow in relation to their Govindganj Branch, Shahjahanpur in terminating the services of Shri O. P. Gupta Accounts-cum-Cash Clerk with effect from 25-1-1984 is justified? If not to what relief is the workman concerned entitled?"
- 2. It is common ground that the workman applied for appointment as clerk in the management bank while working in Regional Rural Bank Fatchpur. On the basis of interview etc. he was selected for appointment and appointment letter dated 12-3-83 Ext. M-1 was issued to the workman. It was mentioned therein that on accepting the appointment he will be on probation for a period of six months and that it may be extended on its discretion and in the end it was mentioned that if the above terms are acceptable to him he please signify in writing and report for duty at Govindganj branch, Shahjahanpur as early as possible but in case not later than 22 March, 1983. It was further mentiened that please note to bring with you your original certifleate of education and character certificate of two respectable persons known to the bank alongwith two copies of each and the relieving certificate of the present employer if employed at present. In consequence of this the workman accepted the offer and joined the management bank on 7-4-83 and submitted the desired certificate as per Ext. M-2. He submitted two character certificates and relieving certificate from the previous employer. It transpires that during his probation period the workman remained absent from duty initially for 9 days for which he was granted leave without pay and he also remained absent for 12 days according to the management this leave was unauthorise, whereas according to the workman he applied for leave as he has to appear in P.C.S. Examination.
- 3. The management replied that telegram by which workman has extended his leave, on the local address on 10-10-83 per enclosure 6, who copy of the documents filed with the rejoinder which was to intimate the workman that with reference to his telegram dated 1st and 5th October, sent from Lko, regarding extension of leave upto 12th October,

83, the same will be treated as unauthorised absence and since you have not contacted us we are unable to grant the same.

- 4. The management vide letter dated 29-9-83 intimated the workman that the relieving certificate required under appointment letter dt. 12-3-1983, by you, was not the one which was submitted on 7-4-83 by you. He was consequently asked to submit a clear relieving certificate after having obtained the same from previous employer positively by 5th Ocotber, 1985 failing which your service would be liable to be terminated.
- 5. Admittedly the workman was on leave from 26-9-83 to 5-10-83 i.e. 9 days leave on loss of pay and also remained unauthorise absent for a further period of 12 days as is admitted in para 5 of the written statement. This letter was sent to the workman at his Kanpur address while there is nothing on record to indicate that he received the same. The management vide letter dated 12-10-83 extended the probation period of the workman for 21 days w.e.f. 7-10-83. It was further mentioned therein that you have not submitted the relieving certificate of previous employer insuite of being given several opportunity vide letter dated 29-9-83 and please submit the same latest by 5-10-83. It was further mentioned that as the submission of the relieving certificate from the post previous employer is one of the terms of the appointment which has not been complied with, it has been decided to extend your probation period for a further period of three months from 28-10-83. It was further mentioned therein that during the extended period of probation your services are liable to be terminated in terms of appointment letter referred above.
- 6. It appears that the workman joined duties thereafter and worked when vide letter dated 24-1-84, his services were terminated with effect from 25-1-84 admittedly within the probation period and on payment of one month's pay in lieu of notice.
- 7. It has been aruged that under terms of appointment letter dated 12-3-83, the workman was required to submit relieving certificate from the present employer if employed at present. The workman was not employed when he joined the bank management on 7-4-83. The relieving certificate if employed at present is obtained when a man may not remain in employment at two places on the date of joining the new employment. So there should be a clear indica-tion on the date of joining that he has been relieved by previous employer and the relieving certificate asking the same is produced at the time of joining new assignment. The workman had left the service of the previous employer i.e. Fatehpur Chetriya Gramin Bank w.e.f. 2-4-83 and submitted a certificate to that effect dated, 4-4-83 to the management on the date of joining the service at the management's end i.e. on 7-4-83. This in fact was a relieving certificate of the past employer and nothing more was to be given by the workman. After having joined the services of the management on 7-4-83 his probation was to close on 6-10-83 after completion of six months service. His probation should have been extended or his services should have been terminated within probation period and after completion of six months i.e. probation period, if neither the workman is terminated nor probation period is extended he will be deemed to have been confirmed employee after the expiry of the probation period. Thus the management has no right to extend the probation on 12-10-83 vide Ext. M-3 which is beyond expiry of six months.
- 8. As observed earlier, the applicant had filed the certificate that he was no more in service of the employer where he is working on 12-3-83, who was his present employer on that date. As on the date of joining his services had been terminated and the certificate filed, that was enough relieving certificate. If the management wanted to treat unauthorised absence as misconduct he should have been served a charge sheet before completion of six months probation and on that count extended the period of probation. No disciplinary action was taken against him. Under para 522(i) the services of a probationer may be terminated by one month's notice or on payment of one month's pay and ollowances in lieu of notice. The management was within its right to terminate the service of the workman before completion of six months by giving one month's notice or

paying one month pay and this having been done beyond completion of probation period and the same having been not extended within six months of probations he stood confirmed after expiry of the same,

In support of this I may refer Central Bank of India Vs State of Jammu & Kashmir IILLJ 1968 page 646 wherein it was observed thus:

- Dismissal of a probationer bank employee without charge sheet or enquiry before the expiry of probation period. No adverse remark communicated to the employee, Award of Industrial Tribunal holding termination invalid, award held justifled.
- 10. Thus in view of the observation made above and law discussed I hold that the action of the management of Bank of Baroda, Lucknow in relation of their Govindganj Branch, Shahjahanpur in terminating the services of Shri O. P. Gupta, accounts-cum-cash clerk with effect from 25-1-1984 is not justified.
- 11. The result is that the workman is entitled to be reinstated in service with full back wages.
  - 12. I, therefore, give my award accordingly,

R. B. SRIVASTAVA, Presiding Officer
[No. L-12012(129)]84-D. Π(A)]

का. भा. 830.— भीषोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार, इलाहाबाद बैंक, लखनऊ, के प्रबन्धतन्त्र से सम्बद्ध नियोजकों भीर उनके कर्मकारों के बीच, अनुबन्ध में विनिर्दिष्ट भौषोगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार भौबोगिक प्रधिकरण कानपुर, के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को, 4-2-86 प्राप्त को हुआ था।

S.O. 830.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tr bunal, Kanpur as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the Allahabad Bank, Lucknow and their workmen, which was received by the Central Government on the 4th February, 1986.

BEFORE SHRI R. B. SRIVASTAVA, PRESIDING OFFI-ČER, CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBU-NAL-CUM-LABOUR COURT, KANPUR

Industrial Dispute No. 212/84

In the matter of dispute between:

Shri Vinod Kumar C/o The General Secretary, UP Bank Employees Union 165 Sohbatia Bagh, Allahabad.

#### AND

The Dy. General Manager, Allahabad Bank, Hazarat-ganj, Lucknow.

#### APPEARANCES:

Shri V. N. Sekhari and Shri P. N. Tewari-for the workman.

Shri Rajeev and Shri M. K. Verma-for the Management.

#### AWARD

1. The Central Government, Ministry of Labour. vide its notification No. L-12012/108/84.D-II(A) dt. 19-11-84 has referred the following dispute for adjudication to this tribunal;

Whether the action of the management of Allahabad Bank Lucknow, in relation to their Jasta Branch. Distt. Allahabad in terminating the services of Shri Vinod Kumar sub-staff with effect from 18-11-82 is justified? If not to what relief is the workman concerned entitled?

- 2. The case of the workman is that he had worked for 262 day under the bank management in twelve consecutive months as temporary peon in Jasra Branch of the management and his services were terminated w.e.f. 18th November, 1982 without assigning any reason in utter disregard of the provisions of industrial laws. It is further averred that the workman was not given any appointment letter or termination letter violating the provisions of para 522(4) of the Sastri Award. The bank has not maintained any record of such employees as regard para 516 of the Sastri Award. That the services of the workman were retrenched on 18-11-82 without any notice and without paying retrenchment compensation as required under section 25F of the I. D. Act. In the end it is averred that the bank has knowingly violated the provisions of Industrial Disputes Act as well as provisions of Sastri Award and it is prayed that the workman be reinstated in banks service with full benefits.
- 3. The bank management contested the claim of the workman on the ground that the matter of dispute referred to this tribunal is not a dispute much less an industrial dispute inter alia on account that the workman never raised any demand whatsoever with the bank and as such there was no occasion for the management to turn down the demand on or before the workman raised industrial dispute. The bank management has further denied all the contents of the workman made in his claim statement on different counts and prayed that the claim of the workman be rejected.
- 4. The workman has filed rejoinder reiterating the statements made in his claim statement.
- 5. Shri L. B. Singh has filed his affidavit evidence in support of management's contention. Witness was also cross-examined on his affidavit. In his cross-examination he has supported the averments of the workman that the provisions of the Sastri Award and binartite settlement have not been followed in the case of workman. This very fact is clear from his statement wherein he has stated that no register of the temporary employee was kept in the management bank.
- 6. In this case after the cross of the management witness the case was fixed for affidavit evidence of the workman concerned. On 25th November. 1985 parties filed settlement in this case and the same is as under:—
  - 1. It is agreed that the workman concerned Shri Vined Kumar will be absorbed with prospective date here after in the permanent vacancy of peon-cum-farrash in terms of settlement dated 13-5-82 arrived at between the management of Allahabad Bank and All India Allahabad Bank Employees Co-ordination Committee.
  - 2. It is further agreed that the workman concerned Shri Vinod Kumar voluntarily relinquishes his claim of back wages, dues of past services or any right or claim of any benefits connected with past services under this reference.
  - 3. It is further agreed that Shri Vinod Kumar will submit banks printed application form duly completed seeking permanent employment in the banks service in the cadre of peon-cum-farrash within a week of this settlement.
  - It is further agreed that Shri Vinod Kumar will be alsorbed as aforesaid within 20 days of submission of duly completed banks printed application.
  - Thus this fully and finally resolves the entire dispute. in reference No. 212/84.
  - 6. The settlement which was filed was duly verified by the representatives of the parties concerned and they requested that the dispute be decided in terms of the settlement.

- I, therefore, taking into consideration the terms of the settlement give my award accordingly.
- 8. Reference is therefore answered accordingly.

R. B. SRIVASTAVA, Presiding Officer [No. L-12012(108)/84-D-II(A)]

- का. बा. 831.—भी खांगिक विवाद प्रक्षिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार, यूनियन बैंक आँफ इंडिया के प्रबन्धतंत्र से सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मकारों के बीच, अनुबंध में निर्विष्ट भी बोगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार भी बोगिक अधिकरण, कानपुर के पंचाट को प्रकाणित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 4-2-86 को प्राप्त कथा था।
- S.O. 831.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Kanpur as shown in the Amexure in the Union Bank of India and their workmen, which was received by the Central Government on the 4th February, 1986.

BEFORE SHRI R. B. SRIVASTAVA, PRESIDING OFFI-CER, CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBU-NAL-CUM-LABOUR COURT, KANPUR

Industrial Dispute No. 23 of 1983

In the matter of dispute between:

Shri Jamal Ahmad, C/o The Assistant General Secretary UBBEU, 36/1 Kailash Mandir, Kanpur.

#### AND

The Assistant General Manager, Union Bank of India Hotel Clarks Awadh, Hazaratgani, Lucknow.

#### APPEARANCES:

Shri V. N. Sekhari—for the workman. Shri Satpal—for the management.

#### AWARD

- 1. The Central Government, Ministry of Labour. vide its notification No. L-12012/390/81-D.II(A), dated 12-10-1982 has referred the following dispute for adjudication to this Tribunal:
  - Whether the action of the Management of Union Bank of India, in relation to their Civil Line Branch A'labad in depriving Shri Jamal Ahmad. Ex-Subordi-ate staff of rermanent employment insulte of his having been rated in the select list of such candida'es drawn in 1978 is justified? If not to what relief the said workman is entitled?
- 2. The case of the workman is that he first entered in the service of the management bank on leave vacancies and worked there from 74 to 78 in different branches in different spans and thus he completed in all about 495 days work that period i.e. 1974 to 1978. It is further averred that from 17-8-78. 24-6-78 the workman worked continuously 100 days at management's civil line branch. The workman appeared for test by way of interview in 1976 and his name figured in the list of successful candidates and except the workman quite number of successful candidates were absorbed in the service of the bank management. It is further averred that a meeting was held in February 1980 regarding the absorption of the workman who have completed 240/90 days service in the bank. The workman having been completed 100 days continuous service in the management bank was not absorbed by management, thus the bank has violated the provisions of para 20.7 and 20.8 of the bipartite settlement. It is further averred that after the termination of the workman fresh new hands were appointed by the management bank and thus the workman was deprived of by the management in seeking permanent employment inspite of having completed less than 495 days service and that the name of the workman was listed in the successful candidates after their Interview. Thus the action of the bank management in not absorbing the workman in service is unreason-

able and illegal. In the end it is prayed that the workman be absorbed in the banks service with full back wages.

3. The management contested the claim of the workman alleging that the matter of dispute has not been spoused by substantial number of workman of the union of the management and that the workman has served the demand notice to the bank management. It is further alieged that the concerned workman has not put in 240 days continuous service under the bank management in the preceding 12 months from the date of his termination. It is further averred that he was occasionaly employed in the service of the bank for a limited period for work which was essentially of a temporary nature and that he was employed temporarily as an additional hand due to temporary increase in work and that he was never appointed against the permanent vacancy. It is further alleged by the management that the name of the concerned workman appeared in the peval of appointment of temporary employees in temporary vacancies and he had never been placed on selected list for appointment or absorption as minimum qualification revised w.e.f. 23-7-76 for class IV i.e. sub-staff cadre came to be 7th standard pass whereas the applicant passed only 5th Class. In the last it is averred that in view of the judgment of S. K. Verma judgment of Supreme Court, the temporary employees can never be at par with permanent employees and they continued to be temporary and liable to be retrenched even if they are reinstated and also that no violation of section 25 G. H. was made as the workman did not passes minimum qualification. Referring to Sudder Workshop of Jorhaut Tea Company of 1980 Supreme Court it is averred that 25G may not be followed if there is valid reason for

4. I have heard the learned counsel for the parties and have also gone carefully through the records of the case.

5. The workman has substantiated by certificates filed alongwith affidavit and that from 74 to 78 in all he worked for 643 days in three different branches in one unit of Allahabad. He further substantiated that lastly he worked for 113 days in management's civil lines branch in the year 1978. From the above statement and also admissions it is clear that the workman did not complete 240 days in any span of one year though he completed more than 90 days. It is admitted that after interview etc., the workman was placed in the selected list for being appointed as sub-staff in the year 1976. It is admitted that interview was taken for sub-staff on 12-7-76 and the educational qualification for all selected candidates was class V pass. Annexure A to the reloinder of the workman shows that list of selected candidates was drawn up and put up on notice board on 13-10-76 in which the name of the workman appeared at serial No. 33. It may be mentioned here that mere empanel ment will not give the workman any right of being appointed permanently in the bank. Mean while the norms were changed with effect from 23-7-76 as stated by management witness Shri S. L. Verma vide circular No 2018 dated 16-11-78 whereby the qualification for appointment as sub-staff in different branches of the hank was raised to class VIIth nass. The workman did not correspond to this qualification hence he was left out and one Shri Kishan Chardra incior to him whose name anneared at social no 34 in that list was appointed who satisfied the norms of educational qualification. This circular was issued under the advice of Union Ministry of Finance Department of Foreign Affairs Banking Division.

6. Thus in view of the law laid down in Jorhaut Ten Company Versus Management 1980 Lab I. C. page 742 wherein it was held:

That section 25-G of the ID. Act may not be followed if there is a valid reason for daviation.

In the instant case there was justifying reason from daviating from the list of the approved candidates and appointing Shri Kishan Chandra lunior to him and ignoring his case on the point of educational qualification.

7. On the point of workman's working in clear permanent vacancy for more than 90 days there should have been a clear pleadings to that effect and specific evidence as to the vacancy was existing showing the permanent strength and that one of such permanent post was lying vacant on which the workman was engaged as temporary hand without

reservation. In view of Shanker Chakravorti Versus Britania Biscuits Company 1979 SC LIC page 1192 wherein it was held thus:

Contention to substantiate which evidence is necessary has to be pleaded.

The burden lay on the workman to show as to where was the permanent vacancy. It is not disputed that the workman was employed for all those period as temporary workman and as an additional hand due to temporary increase in work. Thus merely because of pleading that the workman had put in more than 90 days work, he will not be ome permanent in view of provision of 20.8 of the Bipartite Settlement. As pleaded by the workman his case was considered in the meeting between the Union representatives and the management at banks Central Officer Bombay in May 1980 and the case of the workman was specifically figured and the management agreed to examine his case on the basis of long temporary work ranging from more than 240 days work. As temporary the workman has not worked for more than 240 days in one span of year, he is not entitled to benefit of sec. 25F of the I. D. Act. The workman Kishan Chandra junior to him in the penal had to be given regular appointment as he satisfied the norms and discrimination on that account was proper and there was no question of infringment of section 25G on the point.

- 8. As regards the averments that four persons namely S Shri Ram Badan Himmat Ram Barsi Lal and Vijai Prakash Tondon mentioned in annexure B of the reioinder we appointed who had the same educational qualification and had not completed 240 days of work. The management witness has deposed that they must have been appointed before 23-7-76 when the bar of qualification of 7th pass was not there.
- 9. The workman has failed to substantiate the date as to when the persons namely Shri Radhika Prasad, Mohd. Aslam. Shrikant and Bhuvanchandra mentioned in para 4 of the workmans rejoinder were appointed and they all were serier to the workman in the penal prepared and if they satisfied the norms and were appointed earlier though their iritial appointment later to the workman. The empenalment give them a right of appointment first in clear vanacy so long they responded to the educational qualification and bar has not come, if they were of the same qualification as that of workman. Thus it can not be said that junior to workman were appointed as empenalment placed them on better position for regular absorption.
- 10. The only infringment to my mind is that the workman was not given notice for termination as required under to a 522(4) of the Sastri Award which was mandatory and which makes the termination illegal. Further admittedly so many new branches were opened and if the management hid maintained a list of retrenched temporary employees as records under Sastri Award the workman would have get an appointment and as this was not done, the management has infringed the provision of section 25H of the I. D. Act which infringment is also illegal.
- 11. Thus in view of these circumstances and for the reasons and law discussed above. I hold that the action of the management of Union Bank of India, in relation to their Civil Lines Branch Allahabad indepriving Shri Jamal Ahmad, ex-subordinate staff of rermanent employment inspite of his having been rated in the select list of su h candidates drawn in 1978 is justified, but his termination as temporary employee in 1978 from the sold branch without notice and notice pay being illegal, he has to be reinstated outh full back wages.
- 12. The result is that the workman is rejestated with full back wages as observed in para 11 of this award.
  - 13. I, therefore, give my award accordingly.

INo. I.-12012/390/81-D II(A)I

R. B. SRIVASTAVA, Presiding Officer

का.डा. 800- की किस विवार किया मा 1947 (1947 का 18) कि छारा 17 के बास्करण में के द्वीरा करकार, स्टेट बैंक कॉक की कानेर, एक जबपुर के प्रबंधसंझ से सम्बद्ध नियोजकों की राजनके कमेंकारों के बीच- मनुबंध में निर्दिष्ट श्रीबोगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार श्रीबोगिक श्रीध-करण, कानपुर के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 4-2-86 प्राप्त हुआ था।

S.O. 832.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act. 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Kanpur, as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the State Bank of Bikaner & Jaipur and their workmen, which was received by the Central Government on the 4th February, 1986.

BEFORE SHRI R. B. SRIVASTAVA, PRESIDING OFFICER, CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRAL TRIBUNAL-CUM-LABOUR COURT, KANPUR

Industrial Dispute No. 190 of 1981

#### **BETWEEN**

In the matter of dispute
Shri Vishnu Dayal Clo The President U.P. Bank's
Karamchari Saugh, 26/104 Birhana Road, Kanpur

#### AND

The Manager, State Bank of Bikaner and Jaipur, 58/45 Birhana Road, Kanpur.

#### APPEARANCE:

Shri V. N. Sekhari-representative for the workman.

Shri T. N. Tondon-representative for the management.

#### AWARD

- 1. The Central Government, Ministry of Labour and Rehabilitation, vide its notification no. L-12012/183/81-D-II (A), dated 18th December, 1981, has referred the following dispute for adjudiaction:
  - Whether the action of the Sate Bank of Bikaner and Jaipur Birhana Road, Kanpur, in not absorbing Shri Vishma Dayal, suboridnate staff in the Bank's service and terminating his services from January, 1979 is justified? If not, to what relief is the worknam concerned entitled?
- 2. The case of the workman Shri Vishnu Dayal Is that he was apopinted as peon in the management bank on 24th January, 1978, and worked in all 245 days upto 2nd January, 1979 when his services were retrenched without any notice and retrenchment compensation. The management did not allow him to work till 24-3-79 when ne was allowed to work as peon for 80 days i.e. 24-3-79 to 11-6-79 and despite the provision of modified award and settlement, the petitioner was not paid regular wages but was paid Rs. 6/per day as daily rated peon. At the time of alleged retrenchment compensation and the mandatory provision of section 25F, G and H of the J.D. Act read with its rules were violated and hence termination is void abinitio. It is further averred by the applicant that after termination of his services fresh hands were employed in the bank. It is also averred that he was doing work of regular permanent nature.
- 3. The mangement bank has contested the claim of the applicant/workman on the ground that the workman had not completed one years completed service within the meaning of section 25B of the LD. Act of 1947 and is not entitled to any relief of reinstatement as prayed. The management has emphatically denied that the workman had worked for 245 days in one span of year and that he was legally retrenched without any notice or reterenchment compensation and that as a matter of fact he was on daily rated workman. At there was no contravention of section 25 of the LD. Act there was no quesion of paying notice pay or notice and provision of section 25G and H are not attracted. It is further averred that the workman was not entitled to 14 days notice in view of para 527(4) of the Sastri Award in the alternative it is averred that if the claim of the workman is accepted this will violative of the provision of article 14

- and 16 of the Indian Constitution in as much as petitioner would get a march over those employment through prescribed that a person works for some time in temporary capacity against a permanent post would not convert into employment in permanent way and that the petitioner was never appointed to fill any permanent post.
- 4. In the rejoinnder the workman averred that he was entitled to be regularised in service in terms of provision of para 20.8 of the Bipartite Settlement read with para 20.7 and 20.12 of the same.
- 5. The parties have filed joint inspection note dated 16-5-85 showing that the workman worked for those particular days of 1978 mentioned therein and received payment from the bank management on vouchers or through petty cash register.
- 6. The management later filed photo copy of voucher showing charges paid to workman concerned for the work done on those particular days mentioned therein. This shows that he worked in August and September, 1977 and then from 30th January. 1978 till 29-8-78 with breaks possibly of Sundays and Holidays and was paid Rs. 6/- per day. The management has also filed circular dated 9-8-76 on the subject of temporary employees considering the Supreme Court's Judgment in Sunder Money's Case wherein it was observed that fresh opportunity will however, be given to all candidates who have so far have not qualified themselves. Such employees should, therefore, specifically be informed before being reappointed or before being granted extension in their temporary services that their continuous in the bank's service will depend on their being found spitable in a written test and interview.
- 7. Circular dated 28-2-76 annexure 146 Tays down that on expiry of present term no further extension should be granted to any of them and further that no employee should permitted to serve as temporary employee for more than 80 days and in this way there are further direction in annexure 146 to 152 regarding temporary employees.
- 8 On other hand workman has filed 15 documents, first three of which are proceedings before ALC (Central), paper no. 4 is the reply of the bank management to he Secretary U.P. Bank Karamchari Sangh dated 15-7-80 to the effect that interview for sub staff is going to take place, paper no. 5 is letter of Secretary of the Union in which he has initimated the management bank that before appointing fresh hands in the sub staff cadre those who are already worked should be given a chance. Subsequenty the present U.P. Bank Karamchari Sangh vide letter dated 4-4-82, intimated the Manager, Transport Nagar Branch of the management bank that the retrenched imployees are not being considered when appointing fresh hands and it was specifically mentioned that Shri Vishnu Daval and others should be considered before appointing fresh new hands. A similar letter was written to the General Manager of the bank management at Jaipur and lastly in 1984, the President of the U.P. Bank Karamchari Sangh wrote to the General Manager to give chance to the retrenched employees including workman Shri Vishnu Davaf, workman himself gave letter dated 11-4-84 to the book management that he be given a chance for appointment as sub staff when new hands are being appointed in the bank. He get himself registered in the Employment Exchange and get renewal card of the year 1981, the workman has further filed paper no. 11, photo cony of the certificate of the bank management issued on 22.9-79 certifying that the workman had worked as temporary peon from 24-3-79 to 11-6-79, from 12-6-79 to 9-8-79 for two months, another temporary peon namely Deen Singh was engaged for 60 days and was paid total salary of Rs. 406.50p per month.
- 9. Shri K. S Baghel has filed his affidavit evidence on behalf of the management and was examined of justify the reference. He is the manager industrial relation in the bank management's head office at Jainur and is fully conversant with the facts. He denied that the workman actually worked for 245 days and is not entitled to benefit of section 25F and similarly he is not entitled to notice under para 522(4) of the Sastry award and that he has no legal right to be absorbed in the bank.

10. In cross examination he has however, admitted that in view of circular Per/115/83 some employees who have worked for 270 days were regularised in bank's service. He pleaded his ignorance to the photo copies filed by the workman as paper no. 11 and further stated that he does not know if two peons were appointed on 11-6-79 when services of the workman were terminated. He states rather workman was daily rated workman and there was no question of termination. He admits that after workman ceased to work other temporary workman were employed in the bank. He further admitted tha leave vacancy temporary appointments were made in different branches of the bank. He further states that he has no knowledge if the workman was appointed on leave vacancy or in excegency of work. He has further no knowledge if the workman worked in different department of the management bank's Birhana Road Branch, at Kanpur as peon and further has shown his ignorance about working of the workman at Kanpur. He admits that there is no written test for the appointment in sub staff cadre and their selection is based only on the basis of interview. He has further stated that he has no knowledge that if the name of the workman was sponsored from the employment exchange Kanpur. He further admits that there is no seniority list of temporary workman and no register was there of temporary employees and simply a file is maintained in which biodata of the temporary work-.imen are maintained.

11. On the other hand, workman examined himself on the basis of two affidavit given one earlier and the other subsequent to the examination of the management witness testifying his case. In his cross examination he stated that at times he worked on Sundays islo and for work of Sunday voucher was prepared on Monday. He admits that every day he worked, he used to get Rs. 6/- per day for the days work. He admits that for the appointment in the bank there are set rules and for which names are called from employment exchange. He voluntarily stated that his name was also sponsored from the employment exchange alongwith the names of other candidates in the month of July or June 78. He admits that he was never called for interview by the bank management.

12. From the documents fifed by the management anneworking would be within a spon of one year and in view of provision of section 25R(2)(a)(ii) he will be deemed to be in continuous service as he actually worked for not less than 240 The question would be in what capacity he worked. It is not the case of the management that he was in any leave vacancy on those days. The workman has averred that he was doing the duties of a sub staff of a regular peon which fact is not denied by the bank management. As no specific casual work not connected for banking industry is shown to have been given to him during the period, the natural colliery is that he worked as peon for 240 days in one span of year as a temporary workman and thus provision of para 20.7 of the Bipartite Settlement will come into play and the workman will be deemed to be temporary workman. Day to day appointment will be for a limited period of a work but if the same man is appointed day to day for a span of more thann 240 days in a year, he will be deemed to be a workman employed in the industry which employment would be temporary if the workman was not working on the perament vacancy post. For termination of such an employee the provision u/s 25F of the I.D. Act, 1947 that he should be given retrenchment compensation are mandatory and which admittedly not done in this case. In view of the off quoted judgment in Sundermoney case any retrenchment of an employee would be illegal and he will be deemed to be in continuing in service. The workman after his first termination was again appointed for a period of 80 days from 24-3-79 to 11-6-79. Even if that be so that period will stand covered in his continuous service and may have effect on the noint of wages if he was tion is further illegal as admittedly new hands were appointed after termination of workman on 2-1-79. It was the duty of the management to have given a chance to the retrenched workman in view of provision of sec. 25-H of the

I.D. Act and non compliance of this section would afso made termination illegal.

13. Thus in view of the admitted position of working and law discussed above. I hold that the action of the State Bank of Bikaner and Jaipur Birhana Road Kanpur in not absorbing Shri Vishnu Dayal, subordinate staff in the Bank's service and terminating his services from January, 1979, is not justified, he result is that the workman is reinstated in service with full back wages.

14. I, therefore, give my award accordingly.

R. B. SRIVASTAVA, Presiding Officer
[No. I.-12012/183//81-D-II(A)]
N. K. VERMA, Desk Officer

#### नई दिल्ली, 12 फरवरी, 1986

का आ, 835 — केन्द्रीय सरकार ने यह समाधानहों जाने पर कि लोकहित में ऐसा करना भ्रमेक्षित या श्रीद्योगिक विवाद भ्रधिनियम, 1947 (1947 का 14) की घारा 2 के खण्ड (ह) के उपखण्ड (4) के उपबन्धों के भ्रमुमरण में भारत सरकार के अपन अञ्चालव की भ्रधिसूचना संख्या का था. 4088 दिनांक 16 भ्रमस्त, 1985 द्वारा फास्फोशहट खनन उद्योग को उक्त भ्रधिनियम के प्रयोजनों के लिए 23 भगस्त, 1985 से छः मास की कालावधि के लिए लोक उपयोगी सेवा धोषित किया था,

भौर केलीय सरकार की राय है कि लोकहित में उक्त कालावृधि को छः मास की बौर कालाविध के लिए बढ़ाया जाना अपेकान है,

अतः, अब भौद्योगिक विवाद भौद्यानियमं, 1947 (1947 का 14) की धारा 2 के खण्ड (द) के उपखण्ड (4) के पन्तुक द्वारा प्रदत्त गत्तियो प्रयोग करति दुए केन्द्र य सरकार उक्त उद्योग को क्ल अधिनियम के प्रयोजनों के निण् 23 फरवरी, 1986 से छः मास की और कालावधि के लिए लोक उपयोगी सेवा घोषित करती है।

ृ [फा. संक्ष्या एल-11017/4/85 डी-1(ए)] श.तु.स्. घय्यर, ध्रवर सचिव

#### New Delhi, the 12th February, 1986

S.O. 833.—Whereas the Central Government having been satisfied that the public interest so required had, in pursuance of the provision of sub-clause (vi) of clause (n) of section 2 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), declared by the notification of the Government of India in the Ministry of Labour S.O. No. 4988 dated the 16th August, 1985 the Phosphat Mining Industry to be a public utility service for the purposes of the said Act, for a period of six months, from the 23rd August, 1985;

And whereas, the Central Government is of opinion that public interest required the extension of the said period by a further period of six months;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by the provise to sub-clause (vi) of clause (n) of section 2 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby declares the said industry to be a public utility service for the purpose of the said Act, for a further period of six months from the 23rd February, 1986.

[No. S-11017/4/85-D.I(A)] S. HuS. IYER, Under Secy.

#### मई बिल्ली, 14फरवरी, 1986

का, धा, 834 - केन्द्रीय संस्कार, चूना पत्थर धीर डोलोमाइट खान श्रम करूबाण निश्चि भिश्चित्यम, 1972 (1972 का 62) की धारा 10 के अनुसरण में, वित्तीय वर्ष 1984-85 के दौरान उक्त अधिनियम के अधीन वित्त पोजित अपने त्रियाकलापों का वृत्त देते हुए उस वर्ष के लेखा विवरण के साथ निक्निसिखत रिपोर्ट प्रकाणित करती है: साभाव्य:

चूना पत्थर श्रीर डोलोम।इट खाल श्रम कल्याण निधि, चूना पत्थर ग्रीर डोलोम।इट खान श्रम कत्याण निधि ग्रिधिनियम, 1972 (1972 का 62) के ब्रजीनं गठित की गई थी, जिसमें जूना पत्थर बीर डोलोम। इट खान में नियोजित कर्मजारियों के कल्याण की अभिवृद्धि करमें के लिए किसी खान में जल्प।दित उनने जून। पत्थर बीर डोलोमाइट पर जिता:

- (i) किसी कारखाने के ग्रिधिष्ठाता को विकय किया जाता है या अध्यक्षा व्ययन किया जाता है; या
- (ii) ऐसी खान के स्वामी द्वारा गीमेंट, लेश्हा या इस्पात के निर्माण में किमी प्रयोजन के लिए उपयोग में साथा जाता है।

एक क्यया प्रति मीट्रिक टन से धनिधिक दर से उत्पादन गुरुक के उद्महण भीर संग्रहण की ध्यवस्था की गई है। इस समय उद्महण की वास्तविक घर बीस नैसे प्रति मीटरी टन है। उपस्कर के आगम गुरुवतः लोक स्वास्थ्य भीर स्वच्छना में सुधार, विकित्सा सुविधाओं की व्यवस्था, धावास और पोषण, कार्यकर्षा, आदि के लिए धायिक सहायता देने के लिए उपयोग में लाए जाते हैं।

2. प्रशासितक सुविधाओं के लिए, उन्नीस राज्यों भीर संघ शासित क्षेत्र गोवा और दिल्ली को जिनमें देश की चूना पत्यर भीर बोलोमाइट खान हैं, ना क्षेत्रों में बाटा गया है भीर प्रत्येक क्षेत्र को कत्याण प्रायुक्त के अधिकार में रखागया है। इस क्षेत्रों के कल्याण प्रायुक्तों को इस अधि-नियम भीर इसके प्रधीन बनाए गए नियमों को लागू करने के लिए कल्याण भीर उपकर अन्युक्तों के रूप में नियुक्त किया गया है। क्षेत्रों का भावटन इस प्रकार किया गया है:

क्रमांक अधिकारी कः पदनाम	मुख्यालय	उनके क्षेत्राधिकार में भाने वाले राज्य का नाम
1. 2	3	4
<ol> <li>कस्थाण आयुक्त, श्रम संक्रालय, भारत सरकार, जबलपुर</li> </ol>	जबलपुर	मध्य <b>प्र</b> देश
<ol> <li>कल्याण आयुक्त, श्रम मंत्रालय, भारत सरकार, भुषतेश्वर।</li> </ol>	भुवनेण्यर	उड़ीसा,पश्चिम बंगःल, श्रसम मेघालय, मणीपुर श्रीरनागालैंड
<ol> <li>कल्याण झायुक्त, श्रम मंत्रालय, भ(रत सरकार, इलाहाबाद ।</li> </ol>	इलाहाब.द	उत्तर प्रदेश, जम्भू ग्रीर कश्मीर, हिमाधल प्रदेश, पंजाब ग्रीर संघ शासिस क्षेत्र दिल्ली ग्रीर चन्द्रीगढ़
<ol> <li>कल्याण बायुक्त, श्रम मंत्रालय, भारत सरकार, भीलवाडा</li> </ol>	भीलवाडा	राजस्थान, गुजरात ग्रीर हरियाणा
<ol> <li>कल्याण श्रायुक्त, श्रम मंत्रालय भारत सरकार, बंगलौर।</li> </ol>	<b>मंगलीर</b>	कर्नाटक ग्रीर केरल
<ol> <li>कल्याण अःयुक्त, श्रम मंझालय, भारत सरकार, हैदराबाद।</li> </ol>	हैदराबाद	तमिलन। दु, भ्रोध्य भदेश श्रीर संघ गासित क्षेत्र और पांक्षिचेरी क्षे
<ol> <li>कल्याण श्रामुक्त, श्रम भंतालय भारत सरकार, नागपुर।</li> </ol>	नागपुर	महाराष्ट्र
<ol> <li>कल्याण मायुक्त, श्रम मंत्रालय, भारत सरकार, कर्मा, बिहार</li> </ol>	कर्मा	बिहार
<ol> <li>कल्याण ग्रा.युक्त, श्रम मंद्र्यलय, भारत सरकार, गोवा।</li> </ol>	गोव।	गोवा

3. चूना पत्थर भीर डोलोमाइट श्रम कल्याण निधि भिनियम, 1972 के प्रधीन एक केन्द्रीय सलाहुकार समिति भीर भ्रान्ध प्रदेश, बिहार, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, उड़ीमा, राजस्थान, समिलनाडु, भीर उत्तर प्रदेश राज्यों में 10 राज्य सनाहुकार समितियों गठित की गई हैं। इन मिमितियों की भावशिक बैठकों होती हैं भीर यह सरकार को इस भिनियम के प्रशासन के बारे मे नियमित रूप से संसाह देती है।

4. चूना पत्थर भीर डोलोमाइट खानों के श्रामकों के लिए निम्नलिधित कल्याण मुविधाओं की व्यवस्था की गई है:

#### कः स्थास्यय

पिछले वये के दारान कल्याण निधि मंगठन द्वारा खोले गए 13 धायुर्वेविक भीषधालयां, 18 एलोपैयिक भीषधालयों और एक प्रसूति एथं शिशु कल्याण केन्द्र द्वारा चूना पत्यर और डोलोमाइट खान कर्नेकारों भीर उनके आश्रितों को चिकित्सा सुविधा दी जाती रही। 1984-85 के बौरान दो और स्थिर व चलते किरते भीषधालयों के लिए मंजूरी दी गई है। 1984-85 के दौरान खान प्रवस्थत स्न द्वारा 6 एम्झुलेंस वाहन खरीवने हेनु महायना प्रमुखन की 2.75 लाख घपये की राशि मंजूर की गई है। अस्पताल नपस्करों के खरीदन के लिए 5,500/- रुपये की सहिंचता भनुरान राशि भी मंजूर की गई है। अपरी प्रस्पताल नपस्करों के खरीदन के लिए 5,500/- रुपये की सहंचता भनुरान राशि भी मंजूर की गई है। अपरी प्रस्पताल में अपरोज से प्रस्त कर्मकारों की चिकित्सा के लिए 29 पलंग प्रारक्षित किए गए हैं। धातक भार गरभार कुर्वटना लाभ योजना के अधीन 9 मामलों में लाभ विण् गए हैं। स्वास्थ्य के अन्तर्गत 1984-85 के दीरान हुआ। कुल ध्यय 27,45,531.19 स्वये था।

#### खाः शिक्षा

छाउभू तियां देने मंत्रधी योजना के प्रवीत चूना पत्थर भीर डोलोमाइट खान के ऐसे निर्मित श्रीमकों के पूजा और पुतियां को छात्रवृक्षियां दी दी जानी हैं, जिनकी मासिक भाय 1250/- राये प्रति माह से अधिक मही। इस योजन में पांचवी कथा। से लेकर तकनोकी शिक्षा तक डिग्री पाठ्यकमां चिकित्सकीय भीर इंजीनियरी पाठ्यकमां चिकित्सकीय भीर इंजीनियरी पाठ्यकम के लिए प्रति विधार्थी 15/- रुपये प्रति माह से 125/- रुपये अति माह सग छाज वृक्तियां देने की अवस्था है। 1984-85 के बीरान इन कार्यकलायों के प्रन्तर्गत 6,17,486.55 लाख रुपये अर्व किए पए हैं। जिसमें से 5,23,443/-रुपये की राशि 1991 विद्यार्थियों को छाजवृक्तियों के रूप में दी गई है।

#### गः सतोरंजनः

रिपोर्टाधीन वर्ष के दीरान जवलपुपर क्षेत्र में दो भूवनेश्वर क्षेत्र में एक, इताह्य द क्षेत्र में 4 तथा बंगलीर क्षेत्र में 3 चलते फिरते सिनेमा एक काम जरते रहे। चूना पत्थर श्रीर डीलोमाइट खान श्रीमकों के लिए उड़ीसा में पुरी में एक भवनाश गृह भी स्थापित किया गया है। विभिन्न खान प्रथम्बकों को 16 मि.मीटर के 28 प्रोजैक्टर सहायक उपकरणां के साथ दिए गए हैं। फिल्मों के किराए के व्यय की प्रतिपूर्ति के लिए खान प्रबन्धकों को सहाथता अनुवान दिया जा रहा है। इसके भ्रलाचा, कुछ खान प्रबन्धकों को सहाथता अनुवान दिया जा रहा है। इसके भ्रलाचा, कुछ खान प्रबन्धकों को रेडियो सेट भी दिए गए हैं। रिपोर्टाधीन भ्रवधि के बौरान 7.51 लाख द, की रागि भनोरंजन सुविधाओं पर खर्च की गई है।

#### घः जल ग्रापूर्ति

रिरोटांधान वर्ष के दौरान 9,43,095,इ० की राशि जल मापूर्ति के निस्तिनिवित प्रबन्धतस्त्रों को पंजूर को गई है।

मे० अयुर उद्योग लिमिटेड, कालोदी क्वारी को उनकी बी.बी.एस. चूना पत्थर खान में एक भोनरहेड याटर टैंफ के निर्माण भीर कुमा खोदने के लिए दिया गया सहायता भनुदान;

(62,195/-रुपये)

मीलवाड़ा क्षेत्र

 पोलापल्ली चूना गरथर माइंस के. मी. प्राइवेट लिमिटेड मचेरला में बोर बैल की खौदाई के लिए।

(46,500 €0)

हैक्राबाद क्षत

 मैं • सो • सो • अर्थ • लिमिटेड की दिल्लाई पर्वत चूना पत्थर क्वारो, बौकाजन असम में जल आपूर्ति योजना के लिए ।

(6,47,400/50)

भूवनेश्वरकोद

4. एस.ए. प्राई.एल. के पुरनापानं चूना पत्थर कीर कोलोमाइट क्वारी में अल कापूर्ति में सुधार मोजना के बन्तगंत एक क्रतिरिक्त होज के निर्माण के लिए। (1,87,000/- घपये)

भवनेश्वर क्षेत्र

#### (क) मानास:

चृता पत्थर भौर डोलोसाइट श्रामिकों के लिए मकान देने की अपवस्था करना संगठन के मुख्य कार्यकलायों में से एक कार्य है। इस समय तीन योजनाएं चल रही हैं।

- (i) टाइप-I भावास योजना
- (ii) टाइप-II भ्रावास योजना
- (iii) धपना घर, स्वयं बनाग्रो ।
- (क) टाइप-I ब्रावास योजना के श्रन्तर्गेत मानक श्रनुमानित लागत का 75 प्रतिशत या 7,500/- च. इनमें से जो भी कम हो, की आर्थिक सहायता देव हैं। इसके श्रितिरक्त काली कपास या उभरी हुई भूमि बाले क्षेत्रों में 2000/- च. या वास्तिविक लागत, उनमें से जो भी कम हो का 50 प्रतिशत विकास व्यन्न देव हैं। विकास व्यन में अन्य कार्तों के माथ-साथ बाहरी भीर भीतरी जलपूर्ति, सफाई तथा साथ जोड़ने वाली सड़कों का भी व्यय शामिल होगा। विक्तिय वर्ष 1984-85 के दौरान टाइप-I श्रावास मोजना के छन्तर्गेत चूना पत्थर और डोलोमाइट खान श्रिमिकों के लिए 318 घरों को मंजूरी दी गई।
- (ख) टाइप-II धावास योजना के प्रन्तर्गत, देय प्राधिक सहायता की दर 1500/- ग. या निर्माण लागन का 75 प्रतिशत, इनमें से जो भी कम हो देय हैं। इसके प्रतिरिक्त, साधारण क्षेत्रों में प्रति मकान 1500/- ग. भीर काली कपास या उभरी हुई भूमि क्षेत्रों में 2,250 र. की दर से या निकास की वास्तिवक लागत, इनमें से जो भी कम हो, प्राधिक सहायता देय हैं। 1984-85 के दौरान इस योजना के प्रन्तर्गत 366 घरों को मंजूरी दी गई।
- (ग) भ्रवना सकाम स्वयं बनाम्नो योजना के ग्राधीन पाछ कर्मकार को 1000/- स. की दर से भ्राधिक महायना और इसके भ्रातिरिक्त 4000/- इ. का ब्याज मुक्त ऋण दिया जाता है, जो कि 9 वर्ष से भ्रातिक भ्रविधि में मासिक किस्सों में बसूल किया जाता है। इस विसीय वर्ष के दौरान इस योजना के अर्थान 173 कर्मकारों को लाभ मिला।

1984-85 वर्ष के लिए लेखा विवरण:-पहली प्रप्रेल, 1984को अथगेप 2,73,19,295.06 सपये
1984-85 के बीरान प्राप्तियां 1,24,26,350.10 गपये
1984-85 के बीरान व्यय 80,28,926.17 सपये
31-3-1985 को प्रंतशेष 3,17,16,718.99 सपरे

[सं. जैंड-12015/3/85-डब्ल्यू-H] जार.डी. मिश्रा, ध्रवर सचिव

New Delhi, the 14th February, 1986

S.O. 834.—In pursuance of Section 10 of the Limestone and Dolomite Mines Labour Welfare Fund Act, 1972, (62 of 1972), the Central Government hereby publishes the following report giving an account of its activities financed under the said Act during the financial year 1984-85 together with the statement of accounts of that year:—

#### General:

The Limestone and Dolomite Mines Labour Welfare Fund was constituted under the Limestone and Dolomite Mines Labour Welfare Fund Act, 1972 (62 of 1972) which provides for the levy and collection of cess at a rate not exceeding one rupee per metric tonne on so much of Limestone and Dolomite produced in any mine—

- (i) as is sold or otherwise disposed to the occupier of any factory; or
- (ii) as is used by the owner of such mine for any purpose in connection with manufacture of cement, iron or steel,

to promote the welfare of the persons employed in Limestone and Dolomite mines. The actual rate of levy presently is twenty paise per metric tonne. The proceeds of the cess are being utilised mainly for the improvement of public health and sanitation, provision of medical facilities, subsidy on housing and programmes of nutrition etc.

2. For administrative convenience, the nineteen States and Union Territories of Goa and of Delhi which have Limestone and dolomite mines in the country, have been grouped into nine regions and each region is placed under the overall charge of a Welfare Commissioner. The Welfare Commissioners of the areas have been appointed as Welfare and Cess Commissioners for the enforcement of Act and Rules framed thereunder.

The allocation of the regions is as under:

	Designation of the Officer	quarters	Name of the State and their Juris- diction
1	2	3	4
1.	Welfare Commissioner, Ministry of Labour, Government of India Jabalpur.		Madhya Predesh
2.	Welfare Commissioner, Ministry of Labour, Government of India, Bhubaneswar.	Bhuban <b>e</b> s- war.	Orrisa, West Bengal Assam, Meghalaya, Manipur and Nagaland.
3.	Welfare Commissioner Ministry of Labour, Government of India, Allahabad.	, Allahabad	Uttar Pracesh, Jammu & Kashmir, Himachal Pradesh, Punjab and Union Territory of Delhi and Chandigarh.
4.	Welfare Commissioner Ministry of Labour, Government of India, Bhilwara.	,	Rajasthan, Gujarat and Haryana.
5.	Welfare Commissioner Ministry of Labour,	, Bangalore	Karnataka and Kerala.

Government of India,

Bangalore.

3 6. Walture Commissioner, Hyderabad Tamil Nadu and Andhra Pradesh Ministry of Labour, and Union Terri-Government of India, tory of Pondicherry. Hyderabad. Maharashtra. 7. Welfare Commissioner, Nagpur Ministry of Labour, Givernment of India. Nugpur. 8. Welfare Commissi mer. Karma Bihar. Ministry of Labour, Government of India, Karma, Bihar. Goa. 9. Welfare Commissioner, Goa Ministry of Labour, Government of India, Goa.

- 3. A Central Advisory Committee and 10 States Advisory Committees for the States of Andhra Pradesh, Bihar, Gujarat, Madhya Pradesh, Maharashira, Karnataka, Orissa, Rajasthan, Tamil Nadu and Uttar Pradesh have been constituted under the Limestone and Dolomite Labour Welfare Fund Act, 1972. The Committees meet periodically and advise the Government regarding administration of the Act.
- 4. The following welfare facilities have been provided to Limestone and Dolomite Mines Workers:—

#### A. HEALTH:

Thirteen Ayurvedic dispensaries, 18 Allopathic dispensaries and one Maternity-cum-Child Welfare Centre set up by Wolfare Fund Organisation during the previous years have continued to give medical treatment to the Limestone and Doloworkers and their dependents. Mine more Static-cum-Mobile dispensaries were sanctioned during 1984-85. Grants-in-aid amounting to Rs. 2.75 lakhs has been sanctioned for the purchase of 6 Ambulance Vans by mine managements during the year 1984-85. Grants-in-aid amount ing to Rs. 5,500 has also been sanctioned for the purchase of Hospital equipments. 29 beds have been reserved in TB Hospitals for the treatment of workers suffering from TB. Benefits have been given in 9 cases under Fatal and Serious Accident Benefits Scheme. The total expenditure during 1984-85 under Health was Rs. 27,45,531. 19.

#### B. EDUCATION:

Under the Scheme for the award of scholarships, scholarships are granted to the sons and daughters of regular Limestone and dolomite mine workers whose monthly earnings do not exceed Rs. 1,250 per month. The Scheme envisages award of scholarships for Class V onwards, to technical education degree courses, medical and engineering courses at the rates varying from Rs. 15 p.m. to 125 p.m. per student. During 1984-85 Rs. 6,17,486.55 lakhs has been spent under the activity out of which an amount of Rs. 5,23,043.00 has been awarded as scholarship to 1991 students.

#### C. RECREATION:

Two mobile Cinema Units in Jabalpur region, one in Bhubaneswar region, 4 in Allahabad region and 3 in Bangalore region continued to function during the year under report. A Holiday Home has also been set up at Puri in Orissa for the Limestone and dolomite mine workers. Twentyeight 16 m.m. projectors with accessories have been provided to different mine managements, Grants-in-aid for re-imbursement of film-hire charges are being paid to the mine managements. Besides, radio sets have also been provided to many managements. During the year under report an amount of Rs. 7.51 lakhs has been spent on recreational facilities.

#### D. WATER SUPPLY:

During the year under report an amount of Rs. 9,43,095 was sanctioned for Water Supply Scheme to the following managements:—

1. Grants-in-aid for construction of an overhead water tank and sinking of well to M/s. Jaipur Udyog Limited, Phalodi Quarry at their BBL Limestone Mines.

(Rupees 62,195)

Bhilwara Region

2. Sinking of bore well at Polepalli Limestone Mines K.C. Pvt. Ltd., Macherla.

(Rupees 46,500)

Hyderabad Region

3. Water Supply Scheme at Dillai Parbat Limestone Quarry of M/s. CCI Ltd., Bokajan, Assam.

(Rs. 6,47,400)

Bhubaneswar Region

4. Improvement to water supply scheme at Purnapani Limestone and Dolomite Quarry of SAIL construction of an additional reservoir.

(Rs. 1,87,000)

Bhubaneswar Region

#### E. HOUSING:

Provision of housing accommodation for limestone and dolomite workers is one of the main activities of the organisation. Presently, there are three schemes in vogue, namely:—

- (i) Type 1 Housing Scheme
- (ii) Type II Housing Scheme
- (iii) Build Your Own House Scheme.
  - (a) Under Type I Housing Scheme subsidy is payable at the rate of 75 per cent of the standard estimated cost of Rs, 7500 whichever is less. In addition, the development charges are also payable at the rate of 50 per cent of Rs. 2000 for ordinary areas and 75 per cent of Rs. 2000 for black cotton or swelly soil areas are the actual cost, whichever is lower. The development charges, will inter alia include external and internal water supply, sanitation, electricity and approach roads. During the financial year 1984-85, 318 houses were sanctioned under Type I Housing Scheme for limestone and dolomite mine Workers.
  - (b) Under Type II Housing Scheme the rate of subsidy payable is Rs. 1500 or 75 per cent of cost of construction whichever is lesser. In addition development charges is also payable at the rate of Rs. 1500 per house in ordinary areas and Rs. 2250 in black cotton or swelly soil areas or the actual cost of development whichever is less. Under the Scheme 366 houses have been sanctioned during the year 1984-85.
  - (c) Under Build Your Own House Scheme financial assistance is given to an eligible worker at the rate of Rs. 1000 as subsidy besides interest free loan of Rs. 4000, refundable in monthly instalments spread over a period of not exceeding 9 years. 173 workers have benefitted under the Scheme during the financial year.

Statement of account for year 1984-85:

Opening balance as on 1st April, 84 Receipts during the year 1984-85 Expenditure during the year 1984-85

Closing balance as on 31-3-1985

Rs. 27319295.06 Rs. 12426350.10

Rs. 8028926.17 Rs. 31716718.99

[No. Z-12015/3/85-W. II] R. D. MISHRA, Under Secy.

# नई दिल्ली, 14 फरवरी, 1986

का. आ. 835. — मैसर्स प्रागा टूल्स लिमिट ड. 6-6-8/32, कवाहि गृङ्गा, सिकन्द्राबाद (ए. पी./144) जिसं इसमें इसके परवाह जिस्त स्थापन कहा गया है) ने कर्म जारी भविष्य निधि और प्रकीण जपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके परवाह जिस्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की जपधारा (2क) के अधीन छूट दिए जाने के लिए अबेदन किया है;

जौर कंन्द्रीय सरकार का समाभाम हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी किसी पृथक अभिवाय या प्रीमियम का संवाय िक ए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की जीवन बीमा स्कीम की सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में जो फायदे उठा रहे हैं जो एसे कर्मचारियों को उन फायदों से अधिक अनुकूल हो जो उन्हों कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन अनुज्ञेय हों;

अतः कोन्द्रीय सरकार, जक्त् अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रवत्त शिक्तयों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के अम मंत्रालय की अधिस्थान सं. का. आ. 2713 तारीख 1-7-1982 के अनुसरण में और इससे उपाबस अनुसूची में विनिर्दिष्ट कतों के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को, 24-7-1985 से तीन वर्ष की अविध के लिए जिसमें 23-7-88 भी सम्मिलित है, उक्त स्कीम के सभी उपकर्शों के प्रवर्तन से छूट देती है।

# अन्**स्ची**

- 1. उन्हें स्थापन के संबंध में नियोजक प्रावेक्तिक भविष्य निधि आयुक्त आन्ध्र प्रदेश को एसी विषरणियां भेजेगा और एसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी स्विधाएं प्रदान करेगा जो कन्द्रिय सरकार, समय-समय पर निविष्ट करे।
- 2. नियाजिक, एसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के अधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करें।
- 3. सामृहिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अंतर्गत से साओं का रसा जाना, विवर्णणयों का प्रस्तृत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का अपरण, जिरीकण प्रभारों संदाय आदि भी है, होने वाले सभी व्ययों का बहन नियोजक ब्रारा किया जाएगा।
- 4. नियाजक, कोन्द्रीय सरकार द्वारा यथा अन्मोदित साम्-हिक बीमा स्कीम को नियमों की एक प्रति, और जब कभी जनमां संदोधन किया जाए, जब उस संघोधन की प्रति सथा कर्मचारियों की बहुसंच्या की भाषा में उसकी मृख्य बातों का अनुवाद, स्थापन के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित करेगा ।

- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सबस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजिक, सामृहिक बीमा स्कीम के सबस्य के रूप में उसका नाम तुरन्त दर्ज करेगा और उसकी बाबत आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संबत्त करेगा।
- 6. यदि साम्हिक होगा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे दक्ष्ण जाते हों तो, नियोजक उक्त स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समृचित रूप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदों में अधिक अनुकूल हों जो उक्त स्कीम के अधीन अनुक्रंय हैं।
- 7. सामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए थी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीन अदिय रक्षय उस रक्षम से कम है जो कर्मचारी को उस दशा में स्वेय होती जब बह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मचारों के विधिक वारिस/नामनिवेधिती को प्रतिकर के रूप में दोगों रक्षमों के अन्तर के रासर रक्षम का संदाय करेगा!
- 8. साम्हिक बीमा स्कीम के उपदंधों में कोई भी संबोधन, ग्रावाशिक भविष्य निधि आय्थत आन्ध्र प्रदेश के पूर्व अनुमोदन के बिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संबोधन से कमे-चारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो, वहां प्रावेशिक भविष्य किथि आयुवत, अपना अनुभोदन देने से एवं कर्मचारियों को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युवितयुक्त अदसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवर, स्थापन के कर्मचारी, भाराीय जीवन बीमा निगम को उस सामृहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना खुका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रदद की जा सकती है।
- 10 यदि किसी कारणवश, नियोजक भारतीय जीवन वीमा निगम द्वारा नियस तारीक के भीतर प्रीमियम का सन्याय करने में असफल रहता है, और पालिसी को व्यप्गत हो जाने दिया जाता है तो छूट रद्द की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संवाय में किए गए किशी व्यक्तिकम की दशा में, उन मृत सदस्यों के नाम निये वितियों या विधिक वारिसों को जो यदि यह छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के अंतर्गत होते, बीमा फायदों के मंदाय का उत्तरदायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. इस स्कीम के अभीन आने वाले किसी मदस्य की मृत्यु होने पर भारतीय जीवन बीमा निगम, बीमाकृक्ष राशि के हुकदार नाम निवेशिती/विभिक वारिसों को उस राशि का सन्दाय हत्परता से और प्रत्येक दशा में हार प्रकार से पूर्ण दावे की प्राप्तिः के एक भास के भीतर सुनिश्चित कारगा ।

[संख्या एस-35014(11)/82-एस एस . -2]

New Delhi, the 14th February, 1986

S.O. 835.—Whereas Messrs Praga Tools Limited, 6-6-8|32, Kavadigude, Secundrabad (AP|144) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of section 17 of the Employees' Provident Punds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act).

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution of payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (2A) of section 17 of the said Act and in continuation of the notification of the Government of India in the Ministry of Labour, S.O. 2713 dated 1-7-1982 and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a further period of three years with effect from 24-7-85 upto and inclusive of 23-7-1988.

#### SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Andhra Pradesh and maintain such accounts and Provide such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said act within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishments, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language or the majority of the emloyees.
- 5. Whereas, an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme he less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the leg-1 heir nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme; shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Andhra Pradesh and were any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportuity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to ray the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.

- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee or the Legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014/11/82-PF.II(SS.II)]

का. आ. 836 — मैंसर्स तमिलनाड स्टील लिमिटेड, अको नम, एन. ऐ. (टी. एन. /7531) (जिसे इसमें इसके पहचान उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविषय गिष्टि और प्रकीण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पहचान उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन छूट दिए जाने के लिए अधिन किया है:

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मसारी किसी एथक अभिदाय या प्रीमियम का संदाय किए विना ही, भारतीय जीवन वीमा निगम की जीवन वीमा स्कीम की सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन वीमा के रूप में जो फायदों उठा रहें हैं जो एसे कर्मचारियों को उन फायदों से अधिक अन्कूल हैं जो उन्हें कर्मचारियों को उन फायदों से अधिक अन्कूल हैं जो उन्हें कर्मचारी निक्षण महन्द्रभ बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन अनुजय हैं ;

अतः केन्द्रीय सरकार, उवत अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रवत्त शिक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के श्रम मंत्रालय की अधिस्थना सं. का. आ. 3717 तारीख 11-10-1982 के अनुसरण में और इससे उपाबद अग्सूची में विनिविष्ट शतों के अधीन रहने हुए, उक्त स्थापन को, 30-10-1985 से तीन दर्भ की अविध के लिए जिसमें 29-10-1988 भी सम्मिलित है, उक्म स्कीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन से छूट देती है।

#### अन्स्ची

- उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रादेशिक भविष्य निधि सायुक्त तमिलनाड को एसी विवरणियां भेजेगा और एसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी स्विधाएं प्रवान करेगा जो कोन्द्रिय सरकार, समय-समय पर निर्दिष्ट करें।
- 2. नियंज्ञ. एसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के अधीन समय-समय पर निर्विष्ट करें।
- 3. राम्हिक वीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अंतर्गत लेखाओं का रखा जाना, विवर्णणयों का प्रस्तृत किया जाना, बीगा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारों का मंदाय आदि भी है, होने वाले मभी व्ययों का वहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियातक. कोन्द्रीय सरकार द्वारा यथा अनुमोदित सामू-तिक बीमा स्क्रीम के नियमों की एक प्रति. और जब कभी उनमें संद्यांधन किया जाए, जब उस संद्याधन की प्रति तथा कर्मणरियों की सहसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का अनुबाद, स्थापन के सूचना पट्ट पर प्रवर्शित करेगा।

- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भिष्वय निधि का या जक्त अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भिष्वया निधि का पहले ही सबस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजिक, सामूहिक बीमा स्कीम के सबस्य के रूप में उसका नाम स्रन्त दर्ज करेगा और उसकी बाबत आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संदर्भ करेगा।
- 6. यदि सामृहिक दीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों की उपलब्ध फाददे बढ़ाए जाते हैं तो, नियोजक उदन स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समृचित रूप से वृद्धि की जाने की ब्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनकून हों जो उक्त स्कीम के अधीन अगजेय हैं।
- 7. सामूहिक बीमा स्कीम में किसी दात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्य पर इस स्कीम के अधीन मंदय रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दशा में संदेय होती जब वह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक वारिस/नामनिदेशिती को प्रतिकर के एए में दोनों रकसों के अन्तर के राराबर रकम का मंदाय करेगा।
- 8. सामृहिक बीमा स्कीम के उपबंधों में कोई भी संशोधन, प्रावेशिक भविषय निधि आयुक्त तिमलनाष्ट्र के पूर्व अनुसंदर के बिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संशोधन से उर्ण्यासियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो, वहां जावेशिक भविषय निधि आयुक्त, अपना अनुमोदन येने से पूर्व कर्मचारियों को अपना वृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तिय्हन अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवश, स्थापन के कर्मचारी, भाराीय जीवन बीमा निगम को उस सामृहिक बीमा स्क्रीम के. जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अधीन नहीं रह जाते है, या इस स्क्रीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने दाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, सो यह छूट रब्ब की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणविष्ः, नियांजिक भारतीय जीवन बीसा निगम द्वारा नियत तारील के भीतर प्रीस्थिम का सन्दाय करने में असफल रहता है, और पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो छुट रखुद की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए गए किसी क्यांतिकम की दशा में, उन मृत सदस्यों के नाम निर्देशितियों या विधिक बारिसों को जो यदि यह छूट न दी गई होती तो उक्स स्कीम के अंतर्गत होते, बीमा फायदों के मंदाय का उत्तरदायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. इस स्कीम के अभीन आन बाले किसी संदस्य की मृत्यू होने पर भारतीय जीवन बीमा निगम, भीमाकृत राशि के हकदार नाम निदाँशिती/विधिक बारिसों को उस राशि का मन्दाय तत्त्ररता से और प्रत्येक वशा में हर प्रकार से पूर्ण वाबे की प्राप्ति के एक सास के भीतर सनिश्चित करेगा ।

[संख्या एस-35014(36)/82-एस एस - 2]

S.O. 836.—Whereas Messrs Tamil Nadu Steel Limited Arkonam North Area-631004 (TN/7531) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act).

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution of payment of premium, in empoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Scheme of the Life Insurance Scheme of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (2A) of section 17 of the said Act and in continuation of the notification of the Government of India in the Ministry of Labour, S.O. 3717 dated 11-10-1982 and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a further period of three years with effect from 30-10-1985 upto and inclusive of 29-10-1988.

#### **SCHEDULE**

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Communissioner, Tamil Nadu and maintain such accounts and Provide such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said act within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borre by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishments, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language or the majority of the emlovees.
- 5. Whereas, an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be nayable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall ray the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme: shall be made without the mior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Tamil Nodu and were any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group. Insurance Scheme of the Life Insurance Cornoration of India as already adopted by the said establishment, or the henefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10 Where, for any reason, the employer fails to now the premium etc. within the due date as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the nolicy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.

- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said S heme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee or the Legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014/36/82-PF-H(SS.ID]

का. आ. 837. — मैसर्स श्री शिवाकामी मिन्स निमिटोड थेनूर, मदुराई जिला (टी. एन./1707) (जिसे इसमें इसके परचात् उकत सथापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य निध्य और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके परचात् उकत अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन छूट दिए उनने के लिए आबेदन किया है;

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उन्त स्थापन के कर्मचारी किसी पथक अभिदाय या प्रीमियम का संदाय किए जिसा ही, भारतीय जीवन बीमा की जीवन बीमा स्कीम की सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में जो फायदी उठा रहे हों और एसे कर्मचारियों के उन फायदों से अधिक अनुकृत हों जो कर्मचारी निश्चेष सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके परचात् उन्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्होंय हों ;

अतः के द्वीय सरकार, उक्त अधितियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रवत्त किक्तयों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के इस मंत्रालय की अधिस्चना सं. का. आ. 3149 तारीख 19-8-1982 के अनुसरण में और इससे उपायद्ध अगृस्ची में विनिविद्ध शर्मों के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को, 4-9-1985 से तीन वर्ष की अवधि के लिए जिसमें 3-9-1988 भी समिमलित है, उक्षम स्कीम के सभी उपवन्धों के प्रवर्तन से छूट देती है।

#### अनुसुची

- उदर स्थापन के संबंध में नियोजक आदेरिक भविष्य निष्धि आयुक्त हिमलनाडा को एोसी विवरणियां भेजेगा और एोसे लखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रवान करेगा ज कोन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निर्दिष्ट करने ।
- 2. नियाजक, एसे निरोक्षण प्रभागों का प्रत्येक मास की सम्पिए के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो के सीय सरकार, उनक अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के अधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करें।
- 3. सम्हिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अंतर्गत सेकाओं का रखा जाना, विवर्गणयों का प्रस्तत किया जाना, वीमा प्रीस्थिम का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभागें का संदाय आदि भी है, होने वाले सभी वश्यों का वहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. ियोज्क. कोन्तीय सरकार द्वारा यथा अनुमोदित साम्-विक बीमा स्कीम को नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें संबोधन किया जाए. जद उस संशोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मृख्य बातों का अनुवाद, स्थापन के सचना पटट पर प्रदर्शित करेगा ।

- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सबस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किस् जाता है तो, नियोजिक, सामृहिक बीमा स्कीम के सबस्य के रूप में उसका नाम तुरन्त दर्ज करेगा और उसकी बाबत आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संवन्त करेगा।
- 6. यदि साम्हिक लीगा स्कीम को अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जात हो तो, नियाजक उक्त स्कीम के अधीन कर्मचारियों के उपलब्ध फायदों में सम्चित रूप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामहिक सीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अन्कूत हों जो उक्त स्कीम के अधीन अन्कोय हैं।
- 7. सामृहिक बीमा स्कीम में किसी दात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीन संदेय रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस बक्षा में स्वेय होती जब वह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक वारिस/नामनिवेधिती को प्रतिकर के रूप में दोनों रकमों के अन्तर के राहबर रकम का संवाय करेगा।
- 8. साम्हिक बीमा स्कीम के उपबन्धों में कोई भी संशोधन, प्रादेशिक भविष्य निधि अयुक्त समिलनाइ के पूर्व अन्मोदन के विना नहीं किया आएगा और उहां किसी संशोधन से अर्म- आरियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो, वहां प्रादेशिक भविष्य निधि आयुक्त, अपना अनुमोदन बोने से पूर्व कर्मचारियों को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवश, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन वीमा निगम को उस सामृहिक बीमा स्क्रीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्क्रीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, हो यह छूट रव्य की जा सकती हैं।
- 10 यदि किसी कारणवश, नियोजक भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा नियत सारीख के भीतर प्रीम्यिम का सन्दाय करने में असफाल रहता है, और पालिसी को व्यपगत हो जागे दिया जता है ते छुट रदद की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा शीमियम के संवाद में किए गए किसी व्यक्तिकम की दशा में, उन मत सदस्यों के नाम निवेकितियों या विधिक कारिसों को जो यदि यह छूट र दी गई होती तो उक्त स्कीम के अंतर्गत होते, बीसा फायदों के संदाय का उत्तरदायित्व नियोजक एर होगा।
- 12 इस स्कीम के अधीन आने वाले किसी सदस्य की मृत्य होने पर भारतीय जीवन बीमा निगम, बीमाकृत राशि के हकदार नाम निद्वेंशिती/विधिक बारिसों को उस राशि का सन्दाय स्त्यरता से और प्रत्येक दक्षा में हर प्रकार से पूर्ण दावें की प्राप्ति के एक मास के भीतर सन्दिक्त करेगा ।

[संस्था एस-35014(44)/82-एस. एस.-2]

S.O. 837.—Whereas Messrs Sree Sivakami Mills Limited Thenur, Madurai Dist. (TN/1707) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act).

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution of payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (2A) of section 17 of the said Act and in continuation of the notification of the Government of India in the Ministry of Labour, S.O. 3149 dated 19-8-82 and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a further period of three years with effect from 4-9-1985 upto and inclusive of 3-9-1988.

#### **SCHEDULE**

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Tamil Nadu and maintain such accounts and Provide such facilities for inspection as the Control Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said a t within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be bor e by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishments, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language or the majority of the emloyees.
- 5. Whereas, an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and way necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more fevourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less han the amount that would be navable had employee been covered under the sid Scheme, the employer shall pay the difference to the legit hair/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme; shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Tamil Nodu and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Cornoration of India as already adopted by the said establishment, or the kentits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.

10. Where, for any reason, the comboyer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Lac Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.

- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee or the Legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim comin all respects.

[No. S. 35014[44]82-PF. II(SS. II)]

का. आ. 838. — मेंसर्स प्रूरलेटर इंडिया लिमिटेड, परवान्-173220 (एच.पी.) (पी.एन./4609) (जिसे इसमें इसके परवात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी सिरुय निधि और प्रकीण उपकंध अधिनियम, 1952 (1952 कि। 19) (जिसे इसमें इसके परवात् उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन छूट दिए जाने हो लिए अवेदन किया है;

और के द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उन्हें श्याप के कर्मचारी, किसी पथक अभिवास या प्रीमियम का संवास किए विना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की साम हिल्ल बीमा कर्जी के अभीन जीवन बीमा के रूप में आयद उठा रही हों वे एसे कि मंचारियों को जन फायतों से अधिक अनुकृत हों के एसे कार्मचारियों को जन फायतों से अधिक अनुकृत हों का कार्मचारी निक्षेप सहाबद्ध बीमा स्कोम 1976 (जिसे इसमें इसके परचात जावन स्कोम कहा गया हों) के अधीन जन्हों कन्हों कर्न हों हों ;

अतः के द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रवत्त शिक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के अस मंत्रालय की अधिसूचना सं. का. आ. 3544 सारीस 23-9-1982 के अनुसरण में और इससे उपाबद अगस की में विनिर्दिण्ट शतीं के अधीन रहने हुए, उक्त स्थापन को, 9-10-1985 से तीन वर्ष की अविध के लिए जिसमें 8-10-1988 के स्मिलित है, उन्हा स्कीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन से खूट देती है।

#### अवसूची

- उटह स्थापन के संबंध में नियोजक आवेदिक अधिया जिलि आयुक्त चण्डीवह को एमी विवरणियां भेजेगा और एमें लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सविधाएं प्रवास करेगा को कोर्लीय सरावार समय-सम्बंधिर निर्मिष्ट कारों।
- 2. नियंजक, एसे निरक्षिण प्रभागों का प्रस्थेक मास की सम्हित्त के 15 दिन के भीटर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की भारा 17 की उपभारा (१क) के एड (क) के अधीन समय-समय पर निर्विष्ट करें।
- 3. साम्हिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अंतर्भतः लेखाओं का रखा जाना, दिवरिणयों का प्रस्तत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरक्षिण प्रभारों का संदाय आदि भी है, होने वाले मभी क्ययों का बहन नियोजक द्वारा किया जाएगा ।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमौदित सामहिक कीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें संबोधन

किया जाए, तब उस संघोधन की प्रीत तथा कर्मचारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का अनुवाद, स्थापन के मुख्या बात हाट पर प्रविद्यात करेगा ।

- 5. यदि कोई ऐसा कमेंचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उदत अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का गहले ही सबस्य है, उसके स्थापन मो नियोजित दिया जाता है तो, नियोजिक, राभिह्क होमा स्कीम के सबस्य के सम्मी उसका गाम गरम्ह वर्ष करेगा और उसकी द्वार अवस्या प्रतिस्थम प्राप्तीय जीवन बीमा निरम को संबद्ध अर्था।
- 6. याद सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों बढ़ाए जाते हो तो, नियोजक उक्त स्कीम के कार्मचारियों ते उपलब्ध फायदों में समूचित रूप से बृद्धि की जाने की क्यवस्था करेगा जिससे कि कार्मचारियों के दिए समृद्धि वीमा स्कीम के अधीर उपलब्ध फायदे उस फायदों से अधिक अस्कार हों जो उदत स्कीम के अधीन अन्जैय हैं।
- .7. साम्हिक बीमा स्कीम में किसी शत के होने हुए शी, यदि किमी कर्मकारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीन संदेश रकम उस रक्तः से कम है जो कर्मकारी को उस दशा में स्देश होती जब यह उना स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक उम्मिनी के विधि ह वारिस/नामनिदेशिती को प्रतिकर के का मी दोगें रक्तों के अदृश के व्यवस्त सकाम का संदाय करोगा।
- त. राम्हिल कीमा स्कीम के उपब थों मी कोई भी संबोधन, प्राविद्धिक प्रियम निर्मिश आयुक्त चण्डीगढ़ के पूर्व अपूर्ण की बिना रही। किया प्राएमा और उसी किसी निर्मोधन में कमा-चारियों के हिन पर प्रतिकृत प्रभाव पढ़ने की सम्भावन हो, वह प्राविश्व भविष्य रिष्ट आसवत, अपना अप्योदन देने से पर किसी रिप्तों को अपना दृष्टिकोण पारट करने का यक्तिया प्रश्य देगा।
- 9. यदि किसी कारणवक्त, स्थापन के कर्मचारी, भारतिय जीवन नीमा निगम उस साम्हिक बीमा स्कीम की, जिसे स्थापत पहुले जाना चफा है अधीन नहीं रह जाते हैं, या दूस स्कीम के असीन कर्मचारियों को जान होने ब ले फायदे किसी रीति से करा हो जाने हैं, तो यह रहद की जा सकती हैं।
- (0) यदि किसी कारणबंध, नियाजक धारातीय जीवन दीमा निगम वृद्याय नियंत तारीच की भीतर प्रीमियम का सन्दाय कारण में अस्कान गड़ना है, और पालिमी को व्यवस्त हो जा। दिसा पत्त होता होट गढ़व की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के स्वायं में किए गए किशी क्यितिकम की दशा में, उन मृत सदस्यों के नाम निर्देशितियों या विधिक धारिमों को जो यदि यह छूट न दी गई होती तो उवस स्क्रीम के अंतर्गत होते, बीमा फायदों के संदाय का उन रवाधिक नियोजक पर होगा।
- 12. इस स्कीम के अशीन आने वाले किसी सदस्य की महत्र होने पर भारतीय जीवन शीमा निगम, बीमाकृत राजि के हुकदान नाम निदेवित/बिधिक बारिसों को उस राम्चि का मंद्राध इस्पराम में और प्रथेक दक्षा में हुर प्रकार से पूर्ण दावे की प्रान्ति है एक मोमाने भीतर सुनिद्दित करेगा।

[संख्या एय-35014(100)/82-एस . एस . -2]

S.O. 838.—Whereas Messrs Purolater India Limited Parwanco-173220 (H.P.|)-(PN|4689) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of section 17 of the Employees' Provident funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act).

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution of payment of prendum, in enjoyment of beneats under the Group Institute Scheme of the Life Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (neremafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (2A) of section 17 of the said Act and in communition of the notineation of the Government of India in the Ministry of Labour, S.O. 3544 dated 23-9-82 and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said scheme for a further period of three years with effect from 9-10-85 upto and inclusive of 8-10-1988.

#### SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Punjab, Chandigarh and maintain such accounts and provide such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said act within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishments, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language or the majority of the emloyees.
- 5. Whereas, an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately earol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the sid Scheme, the employer shall pay the difference to the legal hair/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme; shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner. Chardinarh and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the enviloyees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group. Insurance Scheme of the Life Insurance Cornolation of Insurance as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in anymanner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer falls to nav the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.

- 11. In case of default, if any made by the employer mayment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee or the Legal heirs of the deceased member entitled for it and many case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014/100/82-PF. II(SS,II)]

का. आ. 839.—मैंसर्स स्ट्रा प्रोडक्टस लिकिटोड नेहरू हाऊस-4, बहाद्रशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 (डो एल/2806) (जिसे इसमें इसके परचात् उक्त स्थापन कहा गया हैं) ने कर्मचारी भिष्ण निधि और प्रकीर्ण उपबन्ध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके परचात् उक्त अधिनियम कहा गया हैं) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन छूट विए जाने के लिए शाबेदन किया हैं;

सौर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उकत स्थापन के कर्मचारी किसी पृथक सिमवाय या प्रीमियम का सन्दाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की जीवन बीमा स्कीम को सामूहिक बीगा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के कप मीजों फायदी उठा रहे हैं जो एसे कर्मचारियों के उन फायदों से अधिक उनकूल ही जो उन्हों कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्होंय हीं;

जतः केन्द्रीय सरकार, उकत अधि यम क धारा 17 की उपभारा (2क) द्वारा प्रदल्त शिवितयों क प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के श्रम मंद्रालय की अधिसूचना संख्या का आ . 2947 तारीख 4-8-1982 के अनुसरण में और इससे उनावद अन्सूची में विनिधिष्ट शतीं के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को , 21-8-1985 से तीन वर्ष की अवधि के लिए जिसमें 20-8-88 भी सम्मितित है, उक्त स्कीम के सभी उपवन्धों के प्रवर्तन संस्ट देती है।

#### अनुसची

- 1. उक्त स्थापन के सम्बन्ध में नियोजन प्रादेशिक भिष्ठिय निधि आयुक्त दिल्ली को एसी दिवरिष्ट भेजेग और एमें लेखा रहेगा तथा निरक्षिण के लिए एसी सुविधाएं प्रदान करणा जो केन्द्रीय सरकार समय-समय पर निर्विष्ट कार्य।
- 2. नियोजक, एसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर सन्दाय करेगा जो कीन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उप-धारा (3क) के रूण्ड (क) के सभीन समयंसमय पर निर्दिष्ट करे।
- 3. सामृहिक बीमा स्कीम के श्रशासन में, जिसके अन्तरते लेंबाओं का रखा जाना, विवरणियों का प्रस्तृत किया जाना, बीमा प्रीमियम का सन्वाय, लेंबाओं का अन्तरण, निरीकण प्रभारों का सन्वाय आदि भी है, होने वाले सभी व्ययों का वहत नियोजक हारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, कोन्द्रीय सरकार द्वारा यथा अनुमोदित सामू-वीमा स्कीम के नियमों की प्रति, और जब कभी उनमें संशोधन किया आए जब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहु-संद्या की भाषा में उसकी मृद्य बातों का अनुवाद स्थापन के सुबना-पट्ट पर प्रदर्शित करिंगा ।

- 5. यदि कोई एसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनयम के अधीन छूट प्राप्त किशी स्थापन को भिष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो नियोजिक सामृहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तुरन्त दर्ज करेगा और उसकी बाबत आवश्यक ग्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को मन्दरा करेगा।
- 6. यदि साम्हिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाये जाते हैं तो, नियोजक उक्त स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में सम्चित क्या स बृद्धि की जाने की ब्यवस्था करेगा जिस से कि कर्मचारियों के लिए साम्हिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकूल हों, जो उक्त स्कीम के अधीन अनुज्ञेय हैं।
- 7. सामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किमी कर्मचारी की मृत्यू पर इस स्कोम के अधीन सन्देय रक्षम उस रक्षम से कम है जो कर्मचारी की उन दशा में संदेय ह ती जब वह उस्त स्कीम के अधीन होता तो नियोजक कर्मचारी हो। विधिक्ष बारिस/नामनिद्देशिती को प्रतिकार के रूप में केनों रक्षमों के अन्तर के बराबर रक्षम का सन्दाय करेगा।
- 8. साम्हिए बीगा स्कीम के उपक्रभों में कहें भी संबोधन, प्रादोकक भिवय निधि गायकत दिल्ली के पर्य ग्रामोदा के बिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संबोधन से कर्मचारियों के हित पर प्रितकूल प्रभाव पड़ने की संभावना हो वहां, प्रावेशिक भिवष्य निधि आयुक्त, अपना अनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को अपना वृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवर्श, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम को उस सामृहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अभीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अभीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले जायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रह्व की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणक्का, नियोजक भारतीय जीवन शीमा निगम द्वारा नियत तारीख की भीतर प्रीमियम का सन्दाय करने में असफाल राहाता हो, ओर पालिसी को व्यवस्थत हो जाते दिग्य जात। है तो सुट रहद की जा सकती है।
- 11. नियंजक द्वारा प्रीमियम के सन्वाय में किए एए किसी क्यातिकम की दशा में, उन मृत सदस्यों के नाम निर्वेशितियों या विभिन्न शारिसों को जो यदि यह, छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के अन्दर्गत होते, बीमा फायदों के सन्दाय का उत्तर-दायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. इस स्कीम के ग्रधीन आने बाले किसी सदस्य की मृत्य होने पर भारतीय जीवन बीमा निगम, बीमाकृत राशि के हकदार गाम निवेकिती/विधिक वारिसों को उस राशि का सन्दाय तत्परता से और प्रत्येक दशा में हर प्रकार से पूर्ण दावे की प्राप्ति के एक मास के भीतर सुनिश्चित करेगा।

[संख्या एस-35014(188)/82-एस . एस . -2]

S.O. 839.—Whereas Messrs Straw Products Ltd. Nehru House 4-Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi-10002 (DL/2806) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act).

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment

of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of the India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter reterred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (2A) of section 1/ of the said Act and in continuation of the nonlineation of the Government of India in the Ministry of Labour, S.O. 294/ dated 4-8-1982 and subject to the conditions specified in the Schedule annuxed hereto the Centr. I Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a further period of three years with effect from 21-8-1985 upto and inclusive of 28-8-88.

#### SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident rand Commissioner, Delhi and maintain such accounts and provide such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said act within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be bor e by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the istablishments, a copy of the rules of the Group Insurance scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features hereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas, an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an stablishment exempted under the said Act, is employed in its establishment, the employer shall immediately enrol him is a member of the Group Insurance Scheme and may necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance kelmen appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced so that the enefits available under the Group Insurance Scheme are nore favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Groun Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the sid Scheme, the employer stall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme; shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner. Delhi and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group. Insurance Scheme of the Life Insurance Cornotation of Insurance already adopted by the said establishment, or the herefits to the employees under this Scheme are tedered in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of

assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said S heme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.

12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee or the Legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim compile e in all respects.

[No. S-35014(189)/82-PF.II(SS,II)]

या. आ. 840.—मेंसर्स डॉ. मेरक्क (इविया) प्राइक्ट पिर्टिशंड. जिस रागर एएट्ट ''ए' उ. ए. ही. गेड साली सम्बर्ध - 400018 (एम एच / 4843) (जिसे इसमें इसके परचात् उक्त स्थापन कहा गया है) मे कर्म-चारी शिवच्य निधि और प्रकीण उपबन्ध अधिनियम, 1952 (1952 का 10) (जिसे इसमों इसके परचात् उक्त अधिनियम लाहा रया हो) जो धारा 17 की उपधारा (एक) के अधीर छाड़ दिए जाने के लिए जानेदन किया है;

और केदिय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कामी तरी किसी पथक विश्वाय या प्रीस्थिम का मंदाय किए जिसे तरी किसी पथक विश्वाय या प्रीस्थिम का मंदाय किए जिसे हो। जागरीय जीवन बीका बीमा कि जाय में उद्देश का स्थाप के काप में उद्देश का प्राथवा एक गही हों के एंटी कमिलारियों को उन करवाँ से अधिक अस्व जात को के जा की कमिलारी निक्ष्य महावया बीमा स्कीम. 1976 (जिसे जानों समझे प्रशास उन्तें स्कीम कहा गया हैं) के अधीर अनुकीर अ

अतः क्षेत्रीय सरकार, उका अधितयम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदल कवित्रयों का प्रयोग करते हुए और भारा सरकार के असा मंत्राचय की अधिक्चरा संख्या हुए. आ. १८०० गार्थिय १८-४०-४ प्राप्त के प्राप्त के हैं। इसमें उपायत करा-सूची मी विनिधियट कार्गों के अधीन रहा हुए, उका स्थापन को. १८-४१-८५ से होत वर्ष की प्रयोध के लिए जिसमें 26-11-88 भी सीमालित है, उक्त स्कीम के सभी उपसन्धों के प्रवर्ति में छूट देती है।

# अन्स्ची

- 1. उक्त स्थापन के सम्बन्ध में नियोजन प्रादेशिक भिष्ठथ निधि प्रायन्त व्यवद्यं को ऐसी विवयणियां भेजेगा और ऐसे होना प्रायंग निधा (प्राथिण के लिए एकी स्विधाएं प्रवान कारोगा जो के येय सरकार समय-समय पर निधिष्ट कारों।
- 2. निरोजिक, एसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर रन्दाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उद्या अधिनियम की धारा 17 की उप-धारा (3क) के खण्ड (क) के अधीन सम्योगमय पर निर्दिष्ट करे।
- 3. सामृहिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अन्तर्गत लेगाणों का रका जाता, विवरणियों का प्रस्तत किया जाता, बीमा प्रीमियम का सन्दाय, लेकाओं का अन्तरण, निरीक्षण प्रभारों का सन्दाय आदि भी है, होने वाले सभी व्ययों का बहन नियोजक हारा किया आएगा।
- 4. निग्नोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा शनमोवित सामहिक तीमा स्कृमि के नियमों की प्रति, और जब कभी उनमें संशोधक किया जपुण जब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मकारियों की गह-संख्या की भाषा में उसकी मख्य बातों का अनुवाद स्थापन के

- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी शिव क्या निध्य की अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भीचिया निध्य निध्य किसी स्थापन की भीचिया निध्य निध्य का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन मी नियोजित किया जाता है तो नियोजिक साम्हिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम त्रन्त वर्ज करेगा और उसकी बाबत आवश्यक प्रीमिणमा भारतीय जीवन बीमा निगम को सन्दत्त करेगा।
- 6. यदि साम्हिक शीमा स्कीम के अभीन कर्मचारित को उपसम्भ फायदे बढ़ाये जाते हैं तो, नियोजक जबत स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध प्रायदों मों सम्बित गां से बृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के चिम् साम्हिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदें ये अधिन उपलब्ध का कर्मचारियों है।
- 7. सामूहिक बीमा स्कीम मो किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीन सदेए एउस कम है जो कर्मचारी की उस दशा मों सन्धेय होती जब वह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोपक कर्मचारी के विधिक गरिस/नामनियोंकिती को प्रतिकर के रूप में दोनों रक्षमों के अन्तर के बरायर रक्तम का सदाय करेगा।
- 8. साम्हिक बीमा स्कीम के उन्हें भी मो कोई भी स्कोधन, प्रावे-शिक भविष्य निश्वि आगतन, समाई के पर्व अगमोवन के भिष्य नहीं किया जाएगा और जहां किसी संबोधन से कर्मचारियों के हिंग पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की संभावना हो वहां, प्रावेशिक भविष्य निश्वि आयुक्त, अपना अनुमोदन वेने से पूर्व कर्मचारियों को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवहा, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम को उस सामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अभीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अभीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रद्द की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवहा, नियोजक भारतीय जीवन शीमा निगम द्वारा नियत तारीस की भीतर प्रीमियम का सन्दाय करने में अस्पत्त रहता है, और पानिसी को यापगण हो जाने दिया जा। है तो छूट रहद की जा सकती है।
- 1! नियोजक हारा ही मियम के संवाय में किए गए किसी ज्यातिकम की वहां मों, उन मृत सबस्यों के गाम निवेशितियों या विधिक गरिसों को जो यदि यह, छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के अन्तर्गत होते, बीमा फायदों के सन्दाय का उत्तर-वारित्व नियोजक पर होगा।
- 12. इस स्कीम के श्रधीन जाने वाले किसी सदस्य की मृत्य होने पर भारतीय जीवन बीमा निगम, बीमाकृत राशि के हकदार नाम निवेशियां/विधिक वारिसों को उस राशि का स्न्दाय तत्परता से और प्रत्येक दशा में हर प्रकार से पूर्ण वावे की प्राप्ति के एक मास के भीतर सुनिश्चित करेगा।

[संस्था एस-35014(228)/82-एस. एस.-2/पी. एफ.-2]

S.O. 840.—Whereas Measrs. E. Merck (India) Private Limited Shiv Sagar Fstate 'A' Dr. A. B. Road. Worli, Bombav-400018. (MH|4843), (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under subsection (2A) of section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act).

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, the cfore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and in continuation of the notification of the Government of India in the Ministry of Labour, S.C. 3938 dated 8-11-82 and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a further period of three years with effect from 27-11-85 upto and inclusive of 26-11-1988.

#### **SCHEDULE**

- J. The employer in relation to the said establishment shall cubmit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Bombay and maintain such accounts and provide such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said act within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment a copy of the rule of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him is a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corjectation of India.
- 6 The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropirately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount parable under this scheme be less than the amount that would be parable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Croup Insurance Scheme; shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Bombay and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall be for a giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the remium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to large, the exemption is hable to be cancelled.
- It is ease at depants, if any made by the employer in revment of premium the responsibility for payment of issue, ne benefits to the nominees or the legal heirs of

dece ed by the who would have been covered under the staff Selectic but for grant of this exemption, shall be that if the employer.

12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Lite Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee or the Legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014/218/82-PF. II(SS. II)]

का. आ. 841: मैंसर्स उज्जवन निमिटेड, शशी विन्तियं, 4/18, अस्त अली रोड, नई दिल्ली-110002 (छी एए 3255) (जिसे इसमें इसके परचात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने फर्म-चारी स्विच्य निधि और प्रकीर्ण उपबन्ध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) जिसे इसमें इसके परचात् उक्त अधिनियम कहा गया है कि एका 17 की उप-धारा (2-क) के अबीर छूट दिए जाने की लिए आबेदन किया है;

अौर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी किसी पृथक अभिदाय या प्रीमियम का सन्दाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा स्कीम की सामृहिक बीमा स्कीम के ज्ञीन जीवन बीमा के क्ष्म में जो फायदा उठा रहे हैं वे ऐसे कर्मचारियों को उन फायबों से अधिक अनक्त हैं जो उन्हें कर्मचारी निक्षी सहय विमा स्कीम, 1976 (जिसे इसरों इसक पदचाता उक्त स्कीम कहा गया है) को अधीय अनुजेय हैं;

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनयम की भारा 17 की उपभारा (2क) द्वारा प्रदत्त कवितयों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के अम मंत्रालय की अधिस्त्रचना संख्या का. आ. 3345 तारीख 30-8-1982 के अनुसरण में और इससे उपायद अग-सूची में विनिधिद्द कार्नी के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को, 18-9-1985 से तीन वर्ष की अवधि के लिए जिसमें 17-9-1988 भी सिमानित है, उक्त स्कीम के सभी उपवन्धों की प्रवर्तन से छूट देती है।

# अन्स्ची

- उक्त स्थापन के सम्बन्ध में नियोजक प्रावेशिक भिष्य निधि आयुक्त, दिल्ली को ऐसी विवरणियां भेषेगा और ऐसे लेला रहोगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सविधाएं प्रदान करेगा जो कोदीय सरकार समयु-समय पर निर्विद्य करें।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक सम्भावी समाप्ति के 15 दिन के भीतर सन्ताय करेगा जो कीन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उप-धारा (3क) के खण्ड (क) के अधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करे।
- 3. सामृहिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना, विधरणियों का प्रस्तृत किया जाना, बीमा प्रीमियम का सन्वाय, लेखाओं का अन्तरण, निरीक्षण प्रभारों का सन्वाय बादि भी है, होने वाले सभी व्ययों का वहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा वनमोदित सामहिक तीमा स्क्रीय के नियमों की एक प्रति और जब कभी उनमें स्क्षीधन किया जाए जब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की गह-संख्या की भाषा में उसकी मख्य बातों का बन्याद स्थापन के स्चना-पट्ट पर प्रवर्धित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य

निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो नियोजिक सामृहिक बीमा स्कीम के सदस्य दो रूप में उसका गाम तूरन्त दर्ज करेगा जौर उसकी बाधक अत्रवरण प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को सन्दल्त करेगा ।

- 6. यदि सामूहिक बीमा स्कीम के अभीन कर्मकारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाये जाते हैं तो, नियोजक उक्त स्कीम के जधीन कर्मचारियों को उधलब्ध फायदों में स्पाहित का ने बढ़ि की जाने की व्यवस्था करेगा गिरुसे कि कर्मचारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के अभीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकृष हों, जो उक्त स्कीम के अधीन अनुभेष है।
- 7. सामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मणारी की मत्य पा इस स्कीम के अधीर करेण रक्तम एम रक्तम से कम है जो कर्मणारी को उस दशा में सन्देश होती जब वह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मणारी के कि कि व्यक्त सार्र सामित दोशिती को प्रतिकार के क्ष्य में दोनों रक्तमों के वक्तर के बरावर के बरावर रक्तम के वक्तर के बरावर रक्तम के संवास करेगा।
- 8. सामृहिक स्कीम के उपबन्धों में कोई भी संघोधन, प्रावेशिक अधिक्य निर्मा अध्यक्त, दिल्ली के पूर्व असमोवर के िता नहीं किया जाएगा और जहां किसी संघोधन से कर्मचारियों के हिल पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की संभावना हो वहां, प्रावेशिक भविष्य निधि आयुक्त, अपना अनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को अपना वृष्टिकोण स्पष्ट अरने का युक्तियुक्त अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवर्ष, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम को उस सामृहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अभीन महीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अभीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वासे फायवे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रदद की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवरा, नियोजक भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा नियश तारीख के भीतर प्रीमियम का सन्दाय करने में असफल रहता है, और गालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो छूट रद्द की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम को रांदाय में किए गए कियी व्यक्तिकम की वहा में, उन मृत सदस्यों को नाम निवेचितियों या विधिक वारिसों को जो यदि यह, छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम को अन्तर्गत होते, बीमा फायदों को सन्दाय का उत्तर-दायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. इस स्वीम के गंधीन आने वाले किसी संदर्ग की मत्य होने पर भारतीय जीवन बीमा निगम, बीमाकृत राशि के हकदार नाम निदेशिती/विधिक वारिसों को उस राशि का सन्दाय तरपरता से वौर प्रस्येक दशा में हर प्रकार से पूर्ण दावे की प्राप्ति के एक मास के भीतर सुनिश्चित करेगा।

[संस्था एस-35014(204)/82-एस . एस . -2 'पी . एफ . -2]

S.O. 841.—Whereas Messrs Ujiwal Limited. Shashi Redding. 4|18. Asaf Ali Road, New Delhi-110002, (DL| 3255), (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for evemption under sub-section (2.\)) of section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act. 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act).

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme):

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and in continuation of the notification of the Government of India in the Ministry of Labour, S.O. 3345 dated 30-8-1982 and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto the Central Government hereby exempts the said chables ment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a further period of three years with effect from 18-9-1985 upto and inclusive of 17-5-1988.

#### **SCHEDULE**

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Delhi and maintain such accounts and Provide such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said act within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer,
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment a copy of the rule of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately on of him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Grown Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme; thell be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner. Delhi and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to may the premium etc. within the due date. as fixed by the Life Insurance Cornoration of India, and the noticy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11 In case of default, if any made by the envelover in navment of greatum the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of

consisted members who would have been covered under the said. Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.

12. Upon the death of the members covered under the Stheme the life Insurance Corporation of India shall ensure prompt rayment of the sum assured to the nominee or the Legal heirs of the deceased rember entitled for it and in any case within one mouth from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014/204/82-PF-II/SS-II]

का .ा. 842. — मैंगर्स श्री प्रोडक्टस प्राईवेट लिमिटेड एच .ए. लिमिटेड, कम्पाउंड िण्मारी पूणे-411018 (एम. एच/7513) (जिसे इसमें इसके पहचात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कंग-चारी भविषय निधि और प्रकीण उपबन्ध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) जिसे इसमें इसके पहचात् उक्त अधिनियम कहा गया है कि घारा 17 की उपवारा (2क) के अधीन छूट दिए ताने हे लिए वाबेदन किया है ;

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उना स्थापन के कर्मचारी किमी पथका अभिदाय या प्रीमियम का संदाय किए दिना ही, भारतीय जीनन बीमा स्कीम की सामृहिक शीमा स्कीम के अधीन जीनन बीमा के रूप में जो फायदा उठा रहे हैं वे ऐसे कर्मधारियों को उन फायदों से अधिक अनकृत हैं जो उन्हें कर्मधारी निक्षेत महण्द्व बीमा स्कीम, 1976 (जिसे इसमें इसके परचाता उदल स्कीम कहा गया है) के अधीन अनक्षेत हैं;

कतः केन्द्रीय सरकार, उका अधिनयम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रवस्त किंतयों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के श्रम मंद्रालय की अधिस्वना सक्या का आ . 400 लागील 9-12-1982 के अगसरण में और इससे उणबद्ध अग्रस्ची में विनिर्विष्ट धनों के अधीन रहा हुए, उका स्थापन को , 15-1-1986 से तीय वर्ष की अवधि के लिए जिसमें 14-1-1989 भी समित्रीतत है, उन्त स्कीम के सभी उपवन्धों के प्रवर्तत से छूट वेती है ।

# अन्सची

- 1. उक्त स्थापन के सम्बन्ध में नियोजक प्रावेदिक भीतिष्य निधि आगुक्त पूर्ण को ऐसी विवरणियां योजेगा और ऐसे लेखा रक्ता निधा विदेशण के लिए ऐसी कविधाएं प्रदान करेगा जो केन्द्रीय संकार समय-सगर पर निधिद्य करे।
- ?. नियोज्ञ , ऐसे नियोक्षण प्रभारों का प्रत्येक स्वता की समाप्ति की 15 दिन की भीतार सन्दाय करेगा जो कीन्द्रीय सरकार . उकत अधिनियम की धारा 17 की उप-धारा (3%) की रूपड (क) के अधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करें।
- 3. सामृहिक बीसा स्कीम के प्रशासन गों, जिसके अन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना, विवरणियों का प्रस्तृत किया जाना, बीसा ग्रीमिनए का सन्दाय, लेखाओं का अन्तरण, निरीक्षण प्रभारों का सन्दाय आदि भी है, होने वाले सभी व्ययों का बहुन नियोगक हारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा नतमीवित सामहिक गीमा स्कीम के नियमों की एक प्रीय और जब कभी उनमें संबोधन किया आए जब उस संबोधन की ग्रीत तथा कर्मचारियों की गह-मंख्या की भाषा में उसकी मृख्य बातों का अनशद स्थापन के सूखना-पट्ट पर प्रदर्शित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उदल अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन का गविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया

जाता है तो जियोजक सामहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम गुरन्त दर्ग करेगा गौर उसकी बाबस आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को सन्दल करेगा ।

- .<del>----</del> - - . . <del>-----</del>- - - -

- 6. यदि मामृहिक श्रीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाये जाते हैं तो, नियोजक उक्त स्क्रीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समृचिन रूप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिस से कि कर्मचारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकूल हों, जो उक्त स्कीम के अधीन अनुज्ञेय हैं।
- 7. सामृहिक बीमा महीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यू पर इस स्क्रीम के अधीन मंदेय रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी की उस दशा में संदेय होती जब दह उक्त स्क्रीम के अधीन होता तो, नियोजक दर्भचारी के विधिक वारिस/नाम निदेशिती को प्रतिकर के रूप में दोनों रक्षमों क अन्तर के बराबर रकम का सन्दाय करेगा।
- 8. सामूहिक स्कीम के उपबन्धों में कोई भी संशोधन, प्रादेशिक भिष्टम निधि आयुक्त, पुणे के पूर्व अनुमोदन के बिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संशोधन से कर्मचारियों के हित पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना हो वहां, प्रादेशिक भविष्य निधि आयुक्त, अपना अनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवंश, स्थापन के कर्सघारी, भारतीय जीवन बीमा निगम को उस सामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फागदे किमी रीति में कम हो जाते हैं, तो यह छूट रहव की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवश, नियोजक भारतीय जीवन बीमा नियम द्वारा नियत तारीख के भीतर प्रीमियम का सन्दाय करने में असफल रहता है, और पालिमी को व्यपपन हो जाने दिया जाता हैं तो छूट रद्द की जा सकती है।
- 11. निरोजक हारा प्रीमियम के संवाय में किए गए किसी क्यतिक्रम की दहा में, उन मृत सदस्यों के नाम निदेशितयों या विधिक बारिमों को जो यदि यह, छूट न वी गई होती तो उक्त स्कीम के अन्तर्गत होते, बीमा फायवों के मन्दाय का उत्तर-वायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. इस स्कीम के अधीन आने वाले किसी सदस्य की मृत्यु होने पर भारतीय जीवन बीमा निगम, बीमाकृत राशि के हकदार नाम निदेशिकां/विधिक वारिसों को उस राशि का सन्दाय तत्परता से और प्रत्येक दशा में हर प्रकार से पूर्ण वावे की प्राप्ति के एक मास के भीतर स्निध्यत करेगा।

[संख्या एम:-35014(385)/82-एख. एस -2<sup>7</sup>पी. एफ.-2]

S.O. 842.—Whereas Messrs Shree Products (P) Limited H. A Limited. Compound Pimpri Punc-411018 (MH/7513), thereinafter rejected to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act)

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the rold establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the life Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinaster referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and in continuation of the notification of the Government of India in the Ministry of Labour, S.O. 400 dated 9-12-1982 and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a further period of three years with effect from 15-1-1986 unto and inclusive of 14-1-1989.

### SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner. Poona and maintain such accounts and Provide such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said act within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment a copy of the rule of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language or the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heirhominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insutance Scheme: shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner. Poona and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Groun Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the noticy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.

1565 GI185---15

- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the 1241 heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Cornoration of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee or the Legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014/285/82-PF. II (SS. IJ)]

का. आ. 843:—मैंसर्स फाइराग्नास पिनिकिंगटन निमिटेड, लाल बहायुर शास्त्री मार्ग, थाना-400602 (एम एप/7626) (जिसे इसमें इसके परचात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्म-धारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबन्ध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) जिसे इसमें इसके परचात् उक्त अधिनियम कहा गया है कि धारा 17 की उप-धारा (2-क) के अधीन छूट दिए जाने के लिए आवेदन किया है;

और केंद्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उका स्थापन के कर्मचारी किसी पृथका अभिदान या प्रीमियम का संदान किए किना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की जीवन बीमा स्कीम की साम्हिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप मी जो फायदा उठा रहे हैं वे ऐसे कर्मचारियों को उन फायदों से अधिक अराकून हैं जो उन्हें कर्मचारी निक्षेप सहब्द बीमा स्कीम, 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन अनुष्रेय हैं;

अतः केन्द्रीय सरकार, उका अधितियम की धारा 1. की उपधारा (2क) द्वारा प्रदत्त शिक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के श्रम मंत्रालय की अधिमूचना संख्या का आ. 4133 तारीख 22-1-82 के अन्सरण में और इससे उपाबद्ध शत्-सूची में विनिधिवष्ट शतों के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को, 11-12-1985 से तीन वर्ष की अविध के लिए जिसमें 10-12-88 भी सिमालित है, उक्त स्कीम के सभी उपवन्धों के प्रवर्तन में छूट देती है।

# अनुसुची

- 1. उक्त स्थापन के सम्बन्ध में नियोजक प्रादेशिक भित्रिष्य निधि आयुक्त बम्बई को ऐसी विवरणियां भेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी गृविवाएं प्रवान करेगा जो केन्द्रीय सरकार समय-गमय पर निर्दिष्ट करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की गमाजि के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उप-भारा (3क) के खण्ड (क) के अधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करे।
- 3. सामृहिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना, विवरणियों का प्रस्तृत किया जाना, बीमा शीमियम का सन्दाय, लेखाओं का अन्तरण, निरीक्षण प्रभारों का सन्दाय आदि भी है, होने वाले सभी क्यायों का वहन नियोगक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा अनमोदित सामहिक तीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति और जब कभी उनमें संबोधन किया जाए जब उस संबोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बह-संख्या की भाषा में उसकी मुख्य बानों का अनुवाद, स्थान के साचार-पट्ट पर प्रविति करेगा।

- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थानन की भविष्य निधि का गहले ही सबस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो नियोजिक सामूहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम त्रन्त दर्ज करेगा और उसकी बाबत आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को सन्दल करेगा।
- 6. यदि सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाये जाते हैं तो, नियोजक अकत स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समूचित रूप से बृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के निम् सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अभिक अन्कृत हों, जो उक्त स्कीम के अधीन अन्जेय हैं।
- 7. सामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्य गर इस स्कीम के अधीन संदेय रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दशा में संदेय होती जब वह उसत स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक वारिस/नाम निदेशिशी को प्रतिकर के रूप में दोनों रकमों के अस्तर के बराबर रकम का सन्दाय करेगा।
- 8. सामृहिक स्कीम के उपबन्धों में कोई भी संशोधन, प्रावेशिक भविच्य निधि आगुक्त, यम्बई के पूर्व अनुमोदन के जिला नहीं किया जाएगा और जहां कियी मंशोधन में कर्मचारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाय पड़ने की संभावना हो वहां, प्रावेशिक भविच्य निधि आयुक्त, अपना अनुमोदन दोने से पूर्व कर्मचारियों को अपना दृष्टिकाण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त अवसर दोगा।
- 9. यदि किसी कारणवश, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम को उस सामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अभीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अभीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फागवे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रदद की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवश, नियोजक भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा नियत तारीस के भीतर प्रीमियम का सन्धाय करने में असफल रहता है, और पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो छूट रव्द की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए गए किसी व्यितिकम की दशा में, उन मृत सदस्यों के नाम निदेशितियों या विधिक हारिसों को जो यदि यह, छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के अन्तर्गत होते, बीमा फायदों के सन्दाय का उत्तर-दायिख नियोजक पर होगा।
- 12. इस स्कीम के अधीन आने बाले किसी सबस्य की मृत्यु होने पर भारतीय जीवन बीमा निगम, बीमाकृत राशि के हकदार नाम निदें शिती/विधिक नारिसों को उस राशि का सन्वाय तत्परता से और प्रत्येक दशा में हर प्रकार से पूर्ण वाबे की प्रतिप के एक मास के भीतर स्निविध्यत करेगा।

[संख्या एस-35014(319)/82-एस . एस-2]

S.O. 843.—Whereas Messrs Fiberglass Pilkingten Limited I al Bahadur Shastri Marg Thana-400602 (MH|7626), (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of section 17 of the Fraplovecs' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), (hereinafter referred to as the said Act).

And whereas, the Centrar Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premiunt, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme. 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and in continuation of the notification of the Government of India in the Ministry of Labour, S.O. 4133 dated 22-11-82 and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a further period of three years with effect from 11-12-85 upto and inclusive of 10-12-1988.

### **SCHEDULE**

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Bombay and maintain such accounts and provide such facilities for inspection as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of section 17 of the said act within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment a copy of the rule of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme apprepriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme; shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Bombay and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.

11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.

== :=-

12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee or the Legal heirs of the deceased number entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014/319/82-PF. II(SS. J1)]

का. आ. 844: — फोन्द्रीय भरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्ग ए. एम. स्फीउल्हा एण्ड कम्पनी टेनरी-32, अमूर रोड रानीपत (एन. ए. कस्बा) तिमलनाड़ और इसका 12, बेपरी हाईरोड, पेरीआमेट, मद्रास-600003 स्थित प्रशासितक कार्यालय नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लाग किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदल्त शक्तियों का प्रयोग करते द्वुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागु करती है।

[संख्या एस-35019(116)/86-एस एस-2]

S.O. 844.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. A. M. Saflullah & Co. Tannery, 32, Ammoor Road, Ranipat (N.A.D.T.) Tamil Nadu including its Adm. Office at 12, Vepery High Road, Periamet Madras-600003 have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section I of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(116)/86-SS-II]

का. आ. 845.—केन्द्रीय सरकार को यह "तिल होता है कि मैंसर्स मिनकानंदनस एल आई इंडस्ट्रीयन इस्टेट, गृडी, मद्रास-32 नामक स्थाएन से सम्बद्ध निर्मोजक और कर्मणिरिओं की बहु-संख्या इस वात पर सहमत हो गई है कि कर्मणारी भविषय निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हूए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है ।

ं [संख्या एस-35019(117)/86-एस . -2]

S.O. 845.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Manikandans L.I. Industrial Fstate, Guindy, Madras-32 have agreed that the provisions of the Employees' Providnet Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(117)/86-SS-II]

का. आ. 846. केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैंसर्स बोलंटरी हेल्थ सर्विसस थान्जेबर यूनिट, थान्जेबर टैक्सटाईल केन्ट्रीन वालाम्बन रोड (बिल्डिंग) थान्जेंबर-613005 नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[संख्या एस-35919(118)/86-एस. एस-2]

S.O. 846.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Voluntry Health Services, Thanjavur unit Thanjavur Textile Canteen Vallam One Road (Building), Thanjavur-613005 have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellancous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(118)/86-SS-II]

का. आ. 847.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैनर्स एम.एच. मेहना एण्ड को., 1-ए(1) एन्सीपलायाम एक्सटेशन रोड तिरीपुर-638603, और इसका बम्बई स्थित प्रधान कार्यावय नामक स्थापन से सम्बद्ध निगोजक और कर्मचारियों की बहुमंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीण उपवंध अधिनयम, 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शिवतयों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनिया के उपबंध उक्त स्थापन को लाग करती है।

[संख्या एस-35019(120)/86-एस . एस-2]

S.O. 847.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. M. H. Mehta and Co. 1-A(I) Angeripalayam Extension Road Tiruppure 638603 including Head Office at Bombay have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(120)/86-SS-JJJ

का. जा. 848. — केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स होवर्ड फाईनले कन्सलटेन्ट्स (आई) प्राईवेट लिमिटेड, 95, वी. एम. स्ट्रीट मैलापूर मद्रास -600004, नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियो की बहुमंख्या इम बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लाग किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदक्त शिक्तयों का प्रयोग करने हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को काग धरकी है।

[संख्या एस-35019(151) / 36-एम . एस-2]

S.O. 848.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employes in relation to the establishment known as M's. Howard Finley Consultants (1) Private Limited, 95 V. M. Steet, Mylapore, Madras-600004 have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscell meons Provisions Act. 1952 (19 of 1952), should be usade applicable to the said establishment;

Now, theretore, in exercise of the powers conterred by sub-section (4) of Section I of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

[No. 5-35019(121)/86-SS-II]

क. आ., 849.—किन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैं. विको फार्मा, डी-25, इडम्ट्रीयल इस्टेट, दिहारगण्ड्टसम्न गमक स्थापन से मम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंस्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविषय निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

ं अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियभ के उपबंध उक्त स्थापन को लाग करती है।

[संख्या एस-35916/122] / 86-एस . एस-2]

S.O. 849.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Veco Pharma, D-25, Indl. Estate, Visakhapatnam-7 have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

[No. \$-35019(122)/86-\$\$-II]

का. आ. 850. — केन्द्रीय सरकार को वह प्रतीत होता है कि मैसर्ग दा गारशंकर प्राहमरी कोआएरेटिक लैंड प्रोटिंग वैक लिमिटेड, गारशंकर, पंजाब नामक स्थापन सं सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्षत स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रक्त किल्तयों का प्रयोग करने हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागु करती है।

[संख्या एस-35019(123)/86-एग. एस-2]

S.O. 850.—Whereas it appears to the Central Covernment that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messis The Garshankar Primary Co-operative Land Mortgage Bank Limited, Garshankar, Punab have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conterred by sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(123)/86-SS-II]

का. आ. 851.—कंन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता ह कि मैसर्स कोनार्क डीटरजन्ट एण्ड सोपस, जि. जग्यान् र. कटक (उड़ीसा) नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपवंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उवत स्थापन को लाग किए जाने चाहिए।

अत: केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदेश धानितयों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लाग करती है।

[संख्या एस-35019(124)/86-एम - एस-21

S.O. 851.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Konark Detergents and Sison Limited, lagatpur, Cuttack have agreed that the provisions of the Employes' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section I of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(124)/86-SS-II]

का. आ. 552. — केन्द्रीय सरकार की यह प्राीत होता है कि मैसर्स एग. एस. तियारी पी. ओ. जोड़ा-34 जि. क्योन्भः उड़ीया तामक स्थापन में रुम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहसत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को नाग किए जाने चाहिए।

अतः र्कन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 उपधारा-(4) द्वारा प्रदक्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लाग् करती है।

[संख्या एस-35013(125)/86-एस . एम-21

S.O. 852 --Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. S. S. Tiwari P.O. Joda-34, Dist. Keonjhai (Orissa) have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaeous Provisions Act. 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment,

[No. S-35019(125)/86-5S-II]

का. आ. 853. — केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स जी. एन. चौधरी एण्ड सन्स, पीन ओ. जोरा. जि. क्योन्फार (उड़ीसा) नामक स्थापन में सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस दात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीण उपबंध अधिनियम, 1962 (1952 का 19) के उपबन्ध उन्धर स्थापन को नाग किए जाने चाहिए।

अत: किन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 उपधारा-(±) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम को उपबंध उक्त स्थापन को लाग करती है।

[मंख्या एस-35011/126] 86-एस . एस-2]

S.O. 853.—Whereas it appears to the Central Covernment that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/S G, N. Chowdianty and Sons P/O. Ioda District Keonjiha (Orissa) have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscelameous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment:

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section I of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

INo. S-35019(126)/86-58-HJ

का. आ. 854. — फोन्दीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स आसाम पोलीटेक्स लिमिटिड, आर. जी. बहुना रोड गोहाटी-781005 नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मभारियों की बहुना थ्या पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रयोण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः र्कन्द्रीय सरकार, उक्त अभिनियम की धारा-1 उपधारा-(4) द्वारा प्रदक्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[संख्या एस-35019(137)/86-एम एस 2]

5.O. 854.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Assam Polytex Limited. R. G. Barnah Road, Gawabati-781005 have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscelfaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1932), should be made applicable to the said establishment.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(127)/86-SS-II]

का. आ. 855. — कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948 (1948 का 34) की धारा 1 की उपधारा (3) द्वारा प्रदल्त शिक्तयों का प्रयोग करते हुए कि उपधारा एवंद्रहारा 16 फरवरी, 1988 को उस तारीस के रूप में नियह करती हैं, जिसका उक्त अधिनियम के अध्याय 4 (धारा 44 और 45 के सिवाय जो पहले ही प्रधृत्त की जा चूकी हैं) और अध्याय 5 और 6 (धारा 76 की उपधारा (1) और धारा 77, 78, 79 और 81 के सिवाय जो पहले ही प्रवृत्त की जा च्की हैं) के उपबन्ध आन्ध्र प्रदेश राज्य के जिस्लित क्षेत्र में प्रवृत्त होंगे, अधीत :—

''अर्थिकादाद जिले के निर्मक राजस्य मदल के अधीन विकटापुर के राजस्य ग्राम के अन्तर्गत आने दाला क्षेत्र ।''

[संख्या एस-38013/3/86-एम . एरा**-**1]

S.O. 855.—In exercise of the powers conferred by subsection (3) of section 1 of the Employees' State Insurance Act, 1948 (34 of 1948), the Central Government hereby appoints the 16th day of February, 1986 as the date on which the provision, of Chapter IV (except sections 44 and 45 which have already been brought into force) and Chap-

eral ratio of and with the chiral magnetic

ters V and VI [except sub-section (1) of Section 76 and Sections 77, 78, 79 and 81 which have already been brought into force] of the said Act shall come into force in the following areas in the State of Andhra Pradesh namely:—

"The area within the tevenue village of Venkatapu, under Nirmal revenue mandal of Adilabad District."

INo. S-38013/3/86-SS-II

का. आ. 856. कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 (1948 का 34) की धारा १ की उपधारा (3) द्वारा प्रदत्त इ. दिल्लयों कः प्रशोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एनद्द्वारा 16 फरवरी, 1986 को उस तारीख के रूप में नियत करती है जिसकी उक्त अधिनियम के अध्याय 4 (धारा 44 के 45 के सिवाय जो पहले ही प्रवृत्त की जा चूकी है) और अध्याय 5 और 6 (धारा 76 की उपधारा (1) और धारा 77, 78, 79 और 81 के सिदाय जो पहले ही प्रवृत्त की जा चूकी है) के उपबन्ध कर्नाटक राज्य के निम्नलिखित कोत्र में प्रवृत्त होंगे, अर्थात् :—

''जिला बंगलीर के ताल्ल्क इंगलीर उत्तर में हुकली येला-हांका मी बयाटा-राशनाण्या राजस्व ग्राम ।''

[मंह्मा एम-38013/4/86-एम . एम-2]

S.O. 856.—In exercise of the powers conterted by subsection (3) of section 1 of the Employees' State Insurance Act, 1948 (34 of 1948), the Central Government hereby appoints the 16th February, 1986 as the date on which the provisions of Chapter IV (except sections 44 and 45 which have already been brought into force) and Chapters V and VI [except sub-section (1) of Section 76 and Sections 77, 78, 79 and 81 which have already been brought into force] of the said Act shall come into force in the following areas it, the State of Karnataka, namely:—

"Revenue village Byatarayanapura in Hobli Yelahanka, in Taluk Bangalore North in district Bangalore."

INo. S-38013/4/86-SS-II

अक्तिनियम बीमा का. आ. 857. --कर्मचारी राज्य 1948 (1948) का 34) की भारा : की उपभारा (3) द्वारा प्रदत्त छन्दोय सरकार एतदुद्वारा क किलयों का प्रयोग करते हुए फरबरी, 1986 के 16वें दिन को उस नारीख को रूप में नियन हैं, जिसको अधिनियस करती उक्रा रि.ट.स्य (धारा 44 और क पहले ही प्रवृत्त की जा चुकी है) और अध्याय 5 और 6 (धारा 76 की उपधारा (1) और धारा 77, 78, 79 और 81 के सिवाय जो पहले ही प्रवत्त की जा धकी है। के उपबन्ध हरियाणा राज्य के गिम्नलिखित क्षेत्र में प्रवृत्त होंगे, अर्थात् :-

क्रम संख्या स्थान का नाम हद बस्त संख्या

1.	गोतिन् <b>दप</b> ्रा	54
2 .	किञ्चपुरा	55
3.	पिण्डारा	72
4.	जलालप्रा स्द	14
5.	जिन्द	79

जिला जिन्द में ।

[संख्या एस-38013/5/86-एस:.एस.-1]

S.O. 857.—In exercise of the powers conferred by subsection (3) of section 1 of the Employees' State Insurance Act, 1948 (34 of 1948), the Central Government hereby appoints the 16th day of February, 1986 as the date on which the provisions of Chapter IV (except sections 44 and 45 which have already been brought into force) and Chapters V and VI [except sub-section (1) of Section 76 and Sections 77, 78, 79 and 81 which have already been brought into force] of the said Act shall come into torce in the following areas in the State of Haryana namely:—

SI. No.	Namme of the area	Head Bast No.
-1	7	3
1.	Gobindpura	54
2.	Kishanpura	55
3.	Pindara	72
4.	Jalalpura Khurd	14
5.	Jind	79

in the District Jind.

[No. S-38013/5/86-SS-I]

का. आ. 858 - कर्मबारी राज्य बीमा अधिनियम. 1948 (1948) का 34) की भारा । की उपधारा (3) द्वारा प्रदल्त शांबतयों का प्रधोग करते हए, संनद्रभेष संग्कार एतददारा फरवरी 1986 दिन तारीख के में नियत करती है, जिसकी उक्त अधिनियम की अध्याय 4 (धारा 44 और 45 के सिवाय जो पहले ही प्रवृत्त की जा चुकी हैं) और अध्याय 5 और 6 (धारा 76 की उपधारा (1) और धारा 77, 78, 79 और 81 के सिवाय पहले ही प्रवृत्स की आ ककी है) के उपबंध कर्नाटक राज्य के निम्नलिखित क्षेत्र में प्रवृत्त होंगे, अर्थाता :--

केन्द्र ट्रमकूर रोड के बाहरी क्षेत्र

कम राजस्य ग्राम संख्या	हुबनी:	न(लुक	সিলা
दासनापुरा     दासनापुरा     चिवकाबादाराजनस्य     मकाला ग्राम     बागालगुण्टा     मदवारा     दांदाबादाराकस्ल	दामनापुरा दासनापुरा दासनापुरा यसवस्तपुरा यसवस्तपुरा वामनापुरा वागनापुरा	नेलामंगला नेलामंगला नेलामंगला अंगलीर उत्तर नेलामंगला नेलामंगला	यंगलीर बंगलीर बंगलीर बंगलीर बंगलीर बंगलीर

[मंख्या एस-38013/2/86-एम.एस-1] ए.के भट्टराई, प्रवर मचिव

S.O. 858.—In exercise of the powers conferred by subsection (3) of section 1 of the Employees' State Insurance Act. 1948 (34 of 1948), the Central Government hereby appoints the 16th day of February, 1986 as the date on which the provisions of Chapter IV (except sections 44 and 45 which have already been brought into force) and Chapters V and VI (except sub-section (1) of section 76 and sections 77, 78, 79 and 81 which have already been brought

real management and a military

into force) of the said Act shall come into force in the following areas in the State of Karnataka, namely:--

Centro Si. Nine of the No revenue Village		Outskirts of	Tumkur Road	
		FI abli	Taluk	Distt.
1	2	3	4	5
1.	D is in para	D isinipura	Nolantungala	Bangalore
2.	Chikk ibida- rikallu	D isanapura	Nel mangala	Bangalore
₹,	Makali Village	D is intepura	Nel 'mang' la	Bangalore
4.	Big dg inti	Yeshwanta- pura	Banagalore North.	Bangalore
5,	M:davara	Dusanapura	Nelemangala	Bangalore
ń.	Dəddəbidəra- kəllu	Dasanapura	Nelomangala	Bungalore

[No. S - 38013/2/86-SS. II

का. मा. 859: भीसर्स हण्डियन एक्सप्रैस न्यूजिपेपर्स (बम्बर्ड) प्रा. लि., एक्सप्रेस टाबरस नारीमन प्वाइंट, बम्बर्ड 400021 (एम एन्/ 1195 (जिसे इसमें इसके पण्डान् उक्त स्थानपन कहा गया है) ने कर्में बारी भिलाय निधि भीर प्रक ण उपबंध मधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त अधिनियम कहा गया है) का मारा 17 की उपधारा (2क) के प्रधीन मूट दिए जाने के लिए धावेदन किया है ;

भीर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारो, किसी पृथंक अधिदाय या प्र मियम का संदाय किए बिना हो, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के छंधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं भीर ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से अधिक अनुकूल हैं जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध दीमा स्कीम, 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्कीम कहा गया है) के छंधीन उन्हें अनुजेय हैं:

श्रत: केन्द्रीय सरकार, उक्त श्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रवत्न शक्तियों का प्रयोग करने हुए और इसमे उपावख अनुसूची में विनिविध्द गर्तों के प्रधीन रहने हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की श्रवधि के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबक्षों के प्रवर्धन से छुट देती है।

### धन्स्ची

- 1. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रादेशिक श्रविष्य निधि भ्रायुक्त बम्बई की ऐसी विवरणियां भेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रवान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, लमय-समय पर निर्दिष्ट करें।
- 2. नियोजन, ऐसे निरीक्षण प्रभागे का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के अधीन समय-समय पर निविद्य करे।
- 3. सामूहिक बीमा स्कीम के प्रणासन में, जिसके अंतर्गत लेखाओं का रखा जाना, विवरणियों का प्रस्तृत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, निखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारों संदाय भादि भी है, होने वाले सभी ज्यायों का बहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।

4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा श्रनुमीदित स्थामृतिया व मा रक्त म के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें संशोधन किया जाए, तब उम संशोधन की प्रति तथा कर्सचारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी सृत्य अपने का श्रनुबाद, स्थापन के सुकना पट्ट पर प्रदिश्ति करेगा !

-a - , -

- 5. यदि कोई ऐसा कार्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उदल क्रिधिनियम के अक्षीन छूट प्राप्त किसी रथापन की भविष्य निधि का पहले हो सदस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजिक सामूहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उपका नाम नुरन्त दर्ज करेगा और उसकी बाबत ब्रावण्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संदत्त करेगा।
- 6. यदि उक्त स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध कायदे बढ़ायें जाते हैं तो, नियोजक शामूहिक बीमा स्कीम के अर्धात कर्मचारियों को उपलब्ध कायदों में गमुचित रूप में बृद्धि की जाते की व्यवस्था करेगा जिसने कि बर्मचारियों के लिए सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध कायवे उन कायदों से अधिक अनुकूष हों जो उक्त स्कीम के अधीन अनुजैय है।
- गः सामूहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीन मंदेय रक्षम उस रक्षम में कम है जो कर्मचारी को उस दणा में मंदेय होती जब वह उकत रकीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक वारिम/नाम निर्देशिती को प्रतिकर के रूप में दोनों रक्षमी के अन्तर के वरावर रक्षम का मंदाय करेगा।
- 8. मामूहिक वीमा स्काम के उपबंधों में काई भी संगोधन प्रावेशिक विद्या निधि भ्रायुक्त, बंबई के पूर्व अनुमोदन के र्याना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संगोधन से क्यांचारियों के हिस पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो, वहां प्रावेशिक भविष्य निधि श्रायुक्त अपना श्रनुसोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को श्रपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तिय्कृत प्रवसर देगा।
- 9. प्रदि किसी कारणवण, स्थापन के कर्मजारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अधीन कर्मकारियों की प्राप्त होने बाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते है. तो यह छूट रह की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवण, नियाजक उस नियत तारीख के भीतर जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का मंदाय करने में भ्रमकल पहुता है, और पालिसी को व्यवगत हो जाने दिया जाता है तो, छुट रहू की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रोसिथम के मंदाय में किए गए किसी व्यक्तिक की द्वारा में, उन मून सबस्यों के नाम निर्देशितियों या विधिक वारिमों को जो यदि यह छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के अंतर्गत होते, बीमा फायदों के मंदाय का उक्तरदायित्व नियीजक पर होगा ।
- 12. उक्त स्थापन के सम्बन्ध में नियोजक, इस स्काम के श्रधीन श्रामे काले किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उसने हकदार नाम निर्देशितियों/ विधिक वारिसों को बीमाहात रक्षम का संध्य तत्परता से और प्रत्येक दक्षा में गरनीय जीवन बीमा निगम से बीमाहात रक्षम प्राप्त होने के एक साम के भीतर सुनिध्यत करेगा ।

[सं. एस-35014 (5)/86-एस, एस-2]

S.O. 859.—Whereas Messts, Indian Express Newspapers (Bombay) Pvt. Ltd., Express Towers, Nariman Point, Bombay-400021 (MH|1195) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds & Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act):

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of Premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

#### SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Bombay maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges—as the Central—Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charge etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall desplay on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance more favourable to the employees than the benefits admissible under the said scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Bombay and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled

- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nomince legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014(5)186-SS-H]

का. भा. 860— मैंसर्ग गुजरात स्टेट को. भी. माकेटिंग फैडरेशन जि. सहकार भवन रिलिफ रोड, धहमवाबाद (जी जे $\sqrt{4833}$ ) (जिसे इसके पश्चात् उकत स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी जिल्म निश्चि और प्रकीण उपबंध भीधिनियम, 1952 (1952 दा 19) (जिसे इसके उसके पश्चात् उकत अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा ( $2\pi$ ) के धधीन छूट दिए जाने के लिए धार्यदन किया है;

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मकारी, किसी पृथक कि दाय या त्रीमियम का संदाय किए बिना ही, जारतीय जीवन बीमा निगम की सामूहिक बीमा स्कीम के प्रधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं और ऐसे कर्मकारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से प्रधिक अनुकृत हैं जो कर्मवारी निकीप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चान उक्त स्कीम बहा गया है) के प्रधीन उन्हें अनुकुष हैं ;

भ्रतः केन्द्रीय सरकार, उक्ष्त भ्रक्षितिश्रम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदक्त मक्तियों का प्रयोग करते हुए और इससे उपाबद्ध भ्रतुभूषों में विनिधिष्ट गतौं के भ्रश्चीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन याँ की अवधि के जिए उक्त स्त्रीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन में छूट देती हैं।

# श्रनुसूधी

- 1. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रादेशिक भविष्य निधि आयुक्त गुजरात, की ऐसी विवरणियां भेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी मुक्तिआए प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निविष्ट करें।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रकारों का प्रत्येंक माम की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाल करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त प्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के प्रधीन समय-समय पर्मनिविष्ट करें।
- 3. सामूहिक बीधा स्कीम के प्रणासन में, जिसके अंतर्गत लेखाओं का रखा जाना विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, नेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारों संदाय च्रानि भी है। होने बाने मधी व्यय कर बहुन नियोजक दारा किया जागेगा।
- 4 नियोचक, केट्रीय गरकार द्वारा धनुमोदिन गामृहिक त्रीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें मंगोधन किया जाए, नब उम मंगोधम की प्रति तथा कमेंचारियों की बहुमंद्या की गाया में उनकी मुख्य बानों का धनुवाद, स्थापन के सूचना पट्टू पर प्रवर्णित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कमधारी, जो कर्मचारी । जिय्य निधि का या उक्त श्रीधितयम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की सविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजिक, सामृद्धिक बीमा स्कीस के सदस्य के रूप में उसका नाम तुरस्त दर्ज बारेगा और उसकी बाबत आवण्यक प्रीमियम भारतीय जीवन तीमा निगम को संबन्त करेगा ।

- 6. यदि उक्त स्कीम के अधीन कर्मकारियों को उपलब्ध फायवे कहायें जाते हैं जो, नियोजक सामृहिक बीमा क्कीम के अधीन कर्मकारियों को उपलब्ध फायदों में समृज्जित रूप से बृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिसमें कि कर्मकारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायवों से अधिक अनुकूल हों जो उक्त स्कीम के अधीन अनुनेय हैं।
- 7. स(मृहिष बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यु पर इस स्कीम के अधीन बंदेय रक्षम उस रक्षम में कम है जो कर्मचारी क. उस दशा में संदेय होती अब वह उकत स्कीम के अधीन होता को, नियोजक धर्मचारी के विधिक बोरिस/नाम निर्देशिती को प्रतिकर के रूप में दोनों रक्षमों के अन्तर के बराबर रक्षम का संदाय करेगा।
- 8. सामूहिक जीमा स्कीम के उपबंधों में कोई भी समोधम, प्रादेणियः विद्या निधि आयुक्त गुजरात के पूर्व अनुमोदन के बीना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संशोधन से कर्मचारियों के हिन पर प्रतिकृष प्रभाव पड़ने की समावना हो, बहा प्रादेशिक विषय निधि आयुक्त, अपना अनुमोदन देने से पूर्व करने की प्रपना द्रिटकोण स्पष्ट करने का प्रक्रिय्यक्त अवसर देंगा।
- 9. यदि किसी कारणयग, स्थापन के कर्मचारी, ारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामूहिक बीमा स्कीम के जिसे स्थापन पहले अपना खुका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने बाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह रह् की जा सकती है।
- 10. यदि फिसी कारणवण, नियोजक उस नियत हारीख के भीतर, जो रितीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का सदाय करने में अभकल रहता है, और पोलिसी को व्ययगत हो जाने दिया जाता है तो, छट रह की जा सकती है।
- 1. निमोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए गए किसी व्यक्तिन क्रम की द्या में, उन मृत नदस्यों के नाम निर्देशिनियों या विधिक वारिगों को जो यदि यह छूट न दो गई होती हो उकत स्कीम के अंतर्गत होते, बीमा कायवीं के संदाय का उत्तरदायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के संबंध में नियंजिक, इस स्कीम के अधीन झाने आले किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उसके हकदार नाम निर्देशितियों/ विधिक धारिसों को जीमाकृत रकम का संबंध तत्वरता से और प्रत्येक दणा में कितीय जीवन बीमा नियम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के एक मास के भीतर सुनिध्चित करेगा।

[स. एस-35014 (6)/86-एस. एस-2]

S.O. 860.—Whereas Messrs Gujarat State Co-op, Mutkeling Federation Ltd., Sahakar Bhawan, Relief Road, Ahmedabad (GJ/4833) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Fund & Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of Premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto. 1565 GI/85—16

the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

#### SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Gujarat maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charge etc. shall be borne by the employer.
- 4 The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner Guiarat and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the emfloyees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Groun Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the horizontal contents to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for navment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members' who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.

12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014(6)/85-SS-II]

का. का. 861:—मैनर्स इण्डियन एक्पप्रेस न्यूज्येपर्स (बस्बई) प्रा. लि., 186 बी इण्डम्झीयल, एरिया चण्डीगड़—160002 (पी एन/4931) (जिसे इसमें इसके पण्डान् उद्यास्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य निश्चि और प्रकीर्ण उपबंध घष्टिनियस, 1952 (1952 का 19) (भिसे इसमें इसके पण्डान् उद्या इश्विनियस कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के घश्चीन छूट दिए जाने के लिए झाने न किया है;

और केन्द्रीय मरकार का ममाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मनारी, किसी पृथक सिश्याय या प्रीमियम का संदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की मास्तिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं और ऐसे कर्मनारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से प्रधिक धनुकूल हैं जो कर्मनारी नितेय सद्बद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पणवान् उक्त स्कीम कर्म ग्या है) के घवीन उन्हें धनुजेय हैं ;

धन: केन्द्रीय सरकार, उक्त घ्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रवक्त मक्तियों का प्रशोग करने हुए, और इससे उपाबढ़ धनुसूची में विनिद्धिट मर्नों के घ्रधीन रहने हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की धवधि के लिए। उक्त स्कीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन में छुट देती हैं।

## ग्रनमुधी

- 1. उक्त स्थापन के संबंध में निप्रोजक प्रविधिक भविष्य निधि प्रायुक्त चण्डीरक को ऐसी विवरणियां भजेगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा सथा निरीक्षण के लिए ऐसे सुविधाएं प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निर्दिष्ट करें।
- 2 नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मस की समान्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरफार, उक्त अधिनियम की भारा 17 की उपधारा (3 क) के खंड (क) के शर्धान समय-समय पर निर्दिश्य करें।
- 3 सामूहिक नीमा स्कीम के प्रणापन में, जिसके अंतर्गन लेखाओं का रखा जाना, विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, श्रीमा प्रीमियम का संवाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रतारों का संवाय धादिभी है, होने नाले प्रभी क्यों का जहन निरोक्षण द्वारा किया जाएगा।
- 4. तियोजक, केररीय सरकार द्वारा धनुमोदिन सामृहिक बीभा काँभ के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें संशोधन किया जाए, यब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुमंख्या की भाषा में उसकी क्या बातों पर का अनुवाद स्थापन के सूचना पड़ पर प्रविश्ति करेंगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कमैजारी, जो कमैजारी भिज्ञष्य निधि का या उक्त प्रधिनियम के प्रधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भिज्ञष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उनके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजिक, जामूहिक दीमा स्थाम के सदस्य के रूप में उसका नाम सुरन्त दर्ग करेगा और उपकी बातन धावश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीसा नियम को संदक्त करेगा
- 6 सदि उक्त स्कीम के सधीन कर्ननारियों को उफ्तब्ध फायदे बढ़ाये जाते हैं तो, नियोजक सामृहिक बीमा स्कीम के प्रधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायरों में ममृतिक का से वृद्धि की जाने को व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्नेवारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के प्रधीन उन्तरन

- फायदे उन फायदों से प्रधिक अनुकूष हों जो उनर क्कीन के अयोग अनुजेय है।
- 7. सामूहिक बीमा उस्तीम में किनी बात के होते हुए भी. यवि तिभी कर्मवारी की सृत्यू पर उस स्कीम के प्रधीत सदेग रक्तम उस रक्तम में कम है को कर्मवारी की उस देगा में संदेश होती का बर उक्त स्कीम के श्रधीन होता मों, नियोजक कर्मनारी के विधित्त सारिप/गाम निर्देशिती को प्रतिकर के क्य में दोनों रक्त्यों के प्रस्तर के बरावर रक्षम का मेंदाप करेगा।
- 8. सामृहिक बीमा स्कीम के उन्हों में कोई की समीका प्रदेशिक भिष्य निश्चि प्रायुक्त चण्डीगर के पूर्व प्रतृमीदन के बीना नहीं किया जाएगा और पहां किसी समीधन से कर्मचारियों के हिन पर प्रतिकृत प्रभाव पहने की सम्भावना हो, वहां प्रदेशिक भिवष्य विधि प्रायुक्त, प्रपता प्रनृमीवन देने ने पूर्व कर्मचारियों को प्रथना दृष्टिकोण स्पष्ट करने था मुक्तियुक्त प्रवस्त देगा ।
- 9. यदि किनी कारणवण, स्थापन के कर्नवारी, भारतीय जीवन यीमा निगम की उस सामृहिक वीमा स्कीम के जिने स्थापन पहले भ्रापना चुका है श्रधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के श्रधीत कर्मकारियों को प्राप्त होने बाने फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह रद्द की जा सफती है।
- 10. यदि किनी कारणवाण, नियोजक उस नियम तारीख के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का संशय करने में ग्रानकल रहना है, और पानिसी की प्ययान हो जाने विया जाता है तो, छूट रद् की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीनियम के सदाय में किए गए किसी व्यनिकम की दणा में, उन मृत सदस्यों के नाम निर्देशितियों या विधिक्त वास्तिों को जो बदि यह छुट न वी गई बुंकी तो उत्तर स्कीम के अंतर्श होते, बीमा फायदों के संदाय का उत्तरदायित्य नियोजक पर होगा।
- 12 उक्त स्थायत के सम्बन्ध में नियोजक, इस स्कीम के प्रधीन ध्राते वाले किसी सदस्य की मृत्यू होने पर उसके हक्ष्मर नाम निर्देशितियों/विधिक वारियों को बीमाकृत रक्षम का संदाय तारता से और अतक दशा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रक्षम प्राप्त होने के एक माम के जीतर प्रतिष्ठित करेगा।

[मं. एस -35014 (8)/86-एम एस- 2]

S.O. 861.—Whereas Messrs. Indian Express Newspapers (Bombay) Pvt. Ltd., 186-B Industrial Area, Chandigarh-160002 (PN/4931) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-rection (2A) of Section 17 of he Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act. 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

#### SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such retruns to the Regional Provdent Fund Commissioner. Chandigarh maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of subsection (3A) of Section 17 of the said Act. within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government, and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay ne essary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Chandigarh and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishmen do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any teason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S. 35014(8) /86-SS-II]

भा. आ. 86 :--मैं भर्स कि. एम. पी. राज्य सेतू निर्माण निगम जि., ई-5 महाबीर नगर, एरेन कालोनी) (भोषाल- 462016 (एम. पी. / 3439) (जिस इनमें इनके परचांत उक्त स्थापन कहा गया है) ने वासंचारी भविष्य निधि और रकीण उपबंध मधिनियम, 1952 (1952 भा 19) (जिसे इसमें इसके पश्चान उक्त मधिनियम कहा गया है) भी धारा 17 की उपधारा (24) के मधीन छूट दिए जाने के लिए भावेदन भिया है;

और फेन्द्रीय सरकार-का सनाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के प्रामंधारी, किसी पृथन श्रमिदाय या-प्रोभियम का सवाय किए बिना ही धारतीय जीवन बाना निन्न की सामृहिय बीमा स्कीम के ध्रवीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं और ऐसे धर्मचारियों के लिए फायदे उन फायदों से धनिक धर्मुकूल हैं जो वार्मचारी निक्षेप सहब्रह्म बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात उक्त स्कीम कहा गया है) के ध्रवीन उन्हें मनुबेय हैं;

श्रतः केन्द्रीय भएकार, उक्त क्षिधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदेश सक्तियों का प्रयोग करते हुए और इससे उपाबद्ध अनुसूची में विनिविष्ट सर्तों के क्षिन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की अथि के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन से छूट देती है।

# भनुसूची

- 1. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रावेशिक मविष्य निष्टि आयुक्त अध्य प्रवेश को ऐसी विवरणिया भेजेंगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रवान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, सभय-समय पर निर्विद्ध करें।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक भास की समान्ति के 15 विन के भीतर संवाय फरेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त भ्रधिनियम की धारा-17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के भ्रधीन सनय-समय पर निर्विष्ट करें।
- 3. मामूहिक बीभा कीम के प्रणासन में, जिसके अंतर्गत लेखाओं पा एखा, जाना, विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रीमियभ का संवाय, नेखाओं ना अंतरण, निरीक्षण प्रभारों का मंदाय आविभी है, होने वाले सभी व्ययों का वहन नियोजन द्वारों किया जाएगा।
- 4. नियोजक केन्द्रीय भरकार द्वारा धनुमोदित सामृहिक बीमा स्क.म के निगमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें संशोधन किया आए, तब उस संगोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसंक्या की भाषा में उसकी मुक्य बातों का धनुबाद, स्थापन के सूचना पट्ट पर प्रवर्शित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा क्षमेंकारी, जो क्षमेंकारी भविष्य निधि का या उक्त भाषितियम के भ्रष्टीन छूट प्राप्त क्षिसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो नियोजिक, नामूहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तुरस्त वर्ज करेगा और उत्तरी बायत भाषात्रक भ्रीभियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संदरन करेगा।
- 6. यवि उक्त स्कीम के धर्धीम शर्मेचारियों को उपसब्ध कायदे बढ़ाय जाते हैं तो, नियाजक सापृहित बीमा स्कीम के ध्रधीन क्षर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समुचित रूप मे बृद्धि की जाते की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के ध्रधीन उपसब्ध फायदे उन फायदों से ध्रधिन अनुकूल हों जो उक्त स्कीम के ध्रधीन ध्रमुकेय हैं।
- 7. सामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी नी मृत्यु पर इस स्कीम के प्रधीन संदेय रक्षम उस रक्षम से क्षम है जो प्रमंचारी को उस दक्षा में संदेय होती जब वह उक्त स्कीम के

स्रधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विश्विक वारित/नामनिर्देशिती को प्रतिकार के रूप में दोनों रक्षमों के सन्तर के बरावर रक्षम की संदाय करेगा।

- 8. सामूहिक बीमा स्कीम के उपबंधों में कोई भी संगोधन, प्रावेशिक भिविष्य निधि आयुक्त, मध्य प्रवेश के पूर्व अनुमोदन के बिना नहीं किया आएगा और जहां किसी संशोधन से कर्मचारियों के हित पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो, वहां प्रादेशिक भविष्य निधि आयुक्त, अपना अनुमोवन देने से पूर्व कर्मचारियों को अपना वृष्टिकोण स्पष्ट अरने का युक्तियुक्त अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवश, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामृहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है भ्रश्नीन मही रह जाते हैं, या इस स्कीम के भ्रष्टीन कर्मचारियों को प्राप्त होने बाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह रख्द की जा सकती है।
- 10. यदि जिसी कारणक्या, नियोजक उस नियत सारीख के भीतर जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का संदाय करने में भ्रम्भकल रहता है, और पालिसी को व्यवगत हो जाने दिया जाता है तो छुट रख्द की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में फिए गए किसी व्यक्तिकम की दमा में, उन मृत सदस्यों के माम निवेशितियों या विश्विक्ष वारिसों को जो यदि यह छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के अंतगत होते बीमा फायदों के संदाय का उस्तरदाधिस्व नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक, इस स्कीम के ध्रधीन धाने बाले किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उसके हक्षवार नाम निविधितियों | विधिक वारिसों को वीमाकृत रक्तम का संवाय तत्परता से और प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रक्तम प्राप्त होने के एक मास के भीतर सुनिध्वित करेगा।

[संख्या एस- 35014 (40) /86-एसएस-II]

S.O. 862.—Whereas Messis. The M.P. Rajya Setu Nirman Nigam Limited, E-5 Mahavir Nagar Area Colony Bhopal-462016 (M.P.) (MP|3439) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds & Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of Premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

### **SCHEDULE**

1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner: Madhya Pradesh, maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.

- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall desplay on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Madhya Pradesh and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

in in <del>de</del> transferier <del>de mari</del>n a factoria de la compa

का. आ. 863— कान्टीनेंटल औटो एनसीलर्रा लि., प्लोट तं. 29-30, सैक्टर-H इन्टर्स्ट्रीयल एरिया, परवानू (हिमाचल प्रदेश) (पी. एन. / 5908) (जिसे इसमें इसके पण्वात उक्त स्थापन कहा गया है) ते कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 को 19) (जिसे इसमें इसके पश्चात उक्त भविन्यम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन छूट विए जाने के लिए आवेदन किया है,

आर केन्द्रं।य सरकार का समोधान हो गया है कि उक्त स्थापन के क्रमंचारी, क्षिमी पृथक अभिवाय या प्रीमियम का संदाय किए बिना ही भारतीय जीवन बीमा निगम की सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा निगम की सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में फायवे उठा रहे है और ऐसे कर्मचारियों के लिए फायदे उन फायदों से अधिक अनुकूल है जो कर्मवारी निक्षेप गहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चान उक्त स्कीम कहा गया) के अधीन उन्हें अनुक्षेय हैं;

श्रतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम का घारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदत्न प्राक्तियों का प्रयोग करने हुए और इसमें उपाबद्ध श्रृतसूची में विनिर्दिष्ट पातौं के श्रधीन रहते हुए उक्त स्थापन को तीन वर्ष की श्रवधि के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन से छूट देनी हैं।

# प्रनुसूची

- उक्ष्ण स्थापन के संबंध में नियाजक प्रादेशिक भविष्य निधि प्रायुक्त कप्छीगढ़ को ऐसी निवरणियों सेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निविष्ट करें।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की सभाष्ति के 15 दिन के भीतर संदाय क्षरेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त श्राधनियम की धारा-17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के श्रधीन समय-सभय पर निर्दिश्ट करें।
- 3. सामूहिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अंतर्गत लेखाओं का रखा जाना, विवरणियों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारों का संदाय प्रावि भी है, होने वाले गुन्नी ब्ययों का बहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियाजक केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित सामूहिक बीमा रकीम के नियमों की एक प्रति, और अब अभी उनमें संगोधन किया आए. तब उस संगोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का अनुवाद, स्थापन के सूचना पट्ट पर प्रदक्षित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि को या उक्त अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन को भविष्य निधि की पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो नियोजिक, नामूहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसकी नाम तुरन्त दर्ज करेगा और उसकी बाबन कावश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संदर्त करेगा।
- 6. यदि उक्त स्काम के अधीन कर्मवारियों को उपलब्ध कायदे बढ़ाये जाने है तो, नियांजक सामूहिक बीमा स्काम के अधीन कर्मवारियों को उपलब्ध कायदों मे गमुजित रूप से बृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मवारियों के लिए भागृहिक बीमा स्काम के अधीन उपलब्ध कायदे उन कायदों मे अधिक अनुकूल हों जो उक्त स्काम के अधीन अधीन अनुकूल हों जो उक्त स्काम के अधीन अनुकूष है।
- 7. मामूहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीन संदेय रेकम उस रक्षम से कम है जो कर्मचारी को उस दशा में संदेय होती अब वह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक बारिस / नाम निर्देशिती को प्रतिकर के रूप में दोनों रक्षमों के बरतर के दराबर रक्षम का संदाय करेगा।

8. सामृहिक बीमा स्क्रीम के उपबंधों में कोई भी संशोधन, प्रावेणिक भवित्य निधि अप्रकृत, चण्डीगढ़ के पूर्व अनुभोदन के बिना नहीं िक या जाएगा और जहां किसी गंगोधन के कर्मचारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो, यहां प्रावेणिक भविष्य निधि यायुक्त, प्रपना अनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को अपना दुष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तसुब्त अवसर देशा।

- 9. यदि किसी कारणवश, स्थापन के अर्भकारी, भारतीय जीवन बीमा नगम की उस मामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अधीन नहीं रह जाते हैं, यह इस स्कीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति में कम हो जाने हैं तो यह रव्द की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवम, नियोजक उस नियन तारी का की भीतर जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करें, प्रीमियम का सवाय करने में असकल रहता है, ओर पालिसी को व्यवगत हो जाने विधा जाता है तो, छूट रह्द की जा सकती है।
- 11. नियोकक द्वारा प्रामियन के संदाय में किये भिसे किसी व्यक्तिकम का दशा में, उन मृत सदस्यों के नाम निर्देशितियों या विधिक वारिमों का जायदियाँ छूट न या गई होता तो उक्त स्काम के अंतर्गत होती, बामा फायदों के संवाय का उत्तरदायि व नियोजक पर होगा।
- 12. उका स्थापन के संस्वन्ध में नियोजक, इस स्काम के अधान आने वाले किसा सवस्थ का मृत्यु होने पर उसके हकदार नाम निर्वेशितियों/विधिक बारिसों को बीमाकृत रकम का संदाय जत्परता से और प्रत्येक दशा से भारतीय जावन बीमा निर्णय से बीमाकृत रकम शाप्त होने के एक मास के भोतर सुनिशिवात करेगा।

[संख्या एस०-35014( 52 )/86-एस० एस-2]

S.O. 863.—Whereas Messrs Continental Auto Ancillary Limited, Plot No. 29-30, Sector-II, Industrial Area, Parwanoo (Himachar Pradesh) (PN 75908) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the gaid Scheme for a period of three years.

# SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Chandigarh maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and,

as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.

- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Chandigarh and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner, shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014(52)/86-SS-II]

# नई विल्ला, 17 फरवरी, 1986

का. मा 864---भैसमं कर्सानका ट्रेडिंग लाली निवास मिल्डिंग, जी. टी. गोड, जलन्धर-144001 (पी. एन. / 5688) (जिसे इसमें इसके पण्यात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भिक्रप निधि भौर प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पण्यात् उक्त प्रधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अर्धन छट दिए जाने के लिए श्रावेदन किया है,

श्रीर केन्द्रं सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारः, किसं पृथक धिमदाय या प्रोमियम का संदाय किए विना हो धारलीय जावन बीमा निगम की गामूहिक बीमा स्कीम के घर्षान अधिक बन्म के रूप में कार्यदे उठा रहे हैं और ऐसे कर्मघारियों के लिए ये फायदे उन कायदों से घिक प्रमुक्त हैं जो कर्मघारी निकीप महस्तद बीमा स्कीम, 1976 जिसे दममें दसके पण्णाल उक्त स्कीम कहा गया है) के सर्घान उन्हें बनुष्ठेय हैं ,

प्रतः केन्द्रीय शरकार, उक्त स्वितिश्वम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदश्त मक्तियों का प्रयोग करने हुए भीर इससे उपासदा अनुमुखा में विनिधिष्ट मतौँ के धर्धान रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष का शवधि के निरम् उक्त स्कान के सभा उनवर्षों के प्रवर्ता से छूट देली है।

### रुनु**भ**ः

- । उक्त स्थापन के संबंध में नियोजिक प्रादेशिक भिक्षिप निद्धि प्रस्मुक्त, चण्डं शक् को ऐसी विवर्णधी भेजेना और ऐसे लिखा रखेना तथ निरक्षण के लिए ऐसा सृविक्षाएं प्रदान करेगा जो केन्द्रीय नएकार, सनस्य समय पर निदश्ट करें।
- 2. निर्माणक, ऐसे निरोक्षण प्रमारों का प्रत्येक मास का समाणि के 15 दिन के भानर मदाय करेगा जो केन्द्राय सरतार, उक्त शिक्षित्रम कः धारा 17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के श्रश्नोन समय-समय पर निर्दिष्ट करें।
- 3. सामूहिक बीमा स्कीम के प्रकारन में, जिसके अंतर्शन लेखाओं का एखा जाना, विजयणियों का प्रस्तुत किया जाना, विशेषाय प्रशिवस्य का संदाय लेखाओं का अंतरण, निरोक्षण प्रभारों का संदाय आदि भं. हैं, होने वाने सभी क्यमों का यहन नियोजक तारा किया जाएगा।
- 4 नियोशक, केन्द्रीय सरकार द्वारा धनुमोदित सामृहिक बोमा स्कोर के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उसमें संबोधन किया अ(ए, सर्व उस संबोधन की प्रति तथा कर्मवारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का धनुबाद स्थापन के मुखना पट्ट पर प्रविशत करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मकारः, जो कर्मकारः भविष्य निधि का य उक्त अधिमियन के अधिन छूट प्राप्त कियो स्थापन के। धविष्य निधि का पहले हा सदस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो नियोजिक, सामृष्टिक बीमा स्कीम के स्वस्य के रूप में उसका नाम गुरुर दर्ज करेगा और उसकी बाबन आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन यीम नियम की संदर्भ करेगा।
- 6 यदि उक्त स्काम के जवान कर्नवारियों को उरानध्य फाररे यहाये जाने हैं हो, नियोजक सामृद्धिक बीमा स्काम के अधीन कर्मवारियों को उपलब्ध फायदों में सन्चित रूप से वृद्धि की जाने की न्यास्या करेंगा जिससे कि कर्मवारियों के लिए सामृद्धिक बीमा स्काम के अधीन उपाध्य फायदे उन फायदों से शिविक अनुकृत हो जो उना स्काम के सबीन मन्-जैस है।
- 7. सामृहिक बीमा स्कीम में कियी वाल के होने हुए भी, यदि कियी कमैचारी की मृत्यु पर इस रकाम के अधीन संदेय रकम उस रकाम में कम है जो कमैचारी की उस दशा में सदेय होती अब बहु उक्त स्कीम के प्रजान होता ती, नियोचक काँचारी के विधिक वारिस / नाम निर्देशिती की प्रमिकर के क्या में दीनी रकमों के अन्तर के वसवर रकम का मंदाय करेगा।
- 8. सामूहिक वंश्मा महीम के उपबंधी में कोई भी पंगोधन, प्रावेशिक भिविष्य निधि भायुक्त, चण्डीगढ़ के पूर्व अनुभोवन के शीमा नहीं किया आएगा भीर जहीं किया संशोधन से कर्पविष्यों के हिन पर प्रतिकृष प्रभाव पड़ने का सम्भावना हो, वहां प्रावेशिक भविष्य निधि मायुक्त स्रपन अनुमोदन देने से पूर्व कर्मवारियों को भ्रपना वृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तिस्कृत अवनर देगा।
- 9. यदि किसा कारणवण, स्थापन के कर्तवारः, भारतीय जीवन बीसा निगम की उस सामृहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले मधना चुका है, अबीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अबीन कर्मचारियों की प्राप्त होने बाले फायदे किसी रीति से अस हो जाते हैं, तो यह छूट रद्द की जा सकती है।
- 10 यदि किसी कारणविश, नियोजक उस नियन तारीख के कीतर, जो भारतीय जीवन वीमा नियम नियत करे, प्रीमियम का संदाय करने में

श्वसफल रहता है, भीर पालिसा का अववाग हो आमे दिया अस्त है तो, ख्ट व्हूट की जा सकती है।

- 11. नियंजिक द्वारा प्रामियम के संदाय में किए गए किमा व्यक्तिकम कें वशा में, उन मृत्र सदस्यों के नाम निर्देशितियों या विधिक वार्षिमों को जो यदि यह छूट न दे: गई होता तो, उक्त क्काम के अवर्णत होते. वीमा फायदों के सवाय का उत्तरवायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उनते स्थापन के संस्थान्त में नियोजक, इस स्काम के श्रधान श्रांत थाणे कि । सदस्य का मृत्यु होने पर उसके हकदार नाम निर्देशिनियों / विविध था। रेभी की बामाकृत रक्तम का संदाय सत्यरता से श्रीर प्रत्येक दशा में भारत य अन्य बामा निवम से बंगाकृत रक्तम प्राप्त होने के एक मास के भारत सुनिध्वित करेगा।

[सब्बा एस- 35014 ( 49 ) /86 एस. एस-2]

\_ .-\_-

# New Delhi, the 17th February, 1986

S.O. 864.—Whereas Messrs Kasinka Trading Lally Niwas Building, G.T. Road, Jalandhar-144001 (PN/5688) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are knote favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme).

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

### SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner. Chandigarh, maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the sallent features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Composition of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are

more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.

- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount rapable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shalf pay the difference to the legal heir nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Chandigarh and where any amendment is likely to effect adversely the intersioner shall before giving his approval, give reasonable opportunity to the employee, to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Groop Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for gram of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under this Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs of the deceased members entitled for it and in any case within one month from receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014(49)/86-SS-III

का. श्रा. 865—मैसमं मी. श्रार श्रोलक एण्ड स्वस् (प्रा.) सिमिटेड, 426, इत्हर्ण्यल एरिपा "ए" लुधियाना—14:003 (पा. एन. / 259) (जिसे इसमें इसके पण्डान् उपन स्थापन कहा गण है) ने कर्मचार शिष्या निधि श्रीर प्रकार्ण उपयेध श्रीधनियम, 1952 (1952 ना 19) (जिसे इसमें इसके पण्डान उपन श्रीधनियम कहा गण है) के धारा 17 को अपथारा (अप) के श्राप्त श्रूट विष् जाते के जिल्लाचेदन किया है.

चीर केर्द्ध य सरकार का संगाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक शांगदाय या प्रांतियम का संदाय किए। जिना हा, भारत य ज वन बाभा निशम का सामृहिंग व मा स्काम के श्वान जावन वीमा के रूप में कार्य दे उठा रहे है चीर ऐंगे कर्मशियों के लिए कि फायदे उन फायदों से जाविक अगुष्यूल है जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध वीमार्काम, 1976 (जिसे इसमें इनके पण्यान् उक्त स्काम कहा गया है) के शबीन उन्हें अनुशेष हैं,

अतः केन्द्राय संस्थानः, उक्त प्रधिनियाः की धारा 7 की उपायाः (2क) द्वारा प्रदेश प्रशिवधी का प्रयान करते हुए प्रीर इत्या उपायद्व प्रमृत्यूची में विविद्धित क्यों के व्यक्षी राज्ये हुए, उक्त स्थापन की तीन वर्ष की श्रयति के निए उत्या रक्षान कि सभा उपायन्थीं के प्रवर्तेण से कृष्ट देती है।

### प्राप्तवी

1. जन्म स्थापन के मंत्र्य के नियोजक प्रारंशिक भनिष्य निविद्ध श्रायुक्त, प्रशास को ऐस जिन्द्रिक्शियों भेजेल श्रीर केले लेखा रखेला नथा निरक्षण के लिए ऐसी भृतिकाएं प्रवान करेला जी केन्द्रिक सरकार, समय-रामय पर निर्दिष्ट करें।

- 2. नियोशक, ऐसे निरोक्षण प्रधारों का प्रत्येक साम की सचारित के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त श्रधिनियम की धारा-17 की उपधारा (3क) के खड़ (क) के अर्धान समय-समय पर निरिष्ट करे।
- 3. सामूहिक वी.मा स्कम के प्रशासन में, जिसके अंतर्गैन लेखाओं का रखा जाना, विवरणियों ता प्रस्तुत किया जाना, बामा प्रोमियम का सक्षाय लेखाओं का अतरण, निर्दाक्षण प्रभारों का संदाय धादि भी है, होने वाले सभी व्ययो का बहन नियोजक कारा किया जाएना ।
- 4. नियोजक, केन्द्राय सरकार द्वारा ब्रनुमोदित सामृहिक बंभा स्काम के नियमी क एक प्रति, और जब कथा उनमें संगोधन किया जाए, तय उस संगोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बानों का ब्रमुबाद, स्थापन के सूचना पट्ट पर प्रदिणित करेगा।
- 5 यदि कोई ऐसा कर्मकारी, जो कर्मकारी भविष्य निधि का या उक्त प्रिक्षितियम के अर्थ न छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजिक, सामूहिक बेमा स्कीम के सदस्य के नग में उसका नाम नुस्त दर्ज करेगा और उसका बावत आयब्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बामा तिसम को सदस्य करेगा।
- 6. यदि उक्त रक्तिम के धाधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढाये नाते हैं तो, तियोजक सामृहिक बीमा स्क्रीम के अधीन कर्मचारियों की उपलब्ध फायदों में ममृचित बीमा रूप से वृद्धि को जाते की उपबच्धा फरेगा जिसमें कि कर्मचारियों के लिए सामृहिक बीमा स्क्रीम के अधीन उपलब्ध फायदे उस फायदों से घाधिक अनुकृष हो जो उक्त क्कीम के धाधीन अनुकृष हो हो हो हमन के धाधीन अनुकृष हो हो हो हमन क्कीम के धाधीन अनुकृष हो हो हमन क्कीम के धाधीन अनुकृष हो हो हमन के धाधीन अनुकृष हो हमन के धाधीन अनुकृष्ण हमन अनुकृष्ण हो हमन के धाधीन अनुकृष्ण हमन अ
- 7 सामृहित वीमा स्वीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मवारी की मृत्यू पर इस स्काम के ब्रधीन संदेय रक्तम उस रक्तम के कम है जो कर्मवारी की उस दला में सदेय होती जब वह उक्त स्कीम के ब्रधान होता तो, नियोजक कर्मवारी के विधिक वारिस / नाम निर्देणिन को प्रतिकर के रूप में दोनों रक्तमों के ब्रस्तर के बराबर रक्तम का संदाय करेगा।
- 8. साम्हिल बीमा स्कीम के उपबंधों में कोई भी संशोधन प्रादेणिक मिलिया निधि आयुक्त, पंत्राब के पूर्व प्रामोदन के जिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संशोधन से कमें शिरपों के हिन पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो, वहां प्रायेणिक सविष्य निधि आयुक्त, अपना अनुसीवन वेजे से पूर्व कर्मवारियों की अपना वृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तिस्मुक्त अवसर देगा।
- 9 यदि किसी कारणवण, स्थापन के कर्मजारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस साम्हिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अधीन कर्मजारियों की प्रापत होने बाले फायदे किसी रोधि में कम की जाने हैं, तो यह छूट रद्द की जा सकती है।
- 10 यदि किसः कारणवश, नियोजक उस निया नारांख के भं तर, जो भारत य जोवत बामा नियम नियत करे, प्रमियन का संदाय करों में प्रसक्त रहता है, घीर पालिसः को व्यवसन हो जाने दिया जाता है तो, छूट रद्द को जा सकतें है।
- ा नियोज क हारा प्रोमियम के संदाय में किए गए किस: व्यक्तिकम क. दशा में, उन मृत सदरयों के नाम निर्देणितियों याविधिक वारियों की जो यदि यह छूट न दो सई होती तो उक्त स्काम के श्रेतीन होते, बोमा कायदों के सदाय का उत्तरदायित्व नियोजक पर होगा।
- 1.2. उक्त स्थापन के संबंध में नियाजक, इस स्कंम के अर्धान जान बाले किसी सदस्य की मृत्यू होने पर उसके हकवार निर्देशितियों /

विधिक बारिसों को बीमाकृत रकम का संदाय तत्परता से भीर प्रस्थेक दणा में भारतीय जीवन बीमा निगम से कीमाकृत रकम पाटन होने के एक मास के भीतर सुनिध्चित करेगा।

[संख्या एस-35014 (50) /86 एस्.-एस-3]

S.O. 865.—Wheeras Messrs C. R. Auluck & Sons (P) Itd., 426, Industrial Area 'A' Ludhiana-141003 (PN/259) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act. 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme. 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme):

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

### **SCHEDULE**

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner. Punjab maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the fegal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of

the Regional Provident Fund Commissioner, Punjab and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.

- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as afready adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the compton shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the oremfum etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Comporation of India, and the policy is allowed to page the events ion is liable to be cancelled.
- 11 In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014(50) /86-SS-II]

का. था (366'--मैगर्स दी ऐन्टीफरीक्सन कीं, परिश्म नार्पिश्म कि., पंडिए अवाहर काल नेहरू मार्ग, लोनाक्ला (महाराष्ट्र) एम.एच./ (4810) (थिए इन्सें इनके पश्चात् उपत स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य दिशि और प्रकीर्ण उपबंध घितियम, 1952 (1952 का 19) िते इसमें इसके पश्चात् उक्त पश्चितियम कहा गया है) की धारा 17 की इसकारा (११६) के घधीन छूट दिये काने के लिए धावेदन किया है;

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक श्रमिताय या श्रीमियम का सदाय किये यिना ही भागमिय जीवन बीमा निगम की सामृद्धिक बीमा स्क्रीम के श्रश्रीन जीवन गीमा के लग में फायदे उठा रहे है और ऐसे कर्मचारियों के लिए थे फायदे उन कायदों में प्रशिक्त श्रमुक्त हैं जो कर्मचारी निक्षेप महबद्ध बीमा स्क्रीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चाम् उक्त स्क्रीम कहा गया है) के श्रधीन उन्हें श्रमुक्रेय हैं ;

श्रप्तः केन्द्रीय सरकार, उक्षम प्रधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदल्त गिक्सों का प्रयोग करने हुए और इससे उपाधन्न प्रमुक्त में श्रितिबिट शर्ती के प्रधीन रहने, हुए, उक्ष्त स्थापन को तीन वर्ष की प्रविध के लिए उक्षा स्कीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन में छट देती है।

# यनमुची

- 1 उक्त स्थापन के लंबंघ में नियोजक उप प्रावेशिक भविष्य निवि प्रायुक्त पूना को ऐसी विवरणियां भेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा संवा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रवान करेगा जो भेल्ब्रीय सरकार, समय-समय पर विनिविष्ट करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाप करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-17 की उन्धारा (उक्त) के खंड (क) के श्रक्षीन समय-समय पर निविष्ट करें।
- 3 सामृहिता वीमा स्कीम के प्रणासन में, जिपके अंतर्गत सेखाओं का प्रसा ज्ञाना विवर्णियों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय. लेखाओं जा आरण, निरीक्षण प्रभारों सेदाय पादि मी है, होने वाले सभी कार्यों का बहुत नियोजक द्वारा किया जाएगा।

- 4. नियांश्रक, केन्द्रीय सरकार द्वारा धनुनोदिन सामृहिक नीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और जब कमी उनमें संशोधन किया जाए, नब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों था अनुवाद, स्थापन के सुवना पहुट पर प्रदक्षित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्म तारी, जो कर्नवारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनियम के अधीन छुट भाग किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य हैं, उसके स्थापन में नियोधि । किया आता है, तो नियोजक, सामृहिक सीमा स्कीम के सदस्य के क्य में उनका नाम तुरुश दर्ज करेगा और उसके बाबत आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगमको पंदन्त करेगा।
- 6 यदि उक्त स्कीम के पर्धान कर्मनारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाये कार्ने हैं तो, नियोधक सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मनारियों को उपलब्ध फायदों में समृतिन रूप से वृद्धि को जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मनारियों के लिये सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदें उन फायदों से पांधक अनुसूत हों तो उक्त स्कीम के अधीन अनुस्के हों तो उक्त स्कीम के अधीन अनुस्के हैं।
- 7. सामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मणारी की मृत्यू पर इत स्कीम के अधीन संदेय रक्तम उस रक्तम से कम है जो कर्मपारी को उस दणा में संदेय होती जब वह उक्त स्कीम के अधीत होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक चारिय/नाम निर्देणकी की प्रतिकर के स्था में दोनों रक्षमों के अंतर के बराबर रक्तम का संवाद करेगा।
- 8. सामूहिक बीमा स्कीम के उपबंधों में कोई भी संगोधन उप प्रादेशिक भिष्य निधि प्रायुक्त पुना के पूर्व प्रतृमोदन के धिना नहीं किया जाएगा और जहां किमी संशोधन से कर्मचारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव पढ़ने की संभावना हो, वहां प्रादेशिक भविष्य निधि यायुक्त, जवना प्रतृम्मोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को प्रपत्ता दृष्टिक्कीण स्वष्ट करने हा युक्तिम्मयुक्त अवसर देगा।
- 9. प्रदिक्तिंसी कारणवण, स्थापन के कर्यवारी, भारतीय जीवन दीमा निगम की उन सामूहिक बीमा स्कीम के, जिने स्थापन पड़ले प्रवता चुका है प्रधीन नहीं रहे जाते है, या दा स्कीत के अधीन कर्यवारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाने हैं तो यह रह की जा सकती है।
- 10. यदि कमी कारणपण नियोजक उस नियम नारीख के भीतर जो भारतीय जीवन बीमा नियम नियम करे, प्रीनियन का मंद्राय करने वं समफल रहता है, और पालिसी को व्यवसात हो जाने दिया जाना है तो, छट रहे की जा सकती है।
- 11. नियोक्तक क्षारा प्रीमियम के संदाय में किए गए किसी व्यक्तिका की दक्ता में, उन मृत सदस्यों के लाम निर्देशितियों या विभिन्न वास्तिमें का जो यदि यह छूट न दी गई होती तो उक्त स्काम के आंगेन होते, बीमा फायबों के संदाय का उत्तरस्वाधित्य नियोक्षक पर होता।
- 12. उक्षम स्थापन के संबंध में नियोजक इस स्कीम के प्रधीत न धाने वाले किसी नदस्य की सृत्यू होने पर उसके हकतार नाम निर्देशितियो/विधिक वारिसों को बीमाकुर रक्षम का संवाय तथ्यरता में और और प्रत्येक दशा से भारतीय जीवन बीमा नियम से बीमाकृत रक्षम प्राप्त होने के एक साम के संतर सुनिश्चिक करेगा।

(संख्या: एस-35014 ( I5)/86- एस. एस-2)

S.O. 866.—Whereas Messrs. The Antifriction Bearinge Corpn. Ltd., Pandit Jawahar Lal Nehru Marg. Lonayla-410401 (Maharashtra) (MH/4810) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment

of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

#### SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Pune maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the sald Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay ne essary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available to the employees under the officer are enhanced, and that the benefits available to the employees than the centers aumissione under the said sentence.
- 7. Notwithstanding anything contained in the proup insurance scheme, if on the death of an employee the amount payable under this scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said scheme, the employer shan pay the unference to the tegal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance scheme, shall be made without the prior approval of the Ly. Regional Provident Fund Commissionel, rune and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his aproval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is hable to be cancelled.
  - 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased

members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.

12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014(51)/86-SS-II]

का. था. 867 .— मैसर्स कौणल स्टील रोलिय मिल्स सलोहश्र रोडमण्डी गोविन्दगढ़ (पी. एन. /3116) (जिसे इसमें इसके पश्चात उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध श्रिधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चात उक्त श्रिधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उाधारा (2क) के सबीत खूड़ दिये जाने के लिए श्रिवेदन किया है;

और केन्द्रीय सरकार का ममाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक अभिदाय या प्रीमियम का संवाय किये बिना ही भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के कप में फायदे उठा रहे हैं और ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से अधिक अनुकूल हैं जो कर्मच में निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे असमें इसके पश्यात उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अनुक्षेय हैं —

भागः केन्द्रीय गरकार, उनक्त श्रिष्ठित्यम की धारा 17 की उपधारा (2क) ब्रारा प्रदक्त मिनत्यों का प्रयोग करने हुए और इससे उपानब भानुसूची में विनिद्धिट मार्तों के प्रधीन रहने हुए, उनक्त स्थापन को तीन वर्ष की अविधि के लिए उक्त स्कीम के सभी उपवन्धों के प्रवर्तन से छूट देती है।

#### ग्रनमुची

- उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रावेशिक मिल्य निधि प्रायुक्त, चण्डीगढ़ को ऐसी विधारणियां भेजेगा,और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार समय-समय पर निर्विष्ट करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रस्वेक माम की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा भी केन्द्रीय सरकार, उक्त प्रधिनियम की धारा-17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के बधीन समय-समा पर निरिष्ट करें।
- 3. सामूहिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अंतर्रत लेखाओं का रखा जाना, विवर्णणयों का प्रस्तुत किया जाना, बीमा प्रीमिणम को संवाय, सेखाओं का अंतरण, निर्शक्षण प्रभारीं का संवाय प्रादि भी है, होने वाले सभी क्यायों का बहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा यनुगोदित सामूहिक बीमा स्कीम के नियाों को एक प्रति, औरजब कक्ष, जनमें संबोधन किया आएं, एव उस संबोधन क प्रति तथा कर्मकारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बालों का प्रनुवाद स्थापन के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित करेगा।
- 5. यवि कांई ऐस. कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्ष प्रधिनियम के प्रधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की मविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियोद्धिक किया जाता है तो, नियोजक, सामूहिक बीम. स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तुरन्त वर्ज करेगा और उसकी बाबन प्राथण्यक प्रीमियम भारतीय नीवन बीमा निगम को संदेश करेगा।
- 6 यदि उक्त स्कीम के प्रधीन कर्मवारियों को उपलब्ध फायदे बढाए जाते हैं तो, नियोजक सामृहिरु वीत्मः महीम के सधीन कर्मवारियों को उपलब्ध फायदी में समुचित रूप से बृद्धि की जाने का व्यवस्था करेगा

जिससे कि कर्मकारियों के लिए सामूहिक बीमा स्कीम के श्रधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से श्रधिक अनुकूल हों जो उक्त स्कीम के श्रधीन अनु-जेम हैं।

- 7. सामूहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मवारी की मृत्यू पर इस स्कीम के प्रधीन संदेय रक्षम जम रक्षम में कम है जो कर्मवारी को उस दणा में संदेय होती जब वह उक्त स्कीम के प्रधीन होता तो, नियोजक कर्मवारी के विधिक वारिस/न(म निर्वेशिती को प्रतिकर के रूप में दोतों रक्षमों के अंतर के वराबर रक्षम का संवाय करेगा।
- 8. सामृहिक बीमा स्नीम के उपबंधों में कोई भी संशोधन, प्रादेशिक भिविष्य निधि भायुक्त चण्डीगढ़ के पूर्व अनुमोदन के बिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संशोधन में कर्मचारियों के हित पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना हो, यहां प्रादेशिक भिविष्य निधि भ्रायुक्त, श्रपना भ्रमुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को भ्रपना वृष्टिकोण स्पष्ट करने का सुक्ति सुक्त अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवण, स्थापन के कमेंबारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की जस सामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले धपना चुका है अधीन नहीं रह क्काते हैं, या इस स्कीम के अधीन कमेंबारियों को प्राप्त होने बाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह रह की जा सकती. है।
- 10. यदि किसी कारणवश, नियोजक उस मियत तारीख के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का संवाय करने में भसकल रहना है, और पालिसी को अपभात हो जाने दिया जाता है, तो छूट रह की जा नकती है।
- 11- नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किये गए किसी व्यक्तिकम की दशा में, उन मृत नदस्यों के नाम निर्देशितियों या विधिक धारिमों को जो यदि यह छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के अंतर्गत होते, बीमा फायदों के संदाय का उत्तरवायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक, इस स्कीम के प्रधीन प्राने वाले किसी सबस्य की मृत्यु पर उसके हकदार नाम निर्देशितियों/विधिक वारिसों को बीमाकृत रकम का संदाय सल्परता से और प्रत्येक वशा में भारतीय जीवन बीमा निगम से भीमाकृत रकम प्राप्त होने के एक माम के भीनर मुनिश्चित करेगा।

[मंख्या एस. 35014 (53)/86- एस. एस-2]

S.O. 867.—Whereas Messrs. Kaushal Steel Rolling Mills, Amloh Road Mandi Gobindgarh-147301 (PN/3116) (hreinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are morefavourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme):

Now, therefore in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

### **SCHEDULE**

1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Com-

missioner, Chandigarh maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.

- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act. is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Chandigarh and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the nolicy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014(53)/86-SS-II]

का. या. 868.—केन्द्रीय सरफार, कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबन्ध स्रधिनियम, 1952 (1952 का 19) की धारा 16 की उपधारा (2) धारा प्रश्त शिक्तया का प्रयाग करत हुए आर भूतपूर्व श्रम और पुनवान मंत्रालय (श्रम विभाग) को प्रधिमूचना स. का. था. 3। (भ्र), तारीख 20 जनवरी, 1983 के अनुक्रम में केन्द्रीय सरकार के प्रधान उन सभा विभागीय उपक्रमा की, जिनक कर्मवारा सरकारा नियमी के प्रधान प्रमुक्तय भीवस्थ निधि और पेशन के भायत, एक वर्ग के रूप मं प्राप्त कर रहे है, उक्त अधिनयम के अपवन्धा के प्रवर्तन से 20 जनवरी, 1986 से तान वर्ष का आर प्रवर्धिक के लिए छूट दती है।

[सं. एम-35014/1/86 - एम एस-III]

S.O. 868.—In exercise of the powers conferred by subsection (2) of section 16 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), and in continuation of the notification of the late Ministry of Labour and Rehabilitation (Department of Labour) No. S.O. 34(E), dated he 20th January, 1983, the Central Government hereby exempts all departmental undertakings under the Central Government whose employees are in receipt of provident fund and pension benefits as admissible under the Government rules as a class, from the operation of the provisions of the said Act for a further period of three years with effect from the 20th January, 1986.

[No. \$-35014/1/86-\$S.JI]

# नई दिल्ली, 18 फरवरी 1986

का. अ. 869. — केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता हं कि मैंसर्स ए. अब्दुल करीम सोजाटवाला, निरंद पंच पीर किन्नस्तान गीता, मन्दिर, अहमदाबाद। नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहस हं इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निध्नि और प्रकीण उपबंध अधिनियम 1952 (1952 का 15) के उपबन्ध उयत स्थान को लागु किए जाने चाहिएं।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उप-की उपभारा-(4) द्वारा प्रदत्त शिक्तयों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपक्ष उक्त स्थापन को लाग करती है।

[संख्या एस-35019(81)/86-एस.एस-2]

New Delhi, the 18th February, 1986

S.O. 869.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. A. Abdul Karim Sojatwala, Near Panch Pir, Kabrastan, Gita Mandir, Ahmedabad have agreed that the Provisions of the I'mployees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. \$-35019(81)/86-SS-II]

का. आ. 870. — के दीय गरकार की यह प्रतीन होता है कि मैं. कृष्णा डाईरस एण्ड कलोथ डिल्स थीस्व्ववेरम कृम्बाकोग तालुक नामक स्थापन से संबद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुरांच्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और अने जिपकार की प्रविध्य किया 1952 (1952 का 19) के उपवाध उथत स्थापन को लागू किए जाने चाहिएं।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उप-भारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियो का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागु करती है।

[संख्या एस-35019(83)/86-एस . एस-2]

S.O. 870.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Kristat as Dyers & Cloth Dealers, Thirubavanam, Kumbakomam Taluk, Madras have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act. 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Secion 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

4No. S-35019(83)/86-SS-II]

का. आ. 871. — केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैंसर्स श्री गणेस लीको, 29, पीटरस रोड, मद्रास-14 और इसकी 55-अरक ट रोड गालीग्राम मद्रास स्थित कारा नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियो की बहुसंखर इस बन्द पर सहमा हो गई है कि कर्मचारी व्यव्यक्ष नीश कार प्रकीप अपवेध अधिनित्य 1952 (1952 का 19) के उपवर्ध उक्त स्थापन को नाम किए जाने चाहिए।

असः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उप-धारा-(4) द्वारा प्रदत्त सिक्ताः का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[संस्था एस-35019(88)/86-एस . एस-2]

S.O. 871.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Sri Ganesh Litho 29, Peter's Road, Madras-14, including its branch at 55 Arcot Road, Saligraman, Madras have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act. 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(88)/85-SS-II]

का. आ. 872.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतित होता है कि मैसर्स एमं. आर. ट्रोडर्स, पीस-प्रांस मर्प्योद, पाजार स्ट्रीट नागापट्टमम, विमलना इ रामक स्थापन के सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुन्स: इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य जिथि औ प्रकीण उपवंध अधिनियम 1952 (1952 का 19) के उपवन्ध उक्त स्थापन को लाग किए जाने चाहिए!!

अतः केन्द्रीय सरकार, उयत अधिनियम की भारा-1 की उप-धारा-(4) द्वारा प्रदत्त भियतगों का अयोग करते हुए उक्न अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागु करती है।

[संख्या एस-35019(89)/86-एस. एस-2]

S.O. 872.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. M. R. Traders. Piece Goods Merchants. Bazar Street. Nagapattinem, Tamil Nadu have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act. 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019/89/86-SS-II]

का. वि. 873. —केन्द्रीय सरकार को यह प्रगीत होता है कि मैफको इंजिनिर्यस प्रा. लि., 122/5, पूनरी हाई रोड, अडरकुणम पोस्ट मदास-103 और इसकी, मदास-4 स्थित प्रशासकीय कार्यलय नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसात इस बात पर महमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निर्माध और प्रकीण उपलेख अधिनियम 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लगा किए जाने काहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उप-धारा-(4) द्वारा प्रदल्त शिक्तयों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागु करती है।

[संख्या एस-35019(91)/86-एस.एस-2]

S.O. 873.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. MEFCO Engineers Private Limited. 122/5. Ponneri High Road. Andarkuppam Post, Madras-183 and its administrative office at Madras-8. have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(91), 86-SS-II]

का. आ. 874. — केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि विवेकारिया कलर वकर्स अंत्रसादू-कारूवामपालयाग, दिल्पर-638604 तिमलनाडू। नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहम्य हो गई है कि कर्म-चारी भविषय निधा और प्रकीण उपबंध अधिनियम 1952 (1952 का 19) की उपवन्ध उक्त स्थापन लागू किए जाने शहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्कत अधिनियम की धारा-1 की उप-धारा-(4) द्वारा प्रदल गिक्तयो का प्रयोग करते हुए उक्क विधिनयम के उपविध उक्त स्थापन को लागु करती है।

[संख्या एस-35019 (92) / 86-एस . एस-27

S.O. 874.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Vivekananda Colour Works Alankadu, Karuvampalayam, Thiruppur-638684, Tamil Nadu have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act. 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment:

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Secion 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(92)/86-SS-II]

का. आ. 875. केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि राजा इंजिनियरिंग वर्क्स, बस रोड, 155/1, जी. आर. पालायाम (ताया) उड़्यंथ (एत. ए. कस्बा) तमिलनाड़ । नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंस्था इस बात पर महमत हो गई है कि कर्मचारी भणिष्य निष्धि और

प्रकीर्ण उपदेश अभिनियम 1952 (1952 का 19) के उपदन्ध उक्त स्थापन को लागु किए जाने चाहिए।

अगः केन्द्रीय सरकार, उथत अधिनियम की धारा-1 की उप-धारा-(4) द्वारा प्रदत्त शिक्तयों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[संस्था एस-35019(93)/86-एस . एम-2]

S.O. 875.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Raja Engineering Works, Bus Road, 155/1, G. R. Palayam (Via) Adugunth N.A. Dist. (Tamil Nadu) have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(93)/86-SS-II]

का. आ. 876. — केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स गूरा सिल्क सैण्टर थीरन्यस्वर (तिमलनाडू) नामक स्थापन से सम्बद्ध कियोजक और कर्मचारियो की बहुसंख्य दिस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भिक्षिय कि उर्देश प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लागू किए जाने जाहिएं।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की भारा-1 की उप-भारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन की लागू करती है।

[संख्या एस-35019(94)/86-एस एस-2]

S.O. 876.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Mura Silk Centre. Thiruvarur (Tamil Nadu) have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies  $th_{\xi}$  Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(94)/86-SS-III

का. आ. 877. — केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि ग्रीसर्स थोनी लालारपाल पन्नाई, अनथाडापुरम रोड मयूराम । नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो एई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीण उपसंध अधिनियम 1952 (1952 का 19) की उपबन्ध उक्ल स्थापन को लागु किए जाने चाहिएं।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उप-धारा-(4) द्वारा प्रक्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपक्षंघ उक्त स्थापन की लागु करती है।

[संस्था एस-35019(95)/86-एस . एस-2]

S.O. 877.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Thorhilalar Pal Pannal, Anatthandavanuram Road. Mavuram have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(95)/86-SS-JI]

का. आ. 878. - केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैस विकू एण्ड सन्त, रंगाई गोडर स्ट्रीट, कामबंतूर-1 नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसे हा इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निष्य और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उप-भारा-(4) द्वारा प्रवत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[संस्था एस-35019(96)/86-एस. एस-2]

S.O. 878.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Veeku and Sons, Rangai Gowder Street, Coimbatore-I, Tamil Nadu) have agreed that the Provision of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the sald establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(96)/86-SS-II]

का. बा. 879. — केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैंसर्स रोजा मार्क कडिंग्या फिठाई के. नं-5, बिरमनकाल स्ट्रीट, अरसालारू रोड, कुम्बाकोगम, विभिन्नलाडू नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोषक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य विधि और प्रकीण उपबंध अधिनियम 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उकत स्थापन को लाग किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उप-भारा-(4) द्वारा प्रवस्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन की लागू करती है।

[संस्था एस-35019(97)/86-एस. एस-2]

S.O. 879.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Roja Mark Kadalan Mittai Company, No. 5 Birmankoil Street Arasalaru Road, Kumbakonam, Tamil Nadu have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellancous Provisions Act. 1952 (19 of 1952), should be made appli able to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(97)/86-SS-H]

का. आ. 880, किन्द्रीय सरकार को यह प्रसीत होता है कि मैंसर्स पेड्डी ओसेमिंग रिसर्च मैंटर, तिकवासर, तिमलाड़ नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुर्स हुए। स बार पर सहमर हो गई है कि कर्मचारी अविषय तिथि अव अविकास अधिनित्तम 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लाग किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय मरकार, उक्त अधिनियम को धारा-1 की उप भारा-(4) द्वारा प्रवस्त क्षितयों का प्रयोग करते हुए उक्त ब्राधिनियम के उपकंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[संख्या एस-35019(99)/86-एस एस-2]

S.O. 880.—Whereas it appears to the Contral Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Paddy Processing Research Centre, Firuvarur, Tamil Nadu have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(99)/86-SS-II]

का. आ. 881. — केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स एम आर टैक्सटाइल्स, बाजार स्ट्रीट नागापट्टनम, तमिननाडू नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुस था इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि अंत्र प्रकीण उपबंध अधिनियम 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

आ: केन्द्रीय सरकार, उक्त विधिनियम की धारा-1 की उप-धारा-(4) द्वारा प्रदत्त शिक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागु करती है।

[संस्था एस-35019(100)/86-एस . एस-2]

S.O. 881.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. M. R. Textiles, Bazar Street, Nagapattinam, Tamil Nadu have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(100)/86-SS-II]

का. आ. 882.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स सन्तु मार्क सिवल स्टोर्स, कुमवकनोम, तमलिनाडू नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निष्ध अभि प्रकीण उपबंध अधिनियम 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उप-धारा-(4) द्वारा प्रदत्त शिक्तयों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[संख्या एस-35019(102)/86-एस . एस-2]

S.O. 882.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Sangu Mark Seeval Stores, Kumbakenam, Tamil Nadu have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act. 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Secion 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(102)/86-SS-II]

का. आ. 883. —केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स दी वेदरानयाम शालट वर्कर्स कोपरेटिक प्रोडेक्शन एण्ड सैल सौमायटी ल. वेदरानयाम पीन-614810. तनजोर डिस्ट्रोक्ट नामक स्थापन में सम्बद्ध नियोजक और कर्मजारियों की ब्रह्सस्थ

इस बात पर गहमत हो गई है कि कमीबारी भाषिण निधि और प्रकीर्ण उपहोंच अधिनित्स 1952 (1952 का 19) के उत्तर उक्त स्थापन को लाग् किए जाने चाहिए ।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अविशियम की पारा-1 की उा-भारा-(4) द्वारा प्रदस्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अभिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती हैं।

# [संस्था एस-35019(103)/86-एस. एस-2]

S.O. 883.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. The Vedaranyam Salt Worker's Co-operative Production and Sale Society Limited, Vedaranyam Pin-614818, Taniore Distt. have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Punds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(103)/86-SS-II]

का. आ. 884. — केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स श्री करतीक्यान मोडरन राईस एण्ड आयल मिल्स नथीमें जूडू, सलेम-2-गद्रास नामक स्थापन में सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्य इस बात पर यहमत हो गई है कि कर्मचारी भिगण्य निध्य और प्रकीर्ण उगर्दंध अधिनियम 1952 (1952 का 19) के उपवन्ध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय मरकारः, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उप-भारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

# [संख्या एस-35019(105)/86-एस.एस-2]

S.O. 884.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Sri Karthikoyan Modern Rice and Oil Mills, Nothimedu Salem-2 Madras have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section I of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(105)/86-SS-II]

का. आ. 885. — केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मंसर् श्री बैकाटचलपथी दिस्तरण 17/1315, साउथ मंन स्ट्रीट थान्जावर तिमल गाड्न । नामक स्थापन में सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहर्स कार पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविषय पि श्री प्रक्रीण उग्रावंध अधिनियम 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्री स्थापन को लाग किए जाने पाहिए।

ा आ: केन्द्रीय मरकार, उक्त ाधिनियम की धारा-1 की उप-धारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उका अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लाग करती है।

# [संख्या एस-35019(107) /86-एस . एस-2]

S.O. 885.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Sri Venkatachala-

pathy Printers, 17/1315, South Main Street Thanjavur, Tamil Nadu, have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(107)/86-SS-II]

का. आ. 886. — केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैंसर्स वसन्ता सौप वर्कस, पट्टोकोटीया 614601, थान्जावर जिला समिल गाडे । नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस दात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लागु किए जाने चाहिए।

ात: क्रोन्द्रीय मरकार, उक्त अविनियम की धारा-1 की उप-धारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

# [संख्या एस-35019(112)/86-एस . एस-2]

S.O. 886.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Vasantha Soap Works, Pattukottai, 614601 Thanjavur District Tamil Nadu have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act. 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(112)/86-SS-II]

का. आ. 887. — केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि सैट ट्रॉडर्स, 43, विरभद्रास्थामी कोल स्ट्रीट. नागापटीनाम प्रद्राम नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर गहमत हो गई है कि कर्मचारी भिष्ठिय निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लाग किए जामे नाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त राधिनियम की धारा-1 की उप-धारा-(4) द्वारा प्रदस्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपगंभ उक्त स्थापन को लागू करती है।

# [संख्या एस-35019(113)/86-एस . एस-2]

S.O. 887.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Sait Traders. 43, Veeranadraswamy Koil Street Nagapattinam, Madras. have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(113)/86-SS-II]

### शस्त्रि-पश्र

का. आ. 888.—भारत के राजपत्र, भाग 2, सण्ड-३, उप-सण्ड (2) में दिनांक 25 मई, 1985 को प्रकाशित, भारत सरकार के श्रम मंत्रालय की अधिसूचना संख्या का. आ. 2255, दिनांक 7 मई, 1985 में लाइन 3 में ''अल्पना'ं के स्थान पर अलफा'ं पढ़ें।

[संख्या एस-35019/170/85-एस. एस. -2]

### CORRIGENDUM

S.O. 888.—In the notification of the Government of India in the Ministry of Labour, No. S.O. 2255, dated the 7th May, 1985 published in the Gazette of India, Part II Section 3, sub-section (ii), dated the 25th May, 1985, in line 3 for "Alpna" read "Alpha".

[No. S-35019(170)|85-SS-IJ]

का. आ. 889.—मैंसर्स तिमलनाडु गुड्स ट्रान्सपोर्ट कारणी-रेशन, लि., नं.-4, श्रीरामनगर (साऊथ) स्ट्रोट इलवरपेट, मदास-600018 (टी. एट./10072) (जिसे इसमो इसके प्रकास उक्त स्थापन कहा गवा है) ने कर्मचारी भाविष्य निश्चि और प्रकीर्ण उपबंध विधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमो इसके पश्चास उक्त अधिनियम कहा गया है) की थारा 17 की उपयोग (2क) के अधीर छूट दिए जाने के लिए आयेदन किया है;

और केन्द्रीय सरकार का स्माधान हो एया है कि उक्त स्थापन के कर्मकारी, किगी पृथक अभिद्याय या प्रीमियस का गंदाय किए बिना ही, भारतींय जीवन बीमा निगम की सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं। अपैन ऐसे कर्मकारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से अधिक अनुकृत हैं। जो कर्मकारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसकें परकात् उका स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अनुकोय है ;

जितः केन्द्रीय भरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रवत्त किन्द्रयों का प्रयोग करते हुए और इससे उपाय अनुसूची में विनिर्दिष्ट कार्तों के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की अवधि के लिए उक्त स्क्रीम के मनी उपबन्धों के प्रवर्तन से छूट देती है।

# अन्स्भी

- 1. उक्त स्थापन के मंबंध में नियोजक प्रावेशिक शिवष्य निधि आयुक्त मद्राय को ऐसी विवरणियां भेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सूविधाए प्रवान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निर्षिष्ट करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक माम की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संवाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के अधीन सम्य-समय पर निर्दिष्ट करें।
- 3. साम्हिक बीमा स्कीम के प्रशासक में, जिसके अंतर्गन लेखाशों का रखा जाना, दिवरणियों का प्रस्तत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारों संवाय आदि भी है, होने वाले सभी व्ययों का वहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा अन्मोदित रामृहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और अब कभी उनसे संबोधन किया जाए, तब उस संबोधन की प्रति तथा कर्मचरियों की कहुसंख्या की शाषा में उसकी मुख्य बातों का अतवाद, स्थापन के सूचना पट्ट पर प्रविधित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य रिश् का या उक्त अधिनियस के अधीन छट प्राप्ट किसी स्थापन की

- 'भविष्य निश्विका पहले हो सदस्य है, उसके स्थापन मो नियो-जित किया जाता है तो, ियोज्या, सामूह्कि गीमा स्थीम के सदस्य के रूप मो जसका नाग पुरन्त दर्ज करेगा और उसकी बाबत आदश्यक शीमियम भारतीय जीवन शीमा निराम को संदत्त करेगा ।
- 6. यदि उदस्त स्कीस के अधीर धर्मशारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जामे हैं तो, नियोजक सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मशारियों को उपलब्ध फायदों भा समृहित स्था से श्रांद की जाने की व्यवस्था करेगा गिससे कि कर्मशारियों कि क्रियार किए सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकूल हो जो उक्त स्कीम के अधीन अनुक्षेत्र हैं।
- 7. साम्हिक वीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीन संदेय रकभ उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दका में संदेय होती जब यह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक वारिसाराम निदेशियों को प्रतिकार के स्प में दोनों रकमों के अन्तर के बराबर रकम का संदाय करेगा।
- 8. सामूहिक बीमा स्कीम के उपबंधों में कोई भी मंशोधन, प्रावादक भावव्य निधि आयुक्त मद्भाम के पूर्व असू-मोदन के बिना रहीं किया जाएम और अहां किसी मंशोधन से कर्मणारियों के हिट एर प्रतिकृत प्रभाव एड़ने की सम्भावना हो, वहां प्रादेशिक भविष्य निध्य क्षण्यक्त. अपना कामोदन देने से पूर्व कर्मणारियों को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का यक्तियक्त अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवश, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन वीमा निरम की उस साम्हिक बोमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अनता चुका है उदीत नहीं रह जाते हैं, या इस रकीम के अभीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायटे किसी रीति में कम हो जाते हैं, तो यह रहद की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणबंध, नियोजक उस नियत हारीख के शीतर, जो भारतीय जीवन बीसा निगम निगम करें, प्रीमितम का संदाय करने में असफल रहता है, और पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो, छूट रबंद की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए राए किसी वर्णिकम् की दका में, उन मत स्वस्यों के नाप निवेधिकतियों या विधिक वारिसों को जो यदि यह खूट न दी गई होती तो उन्हर स्कीम के अंतर्गत होते, बीमा फायदों के संदाय का उत्तर-दायिख्य नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक, इस स्कीस के अधीन आने वाले किसी सबस्य की मृत्य होने पर उसके हकदार नाम निदे शितियों/विधिक व्यक्तिमों को बीमाकृत रकम का संबाय महारता से और प्रत्येक दशा में भारती निजी की विमाकृत रकम का निगम से नीमाकृत रकम प्राप्त होने के एक मान के भीतर सनिविद्य करोग।

[संख्या एस-35014(48) /86-एस . एसहे-2]

S.O. 889.—Whereas Messrs. Tamil Nada Goods Transport Corporation Ltd., No. 4, Sri Ram Naga (South) Street, Alwarpet, Madans-6000!8. (TN|10072), (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds & Miscellaneous Provisions Act. 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any

separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

#### **SCHEDULE**

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Madras maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall desplay on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act. is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Groun Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount navable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Madras and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason, the employees of the said establishment do not remain sovered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled,
- 10. Where, for any reason, the employer fails to may the premium etc, within the due date, as fixed by the life Insurance Corneration of India, and the policy is allowed to lanse, the exemption is liable to be cancelled.

  1565 GI[85—18]

- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee|legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014(48)[86-SS-II]

का. आ. 890. केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मार्किट फैडरेशन लि., विराजपेट, कोडागू जि., (कर्नाटका) (के. एन./5707) (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य रिधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन छूट विए जाने के लिए आवेदन किया है;

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक अभिवाय या प्रीमियम का मंदाय किए बिना ही, धारतीय जीवन बीमा निगम की सामहिक कीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं और ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से अधिक अनक्ष हैं जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके प्रचात् उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अनुजेय हैं;

जतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उप्धारा (2क) द्वारा प्रदश्त शिक्तयों का प्रयोग करते हुए और इससे उपाब्ध अन्याची में विनिर्दिष्ट शनों के अधीन रहने हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की अविध के लिए उक्त स्थीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन से छूट देती है।

# अन्स्ची

- उवत स्थापन के संगंध में नियोजक प्रादेशिक अधिकय निधि आयक्त मंगलौर को ऐसी विवरणियां भंजेगा और ऐसे लेखा रलेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सविधाएं प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निर्दिष्ट करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो के द्वीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के अधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करों।
- 3. सामृहिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिस्के अंतर्गत से लाओ का रहा जाता, विवरणियों का प्रस्तान किया जाता, बीमा प्रीमियाम का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारों संवाय आदि भी है, होने वाले सभी व्ययों का दहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित सामृहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें संबोधन किया जाए, तब उस संबोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुरंख्या की भाषा में उसकी मख्य बातों का अनवाब, स्थापन की सूचना पट्ट पर प्रदर्शित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविषय निधि का या उक्त अधिनियम को अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियो-जित किया जाता है मो, नियोजक, सामृहिक बीमा स्क्रीम के

सदस्य के रूप में उसका, नाम तुरन्त दर्ज करेगा और उसकी बाबत आवरएक, श्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संदर्भ करेगा।

- 6. यदि उक्त स्कीम के अभीन कर्मकारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जाते हैं तो, नियोजक साम्हिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मकारियों को उपलब्ध फायदों में समृचित रूप से वृद्धि की जाने की की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मकारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकूल हों जो उक्त स्कीम के अधीन अनुक्रेय हैं।
- 7. सामृहिक वीमा स्कीम में किसी बाह के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीव संदेय रक्त उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दका में संदेय होती जब वह उक्त स्कीम के अधीव होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक वारिस/नाम निदेशिक्षी को प्रतिकर के रूप में दोनों रक्तमों के अन्तर के बराबर रक्तम का संदाय करेगा।
- 8. सामृहिक बीमा स्कीम के उपबंधों में कोई भी स्वोधन, प्रादेषिक भविषय विधि बायुक्त मंगलीर के पूर्व अनु मोदन के निना नहीं किया जाएगा और उहां किसी संबोधन से कर्मनारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो, वहां प्रादेषिक भविष्य निधि आयुक्त, अपना लनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का गृविद्यान्त अवसर देगा।
- 9. यवि किसी कारणवश, स्थापन के कर्मचाथी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस साम्राहिक गीमा स्कीम को, जिसे स्थापन गहले अपना चका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, यो यह रहद की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवश, नियोज्क उस नियत तारीख के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का संदाय करने में असफल रहता है, और पालिसी को व्यापगत हो जाने दिया जाता है तो, छूट रद्द की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा शीमियम के संवाय में किए गए किसी बर्गातिकम् की देशा मो, उन मृत स्वस्थों के नाम निवेधितियों का संवाय करने में असफल रहता है, और जिल्ली को व्यपगत उक्त स्कीम के अंतर्गत होते, बीमा फायदों के संवाय का उत्तर-वायिक नियोजक पर होगा।
- 12. जकत स्थापन के संबंध में नियोणक, इस स्कीम के अधीन वाने वाले किसी सदस्य की मृत्य होने पर उसके हकदार नाम निवेशिक्तियों/विधिक बारिसों को बीमाकृत रकम का संदाय तत्परता से और प्रत्येक दृश्य में भारतीय जीवन बीमा निगम से शीमाकृत रकम प्राप्त होने के एक गास के भीतर गनिष्यित करेगा।

# [संस्था एस-35014(43)/86-एस . एस . -2]

S.O. 890.—Whereas Messrs The Kodagur District Co-op. Marketing Federation Ltd., Virajapet, Kodagu Distt. (Karnataka) (KN|5707), (hereinafter referred to at the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds & Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any senarate contribution or payment of premium, in enloyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit

Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, threfore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

# **SCHEDULE**

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Mangalore maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Contral Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Mangalore and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Cornoration of India as already adonted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the I ife Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of essurance benefits to the nominous or the level heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.

12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014(43)]86-SS-II]

का. आ. 891.—मैंसर्स दि जाम श्री रणजीतिसहजी स्पीनिंग आँउ वीयींग मिल्स कां. लि. फतहचन्द दामनी नगर, सोलापुर-413001 (एम. एच./343) (जिसे इसमें इसके पश्चात् उकत स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य निश्चि और प्रकीण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चातः उकत अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन छूट दिए जाने के लिए आवेदन किया है;

और फेन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मकारी, किनी एथक अभिदाय या प्रीमियम का सदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं और ऐसे कर्मकारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से अधिक अनुकूल हैं, जो कर्मकारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चास उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अनुक्य हैं;

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदत्त किन्द्रयों का प्रयोग करते हुए और इससे उपाबद्ध अग्स्ची में विनिर्विष्ट कर्ती के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की अविध के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन से छूट देती है।

# अन्सूची

- उब्त स्थापन के संगंध में नियोजक प्रादेशिक भविष्य निधि अयुक्त पूना को ऐसी विवरणियां भेज्या और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रवान करेगा 'ओ केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निर्विष्ट करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाध्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिन्यम की धारा-17 की उनधारा (3क) के खंड (क) के अधीन सम्य-समय पर निर्दिष्ट करें।
- 3. सामू हिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अंतर्गत से साओं का रहा जाना, विवरणियों का प्रस्तृत किया जाना, वीमा शिम्यस का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारें संदाय आदि भी है, होने वाले सभी व्ययों का वहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, कन्द्रीय सरकार द्वारा अन्मोबित सामृहिक भीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और उब कभी उनमें स्वोधन किया जाए, तब उस सशोधन की प्रति तथा कर्मणारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मख्य बातों का अन्वाद, स्थापन के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनयम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियो-जित किया जाता है तो, नियोजक, सामृहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तरन्त दर्ज करेगा और उसकी सांबत आवश्यक शीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संबत्त करेगा।
- वि उदत स्कीम के अभीन कर्मणारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जाते हैं तो, नियोजक साम्हिक बीमा स्कीम के

अधीन कर्मकारियों को उपलब्ध फायदों में समूचित रूप से वृद्धि की जाने की की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मकारियों के लिए सामूहिक धीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकूल हो जो उक्त स्कीम के अधीन अनुजोय हैं।

- 7. सामृहिक यीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यु पर इस स्कीम के अभीन संदेय रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दशा में संदेय होती जब वह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी को विधिक बारिसानाम निवेदिती को प्रतिकर के रूप में दोनों रकमों के उत् के दरहर रकम का संदाय करेगा।
- 8. सामृहिक शीमा स्कीम के उपवंशों में कोई। भी संशोधन, उप आदेशिक भिक्षण निश्वि आयुक्त पूना के पूर्व अगु-मोंदन के बिना नहीं। किया शाएगा और जहां किसी संशोधन से कर्मचारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो, वहां प्रादेशिक भिष्णा निश्वि आयुक्त, अपना अनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युवितयुक्त अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणविष्य, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामूहिक गीमा स्कीय के, जिसे स्थापन गहले अपना चुका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह रद्द की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवश, नियोज्क उस नियत तारीय के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का संदाय करने में असफल रहता है, और पालिसी को व्यपणत हो जाने दिया जाता है तो, छूट रद्द की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम को संदाय मों किए गए किसी व्यक्तिक्षम की दशा मो, उन मृत स्दर्गों को नाम निदिधितियों या विधिक वारियों को जो पवि यह छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम को अंतर्गत होतो, बीमा फायदा को संदाय का उत्र-दायिख नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन को संबंध में नियोजक, इस स्क्रीम के अधीन आने वाले किसी सदस्य की मृत्य होने पर उसके हकदार नाम निवेशिक्षियों/विधिक वारिसों को बीमाकृत रकम का संदाय तत्परता से और प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन वीमा नियम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के एक गास के भी। ग्रापिकित करेगा।

[संख्या एस-35014(44)/86-एम.एस.-2]

S.O. 891.—Whereas Messrs. The Jam Shri Ranjit Singhiji Spinning and Weaving Mills, Co. Ltd., Fatehchand Damani Nagar, Solapur-413001 (Maharashtra) (MH|343), (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds & Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

#### SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Pune maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Pune and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee|legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

का. आ. 892 — मेंसर्स साकथरन स्ट्रक्करलस लि. नं.-8, पूगज रोड, राजा आनामलीयापूरम, म्द्रास-28 (सी. एन. -2475-ए) और इसकी पटावियाराम मद्रास-72 में स्थित शाखा (टी.एन./2475) (जिसे इसमें इसके परमात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मधारी भविष्य निधि और प्रकीण उपवेद अधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके परमात् उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन छूट दिए जाने के लिए आयेदन किया है;

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कमशारी, किसी पृथक अभिवाय या प्रीमियम का संदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं। और ऐसे कमशारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से अधिक अनुकूल हैं। जो कर्मचारी निक्षेप सहयद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पहचात् उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अनुक्रय हैं;

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रवत्त क्षिक्तियों का प्रयोग करते हुए और इससे उपायद्ध अनूस्ची में विनिर्दिष्ट क्षतों के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की अविध के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन से छूट देती है।

# अनस्ची

- 1. उक्स स्थापन के संबंध में नियोजक प्रावेशिक भविष्ण निधि आयुक्त मन्नास को ऐसी विवरणियां भेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाए प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, ममय-समय पर निविध्ट करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति की 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उनत अधिनियम की धारा-17 की उपधारा (3क) के संब (क) के अधीन सम्य-समय पर निर्दिष्ट करें।
- 3. सामूहिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अंतर्गत सेखाओं का रक्षा जाना, विवरणियों का प्रस्तृत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभार संदाय आदि भी है, होने वाले सभी व्ययों का बहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, कन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित सामृहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और उब कभी उनमें संबोधन किया जाए, तब उस संबोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मूख्य बातों का अनुवाद, स्थापन के सूचना पट्ट पर प्रविधित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन मो नियोजित किया जाता है तो, नियोजिक, सामूहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तरस्त दर्ज करेगा और उसकी बाबत आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन यीमा निगम को संवत्त करेगा।
- 6. यदि उक्त स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जाते हैं तो, नियोजक सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समूचित का से वृद्धि की जाने की की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से विधक अनुकृत हों जो उक्त स्कीम के अधीन वान्त्रीय हैं।

- 7. साम्हिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मधारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीन सदेव रकम उस रकम से कम है जो कर्मधारी को उस दशा मों संदेव होती जब वह उकत स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मधारी के विधिक बारिस/नाम िवेशिकति को प्रमिकर के रूप मा दोनों रकमों के अन्तर के दरादर रकम का संदाय करेगा।
- 8. सामृहिक बीमा स्कीम के उपवंधों में कोई भी संबोधन, प्रावेदिक भविष्य निधि अध्यक्त मद्राम के पूर्व अनुमोदन, के बिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संबोधन से कर्मचारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो, वहां प्रावेधिक भविष्य निधि आयुक्त, अपना अनुमोदन वेने से पूर्व कर्मचारियों को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का पृथितम्बन अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवद्या, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामृहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले जायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो रखद की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणविश्व, नियोजक उस नियत तारीख के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का संदाय करने में असफल रहता है, और पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो, छूट रद्द की जा सकती हैं।
- 11. नियोजक द्वारा ग्रीमियम के संदाय में दिए एए किसी ब्युतिकम की दहा में, उन मृत स्द्रम्यों के नाम निदेशितयों या विधिक वारिमों को जो यदि यह छूट न दी गई होती तो उच्हा स्कीम के अंतर्गत होते, नीमा फायदों के संदाय का उद्दर-वायिख्य नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन को संबंध में नियोज क, इस स्कीम के अधीन आने वाले किसी सदस्य की मृत्यू होने पर उसके हकदार नाम निवेक्शितयों/विधिक बारिमों को बीमाकृत रकम का संदाय तत्परता में औष प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के एक साम को भीवर सुनिश्चित करेगा।

[संख्या एस-35014(41)/86-एस . एस-2]

S.O. 892.—Whereas Messrs Southern Structurals Limited, No. 8 Pughs Road, Raja Annamaliapuram, Madras-28, (TN|2475A) and its Branch at Pattabiram, Madras-72 (TN|2475), (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds & Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enloyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

#### **SCHEDULE**

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Madras maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Madras and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view
- 9. Where for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure promot navment of the sum assured to the nominee legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

का. आ. 893.— मैंसर्स औसबाल बूलन मिल्स लिमिटेड नं.-3, जी.टी. रोड, शेरार लुधियाना (पंजाब) (पी.एन./125) (जिसे इसमें इसके परचात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्म-चारी भविष्य निधि और प्रकीण उपनन्ध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके परचात उक्त अधिनियम छहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन छूट दिए जाने के लिए आवेदन किया है;

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक अभिदाय या ग्रीमियम का स्दाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की साम्हिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में जो फायदे उठा रहे हैं और ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदे उन फ यदो से अधिक अस्कूल हैं जो उन्हें कर्मचारी निक्षेप सहबद बीमा स्कीम, 1976 (जिसे इसमें इसके एक्चात् उक्त स्कीम कहा गया हैं) के अधीन उन्हें अनुक्रेय हैं;

गतः कोन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदत्त काक्तियों का प्रयोग करते हुए और इससे उपाधद अनुसूची में निर्दिष्ट करों के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की अवधि के लिए उक्त स्कीम के क्यों उपबंधों के प्रवर्तन से छूट देती है।

# अनुसूची

- 1. उन्त स्थापन के सम्बन्ध में नियोजक प्रावेशिक श्विष्य िधि अत्युक्त चण्डीगढ़ को ऐसी विवरणियां भेजेगा और ए सेसा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी स्विध ए प्रदान करेगा, जो केन्द्रीय सरकार समय-समय पर निविध्द करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर सन्दाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उप-धारा (3क) के खण्ड (क) के अधीन समयसमय पर निर्विष्ट करे।
- 3. सामृहिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना, विवरणियों का प्रस्तत किया जाना, बीमा श्रीमियम का सन्दाय, लेखाओं का अन्तरण, निरीक्षण प्रभारों का सन्दाय आदि भी है, होने वाले सभी व्ययों का बहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सर्कार द्वारा अनुमोवित सामृहिक वीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें मंशोधन किया आए मब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहु-संस्था की भाषा में उसकी मुख्य बातों का अनुबाद स्थापन के स्थापन के सुचना-पट्ट पर प्रवर्धित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐमा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उका अभिनियस के अभीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो नियोजिक सामृहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप मे उसका नाम त्रन्त दर्ज करेगा और उसकी बाबत आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को सन्वत्त करेगा।
- 6. यदि उवत स्कीम के अवीर कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे विदाए जाते हैं तो, नियोजक सामृष्टिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समृचिम रूप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामृष्टिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से बिधक अनुकुल हों, जो उक्त स्कीम के अधीन अनुश्चेर हैं।
- 7. सामृहिक धीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यु पर इस स्कीम के अधीन संदेय रकम उस

रकम से कम है जो कर्मसारी को उस दशा में संदेय होती जब वह उक्त स्कीम के अभीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के चिधिक बारिस/नाम निवेशियों को प्रतिकर के रूप में दोगों रकमों के अंतर के बराबर रकम का संदाय करेगा।

- 8. सामृहिक बीमा स्कीम के उपबंधों में कोई भी मंद्रोधन, प्रादेशिक भविष्य निवि आयुक्त चण्डीगढ़ के पूर्व अनुमोदन के विना नहीं किया जाएगा और जहां कियी संशोधन से कर्मचारियों के हिए पर प्रतिकृत प्रभाव गड़ने की संशावना हो वहां, प्रादेशिक भावष्य निधि आयुक्त, अएगा अनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को अना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का गृथित एक्त अवमो देगा।
- 9. यदि किसी कारणविष्ठा, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम को उस सामृहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अधीन नहीं रह जाते है, या इस स्कीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रदद की जा सकती है।
- 10. यदि थिसी कारणवश, नियोजक उस नियत तारील के भीतर जो भारतीय जीवन बीमा नियम वियत करें जी मियम का संवाय करने में असकल रहता है, और पालिसी को वयपगत हो जाने दिया जाता है तो, छूट रहद की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा शीमियम के संदाय में किए गए कि नि व्यक्तिकम की दशा में, उन मृत सदस्यों के गम निदेंशितयों या विधिक वारिसों को जो यदि यह, छूट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के अन्तर्गत होते, बीमा फायदों के सन्दाय का उत्तर-दायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उसस स्थापन के सम्बन्ध में नियोज़क इस स्कीम के अधीन अने काले किसी सदस्य की मृत्य होने पर उमके हकदार नाम िदेशिती/विधिकं वारिसों को बीमाकृत रकम का संवय उत्परता से और प्रत्येक वका में भारतीय जीवन बीमा नियम से बीमास्ता रकम प्राप्त होने के एक मास के भीतर सनिविच्न करेगा।

**[संस्था एस-35014(32)/86-एस.एस.-23** 

S.O. 893.—Whereas Messrs, Oswal Woollen Mills Ltd., No. 3, G. T. Road, Sheipur, Ludhiana (Punjab) (PN/125) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds & Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are mere favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

# **SCHEDULE**

1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Chandigarh maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.

- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall desplay on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner. Chandigarh and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nomineellegal beirs of the deceased member entitled for it and in any case within one mouth from the receipt of claim complete in all respects.

[No. 5-35014(32)]86-SS-II]

का. ता. 894 — मैसर्म हिमाचल प्रवेश एगो-इन्डस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड, समर सीट, शिमला-171001 (हिमाचल प्रदेश) (पी. एन /4001) (जिसे इनम् इमाने प्रवात उक्त स्थापन कहा गया है) ने वा जारी सीवष्य गिथि और प्रकीर्ण उपबन्ध अधिनियम, 1952

(1952 का 19) (जिसे इसमें इसके परचात उक्त अधिकियम कहा पया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीत छूट दिए जान के लिए आवेदन किया है;

और केंद्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कम्सेचारी, किसी पृथक अभिदाय या प्रीमियम का संदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन नीमा के रूप मो फायदे उठा रहे हैं और ऐसे कर्मचारियों के दिए ये फायदे उन फायदों से अधिक अनुकूल हैं जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चाद् उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अनुक्रेय हैं;

अतः कोद्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उनधारा (2क) द्वारा प्रदेश किन्यों का प्रयोग करते हुए और इससे उपावड अनुसूची में विनिर्दिष्ट करों के अधीन रहाने हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की अवधि के लिए उक्स स्थीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन से छूट देती है।

# अग्सूची

- 1. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रादेशिक भिष्ठि निधि वायक्त पंजाब को ऐसी दिवस्णेण्यां भेजेगा और ऐसे लेखा रहेगा सथा निश्क्षिण' के लिए ऐसी स्विधाएं प्रवान करेगा जो के द्वीय हरकार, समय-समय पर निधिष्ट करें।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रस्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के अधीन समय-समय पर निर्देवष्ट करें।
- 3. साम्हिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अंतर्गत लेखाओं का रक्षा जाना, विवरणियों का प्रस्तृत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संवाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारों का संवाय आदि शी है, होने वाले सभी व्ययों का बहुन नियोजक हारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित सामूहिक बीमा स्त्रीम के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें संशोधन किया आए, तब उस संशोधन की प्रति तथा कर्म-जारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मख्य बातों का अनुवाद, स्थापन के सुचना-पट्ट पर प्रदर्शित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य रिधि का या उत्तर अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किमी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही स्वस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजक, सामहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तरन्त दर्ज करेगा और उसकी रावत आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संदक्ष करेगा।
- 6. यदि उक्त स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाये जाते हैं तो, नियोजक सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में सन्कृष्त रूप से बिद्ध की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अन्कृत हों जो उक्त स्कीम के अधीन अन्ज्रेय हैं।
- 7. सम्मितिक वीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मत्या पर इस स्कीम के अधीन संदेय रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दशा में संदेय

होती जब वह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्म-चारी के विधिक वारिस/नाम निर्देशिकों को प्रतिकर के रूप में वोनों रकमों के अन्तर के बराबर रकम का संवाय करेगा।

- 8. सामूहिक बीमा स्कीम के उपबन्धों में कोई भी संशोधन, प्रादेशिक भविष्य निधि आयुक्त, पंजाब के पूर्व अनुमोदन के बिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संशोधन से कर्म-चारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की संभावना हैं, बहां प्रादेशिक श्विष्य निधि आयुक्त, अपना अनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को उपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त क्ष्यस देना।
- 9. यदि किसी कारणवहा, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन शीमा कियम को उस साम्हिक बीमा स्कीम के, जिले स्थापन पहले अपना चूका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रद्द की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणव्या, नियोजक नियस तारीक के भीतर जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे प्रीमियम का संदाय करने में असफल रहता है, और पालिसी व्यपगण हो जाह दिया जाता है, तो छूट रद्द की जो सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए गए फिसी कालिकम की दश में, उन मृत सदस्यों के नाम निदेशिकतियों या विधिक दारिसों को को यदि यह छूट न दी गई होती तो उकत स्कीम के अन्तर्गत होते, यीमा फायदों के संदाय का उत्तरदायित्व नियोजक पर होगा ।
- 12. उक्त स्थापन के सम्बन्ध में नियोजक इस स्कीन के अधीन आने वाले किसी सबस्य की मृत्यू होने पर उसके हकवार नाम निवाधिक वारिसां का बीमाकृत रकाम का संवाय ततारता से और प्रत्येक दका में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के एक माम के भीतर सुनिश्चित करेगा।

[संख्या एस-35014(33)/86-एस . एस . -2]

S.O. 894.—Whereas Messrs. Himachal Pradesh Agro-Industries Corporation Limited Summer Seat Simla-171001, (PN|4001), (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds & Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

## SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Punjab insintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct

- under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be horne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, along with a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are cohanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir nominee of the employee as compensation.
- 8, No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Punjab and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, fixed by the Life frisurance Corporation of India, and the notice is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nomineellegal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014(33)|86-SS-11]

का आ 895: — मैंसर्स आयसर फार्म-मजीतरी ति., प्लोट नं. — 29-30, सैक्टर-11, इण्डस्ट्रीयल एरिया, परवान हिमाचल प्रवेश, (पी. एन. / 6031) (जिसे इसमें इसके परवात उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्म- नारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबन्ध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके परचात उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधाध (2क) को अधीन छूट दिए जाने के लिए आवेदन किया है;

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक अभिवास या प्रीमियमं का संदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामूहिक वीमा स्कीम के अधीन जीवन वीमा के रूप में फायबे उठा रहे हैं। और ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायबे उन फायबों से अधिक अनुकूल हैं जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उवत स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अनुजय है;

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदस्त इक्तियों का प्रयोग करते हुए और इससे उपाबद्ध अनुमृची में विनिध्दिष्ट शर्मी के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की अवधि के लिए उक्त स्कीम के सभी उपदन्धों के प्रवर्ति से छट वेती है।

# अग्सूची

- 1. उद्यत स्थापन के संबंध में नियोजक प्रावैधिक भीवष्य निधि आयुक्त चण्डीगढ़ को एसी विवरणियां भेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरिक्षण के लिए एभी सुविधाएं प्रदान करेगा जो केन्द्रीय गरकार, समय-समय पर निर्विष्ट करे।
- 2. निरोजिक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर मंदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के अधीन समय-समय पर निर्विट्ट करें।
- 3. साम्हिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अंतर्गत लेखाओं का रखा जाना, विवारणियों का प्रस्तृत किया जाना, बीमा प्रीमियम का मंदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारों का संदाय आदि भी हैं, होने वाले सभी व्ययों का बहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा अगुमोवित सामृहिक क्षीमा स्कीम के गिण्मों की एक प्रति, और जब कभी उनमें संशोधन किया जाए, तक उम संशोधन की प्रति तथा कर्म-चारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मृख्य बातों का अनुवाद, स्थापन के सृखना-पट्ट पर प्रदर्शित करेगा।
- है. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियो-जिस किया जाता है तो, नियोजक, सामृहिक बीमा स्कीम के सदस्य के का में उसका नाम त्रक्त दर्ज करेगा और उसकी बाबत आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवर बीमा निगम को संदत्त करेगा।
- 6. यदि उनस स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाये जाते हैं तो, नियोजक सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समृचित रूप से बृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए साम्रहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकृत हों जो उक्त स्कीम के अधीन अनुजेस हैं।
- 7. सामूहिक बीधा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मणारी की मत्या पर इस स्कीम के अधीन संदेय रकम उस रकम से कम है जो कर्मणारी को उस दशा में संदेय होती जब वह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मणारी के विधिक वारिस/नाम निर्देशिती को प्रतिकर के रूप में दोगों रकमों के अन्तर के बरावर रकम का संदाय करेगा।

- 8. सामूहिक बीमा स्कीम के उपदन्धों में कोई भी संबोधन, प्रायेशिक भविष्य निधि आयुक्त चंडीगढ़ के पूर्व अनुमोदन के बिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संशोधन में कर्मचारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो, वहां प्रादेशिक भविष्य निधि आगक्त, अपना अनुमोदन देने में पूर्व कर्मचारियों को अपना दृष्टिकाण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणवंश, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम को उस सम्मूहिक बीमा स्क्रीमा के, जिसे स्थापन पहले अपना चका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्क्रीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायवे किसी गीति से कम हो जाने हैं, तो यह छूट रद्द की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवश, नियोजक नियत तारीक के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे प्रीमियम का सन्दाय करने में असफल रहता है, और पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है। तो छूट रदद की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किये गये किसी व्यतिक्रम की दक्षा में, उन मत सदस्यों के नाम निर्देशितियों या विधिक व्यतिमों को जो यदि यह, स्कृट न दी गई होती तो उक्त स्कीम के अंतर्गत होते, वीमा फायदों के सन्दाय का उत्तर-दिश्यद्ध नियोजक पर होगा।
- 12. उन्हर स्थापन के सम्बन्ध में नियोजक इस स्कीम के अधीन जाने जाने किसी सबस्य की मृत्यू होने पर उसके हकदार नाम निर्देशितयों/विधिक वारिसों को बीमाकृत रकम का संदाय तत्एरता से और प्रस्थेक दशा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के एक मास के भीतर सनिद्वित करेगा।

[संख्या एस-35014(34)/86-एस . एस . -2]

S.O. 895.—Whereas Messrs. Eichier Farm Machinery Linxited Plot No. 29-30. Sector-II Industrial Area, Parwanoo, (HP) (PN/6031). (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds & Miscellaneous Provisions Act. 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act):

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premlum, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

#### **SCHEDULE**

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner. Chaudigarh maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month

- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Gorporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Chandigarh and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any teason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Schem's the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nomineellegal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014(34)]86-SS-JI]

का. अ. 806.—मौसर्स म्पर अलोए कास्ट. प्लीट नं.-62, सैक्टर-6 फरीवाबाद (पी. एन./4884) (जिसे इसमें इसके परचात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्य-चारी अविरुध निधि और प्रकीर्ण उपबन्ध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके परचात उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन छूट दिए लाने के लिए आवेदन किया है;

और केन्द्रीय सरकार का स्माधान हो गया है कि उक्त स्थण्य हे कर्मचारी, किसी पृथक अभि दाय या प्रीमियस का संदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप मों फायदें उठा रहे हैं: और ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदें उन फायदों से अधिक अग्कूल हैं जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जि.से इसमें इसके पश्चात् उवत स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें गनुत्रेय हैं;

अतः, केन्द्रीय सरकार, उन्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रवस्त शिक्तगों का प्रयोग करते हुए और इससे उपाश्रद्ध अनुसूची में विनिधिद्ध शतों के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की अविधि के लिए उक्न स्कीम के सभी उपदस्थीं के प्रवर्तन से छूट देती है।

# अन्मूची

- 1. उदल स्थापन के संबंध में नियोजक प्रावेशिक भवि-च्या निधि आयुक्त फरीवाबाद को ऐसी विवरणियां भेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरिक्षण के लिए ऐसी सुविधाए प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निर्विष्ट करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के अधीन समय-समय पर निर्विष्ट करें।
- 3. सामृहिक बीमा स्कीस को प्रश्नासन में, जिसको अंतर्गत लेखाओं का रखा जाना, विष्टरिणयों का प्रस्तृत किया जाना, बीमा प्रीमियम का मंदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारों का संदाय जादि भी हैं, होने वाले सभी व्ययों का वहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोवित सामृहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें संबोधन किया जाए, तब उस संबोधन की प्रति तथा कर्म-चारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का अनुबाद, स्थापन के सूचना-पट्ट पर प्रदर्शित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियो- जित किया जाता है तो, नियोजक, साम् हिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम त्रन्त दर्ज करेगा और उसकी स्थाबत आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन सीमा निगम को संदत्त करेगा।
- 6. यदि उक्त स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाये जाते हैं तो, नियोजक सामृहिक बीमा स्कीम के अधी। कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समृचित रूप से बिद्ध की जाने की ध्यवस्था करेगा जिसमें कि कर्मचारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकूल हों जो उक्त स्कीम के अधी अनुक्येय हीं।
- 7. सामूहिक बीमा स्कीम में किमी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीन सदेय रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दहा में सदेय होती जब वह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक बारिस/नाम निर्देशिती को प्रतिकर के रूप में दोनों रकमों के अन्तर के बराबर रकम का संदाय करेगा।
- साम् हिक बीमा स्कीम के उपबन्धों में कोई भी संशोधन, प्रावेशिक भविषय निधि आयुक्त फरीदाबाद के पूर्व अनुमोदन के

दिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संशोधन से कर्म-चारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो, वहां प्रावेशिक भविष्य निधि आयुक्त अपना अनुमादन देने से पूर्व कर्मचगरियों को अपना दृष्टिकोण संपष्ट करने का युक्तिस्वस्था

- 9. यदि किसी कारणवर्षा, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम को उस साम्हिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अभीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अभीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रदद की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवस्त, नियोजक उस नियत तारील के भीतर, जो भारतीय जीदन बीमा निगम नियत करे, भीमियम का संवाय करने में अगफल रहता है, और पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है सो छूट रहद की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा श्रीसियम के संदाय में किए एए किसी ज्यतिक्रम की दशा में, उन मृत सदस्यों के नाम निवेदितियों या विधिक वारिसों को जो यदि यह छूट न दी गई होती तो उकल स्क्रीम के अन्तर्गत होते, बीमा फायदों के नदाय का उत्तरदायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के सम्बन्ध में नियोजक, इस स्क्रीम के अधीन आने वाले किसी सदस्य की मृत्य होने पर उसके हकदार नाम निदे कितियों/विधिक वारियों को बीमाक्त रकम का संदाय तत्परता से और प्रत्येक दक्षा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के एक मास के भीतर सूनिश्चिक करेगा।

[सं. एस-35014(35)/86-एम. एस.-2]

S.O. 896.—Whereas Messrs. Super Alloy Cast, Plot No. 62, Sector-6, Faridabad (PN!4884), (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds & Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premlum, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scieme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

# **SCHEDULE**

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Faridabad maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.

- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Faridabad and where any amendment is likely to effect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any leason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nomineellegal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. \$-35014(35)[86-SS-11]

का. आ. 897: — मैंसर्स के. डब्ल्यू. इंजिनियरिंग वर्का (रिजि.), बी-11, फोकल प्वाइन्ट, लुभियाना-141010 (पी.एत./995) (जिसे इसमें इसके परचात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी स्विष्य निधि और प्रकीण उपबंध क्रिंश-नियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके परचार उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधरा (2क) के अधीन छट दिए जाने के लिए आवेदन किया है;

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक जिमदाय या प्रीमियम का संवाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्वीप के अधीन जीवन बीमा के रूप में फायबे उठा रहे हैं और ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायबे उन फायबों से अधिक

बनुकूल हैं जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हे बनुजोय हैं ;

अतः, कोन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपभारा (2क) द्वारा प्रदत्त शिक्तयों का प्रयोग करते हुए और इससे उपाबद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट शतों के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की अविधि के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन में छूट देती है ।

# अनुसुची

- 1. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रावेशिक भाषिष्य निधि आयुक्त चण्डीगढ़ को ऐसी विवरणियां भेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी स्विधाएं प्रदान करेगा जो केंद्रीय सरकार, समय-समय पर निर्विष्ट करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक साम की समाप्ति को 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के अधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करें।
- 3. सामृहिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके जंतर्गत से साओं का रसा जाना, विवरिणयों का प्रस्तृत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारों का संदाय आदि भी है, होने दाले सभी व्ययों का दहन नियोजक बारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित सामूहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें संशोधन किया जाए, तब उस संशोधन की प्रति तथा कमीगिरियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मृख्य बातों का अनुवाद, थायन के सूचना पट्ट पर प्रविकात करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविषय जिला का या उक्त अधिनयम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियो- जित किया जाता है तो, नियोजक, सामूहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसकी नाम गुरन दर्ज करेगा और उसकी बाबत आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संदत्त करेगा।
- 8. यदि उकत स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जाते हैं तो, नियोजक सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में सम्चित रूप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकूल हों जो उक्त स्कीम के अधीन अगृक्रेय हैं।
- 7. सामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यिव किसी कर्मचारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीन संबंध रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस वक्षा में संबंध होती जब वह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक बारिस/नाम निवेधिती को प्रतिकर के रूप में दोनों रकमों के अन्तर के बराबर रक्षम का संबाध करेगा।
- 8. साम्हिक बीमा स्कीम के उपबंधों में कोई भी संशोधन, प्रावेशिक भविष्य निधि आयुक्त चण्डीगढ़ के पूर्व अन्मोदन के बिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संशोधन से कर्मचारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव प्रको की सम्भावना हो, वहां प्रावेशिक

भविष्य निधि आयुक्त, अपना अनुमोदन बने सं पूर्व कार्यचारियों को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त अदसर देगा ।

- 9. यदि किसी कारणवक्ष, स्थापन के कर्मकारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामूहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने बाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रहुष की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवश, नियोजक उस नियत तारील के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करें, प्रीमियम का संवाय करने में असफल रहता है, और पालिसी को व्यवगत हो जाने दिया जाता है तो, छूटरदृद की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के मंदाय में किए गए किसी व्यितिकाम की दशा में, उन मृत सबस्यों के नाम निदेशितियों या विधिक वारिसों को जो यदि यह छूट न दी गई होती तो उदल स्कीम के अंतर्गत होते, बीमा फामदों के मंदाय का उत्तरदायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के सम्बन्ध में नियोजक, इस स्कीम के अधीन आने वाले किसी सदम्य की मृत्य होने पर उसके हकदार नाम निदासित्यों/विधिक वारिकों को बीमाकृत रक्तम का संवाय तत्परता से और प्रत्येक दशाा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रक्तम प्राप्त होने के एक मास के भीतर स्निविच्त करेगा।

[संख्या एस-35014(36)/86-एस . एस . -2]

S.O. 897—Whereas Messrs K. W. Engg. Work (Rcgd.) B-11 Focal Point Ludhiana-141010 (PN/995) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years

# **SCHEDULE**

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Chandigarh maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section  $(3\Lambda)$  of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall desplay on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and

when amended, alongwith a translation of the salient features thereot, in the language of the majority of the employees.

- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance, Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir nominee of the employees as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner Chandigarh and where any amendment is likely to effective adversely the mterest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsible for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs of the decreased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014(36)|86-SS-II]

का. आ. 898.— मैसर्स दिएम. पी. राज्य सहकारों संघ मर्यादित, अपेक्स चैंक बिल्डिंग, टी. टी. नगर, भोपाल (एम. पी./3068) !(जिसे इसमें इसके परचात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपक्ष अधि-नियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके परचात् उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उप-धारा (2-क्र) के अधीन छुट दिए जाने के लिए आजेदन किया है ;

और कोन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थापन के कर्मचारी, किसी पृथक अभिदाय या प्रीमियम का संदाय किए दिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सम्मृहिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में फायवे उठा रहे हैं और ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायवे उन फायदों से अधिक अनुकूल हैं जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अगुओय हैं;

अतः, कोन्द्रीय सरकार, उनंत अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रदत्त शिक्तयों का प्रयोग करते हुए और इसके उपाबद्ध अनुसूची में विनिध्छिट शतों के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की अविध के लिए उक्त स्थीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन में छूट देती है।

# अन्म ची

- 1. उक्त स्थापन के संबंध मं नियोजक प्रावेशिक भाषाया निधि आयुक्त मध्य प्रदेश को ऐसी विवरणियां भेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा करिया निरीक्षण के लिए ऐसी सुविधाएं प्रवान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निर्विध्ट करें।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक सास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के अधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करें।
- 3. सामूहिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अंतर्गत लेखाओं का रखा जाना, विवरिणयों का प्रस्तृत किया जाना. बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारो का संदाय आदि भी है, होने वाले सभी व्ययों का वहन नियोजक क्षारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, कोन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित सामूहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें संशोधन किया जाए, तब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मनारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का अनुवाद, म्यापन के सूचना पट्ट पर प्रदक्षित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उधत अधिनियम को अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सबस्य है, उसके स्थापन में नियो-जित किया जाता है तो, नियोजक, सामृहिक बीमा स्कीम के सबस्य के छप में उसका नाम गुरन्त दर्ज करेगा और उसकी बाबत आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को मंबसा करेगा।
- 6. यदि उक्त स्कीम के प्रधीन कर्मणारियों को उपलब्ध फायदे बकाए जाते हैं तो, नियोजक सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायों में समृष्टित रूप से वृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मणारियों के जिए सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकुल हों जो उक्त स्कीम के अधीन अगुजेय हैं।
- 7. सामृहिक बीमा स्कीम मं किसी बात को होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीन संवाय रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दशा मों संवेय होती जब वह उद्धत स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक्ष द्वारिस/नाम निदंदिती को प्रतिकार के खप में दोनों रकमों के अन्तर के बराधर रकम का संदाय करेगा।
- 8. सामूहिक बीमा स्कीम के उपबंधों में कोई भी संशोधन, प्राविशिक भविष्य निधि आयुक्त मध्य प्रवेश के पूर्व अनुभादन के बिना नहीं किया जाएगा और जहां िकसी संशोधन से कर्मणारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव एडने की सम्भावना हो, वहां प्रावेशिक भविष्य निधि आयुक्त, अपना अनुमोयन देने से पूर्व कर्मणारियों को अपना वृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त अदसर देगा।

- 9. यदि किसी कारणवान, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामृष्टिक भीमा स्कीम के, जिसे स्थापन एहले अपना चुका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अधीन कर्मचारिगों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रहुद की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणदश, नियोजक उस नियत तारीखं के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का संदाय करने में असफल रहता है, और पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है हो, छूट रदाद की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए गए किसी ध्यतिकाम की देशा में, उन मृत सदस्यों के नाम निद्रिशितियों या विधिक वारिसों को जो यदि यह छूट न दी गई होती तो उक्त स्क्रीम के अंतर्गत होते, दीमा फायदों के संदाय का उत्तर दायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के सम्बन्ध में नियोजक, इस स्कीम के अधीन आने वाले किसी सदस्य की मृत्य होने पर उसके हकवार नाम नियं किसियां/विधिक बारिसों को बीमाकृत रक म का संवाय तत्परता से और प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के एक मास के भीतर स्टिश्कित करेगा।

[संख्या एस-35014(37)/86-एस . एस . -2]

S.O. 898.—Whereas Messrs The M.P. Rajya Sahakari Sangh Maryadit Apex Bank Building T.T. Nagar Bhopal (Madhya Pradesh) (MP/3068) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years

#### **SCHEDULE**

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Madhya Pradesh, maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an

- establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Madhyn Pradesh and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nomince Legal heirs of the decreased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014(37)/86-SS-II]

का. आ. 899 — मैंसर्स औं डब्ल्यू एम. बूस कोम्बर्स, जी.टी. रोड, घोरणूर, लुधियाना-3 (भी,एन./125-बी) (जिसे इसमें इसके पश्चात् उबत स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपदंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधरा (2क) के अधीन छूट दिए जाने के लिए दावेदन किया है;

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है क उद्दत स्थापन के कर्मचारी, किमी पथक अभिवाय या प्रीमियम का स्वाय किए दिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं। उरीर ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से अधिक अन्मूल हैं जो कर्मचारी निक्षंप महत्व बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उवत स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अन्तर्भय हैं;

अतः केन्द्रीय सरकार, उकत अधिनियम की धारा 17 की उपभारा (2क) द्वारा प्रदक्त शिक्तयों का प्रयोग करते हुए और इससे उपावद्ध अनुसूची में विनिधिष्ट शतो के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की अधिध के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन से छट देती है।

# अनुस्पी

- 1. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रादेशिक भविष्य निधि आयक्त, चण्डीगढ़ को एसी दिवरणियां भेजेगा और एसे लेखा रक्षेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी ग्विधाएं प्रदान करेगा जो कोदीय सरकार, समय-समय पर निर्विष्ट करें।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक माम की ममाणि के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीय मरकार, उक्त अधिनियम की धारा-17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के अधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करे।
- 3. राम्हिक बीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अंतर्गत से साओं का रसा जाना, विवरणियों का प्रस्तत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारों का संदाय आदि भी है, होने दाले सभी व्ययों का वहन नियोजक द्वारा किया जएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित सामूहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें संदोधन किया जाए, तब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी म्ख्य बातों का अनुवाद, स्थापन के सूचना पट्ट पर प्रदक्षित करना।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भरिष्ण्य निर्धिका या उक्त अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भिवष्य निर्धिका पहले ही सबस्य हैं, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजक, मामूहिक बीमा स्कीम के सबस्य के रूप में उसका नाम तूरना दर्ज करेगा और उसकी दावत आवष्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संबस्त करेगा।
- 6. यदि उयत स्कीम के अधीन कर्मणारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जाते हैं तो, नियोजक सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मणारियों को उपलब्ध फायदों में समृचित रूप से बृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मणारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अनुकृत हों जो उक्त स्कीम के अधीन अग्रोय हैं।
- 7. सामृहिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्य पर इस स्कीम के अधीन संबंध रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दशा में संबंध होती जब बह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक बारिस/नाम निवासिती को प्रतिकर के रूप में दोनों रकमों के अन्तर के बरावर रकम का संवाय करेगा।
- 8. सामृहिक बीमा स्कीम के उपबंधों में कोई भी संशोधन, प्राविशिक भिवष्य निधि आयुक्त, चण्डीगढ़ के पूर्व अनुसायन के बिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संशोधन से कर्मचारियों के हित पर प्रतिकृत पभाव पड़ने की सम्भावना हो, वहां प्रावेशिक भिवष्य निधि आयुक्त, अपना अनुमोदन दोने से पूर्व कर्मचारियों को अपना वृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणगण, स्थापन के कर्सणारी, धारतीय जीवन नीमा निगम की उस साम्हिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्कीम के अधीन कर्मणारियों को प्राप्त होने वाले धायवे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रहुद की ए। सकती है।
- 10. यदि किमी कारणवश, नियोजक उस नियत नारीख के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम

का संदाय करने में असफल रहता है, और पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो छूट रदद की जा सकती है।

- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए गए किमी व्यतिक म की दवा में, उन मृत सदस्यों के नाम निद्वेषितियों या विधिक वारिसों को जो यदि यह छूट न दी गई होती तो उक्त स्क्रीम के अंतर्गत होते, बीमा फायदों के संदाय का उत्तरदायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के सम्बन्ध में नियोजक, इस स्कीम के अधीन आने वाले किसी सदस्य की मृत्यू होने पर उसके हकदार नाम निदें शिनियों/विधिक गारियों को गीमाकृत रकम का संदाय तत्परता से और प्रत्येक दका में भारतीय जीवन बीमा निगम से गीमाकृत रकम प्राप्त होने के एक मास के भीतर सुनिरिच्त करेगा।

[संख्या एस-35014(38)/86-एस . एस . -2]

S.O. 899.—Whereas Messrs O.W.M. Wood Combers, G.T. Road, Sherpur, Ludhiana-3 (PN/125-B) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishmen from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

# **SCHEDULE**

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner. Chandigarh maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts, submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favour-

able to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.

- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Chandigarh and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014(38)/86-SS-II]

का. अ. 900 — मैंसर्स नेवानल फास्टनर्ज प्रा. लि. डवल्पड प्लाट नं. एस-19, इंडस्ट्रीयल एस्टेट, गुन्डी, मद्रास-600032 (टी. एन. /3579) (जिसे इसमें इसके परचाता उक्त स्थान कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीण उगवन्थ अधिनीयम, 1952 (1952 का 10) (जिसे इसमें इसके एस्नाता उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क) के अधीन छूट दिए जाने के लिए शाबेदन किया है;

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उदन स्थापन के कर्मचारी, किसी पथक अभिदाय या प्रीसियम का संदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में 'कायदे उठा रहे हैं और ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदे उन फायदों से अधिक अन्कूल हैं जो कर्मचारी निक्षंप सहब्द बीमा स्कीम 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चाम् उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अन्ज्ये हैं;

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (2क) द्वारा प्रवत्त शिक्तयों का प्रयोग करते हुए और इसमे उपाबद्ध अन्साधी में विनिदिष्टि शतों के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्षे की अविध के लिए उक्त स्कीम के सभी उपबन्धों के प्रवर्तन से हुट देती है।

# अनुस्घी

1. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्रावेशिक भविष्य किथि आयुक्त, तीमलनाडु को ऐसी विवरणियां भेजेगा और ऐसे लेखा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी गविषाएं प्रवान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निर्विष्ट करे।

- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का अत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केंद्रीय मरकार, उक्त अधिनियम की धारा-17 की उपधारा (३६०) के खंड (क) के अविश्व समय-समय पर निर्दिष्ट करें।
- 3. साम्हिक बीमा स्कीम के प्रशासन मो, जिस्के अंतर्गत लेखाओं का रखा जाना, विवरणियों का प्रस्तत किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरीक्षण प्रभारों का संदाय आदि भी है, होने दाले सभी व्ययों का वहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित रामृहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनसें संशोधन किया जाए, तब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का अनुवाद, स्थापन के सुचना पटट पर प्रवर्शित करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी भिष्ठिय निधि का या उक्त अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भिष्ठिय निधि का पहले ही सदस्य है, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजिक, सामृहिक बीमा स्कीम के सदस्य के रूप में उसका नाम तुरन्त दर्ज करेगा और उसकी बाबत आवश्यक ग्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को संदत्त करेगा।
- 6. यदि उक्त स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ाए जाते हैं तो, नियोजक साम्हिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समृचित रूप से बृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों से अधिक अन्कृत हों जो उक्त संतीम के अधीन अन्ज्ये हैं।
- 7. सामूहिक बीमा स्कीम में किसी बान के होने हुए भी, यिव किसी कर्मचारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीन संदेग रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दका में संदेग होती जब वह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के विधिक बारिग/नाम निदें शिती को प्रतिकर के का में दोगो रकमों के अन्तर के बराबर रकम का संदाय करेगा।
- 8. सामृहिक बीमा स्कीम के उपबंधों में कोई भी संशोधन, प्रादेशिक भविष्य निधि आयुक्त, तिमलनाड़ के पूर्व अनुमोदन के बिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी स्शोधन से कर्मधारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो, वहां प्रवेशिक भविष्य निधि आयुक्त, अपना अनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त अवसर देगा ।
- 9. यदि किसी कारणक्षा, स्थापन के कर्मचारी, शारतीय जीवन बीमा निगम की उस साम्हिक बीमा स्क्रीम के, जिसे स्थापन पहले अपना च्का है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्क्रीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रदद की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवश, नियोजक उस नियत तारीस के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का मंदाय करने में असफल रहता है, और पालिसी को ध्यप्यत हो जाने विया जाता है तो, छूट रव्द की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संदाय में किए गए कियो व्यक्तिकम की दशा मों, उन मृत सदस्यों के नाम निवेक्तितियों या विभिक्त वारिसों को जो यदि यह छूट न दी गई होती तो उक्त

स्कीम के अंतर्गत होते, बीमा फामदो के संवाय का उत्तरदायिक नियोजक पर होगा।

'12. उक्त स्थापन के सम्बन्ध में नियोजक, इस स्कीम के अधीन आने वाले किसी सदस्य की मृत्यू होने पर उसके हकदः निमं निदें कि तियों/विधिक वारिसों को बीमाकृत रकम का सदाय तत्परता से और प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन दीमा निगम सं बीमाकृत रकम प्राप्त होने के एक मास के भीतर स्दिस्कित करेगा।

[संख्या एस-35014(39)/86-एम . एर: -2]

S.O. 900.—Whereas Messrs National Fasteners Private Limited, Developed Plot No. S-19, Industrial Estate Guindy. Madras-600032 (TN/3579) (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under subsection (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme):

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years

#### SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Tamil Nadu maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts submission of returns, payment of insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said 1565 GI 85—20

Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.

- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Tam's Nadu and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal heirs of the decreased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014(39)/86-SS-JT]

नई दिल्ला, 19 फरवरी, 1986

का. था. 901.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स इटावा को-प्रापरेरित मोगाइटी लिमिटेड, कोटा, राजस्थान नामक स्थापन मे सम्बद्ध नियोजकों और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस धात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी क्षतिच्य निधि और प्रकीण उपबन्ध प्रधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

श्रतः केन्द्रीय सरकार, उक्त प्रधिनियम, की धारा-। की उपधारा(₄) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए उक्त श्रधिनियम के उपबन्ध उक्त स्थापन को लागु करती है।

[संख्या एस-35019(24)/86-एस.एस.-2]

# New Delhi, the 19th February, 1986

S.O. 901.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Itawa Co-operative Society I imited. Kota, Raiasthan have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act. 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(24)/86-SS-J1]

का. आ. 902.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स अरोग्नप्पा पैन्ट इंडरट्रीज प्लाट नं. डी-16 कुप्पालुर इन्डस्ट्रीयल स्टेट कुप्पालुर अबुरर्ड-6, नाभक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारिय? की बहुसंख्या इस बान पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपजन्ध प्रक्षिनियम. 1952 (1952 को 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लाग किए जाने चाहिए।

श्रत: केन्द्रीय सरकार, उक्त श्रधिनियम की धारा-1 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त एक्तियों का प्रयोग करने ६ए उक्त श्रधिनियम के उपबन्ध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[मंख्या एस-35019(110)/86-एस एस-2]

S.O. 902.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Ariappeo Paint Industries Plot No. D-16, Kappalur Industrial Estate, Maduraich have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Secion 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(110)/86-SS-II]

षा आ . 903.—वेन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैनर्स नैक ए 109, मंगुद्दा फारमर्ग सर्विम को-आपरेटिय मोमायटा लिए, थन्नावरशानलुर मंगुवी-610103 यान्जीयर डिस्ट्रिक्ट नामफ स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस यात पर सहसत हो गई है कि कर्म-चारी भविष्य निधि और प्रकीण उपबन्ध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन का लागु किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम को धारा-। को उपधारा (4) द्वारा प्रवत्त सक्तियों का प्रयोग करने हुए उक्त अधिनियम के उपबन्ध उक्त स्थापन की नागु करती है।

[संख्या एस-35019(111)/86-एस.एस-2]

S.O. 903.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Z. A. 189, Mangudi Farmers Service Co-operative Society Limited Thennavaranadlur Mangudi-610103 Thanjavur District have agreed that the Provisions of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(111)/86-SS-II]

का . आ . 904.— फेन्द्रीय सरकार की यह प्रतीत होता है कि प्लाटीतम जुबली ईन्वैस्टमेंट लि., 903-906, रहेजा चैन्यसं 9वीं मंजिल 213, नारीमन प्यायंट बन्बई-21 और इसकी अहमवाबाद में स्थित शाखाएं नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मवारियों की बहुमध्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्पचारी अधिक्य निधि और प्रकीण उपबन्ध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपवना उक्त स्थापन को लाग् किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की भारा-1 की उपधारा (4) ब्रारा प्रवत्त कितनों का प्रभीत करते हुए उक्त अधिनियम के उपबन्ध उक्त स्थापन को लागु करमें है।

[मंद्रमा एस-35018(4)/86-एस.एस.-३]

S.O. 904.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M. Platinum Jubilee Investment Ltd., 903-906, Rahoja Chambers, 9th Floor, 213. Nariman Point Bombay-21 and its branch in Ahmedabad have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said catablishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

INO. S-35018(4) 86 SS-II)

 आर इसको पी-30/बी, भी आई.टी. राइ, क्षलकत्त-14 स्थित आफिन कामक स्थापन से मम्बद्ध नियोजक और कर्मकारियों का बहुसंख्या इस बान पर सहमत हो गई है कि कर्नकारी भविष्य निधि आर प्रकार्ण उपबन्ध अधिनियम, 1952 (1952 को 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन की लागू किए जोने चाहिए।

अतः केन्द्रीय नरकार, उक्त अधिनियम की धारा - 1 की उपधारा (4) इत्तरा प्रवत्त प्राक्ति में का प्रयोग करते हुए। उक्त अधिनियम के उपबन्ध उक्त स्थापन को लागु करता है।

[मंख्या एस-35017(6)/86-एस.एस.-2]

S.O. 905.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Standard Rubber Manufacturers 1|B-2, Industrial Estate Block-D. Kalyani (Dist. Nadia) including its office at P-30/B, C.I.T. Road, Calcutta-14 have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35017(6)/86-SS-III

का. आ. 906. — मीसर्स एक्सप्रेस न्यूजपेगरस लि., एक्सप्रेसटेट मांऊट रोड, मद्रास-2 (टी. एन./8057) (जिसे इसमें इसके पश्चात् जवत स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 की उपधारा (2क्र) के अधीन छूट दिए जाने के निए आवेदन किया है;

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उकत स्थापन के नियमित कार्मचारी किसी पृथक अभिदाय या श्रीमियम का गंदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की सामृहिक बीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप मी फायदी उठा रही हीं और ऐसे कार्मचारियों के लिए ये फायदी उन फायदों से अधिक अगुकृत हैं जो कार्मचारी निक्षीत सहबद्ध दीमा रकीमी, 1976 (जिसे हासमी इसके पदचात् उक्त स्कीम काहा गया है) के अधीन उन्हें अनुकाय हैं।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उपकार। (2ल) द्वारा प्रदस्त शिक्तयों का प्रयोग कारते हुए और इसमे उपादद्ध अन्सूची में विनिर्धिष्ट वर्तों के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन के नियमित कर्मचारितों को तीन वर्ष की अविषय के लिए उक्त स्थापन के मियामित कर्मचारितों को तीन वर्ष की अविषय के लिए उक्त स्थापन के ममी उपदन्धों को प्रवर्तन में छुट दारी है।

# अन्स्ची

- !. उक्त स्थापन के संबंध में नियोजक प्राविषक भविष्य निधि आयुक्त तिसलनाड़ा को एसी विवरणियां भेजेगा और एसे लेला रखेगा नथा निरिक्षण के लिए एसी स्विधाए प्रवान कारोगा जो कोन्द्रीय सरकार, समय-समय पर निर्विष्ट करें।
- 2. नियोजक, एसे निरीक्षण प्रभागों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 जिन के भीतर संवाय करोगा जो कोन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-17 की उपधारा (3क) के खंड (क) के अधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करों।

- 3. साम्हिक वीमा स्कीम के प्रशासन में, जिसके अंतर्गत लेखाओं का रखा जाना, विवरणियों का प्रस्तृत किया जाता, बीमा प्रीम्यम का संदाय, लेखाओं का अंतरण, निरिक्षण प्रभारों संवाय आदि भी हैं, होने वाले सभी व्ययों का यहन नियोजक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित सामूहिक बीमा स्कीम के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उपमें संशोधन किया जाए, तब उस संशोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसंख्या की भाषा में उसकी मुख्य बातों का अनुदाद, स्थापन के मुखना पट्ट पर प्रदर्शित करेगा।
- 5. शिंद कोई एसा कार्मचारी, जो कर्मचारी भविष्य निधि का या उक्त अधिनियम के अभीन छाट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य ही, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता ही ता, नियोजिक, सामूहिक बीमा स्कीम के सदम्य के रूप में उसका नाम त्रन्त दर्ज करेगा और उसकी बाबत आवश्यक प्रीमियम भारतीय जीवन बीमा निगम को सदस्त करेगा।
- 6. यदि उक्त स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदे बढ़ार जाते हैं तो. नियां जक सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मचारियों को उपलब्ध फायदों में समृक्ति कर से बृद्धि की जाने की व्यवस्था करोगा जिससे कि कर्मचारियों के लिए सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों में अधिक अनुकान हों जो उक्त स्कीम के अधीन अनुक्रेय हैं।
- 7. साम्हिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी, यदि किसी कर्मचारी की मृत्यू पर इस स्कीम के अधीन संदेश रकम उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दशा में संदेय होगी जय वह उक्त स्कीम के अधीन हांग तो, निगोजक कर्मचारी के विधिक वारिस/नाम निदंशिती को प्रतिकार के कृप में दोनों रकमों के अन्तर के बरावर रकम का संदाय करगा।
- 8. सामूहिक बीमा स्कीम के उपबंधों में कोई भी संशोधन, प्रावेशिक भविष्य निधि आयुक्त तिमलनाडु के पूर्व अनुमोदन के दिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संशोधन से कर्म चारियों के हित पर प्रतिकृत प्रभाग पड़ने की सम्भावना हो, वहां प्रावेशिक भविष्य निधि आयुक्त, अपना अनुमादन दोने स पूर्व कर्मचारियों को अपना वृष्टिकोण स्पष्ट करने का यूक्तिग्व अवसर दोगा।
- 9. यदि किसी कारणविश, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम की उस सामृहिक बीमा स्क्रीम के, जिसे स्थापन पहले अपना चुका है अधीन नहीं रह जाते हैं, या इस स्क्रीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने बाल फायदे किसी रीति से कम हो जाते हैं, तो यह छूट रहद की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणवश, नियंजिक उस नियत तारीक्ष के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का संबाय करने में असफल रहता है, और पालिसी को ब्यपण हो जाने दिया जाता है ता, छूट रद्द की जा सकती है।
- 11. नियोजक द्वारा प्रीमियम के संवाय में किए गए किसी व्यक्तिकम की दशा मो, उन मृत सदस्यों के नाम निवासितियाँ का विधिक वारिसों की जो यदि यह छुट न दी गई ह ती तो उन्तर स्कीम के अंतर्गत होतो, बीमा फायदों के संवाय का उन्तर वायित्। नियोजक पर होगा ।
- 12. च बत स्थापन को संबंध मी नियोजक, इस स्कीम की अधीन आन वाल किसी सदस्य की मृत्यु होने पर उसके हक्कावार

नाम निर्देशितयों/विधिक वारिसों को बीमाकृत रकम का संवाय तत्परता से और प्रत्येक दशा में भारतीय जीवन बीमा निगम स बीमाकृत रकम प्राप्त होने के एक मास के भीतर स्निश्चित करेगा।

[संख्या एस-35014(46)/86-एस एस - 2]

5.0. 906.—Whereas Messrs, Express Newspapers Limited, Express Estates, Mount Road, Madras-2 (TN<sub>1</sub>8067) (hereinatter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2B) of Section 17 of the Employees' Provident Funds & Miscellaneous Previsions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinafter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the regular employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Line Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter reterred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (2B) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempt the regular employees of the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

#### SCHEDULE

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Tamil Nadu maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts submission of returns, payment of Insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notice Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Fmployees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme he less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be mode without the prior approval of the Regional Provident Fund Commissioner, Tamil Nadu and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Com-

missioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.

- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominec/legal heirs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

[No. S-35014(46)/86-SS-II]

का. आ. 907. — मैसर्स प्रकाश पाइप्स एण्ड इंडस्ट्रीज लि. 15, के. एस. स्टान, वहली राड, ावलज भवर, डिस्ट्रिक्ट हिसार (हरियाणा), (एच. आर./9838) जोर इसका पदमा टावर राजेन्द्रा प्लेस, नई दिल्ली-110008 में स्थित मुख्य कार्यालय (जिसे इसमें इसके परचात् उक्त स्थापन कहा गया है) ने कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीण उपवन्ध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) (जिसे इसमें इसके परचात् उक्त अधिनियम कहा गया है) की धारा 17 उप-धारा (2-क) के अधीन छूट विए जाने के लिये आवेदन किया है;

जौर केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त स्थाएन के कर्मचारी, किसी पृथक् अभिदाय या प्रीमियम का संदाय किए बिना ही, भारतीय जीवन बीमा निगम की साम्हिक वीमा स्कीम के अधीन जीवन बीमा के रूप में फायदे उठा रहे हैं और ऐसे कर्मचारियों के लिए ये फायदे उब फायदों से अधिक अनुकृत है जो कर्मचारी निक्षेप सहबद्ध बीमा स्कीम, 1976 (जिसे इसमें इसके पश्चात् उक्त स्कीम कहा गया है) के अधीन उन्हें अन्जोय हैं;

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उप-धारा (2-क) द्वारा प्रवत्त कवित्तयों का प्रयोग करते हुए और इससे उपायद्व अगुसूची मी विनिर्िटन्द शतों के अधीन रहते हुए, उक्त स्थापन को तीन वर्ष की अविधि के निए उक्त स्कीम के सभी उपवन्धों के प्रवर्तन से छूट देती है।

# अनुसूची

- 1. उकत स्थापन के सम्बन्ध मो नियोजक प्रादेशिक भीवण्य निधि आयुक्त हरियाणा को ऐसी विवरणियां भेजेगा और ऐसे नेसा रखेगा तथा निरीक्षण के लिए ऐसी स्विधाएं प्रदान करेगा जो केन्द्रीय सरकार, समय-समय एर निर्विट करे।
- 2. नियोजक, ऐसे निरीक्षण प्रभारों का प्रत्येक मास की समाप्ति के 15 दिन के भीतर संदाय करेगा जो केन्द्रीण सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 17 की उप-धारा (3-क) के खण्ड (क) की अधीन समय-समय पर निर्दिष्ट करें।

- 3. साम् हिक धीमा स्थीम के प्रशासन में, जिस्के अन्तर्गत लेखाओं का रखा जाना, विवरणियों का प्रसाद किया जाना, बीमा प्रीमियम का संदाय, लेखाओं का अन्तरण, निरीक्षण प्रभारों संदाय आदि भी है, होने बाले सभी व्ययों का बहुन नियी-जक द्वारा किया जाएगा।
- 4. नियोजक, केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित सामृहिक बीमा स्क्रीम के नियमों की एक प्रति, और जब कभी उनमें संक्री-धन किया जाए, तब उस संबोधन की प्रति तथा कर्मचारियों की बहुसंख्या की भाषा मो उसकी मुख्य बातों का अनुवाद, स्थापन के सूचना-पट्ट एर प्रविद्या करेगा।
- 5. यदि कोई ऐसा कर्मचारी, जो कर्मचारी शिवस्य निधि का या उका अधिनयम के अधीन छूट प्राप्त किसी स्थापन की भविष्य निधि का पहले ही सदस्य हैं, उसके स्थापन में नियोजित किया जाता है तो, नियोजक, सामूहिक बीमा रकीम के सदस्य के त्य मी उसका नाम तुर्न्त दर्ज करेगा और उसकी शाक्त आवश्यक शीमियम भारतीय जीवन नीमा निगम को संदत्त करेगा।
- 6. यदि उद्धत स्कीम के अधीन कर्मशारियों को उनलब्ध फत्यदे बढ़ाए जाते हैं तो, नियोजक सामूहिक बीमा स्कीम के अधीन कर्मशारियों को उपलब्ध फायदों में समृत्रित रूप से मृद्धि की जाने की व्यवस्था करेगा जिससे कि कर्मशारियों के लिए साम्हिक बीमा स्कीम के अधीन उपलब्ध फायदे उन फायदों ने अधिक अन्कृत हो जो उद्धत स्कीम के अधीन उनकारे हैं।
- 7. साम्हिक बीमा स्कीम में किसी बात के होते हुए भी,
  यदि किसी कर्मचारी की मृत्य पर इस स्कीम के अधीन संवेय रकस
  उस रकम से कम है जो कर्मचारी को उस दक्षा में संवेय होती जब
  वह उक्त स्कीम के अधीन होता तो, नियोजक कर्मचारी के
  विधिक वारिस नाम निर्देशित को प्रतिकर के रूप में बोनों
  रक्षमों के अन्तर के बराइर रकम का संवाय करेगा।
- 8. साम्हिक बीमा स्कीम के उपयन्थों में कोई भी संशोधन, प्रादेशिक भिडण्य निधि आयस्त हरियाणा के पर्व अवमोदन के बिना नहीं किया जाएगा और जहां किसी संशोधन से कर्मचारियों के हित पर प्रतिकृत प्रावि पड़ने की स्वभावना हो, इहां प्रावेशिक भिज्ञिय निधि आयक्त, अपना अनुमोदन देने से पूर्व कर्मचारियों को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने का युक्तियुक्त अवसर देगा।
- 9. यदि किसी कारणदश, स्थापन के कर्मचारी, भारतीय जीवन बीमा निगम को उस सामृहिक बीमा स्कीम के, जिसे स्थापन पहले अपना **च्का है अधीन नहीं रह** जाते हैं, या इस स्कीम के अधीन कर्मचारियों को प्राप्त होने वाले फायदे किसी रीदि से कर हो जाने हैं, तो यह छूट रद्द की जा सकती है।
- 10. यदि किसी कारणक्ष, रियोजक उस नियत तारीक्ष के भीतर, जो भारतीय जीवन बीमा निगम नियत करे, प्रीमियम का संदाय करने में असफल रहता है, और पालिसी को व्यपगत हो जाने दिया जाता है तो, छूट रद्द की जा स्कनी है।
- 11. नियोजक द्वारा श्रीमियम के मंदाय में किए गए किसी व्यतिक्रम की दक्षा में, उन मृत सदस्यों के नाम निर्देशितयों या विधिक वारिसों को जो यदि यह छूट न दी गई होती को उकर स्कीम के अन्तर्गत होते, बीमा फायदों के मंदाय का उत्तरदायित्व नियोजक पर होगा।
- 12. उक्त स्थापन के सम्बन्ध में नियोजक, इस स्कीस के अधीन आने वाले किसी सदस्य की मृत्य होने पर उसके हकदार नाम निवेकितियों/विधिक व्यक्तियों को भीयासन उत्कार का जीवार

तत्परता से और प्रत्येक दका में भारतीय जीवन बीमा निगम से बीमाकृत रकम प्राप्त होने के एक भाग के भीतर सुनिश्चित करेगा।

[संख्या एस-35014 (60)/86-एस . एस . -2]

S.O. 907.—Whereas Messrs, Prakash Pipes & Industries Limited 15, K. M. Stone, Delhi Road, Village Mayar Distt. Hissar (Haryana) (HR/9838) including its head office at Padma Tower, Rajender Place, New Delhi-110008, (hereinafter referred to as the said establishment) have applied for exemption under sub-section (2A) of Section 17 of the Employees' Provident Funds & Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) (hereinalter referred to as the said Act);

And whereas, the Central Government is satisfied that the employees of the said establishment are, without making any separate contribution or payment of premium, in enjoyment of benefits under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India in the nature of Life Insurance which are more favourable to such employees than the benefits admissible under the Employees' Deposit Linked Insurance Scheme, 1976 (hereinafter referred to as the said Scheme);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (2A) of section 17 of the said Act and subject to the conditions specified in the Schedule annexed hereto, the Central Government hereby exempts the said establishment from the operation of all the provisions of the said Scheme for a period of three years.

#### **SCHEDULE**

- 1. The employer in relation to the said establishment shall submit such returns to the Regional Provident Fund Commissioner, Haryana maintain such accounts and provide such facilities for inspection, as the Central Government may direct from time to time.
- 2. The employer shall pay such inspection charges as the Central Government may, from time to time, direct under clause (a) of sub-section (3A) of Section 17 of the said Act, within 15 days from the close of every month.
- 3. All expenses involved in the administration of the Group Insurance Scheme, including maintenance of accounts submission of returns, payment of Insurance premia, transfer of accounts, payment of inspection charges etc. shall be borne by the employer.
- 4. The employer shall display on the Notce Board of the establishment, a copy of the rules of the Group Insurance Scheme as approved by the Central Government and, as and when amended, alongwith a translation of the salient features thereof, in the language of the majority of the employees.
- 5. Whereas an employee, who is already a member of the Employees' Provident Fund or the Provident Fund of an establishment exempted under the said Act, is employed in his establishment, the employer shall immediately enrol him as a member of the Group Insurance Scheme and pay necessary premium in respect of him to the Life Insurance Corporation of India.
- 6. The employer shall arrange to enhance the benefits available to the employees under the Group Insurance Scheme appropriately, if the benefits available to the employees under the said Scheme are enhanced, so that the benefits available under the Group Insurance Scheme are more favourable to the employees than the benefits admissible under the said Scheme.
- 7. Notwithstanding anything contained in the Group Insurance Scheme, if on the death of an employee the amount payable under this Scheme be less than the amount that would be payable had employee been covered under the said Scheme, the employer shall pay the difference to the legal heir/nominee of the employee as compensation.
- 8. No amendment of the provisions of the Group Insurance Scheme, shall be made without the prior approval of

- the Regional Provident Fund Commissioner, Haryana and where any amendment is likely to affect adversely the interest of the employees, the Regional Provident Fund Commissioner shall before giving his approval, give a reasonable opportunity to the employees to explain their point of view.
- 9. Where, for any reason, the employees of the said establishment do not remain covered under the Group Insurance Scheme of the Life Insurance Corporation of India as already adopted by the said establishment, or the benefits to the employees under this Scheme are reduced in any manner, the exemption shall be liable to be cancelled.
- 10. Where, for any reason, the employer fails to pay the premium etc. within the due date, as fixed by the Life Insurance Corporation of India, and the policy is allowed to lapse, the exemption is liable to be cancelled.
- 11. In case of default, if any made by the employer in payment of premium the responsibility for payment of assurance benefits to the nominees or the legal heirs of deceased members who would have been covered under the said Scheme but for grant of this exemption, shall be that of the employer.
- 12. Upon the death of the members covered under the Scheme the Life Insurance Corporation of India shall ensure prompt payment of the sum assured to the nominee/legal helrs of the deceased member entitled for it and in any case within one month from the receipt of claim complete in all respects.

INo. S-35014(60)/86-SS-II

# नई दिल्ली, 20फरवरी, 1986

का .आ. 908.--केन्द्रीय गरकार को यह प्रतीत होता है कि मैं ससे एम.आर. साल्क पीएनकर (तिमिलनाडु) नामक स्थापन में सम्बद्ध नियोजका और कर्मनारियों की बहुसंख्या इस बात पर सिहमत हो गई है कि कर्मचारी भ विषय निधि और प्रकीर्ण उपबन्ध अधिनियम, 1952 (1952 की 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा(4) हारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबन्ध उक्त स्थापन को लाग करती है।

[संख्या : एस-35019 (84) / 86-एस एस-2]

# New Delhi, the 20th February, 1986

S.O. 908.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. M. R. Silks, Tiruvarur, Tamil Nadu have agreed that the Provisions of the Employees Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(84)|86-SS-II]

का. आ. 909.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसस इड्डामन्र कोआपरेटिय मिल्क संप्लाई सोसायटी लि , इडामल्य सनरगृडी लाल्क नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और वर्तचारियों की बहुसंद्धपा बात पर सहसत हो गई है कि कर्मचारी मिनट्य निधि और पकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1953 (1952 का 19) के उपबन्ध एक स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अनः बेन्द्रीय संस्कार उक्त अधिनियम की बारा -1 की उपधारा (4) द्वारा प्रदक्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधि नियम के जपबन्ध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[मंख्या एस-35019(86)/80-एस०एम.-2]

S.O. 909.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Melayur Co-operative Milk Supply Society Ltd., Edamelayur, Mannargudi Taluk have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Secion 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(86)/86-SS-II]

पा.जा 910. -केन्द्रीय भरकार को यह प्रतान हाता है कि मैसस दं गवर्नमेंट नरवैण्ड्स को जारेरिय रटोर्म लि. जोड स-63 मलरगुर्ध नामक स्थापन से सम्बद्ध नियाजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हैं। गर्ध है कि कर्मचार भविष्य निधि और प्रकार्ण उपवन्ध अधिनियम, 1952 (1952 को 19) के उपवन्ध उक्त स्थापन की लागू किए जाने चाहिएं।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधि नियम की धारा-1 का उपधारा (4) द्वारा प्रदेश शक्तिया का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबन्ध उक्त स्थापन को लागु करती है।

[मेंब्या एस-35019(85)/86-एस.एस-2]

S.O. 910.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. The Government Servants Co-operative Stores Ltd. 2C, 62 Mannargudi, Madras have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(85)/86-SS-JI]

का. आ. 911.—कंद्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स दशस्य एष्ड सन्स, आंटोमोबाइल एण्ड सिर्वितित इन्जानिस नं. 37-38 नोथं निटरिट कोम्बाकाणम नामक स्थापन से सम्बद्ध नियाजक और कर्मचारियों को बहुसंख्या इस बात पर महगत हो गई है कि कर्मचारि भविष्य निधि और प्रकीण उपबन्ध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबन्ध उक्त स्थापन को सागु किए जाने चाहिए।

.अ.त. केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए उक्त आंधिनियम के उपबन्ध उक्त स्थापन की लागू करत है।

> [संख्या : ए.स-35019(87)/86-एस .एग .-2] ए. के. भट्टराई, अगर सन्बिब

S.O. 911.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Mls. N. Dasarathy and Sons, Automobile and Servicing Engineers No. 37-38. Nageswaran North Street, Kumbakonam-612081 have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019(87)/86-SS-II]

A. K. BHATTARAI, Under Sccy.

नई दिल्ली. 17 फरमर्ग, 1986

গ্রিণর

का. ध्रा. 912.— ध्रम मंत्रालय की प्रश्रिसूचना संख्या एल-31013/6/84- धी-4(ए) दिनाक 16 जनवरी, 1986 में, प्रश्रिसूचना के अंत

में भ्राने वाले मब्दों ''केन्द्रीय सरकार को 26 दिशम्तर, 1936 को प्राप्त हुआ था'' के स्थान पर ''केन्द्रीय सरकार को 26 दिशम्पा, 1985 को प्राप्त हम्रा थां' पढें।

> [मं. एल-31010/6/84 - दी-4 (ए)] फं. जे. दैवधसाद, हेस्क प्रक्रिकारी

New Delhi, the 17th February, 1986

# CORRIGENDUM

S.O. 912.—In the Ministry of Labour Notification No. L-31013/6/84-D.IV(A) dated 16-1-1986, the words appearing at the end of the Notification "was received by the Central Government on 26th December, 1986" may be read as "was received by the Central Government on 26th December, 1985".

[No. L-31013/6/84-D.IV(A)] K. J. DYVA PRASAD, Desk Officer

न ; बिल्ला, 20 फरधरा, 1986

का. था. 913.— श्रीओंगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के प्रनुसरण में, केन्द्रीय सरकार, कावकला पनन त्यास के प्रबन्धतन्त्र में सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मकारों के बीच, प्रमुखंध में निर्दिष्ट श्रीबोगिक दिवाद में केन्द्रीय सरकार श्रीओंगिक प्रधिकरण कलकला के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 3 फरवरी, 1986 को प्राप्त हुआ था।

New Delhi, the 20th February, 1986

S.O. 913.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Calcutta as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the Calcutta Port Trust and their workmen, which was received by the Central Government on the 3rd February, 1986,

CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL AT CALCUTTA

Reference No. 2 of 1982

PARTIES:

Employers in relation to the management of Calcutta Port Trust, Calcutta

AND

Their workman.

APPEARANCES:

On behalf of Imployers—Shri D. K. Mukherjee, Industrial Relations Officer.

On behalf of Workmen—Shri A. K. Mukherjee, Office Secretary of the Union.

STATE: West Bengal.

INDUSTRY: Coal.

AWARD

By Order No. L-32025/3/81-D.IV(A) dated 16th January, 1982, the Government of India, in the Ministry of Labour, referred the following dispute to this Tribunal for adjudication:

"Whether the action of the management of the Calcutta Port Trust in holding a trade test aftesh for the post of 25 tonnes Crane Driver by inviting applications from all the Crane Drivers and Diesel Crane Drivers overlooking the exclusive claim of Shri Lakhan Chandla Das, Diesel Crane Driver, is just and proper? If not, to what relief is the concerned workman emittled?"

2. The facts leading to the dispute and the reference under consideration may be briefly summerised as follows:

There were two posts of 25 tonnes Crane Drivers under the mangaement of Calculta Fort Trust, auginst which two persons were appointed and they worked in two shifts with no one to relieve them on their weekly day of rest or to work against their easuals abonce. There were a number of

Diesel Crane Drivers operating lighter cranes. In the category of Dicesl and Flectric Crane Drivers under the management of Calcutta Port Trust, Shri Mannalal was on the top in point of seniority and four places below has in point of seniority was Shri Lakhan Chandra Das. To solve the problem of working the 25 tonnes crane during the casual absence or weekly day of rest of regular incumbents the management decided to select only incumbents for the above purpose from amongst Diesel and Electric Crane Drivers and to pay them for the day they might be engaged as per Board's resolution No. 1127, special allowance equivalent to the difference between the plesumptive pay in the higher post of 25 tonnes Crane Driver and his own pay in the scale of Diesel/Electric Crane Driver. The point of imscale of Diesel/Electric Crane Driver. The point of importance is that Electric and Diesel Crane Drivers were not substantatively appointed in the post of 25 tonnes Crane Drivers as there was no such further post but workmen of another type called upon to shoulder additional work-load by operating 25 tonnes crane and were additionally remunerated. Applications were invited from the workmen for appearing in a trade test. Financial benefit to attract being small there was lattle response from amongst Diesel and Electric Crane Drivers, particularly from those senior to Shri Lakhan Das. Perhaps they were aware of the Clause 27(q) of Dasgupta Award published in the Gazette of India on 30-1-1958 providing "Any workman declining to shoulder additional responsibility shall be passed over but his seniority for the purpose of normal promotion shall not be affected". On 31-7-1973 another notice was issued. Shri Lakhan Das made an application on 2-8-1973 in which he expressed his willingnes for being trade tested. His trade test was held on 16-8-1973 by a competent body and he succeeded in the test. Be it mentioned here that Electric and Diesel Crane Drivers senior to Shri Lakhan Das did not apepar in that test. During the period of suspension of a regular incum-ent of the post of 25 Tonnes Crane Drivers from 29-7-1973 to 6-11-1973. Shri Lakhan Das operated 25 tonnes crane to cain additional wages as noted earlier. During the absence of the 25 Tonnes Crane Driver on medical ground from 16-7-1979 to 13-8-1979 and again from 23-8-1979 to 26-9-1979 Shri I akhan Das again operated 25 tonnes crane and carned additional wages. He was ordered to work on 25 tonnes crane on a temporary arrangement till the vacancy in the post of 25 Tonnes Crane Driver was filled up on 9-4-1980. It was made clear that this temporary arrangement would not give rise to any special claim to the post he was called upon to work in.

Subsequently the management decided to fill up the post of 25 Tonnes Crane Driver by promotion after holding a trade test on the basis of the principle of Seniority cum Suitability and fixed 11-8-1980 for holding the trade test. Shri Lakhan Das however protested against the holding of the trade test by a letter dated 10-9-1980. He contended that having worked in the post of 25 Tonnes Crane Driver previously he had proved and demonstrated his suiabitlity for the post and he had exclusive and irresistable claim to the post to which he could be promoted with every justification. Shri Mannalal however appeared in the trade test held on 11-9-1980 and succeeded therein. Shri Lakhan Das did not appear in the said trade test. Shri Mannalal was appointed to the resultir post of 25 tonnes Crene Driver in the pay scale of Rs. 450-793 with effect from 4-10-1980. Considering the circumstances of the case and performance of Shri Das in post of 25 tonnes Crane Driver earlier Shri Das was also appointed in a Supernumerary post of 25 tonnes Crone Driver in the pay scale earlier noted with effect from 4-10-1980. Shri Lakhan Das is still not satisfied on his behalf his union raised an industrial dispute in terms noted earlier.

3. From the narration of facts it is abandently clear that Shri Lakhan Das operated the 25 tonnes crane after proving his efficiency in a trolo fest but he did so only in the casual absence or absence otherwise of the regular incumbent of the nost and for this he was paid additionally. He was not called upon to office to in the post of 25 tonnes Crane Driver with an assurance of promotion to the said post. The higher wages Shri Lakhan Das earned by shouldering duties in addition to the normal duties attached to his own post did not motivate Crane Drivers senior to him to approar in the trade test held on 16-8-1973. The question is: Did Shri Lakhan Das by operating 25 tonnes Crane at various

times and earning higher wages lay foundation to his exclusive claim to the regular post of 25 tonnes Crane Driver by promotion? The quertion must be answered in negative. No one held out the assurance to Shri Lakhan Das that he would be appointed to the regular post to 25 tounes Crane Driver live promotion, whenever such post would full vacant. In the letter dated 9-4-1980 addressed to Shri Lakhan Das the Engineer-in-Charge made it clear that the temporary arrangement persuant to which Shri Das was called upon to work or 25 tonnes crane till the vacancy was filled up would not give rise to any special claim of Shri Day to the above nest. So by no stretch of imagination it can be said that the claim of Shri Lakhan Das to the post of 25 tonnes Crene Driver was overlooked by the management. It must be said that the management in the instant case acted foirly and they gave due consideration to Shri Lakhan Das's operating 25 tonnes Crane before regular filling up of the post by Mannaïal on promotion, subsequent to a trade test, with effect from 4-10-1980 as the management created a supernumarary post with the same pay scale with effect from 4-10-1980 to accommodate Shri Lakhan Das. For the shake of descency, discipline and fairness, Shri Das should have appeared in the trade test held on 11-9-1980, particularly in view of the provisions of Clause 27 of Dasgupta Award. There was every possibility of his qualifying in the said test. If the authorities after holding the test found Shri Das deficient by few points in respect of seniority compared to Manualal they could have compensated him by giving weightage on the score of suitability. He would have won appreciation of the authorities by demonstrating his sense of responsibility by operating the 25 tonnes crane during the casual absence of the regular incumbents. I believe there was every possibility of Shri Lakhan Das stealing a march over Manualal on the test of suitability. Shri Takhan Das absented himself from the trade test and denied the management the opportunity as noted above. Mannalal cannot be deprived of the post he nas been appointed in. In other words Shri Mannlal cannot be given supernumarary nost and Shri Das cannot be appointed to the regular post of 25 tonnes Crane Driver although both of them were promoted to the post on an from the same date i.e. 4-10-1980. The season is that Shri Manulal is not a party to the present proceeding and no order can passed to his prejudice herein.

4. In any way the issue refrered to this Tribunal must be answered in the affirmative. The action of the management of the Calcutta Port Trust was just and proper. No injustice was coused to Shri Lakhan Das and it is further to be noted that Shri Lakhan Das is not entitled to any relief.

An Award may be made and published accordingly.

Dated, Calcutta, The 24th January, 1986.

> N. G. CHOUDHURY, Presiding Officer INO L-32025/3/81-D.IV(A)Pt.1

का. था. 914 — श्रीद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के प्रनूसरण में, केरदीय संस्कार, कलकत्ता पणन न्यास के प्रवंधनत्त्व से सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मकारों के बीच, प्रनूबन्ध में निर्दिष्ट श्रीद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार श्रीद्योगिक श्रिकरण, कलकत्ता के पंताट को प्रज्ञाणित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 3 फरवरी, 1986 को प्राण्त हुआ था।

S.O. 914.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Calcutta as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the Calcutta Port Trust and their workmen, which was received by the Central Government on the 3rd February, 1986.

# CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL AT CALCUTTA

#### Reference No. 52 of 1983

#### PARTIES:

Employers in relation to the management of Calcutta Port Trust.

#### AND

Their Workmen.

# APPEARANCES:

On behalf of Employers—Shri D. K. Mukherjee, Industrial Relations Officer.

On behalf of Workmen-Shri A. K. Mukherjee, Office Secretary of the Union.

STATE: West Bengal.

INDUSTRY: Coal.

#### AWARD

The Government of India, Ministry of Labour and Rehabilitation (Department of Labour), by Order No. L-32012/6/83-D.IV(A) dated 30th September, 1983, referred the following dispute to this Tribunal for adjudication:

"Whether the action of the management of Calcutta Port Trust in relation to Chlef Mechanical Engineer, in denying promotion of Tindal to Shri Tribeni Ram Ahir is justified? If not, to what relief the concerned workman is entitled?"

- 2. There is no dispute that posts of Tindals under the Calcutta Port Trust are filled up by promotion of persons from the ranks of Rigging and Slinging Khalasies on the basis of a prescribed trade test. The basis of promotion is not only trade test but also seniority-cum-suitability. Sarboshri Sarju, Babulal Shaw, Gopi Nunia, Tribeni Ram Ahir, Sk. Rahamat and Bharat Routh were Rigging and Slinging Khalasies. In 1980 a trade test was held for selecting Rigging and Slinging Khalasies. In the test, amongst the 6 Rigging and Slinging Khalasies earlier named 5 appeared, only Shri Tribeni Ram Ahir did not appear in the test. It is alleged he had gone to his native village with leave sanctioned. On the basis of the result of the trade test published by means of Ext. M-3, three Rigging and Singing Khalasies, namely, Sarboshri Sarju, Babulal Shaw and Gopi Nunia were promoted to the post of Tindal. Although Bharat Routh and Sk Rahamat passed the trade test they could not be simultaneously promoted for want of vacancies, but they were kept waiting after including their names in a panel framed for the purpose. As further vacancies arose another trade test was held between July to October, 1981. In the trade test held besides Shri Bharat Routh and Sk. Rahamat Shri Tribeni-Ram Ahir succeeded and in the result published [Ext. M-1 (B)] Shri Bharat Routh and Sk. Rahamat were placed above Shri Tribeni Ram Ahir in terms of the Award of Dasgupta Tribunal. In the second half of 1981 two vacancies occurred in the post of Tindal, Shri Bharat Routh and Sk. Rahamat were absorved in the said two posts on the basis of their result in the two trade tests and Shri Tribeni Ram Ahir's name was shown as waiting for promotion. Shri Ahir felt apprieted as promotion was denied to him to the post of Tindal. The expression of grievance by Shri Tribeni Ram Ahir and espousal of his cause by Union led to the present reference being to this Tribunal.
- 3. To justify its giving promotion to Shri Bharat Routh and Sk. Rahamat to the post of Tindal, the management relies on clauses (f) and (g) of Dasgupta Award marked Ext. M-4. The relevant clauses are quoted below:—
  - (f) If at a particular test more workmen than what are required are found suitable for a job, those who could not be taken in at the time shall be nlaced in a waiting list in order of seniority and shall be called unon to fill up vacancies as and when they erron up in future. A list of successful candidates indicating the names of those have been taken in and of those who are in the waiting list shall be pasted on the Notice Board of the Recruiting Office.

- (g) A workman once passed over shall not be debarred permanently for promotion. He may be admitted to a subsequent test and if he passes the test, he will be considered for promotion only after all the persons who had passed the previous tests as well as those who are senior to him and have qualified at the subsequent test have been absorbed.
- 4. There is no dispute that Shii Tribeni Ram Ahir did not appear in the trade test held in May 1980 wherein three Rigging and Slinging Khalasies senior to him appeared and qualified, namely, Shri Sarju, Shri Babulal Shaw and Shri Gopi Nunia and they were promoted to the post of Tindal. There is again no dispute that two Rigging and Slyinging Khalasies, namely, Sk. Rahamat and Shri Bharat Routn junior to Shri Tribeni Ahir appeared in the said trade test and succeeded but for want of vacancies they could not be promoted to the post of Tindal and were as such shown in the Panel of wating khalasies. In the trade test held in 1981 all the three Rigging and Slinging Khalasies, namely, Shri Tribeni Ram Ahir, Sk. Rahamat and Shri Bharat Routh succeeded, yet Sk. Rahamat and Shri Bharat Routh succeeded, yet Sk. Rahamat and Shri Bharat Routh were promoted to the posts of Tindal, vacancies being immediately available, but Sri Tribeni Ram Ahir was shown as waiting for promotion. Clause (g) of the Dasgupta Award quoted above first of all lays down that a workman once passed over shall not be debarred permanently for promotion. This sentence does not apply to the facts of the present case. Shri Tribeni Ahir was not passed over in as much as Shri Bharat Routh and Sk. Rahamat were not appointed to the posts of Tindal on the basis of trade test held in May 1980. Assuming for argument's shake that Shri Ahir was passed over, the subsequent sentence in clause (g) provides that he may be admitted to the subsequent test and if he passes the test he will be considered for promotion. Clause (g) adds that he will be considered for promotion only after all the persons who had passed previous tests as well as those who are senior to him have qualified at the subsequent test have been absorbed.

Reading the entire clause (g) with care we gather that (1) a senior workman in order to reap the benefit of clause (g) must have been passed over once only and not for more than once; (2) workmen fit for appointment to promotion posts, passing over a senior workman, are required to qualify in two trade tests, the previous one in which the senior workman did not appear and the immediately subsequent trade test in which along with them the senior workman appeared and qualified; (3) if the workmen who succeeded in the previous test and the subsequent test are senior to the passed over workman (in the sense that he did not appear in the previous trade test) they will be absorbed first in the promotion post; if they are not senior to the passed over workman no question of their being absorbed in any promotion post earlier than the passed over workman would arise and (4) if a workman junior to the passed over senior workman qualified in the previous test and vacancy in the promotion post occurred necessitating his appointment to the promotion post prior to holding a subsequent test, the junior workman will not acquire a vested right to the promotion post; for the period he worked in the higher post, he will temporarily receive pay attached to the post,

5. If we apply this part of the above clause to the three Rigging and Slinging Khalasies, namely. Shri Tribeni Ram Ahir, Shri Bharat Routh and Sk. Rahamat, we teach the conclusion that to have an edge over Shri Ahir in the matter of promotion to the post of Tindal they were required to Shri Ahir and (ii) they qualifications, namely. (i) they were senior to Shri Ahir and (ii) they qualified at the two tests. Shri Bharat Routh and Sk. Rahamat do not fulfil first qualification noted above although they fulfilled second qualification. We cannot forget as deposed to by MW-1. Shri A. P. Ghosh that the basis of promotion were the passing of the trade test and also seniority-cum-suitability. In the aforesaid circumstances there is no escape from the conclusion that Shri Tribeni Ram Ahir was unjustly denied promotion to the post of Tindal wherein workmen junior to him were promoted and the action of the management of Calcutta Port Trust in denying Shri Tribeni Ram Ahir the nost of Tindal is unjustified. To remedy the above wrong Shri Tribeni Ram Ahir should have relief by way of promotion to the nost of Tindal from the date Shri Sk. Rahamat his immediate junior was promoted to the post of Tindal.

The Questions referred to this Tribunal are answered accordingly and an Award be made and published.

Dated, Calcutta,

The 24th January, 1986.

Sd/-

N. G. CHOWDHURY, Presiding Officer [No. L-32012/6/83-D.IV(A)]

का भा. 915.—भौधांगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के भनुसरण में, केन्द्रीय सरकार, कलकत्ता परान स्थाम के प्रबन्धतन्त्र से सम्बद्ध नियोजकों भौर उनके कर्मकारों के बीच, भनुबंध में निर्दिष्ट भौधोगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार श्रीद्योगिक श्रधिकरण, कलकत्ता के पंचाट की प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 3 फरवरी, 1986 को प्राप्त हुआ था।

S.O. 915.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Calcutta as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the Calcutta Port Trust and their workmen, which was received by the Central Government on the 3rd February, 1986.

# CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL,

#### AT CALCUTTA

#### Reference No. 15 of 1981

PARTIES:

Employers in relation to the management of Calcutta Port Trust, Calcutta.

#### AND

Their Workmen.

# APPEARANCES:

On behalf of Employers—Shri D. K. Mukherjee, Industrial Relation Officer.

On behalf of Workmen-Shri A. K. Mukherjee, Office Secretary of the Union.

STATE: West Bengal.

INDUSTRY: Port.

# AWARD

By Order No. L-32011/17/80-D.IV(A) dated 26-3-1981 the Government of India, Ministry of Labour referred the following dispute to this Tribunal for adjudication;

"Whether the action of the management in regard to fixation of stages for trade tests at the end of the two scales, namely, Rs.425—566 and Rs. 465—605 pertaining to skilled artisans is just and proper? If not, to what relief are the concerned workmen entitled?"

2. I notice that the reference of the dispute has been made by the Central Government to this Tribunal under section 10(i)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947. Such a dispute must relate to any matter appearing to be connected with or relevant to a matter specified in the Second Schedule or the Third Schedule to the aforesaid Act. To my mind the subject matter of reference has no connection with nor relevant to any of the matters mentioned in the second or Third Schedule of the Act. The reference therefore is incompetent and the entertainment of the reference by this Tribunal would be without jurisdiction. Such a situation gould be avoided if the officers of the Central Government had applied their mind to the subject matter of the reference and read the items mentioned in the Second and Third Schedules of the Act. However, on this preliminary ground I am not rejecting the reference since the reference is pending for quite a long time; further in view of the definition of industrial dispute given in section 2(k) of the Industrial Disputes Act, words used in section 10(d) and items mentioned in Second and Third Schedules to the Act it is possible to take a broad view that reference of the dispute to this Tribunal is justified.

3. The undisputed fact is that the skilled artisans holding posts coming under the scheme of skilled scales under the Calcutta Port Trust have been enjoying three short scales as noted in Annexure 'C' to the employers written statement. What was the earlier and what is the present scale according to the recommendation of Wage Revision Committee have been given in the said annexure. The three scales have always been integrated, they could be enjoyed by an artisan in course of his carrier under the Calcutta Port Trust. Original three scales are as follows: (i) Rs. 150-8-254. Wage Revision Committee recommended revision of these scales as follows (i) Rs. 400-7-435-EB-8-515-EB-10-565, (ii) Rs. 420-7-455-EB-9-545-10-595 and (iii) Rs. 425-8-465-EB-10-535-12-655. It was further modified w.e.f. 1-8-1977 as (i) Rs. 425-11-436-EB-13-566, (ii) Rs. 465-13-530-EB-15-605 and (iii) Rs. 535-15-655.

From Annexure 'A' to the written statement of the employer it seems that to traverse the three time scales an artisan had to serve for at least 19 years formerly. At present he will require only 17 years time to cover the scales. Be that it may the important point is that even earlier workmen had to undergo a trade test at the end of the first stage of the time scale to get the benefit of the second stage of the time scale and he had to appear in a further trade test at the end of the time scale of the second stage to reach the third stage of the time scale. Consequent to the revision of the pay scale by the Wage Revision Committee from 1-8-1977 the management has decided that workmen will have to appear in the trade tests at the end of the first stage of the time scale, namely, Rs. 425-566 and at the end of second stage of the time scale, namely, Rs. 465-605. Such trade tests were held at the end of the first and second stage of the time scale even before modification of the pay scale by the Wage Revision Committee. So there is nothing unfair, unjust or new in prescribing holding of trade tests at the end of the two stages.

But on behalf of the union it is contended that if a workman is trade tested at the stage he reaches Rs. 566 he will be fitted in the second stage at Rs. 575 and he will continue to get a benefit of Rs. 9 per month by way of usual annual increment in the second stage although during the first stage of the time scale he was enjoying annual increment of Rs. 13 n.m. It is further argued that when a worker having qualified at the trade test at the end of the second stage of the time scale reaches the the third scale and gets benefit of Rs. 5 n.m losing, as Rs. 10 his usual annual increment at the initial stage of third scale and at the second stage his annual increment is Rs. 15 per month. On behalf of the union it is contended because of this loss to the workmen the fixation of the trade tests at the end of the two scales as noted in the schedule by the management is unjust and improper. Such a plea has no merit. Such trade tests were hold at the end of the two stages of the time scale even before revision of the pay scale. Further I have indicated that some benefit has been conferred on the workmen by enabling them to traverse the entire pay scale within a shorter period than they used to do prior to revision. Further I may note that at the initial stage of the time scale annual increments are higher to inspire workmen to acquire skills and aptitude. At the second and third stages of the time scales the workers become experienced and habituated worker anxious to reach the top of the scale as early as they can and to reach the ton of the scale they may forego enhanced annual increment at the two subsequent stages of the scale.

4. I am therefore to hold that the management did not act unjustly or impropertly in fixing stages for trade test as the end of the two scales as noted in the order of reference. The question referred to the Tribunal is framed in the affirmative the workmen concerned is not entitled to any relief.

An award accordingly may be made and published. Dated, Calcutta,

The 21st January, 1986.

N. G. CHOWDHURY, Presiding Officer
[No. 1.-32011/17/80-D-IV(4)]
K. J. DYVA PRASAD, Desk Officer

# नक्षे दिल्ली, 18 फारवरी, 1986

का आ 916 - अत्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण मों, कोन्द्रीय सरकार भिलाई स्टील प्लीट, भिलाई, दुर्ग (म्प्ट्य प्रदेश) के प्रबंधतंत्र से सम्बद्ध नियोजको और उनके कर्मकारों के बीन अनुबंध में निर्दिष्ट औद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार अद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार अद्योगिक विवाद को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 5-2-86 को प्राप्त हुआ था।

# New Delhi, the 18th February, 1986

S.O. 916.—In pursuance of Section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Jabalpur, as shown in the Annexure, in the Industrial Dispute between the employers in relation to the management of Bhilal Steel Plant, Bhilal, Durg (MP) and their workmen, which was received by the Central Government on the 5-2-1986.

BEFORE SHRI V. S. YADAV, PRESIDING OFFICER, CENTRAL GOVT. INDUSTRIAL TRIBUNAL-CUM-LABOUR COURT, JABALPUR (M.P.)

Case No. CGIT|LC(R)(65)|1984.

#### PARTIES:

Fmployers in relation to the management of Bhilal Steel Plant, Bhilai, Distt. Durg (M.P.) and their workman, Shri P. K. Chaki, H. S. Machinist (S.6) represented through the Sanyukta Khadan Mazdoor Sangh (INTUC) P.O. Dallirajhara District Durg (M.P.)

#### APPEARANCES:

For Union.—Shri C. R. Bakshi,

For Management.—Shri D. C. Henri, Senior Law Officer.

INDUSTRY: Iron Ore Mine DISTRICT: Durg (M.P.)

# AWARD

#### Dated, January 23rd, 1985

This is a reference made by the Government of India fu the Ministry of Labour for adjudication of the following dispute vide its Notification No. L-26012(1)|84-D.III.B dated August 10, 1984:—

"Whether the action of the management of Bhilai Steet Plant in superseding Shri P. K. Chaki, H. S. Machinist (S-6) making Shri G. N. Dixit, Material Chager (S-5) senior to him for promotion to the post of Chargeman (Mech), is justified? If not, to what relief is Shri P. K. Chaki entitled?"

2. Facts leading to the present reference are that as on 31-8-1970 Shri P. K. Chaki and Shri G. N. Dixit were respectively in the pay scale of Rs. 156-221. Consequent upon the general wage revise both the workmen were allowed the then S-5 grade as on 1-9-1970. That in the year 1974 Shri P. K. Chaki was promoted as highly skilled Fitter in the revised pay scale of S-6 while Shri G. N. Dixit who was junior to him remained in S-5. According to line of promotion existing prior to 26-2-1980 the following categories of workmen employed in N-5 grade were eligible for promotion to the post of either highly skilled Craft Category or Chargeman Grade III i.e. S-6 in the grade of Rs. 536-894:—

Category		Grade
1	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	2
1 Fitter (Mech.) 2. Welder/Gas Cutter 3. Rigger 4. Machinist/Turner 5. Blacksmith	}	S-5 (R°. 490-717)

Whereas for promotion to the post of Chargeman passing of prescribed trade test was necessary and promotion to the highly skilled category was made subject to passing the skill evaluation test. While the other two categories of workmen having S-5 grade viz. HSA & Material Chaser were eligible for promotion to S-6 grade. In other words whereas the Craft Category had the avenue of promotion both to the post of Chargeman as well as highly skilled category S-6 grade the isolated category of H.S.A. and Material Chaser had only one avenue of promotion to the Chargeman post Grade III.

- 3. In the year 1974, 17 workmen employed in different Craft Category in S-5 were called for trade test in the month of July, 1974 for the purpose of testing suitability for the post of Chargeman Gr. III (S-6). Seniority position of Shri Chaki was seventeenth. According to available vacancies of senior post five persons were promoted as Chargeman Gr. III who were senior to Mr. Chaki. In the month of December, 1974 some vacancies were available at S-6 grade on highly skilled Craft Category. Shri Chaki was offered S-6 grade, he appeared in the skilled evaluation test and passed. Accordingly he was promoted in highly skilled Mechanic Grade in S-6 and he accepted the same with effect from 31-12-1974.
- 4. That an element of supervision was involved in the post of Chargeman S-6. While the post of highly skilled Fitter (S-6) was non-supervisory. In view of this, a supervision clash was foreseen due to the fact that the senior workman was likely to be supervised by the Chargeman Junior person. Therefore to remove this ridiculous and anamolous position a dispute was raised by the said recognised Union and an Agreement was arrived before the Conciliation Officer under Sec. 12(3) of the I.D. Act between the S. K. M. Sangh, horeinafter referred to the Union, and the management of Bhilai Steel Plant, hereinafter referred to as the management, on 26-2-1980, extract of which is being reproduced below:—
  - (1) "It is agreed that in the event of a post of Chargeman S-6 falling vacant in any discipline where the posts of Highly Skilled artisans also exists, the highly skilled workmen in S-6 will be considered first, for redesignation as Chargeman in the same grade in S-6 after fulfilling the necessary conditions of Trade Test etc., before the workmen in S-5 categories are considered for the same.
  - (2) It is agreed that the L.O.P. will stand modified as above.
  - (3) It is agreed that this agreement will come into force with immediate effect.
  - (4) It is agreed that the settlement will be implemented on or before 31-8-80.
  - (5) It is agreed that the implementation report will be sent to the A.L.C. (c) Rainur on or before 15-4-1980, failing which it shall be presumed that the settlement has been fully implemented."

The above agreement was to come into effect immediately as per Clause 3 of the Agreement or was to be implemented on or before 31-3-1980.

- 5. It appears that some difficulty cropped up and as a result of discussion held by the management and the said Union on 29-4-1980 and 14-5-1980 a note of discussion was recorded to the following effect:—
  - "Whereas certain clarification are required for implementing the said agreement, the matter was discussed between the parties at Bhilai on 29-4-80 and on 14-5-80 and it is agreed as follows:—

## (1) Seniority:

Any Highly Skilled workman, who opts for redesignation as Chargeman would count his seniority in the cadre only from the date of such redesignation, as per rules.

## (2) LOP:

The Material Chaser and HSA in \$-5 grade are already eligible for the post of Chargeman (S-6)

as per the existing LOP. It is hereby agreed that Material Chaser, HSA or any such other isolated posts would be considered for promotion to the post of Chargeman at a time when they would have otherwise become eligible for promotion to this post had the agreement of 26-2-1980 have not come in vogue. At the time when his turn in the LOP come, a post of Chargeman would be notionally made available from amongst the total number of Chargeman HS workmen for his promotion."

- 6. Shri Chaki who was holding S-6 grade as highly skilled Machinist was given an option of redesignation as Chargeman along with the other workmen. He accepted the above option vide his application dated 17-8-80 stating that he has already passed the trade test and he is willing to accept the terms and conditions i.e. his seniority in the cadre of Chargeman (S-6) will be counted from the date they are so redesignated. The previous service in the same grade will not be counted towards seniority for further promotion in S-7 grade etc.
- 7. The crucial question as per the above narration cropped up at this stage. According to the workman, Shri Chaki, the management did not put the conciliation settlement in operation knowingly and deliverately and his option was not considered by the management deliberately till 31-10-1981. In the meantime the junior workman, Shri G. N. Dixit, who was in S-5 grade till 19-12-1980 was promoted to S-6 grade as Chargeman with effect from 20-12-1980. As per the settlement dated 26-2-1980 Shri Chaki should have been considered for redesignation as Chargeman as on 17-8-1980 instead of waiting till Shri Dixit was promoted on 20-12-1980. He was redesignated after ten months only on 21-10-1981.
- 8. That service condition and the right confirmation of the workman through conciliation settlement on 26-2-1980 should not have been brushed aside on the mere record note of discussion since the parties to record note of discussion had no right or jurisdiction to give clarification or interpretation of the same and the management had no privilege to take shelter of record note of discussion on 14-5-1980 in preference over the conciliation settlement dated 26-2-1980 and discriminate not only him but also 52 other workers who have been superseded by Shri G. N. Dixit.
- 9. On the other hand, the case of the management is that the conciliation settlement dated 26-2-1980 was modified by the parties to the agreement and signed by them on 14-5-1980 to the effect that on vacancy of Chargeman Gr. III (N-6) became available, highly skilled workman in S-6 grade were to be first considered for redesignation as Chargeman in Gr. 6 and those of highly skilled workmen who may opt for redesignation as Charge Gr. 6 was to count his seniority on such redesignation.
- 10. Thus the bone of contention is narrowed down in brief compass to the Conciliation Settlement dated 26-2-1980 and the record note of discussion dated 14-5-1980 and their validity inter se.
- 11. I have already reproduced the Settlement in Conciliation dated 26-2-1980 that in the event of post of Chargeman falling vacant in any discipline where any post of highly skilled Artisans also exist the highly skilled workmen in S-6 will be considered first for redesignation for highly skilled post as Chargemen after fulfilling the necessary condition of trade test before the workmen S-5 categories are considered for the same.
- 12. This is crystal clear and it requires no interpretation that Chargemen of S-5 category like Mr. Dixit are to be considered for promotion after the highly skilled workmen in C-6 like Mr. Chaki are redesignated as Chargemen in the same grade. It is to be further noted that this Agreement was to come into effect immediately as per Clause 3 of the said Agreement and it was to be implemented on or before 31-3-1980. The workman, Shri Chaki had passed his trade test according to the pleadings of the management on 14|15-1-1980 as he has also stated in his option application Ex. M/7 dated 17-8-1980. This happened before Mr. Dixit's promotion became due on 20-12-1980. The

contention of the management in this regard is that the sentority position of Mr. haki was seventeenth in his grade so he could not have been promoted when there were no vacancy for him. To my mind, this is no excuse. Once the Conciliation Settlement had arrived at it is not only binding as a Settlement between the employer and the workmen under Sub-section (1) of Sec. 18 but it is binding on all the parties to Industrial Dispute as has been laid down in Sub-section (3) of Sec. 18 of the Industrial Disputes Act. This view of mine is also fortified from the pronouncement made in the case of Mis. Tata Chemicals Ltd. Vs. Workmen (AIR 1978 SC 828).

- 13. The second limb of the contention of the management is that the parties to the conciliation settlement had clarified the interpretation of the Settlement dated 26-2-1980 vide record note of discussion dated 14-5-1980. Therefore it is also binding between the parties since Shri C. R. Bakshi representative of the workmen who was a party to the said Settlement dated 26-2-1980 was also a party to the clarification. I am unable to agree that the Settlement in conciliation will over-ride any subsequent private settlement between the parties either by way of interpretation or by way of modification.
- 14. However, assuming for the sake of arguments that the record note of discussion is only a clarification (which it is not, since it is a modification). Even then to my mind the position in the instant case ought not to have differed. The modification under the line of seniority (LOP) is that highly skilled workman who opts for redesignation is Chargeman could count his seniority in the cadre from the date of such redesignation as per rules. I have already pointed out that Shri Chaki had passed his trade test on others on 8th August 1980 (Ex. M|6). He accepted the option vide his letter dated 17-3-1980 (Ex. M|7). Now as already pointed out at this stage question of promotion of Shri G. N. Dixit had not arisen. He became eligible for promotion only on 20-12-1980 i.e. nearly after four months of the offer and acceptance of the redesignation by Shri Chaki. If he was redesignated at that stage even according to the record note of discussion he would have got seniority from that date i.e. before Mr. Dixit. Therefore this part of the so called interpretation would not have adversely affected his case. The LOP i.e. Line of Promotion given in the record of note of discussion dated 14-5-1980 says that the Material Chaser and H.S.A. in Gr. 5 are already eligible for the post of Chargeman Gr. S-6. Therefore they will become eligible for promotion in this post inspite of the Agreement dated 26-2-1980 when their turn comes for promotion. Relying on this, the contention of the management is that in view of the above clarification Shri Dixit was promoted as if the Agreement dated 26-2-1980 had not come into vogue. I have already discussed the legal aspect of two agreements. But inspite of their diversity as pointed out it does not materially affect the case of Shri Chaki because this very Agreement dated 14-5-1980 under the heading LOP further says that when Material Chaser and H.S.A. in Gr. 5 are promoted, a post of Chargeman would notionally be made available from amongst the total number of Chargemen H.S.A. workmen for pormo-tion. This shatters the very bone of contention raised by the management that for want of vacancies Shri Chaki could not have been promoted because he was ranking Seventeenth. To my mind even if he was ranking Seventeenth Shri Dixit could have been only promoted as Chargeman Gr. 6 on a post notionally created for him and not in the regular cadre. In such cases when people are taken from outside in a particular grade they are generally placed at the bottom of that cadre. In the instant case, if Shri Chaki was redesignated on the due date he would have been senior and Shri Dixit ought to have been promoted on the post created notionally and placed at the bottom of the versons allowed to be redesignated as Chargeman as per the Settlement dated 26-2-1980 and even as per record note of Settlement dated 14-5-1980. I am therefore, of the opinion that on such an interpretation even of the said christcation dated 14-5-1980 Shri Chaki ought to have been redesignated senior to Shri G. N. Dixit.
- 15. Lastly I will briefly take up the prayer of the Union for the workmen that the cases of 52 other workmen who have also been superseded by Shri Dixit should be consi-

dered. I am afraid, I am unable to do so for want of reference in this regard. The reference in question relates to only Shri P. K. Chaky and not to 52 other workmen.

16. Consequently I hold that the action of the management of Bhilai Steel Plant in superseding Shri P. K. Chaky, H. S. Machinist (S-6) and making Shri G. N. Dixit Material Chaser (S-5) senior to him for promotion to the post of Chargeman (Mech) is unjustified. Shri P. K. Chaky is therefore entitled to be placed senior to Shri G. N. Dixit as if he is being redesignated as Chargeman on 17-8-1980. The management will pay Rs. 250 as costs to the workman. I answer the reference accordingly.

V. S. YADAV, Presiding Officer.

Dated . 3-1-1986.

[No. L-26012(1)|84-D.HI(B)] SHASHI BHUSHAN, Under Secv.

मई दिल्ली, 18 फर्बरी, 1986

का.मा.917.—भौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के प्रमुसरण में केन्द्रीय सरकार व रामनागोर कोलियरी, टाक कुल्टी जिला बर्दवान के प्रबन्धतस्त्र से सम्बद्ध नियोजकों भौर उनके कर्मकारों के बीच भनुबंध में निर्दिष्ट श्रौद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार भौद्योगिक प्रधिकरण, कलकत्ता के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 3-2-86 को प्राप्त हुया था।

New Delhi, the 18th February, 1986

S.O. 917.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act. 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Calcutta, as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Ramnagore Colliery, P.O. Kulti (Burdwan) and their workmen, which was received by the Central Government on the 3rd February, 1986.

# CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL AT CALCUTTA

Reference No. 21 of 1984

#### PARTIES:

Employers in relation to the management Ramnagore Colliery, P.O. Kultı (Burdwan),

#### AND

Their Workmen.

#### PRESENT :

Shri Justice N. G. Chowdhury,—Presiding Officer.

#### APPEARANCES:

On behalf of Employers.-Shri Nilay Ghosh, Advocate.

On behalf of Workmen.-Shri Gautam Som, Advocate.

STATE: West Bengal.

INDUSTRY : Coal

# **AWARD**

By Order No. L-19012(66) 83-D.IV (B) dated 8th June, 1984, the Government of India, Ministry of Labour & Rehabilitation (Department of Labour) referred the following dispute to this Tribunal for adjudication:

"Whether the action of the management of Ramnagore Colliery P.O. Kulti (Burdwan) not to regularise Shri Lajnath Singh as Head Peon in the Technical and Supervisory Grade-F with effect from 20-8-80 is justified? If not, to what relief the workman concerned is entitled?"

2. The case was called cut for hearing on 22-1-1986 but the parties filed a Compromise Petition and submitted that an Award be passed in terms of the Compromise petition. Accordingly I have gone through the Compromise petition and find it reasonable and for the benefit of the parties. I therefore, accept the same and pass an 'Award' in terms of the said Compromise Petition which will form part of this Award as Annexure-'A'.

Dated, Calcutta,

The 24th January, 1986.

N. G. CHOWDHURY, Presiding Officer [No. L-19012(66)|83-D. IV(B)]

# ANNEXURE-'A'

BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL-LABOUR COURT IN WEST BENGAL AT CALCUTTA

Reference Number 21 of 1984

#### **PARTIES**

Employers in relation to the Management of Ramnagore Colliery of M/s. IISCO Limited,

#### AND

Sri Rajnath Singh, Workman, represented by Colliery Mazdoor Sabha of India (CITU), Asansol (Burdwan).

#### PETITION OF COMPROMISE

In the matter of adjudication of above dispute, both the parties have agreed to settle their difference anticably and after a number of discussions it has been agreed as follows:—

- 1. It is agreed to promote Sri Rajnath Singh, P. No. 14030. Office Peon, to the post of Head Peon in the Tech. & Supv. grade 'F' in the pay scale of Rs. 605-18-857 from the date of signing of the settlement. Next date of annual increment shall fall due on 1st March.
- 2. It is also agreed that the post will remain personal to Sri Rajnath Singh and deemed to be deleted from the date the post falls vacant for whatsoever reason may be.
- 3. It is agreed that no arrear wages or any other benefit whatsoever may be, shall either be claimed or payable to Sri Rajnath Singh.
- 4. It is agreed that this settlement will resolve settle this dispute fully and finally.

That since the above terms of settlement forming the position of compromise are fair and reasonable and both the parties have jointly agreed and accepted the same, the compromise position is filed before the Hon'ble Tribunal.

That both the parties, therefore, pray that the Hon'ble Tribunal will be cleased to record the compromise petition and give its Award in terms thereof and a copy of this compromise petition may be made a part of the Award.

For & on behalf of the Employer

Sd]-

1-3-85

1. Sri P. K. Mukherjee, Agent, Ramnagore Colliery. Sdi-

1-3-85

2. Sri Mohit Mukherjee, Manager (PL). Witness:

For & on behalf of the Union. Sd|-

1-3-85.

 Sri Rabin Mondal, President, Colliery Mazdoor Sabha of India (CITU) Rampagore Branch.
 Sd|-

1-3-85

 Sri Sukumar Paul, Org. Secy. Colliery Mazdoor Sabha of India (CITU).

### मई दिल्ली, 19 फरवरी, 1986

का. था. 918.—श्रीशोगिक विवाद मधिनियम, 1947 (1947 का 14) की घारा 17 के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार व रामनागौर कोलियरी मैससे इसको, डा. कुल्टी, जि. वर्देशन के प्रवधतक से सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मकारों के बीच अनुबन्ध में विनिर्दिष्ट मौद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार मौद्योगिक प्रधिकरण, कलकत्ता के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 3-2-86 को प्राप्त हुआ था।

# New Delhi, the 19th February, 1986

S.O. 918.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Calcutta as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Ramnagore Colliery of M/s. IISCO, P.O. Kulti, Distt. Burdwan and their workmen, which was received by the Central Government on the 3rd February, 1986.

# CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL AT CALCUTTA

Reference No. 17 of 1984

#### PARTIES:

Employers in relation to the management of Ramnagore Colliery of IISCO, P.O. Kulti, Distt. Burdwan,

#### AND

Their Workmen.

#### APPEARANCES:

On behalf of Employers.—Shri Nilay Ghosh, Advocate.

On behalf of Workmen.—Shri Gautam Som, Advocate.

STATE: West Bengal

INDUSTRY: Coal

#### AWARD

By Order No. L-19012(67)/83-D.IV (B) dated 16th May, 1984, the Government of India, Ministry of Labour and Rehabilitation (Department of Labour) referred the following dispute to this Tribunal for adjudication:—

"Whether the action of the management of Ramnagore Colliery of HSCO, P.O. Kulti, Distt. Burdwan in not regularising Shri Kalo Mallik as Mechanical Fitter category IV with effect from 20-2-83 is justified? If not, to what relief the workman concerned is entitled?"

2. At the time of hearing on 22-1-1986 the parties filed a Compromise Petition and submitted that an Award be passed in terms of the Compromise Petition. Accordingly, I have gone through the Compromise Petition and find it reasonable and for the benefit of the parties. I therefore, accept the same and pass an 'Award' in terms of the said Compromise Petition which will form part of this Award as Annexure—'A'.

Dated, Calcutta,

The 24th January, 1986.

N. G. CHOWDHURY, Presiding Officer [No. L-19012(67) /83-D.IV (B)]

# ANNEXURE 'A'

BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL/I.ABOUR COURT IN WEST BENGAL AT CALCUTTA

Reference Number 17 of 1984

#### PARTIES:

Employers in relation to the Management of Ramnagore Colliery of M/s. IISCO Limited,

#### AND

Shri Kalo Mallick, Workman, represented by Colliery Mazdoor Sabha of India, Asansol (Burdwan).

# PETITION OF COMPROMISE

In the matter of adjudication of above dispute, both the parties have agreed to settle their difference amicably and after a number of discussions, it has been agreed as follows:—

- (1) It is agreed to promote Sri Kalo Mallick, P. No. 10157, Mazdoor Category II to the post of Fitter, Category IV in the pay scale of Rs. 24.10-0.80-35.30 from the date of signing of the settlement.
- (2) It is agreed that no appear wages or any other benefit whatsoever may be, shall be claimed by and payable to Sri Kalo Mallick.
- (3) It is agreed that this settlement will resolve/settle all disputes fully and finally.

That since the above terms of settlement forming the petition of compromise are fair reasonable and both the parties have jointly agreed and accepted the same, the compromise petition is filed before the Hon'ble Tribunal.

That both the parties, therefore, pray that the Hon'ble Iribunal will be pleased to record this compromise petition and give its Award in terms thereof and a copy of this compromise petition may be made a part of the Award.

For and on behalf of the Employer:

- (1) Sri P. K. Mukherjee, Agent, Ramnagore Colliery
- (2) Sri Mohit Mukherjee, Manager (PL)

#### witness :

For and on behalf of the Union:

- Sri Rabin Mondal, President, Colliery Mazdoor Sabha of India (CITU), Ramnagore Branch,
- Sri Sukumar Paul, Org. Secy. Colliery Mazdoor Sabha of India (CITU), Ramnagore Branch.

का. आ. 919. — भौधोगिक विवाद मधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार व कुमारडीह 'वी' कोलियरी, डाक उरवरा, जिला वर्षवान के प्रवन्धतंत्र से सम्बद्ध नियोजकों भीर उनके कर्मकारों के बीच अनुबन्ध में निर्दिष्ट भौधोगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार भौधोगिक मधिकरण, कलकला के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार क: 4-2-86 को प्राप्त हुआ था।

S.O. 919.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Calcutta, as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Kumardihi 'B' Colliery, P.O. Ukhra, Distt. Burdwan and their workmen, which was received by the Central Government on the 4th February, 1986.

# CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL AT CALCUTTA

Reference No. 20 of 1984

#### PARTIES:

Employers in relation to the management of Kumardihi 'B' Colliery, P.O. Ukhra, Distt. Burdwan.

#### AND

Their Workmen.

#### APPEARANCES:

- On behalf of Employers.—Shrì S. N. Salgal, Deputy Personnel Manager.
- On behalf of Workmen.—Shri C. S. Banerjee, General Secretary of the Union.

STATE: West Bengal INDUSTRY: Coal

#### AWARD

The following dispute was sent by the Government of India, Ministry of Labour and Rehabilitation (Department of Labour) to this Tribunal for adjudication by Order No. L-19012(72)/83-D.IV. (B) dated 18th May, 1984:

"Whether the action of the management of Kumardini 'B' Colliery, P.O. Ukhra, Distt. Burdwan in dismissing Shri Chandra Majhi, No. 2 with effect from 15-3-1981 is justified? If not, to what relief the workman concerned is entitled?"

2. The case was fixed for hearing today. The parties appeared and filed a Compromise Petition and prayed for an award in terms of the said petition. I have gone through the Compromise Petition and find it reasonable and for the benefit of the parties. I, therefore, accept the same and pass an 'Award' in terms of the said Compromise Petition which will form part of this Award as Annexure—'A'.

Dated, Calcutta,

The 28th January, 1986.

N. G. CHOWDHURY, Presiding Officer [No. L-19012(72)/83-D.IV (B)]

#### ANNEXURE 'A'

#### BEFORE THE HON'BLE PRESIDING OFFICER, CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL, CALCUTTA

In the matter of Reference No. 20 of 1984

#### PARTIES:

Employers in relation to the Management of Kumardihi Colliery of Eastern Coalfields Limited.

#### AND

#### Their workmen.

#### JOINT PETITION OF COMPROMISE:

Both the parties herein concerned most respectfully showeth :--

- That the above matter is pending adjudication before this Hon'ble Tribunal and the matter has not been heard as yet.
- That, in the meantime, the workman connected with the instant matter expired.
- That, both the parties discussed the instant matter mutually and have come to an amicable settlement of the instant matter on the following terms:—

#### TERMS OF SETTLEMENT

- (a) That, the Union herein concerned is no longer interested in the instant matter in view of the death of the workman concerned with the instant matter and submits that the instant matter may be disposed off. If the Management agrees to pay the amount of gratuity as per the Payment of Gratuity Act, 1972 payable to the deceased workman, Chandra Majhi No. 2 connected with the instant matter together with his legal outstanding dues, if any, to the widow of the deceased workman after identification in the presence of the General Secretary of this Union within two months.
- (b) That, the Management agrees to make the payment as stated in paragraph (a) above, within two months from the date this settlement is accepted by the Hon'ble Tribunal.
- (c) That, both the parties agree that by this settlement the instant matter and any matter arising out of the instant reference stands fully and finally resolved.
- 4. That, both the parties pray that the Hon'ble Tribunal may be pleased to accept the settlement as fair and proper and may be further pleased to pass an Award in terms of the settlement.

And for this act of kindness, both the parties, as in duty bound, shall ever pray.

Dated this the 28th day of January, 1986.

Sd/-

For and on behalf of the Employers:

Sd/-

For and on behalf of the Workman:

General Secretary.

C.M.U. (I.N.T.U.C.)

Dy. Personnel Manager

का. भा. 920. -- औद्योगिक विवाद भिष्ठित्यम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के भनुसरण में, केन्द्रीय सरकार व चौरा कोलियरी मैसर्स है.सी. एल के प्रबन्धतन्त्र से सम्बद्ध नियोजकों भीर उनके कर्मकारों के बीच भनुबन्ध में बिनिर्विद्ध भौद्योगिक विवाद के केन्द्रीय सरकार भौद्योगिक भिष्ठरण, कलकत्ता के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार की 4-2-86 को प्राप्त हुआ था।

S.O. 920.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Calcutta, as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Chora Colliery of M/s. Eastern Coalfields Limited, P.O. Bahula, Distt. Burdwan and their workmen, which was received by the Central Government on the 4th February, 1986.

# CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL AT CALCUTTA

# Reference No. 32 of 1984

# PARTIES:

Employers in relation to the management of Chora Colliery of M/s. E.C. Ltd., P.O. Bahula (Burdwan).

#### AND

# Their Workmen

# APPEARANCES:

- On behalf of Employers—Shri Nikhilesh Das, Advocate with Shri I. P. Singh, Personnel Manager.
- On behalf of Workmen—Shri S. Yar Mohammed, Vice President of the Union.

STATE: West Bengal.

INDUSTRY : Coal.

#### AWARD

The Government of India, Ministry of Labour and Rehabilitation (Department of Labour), by Order No. L-19012(2) / 84-D.IV(B) dated 27th July, 1984 referred the following dispute to this Tribunal for adjudication:

- "Whe'her the action of the management of Chora Colliery of E.C. Ltd., P.O. Bahula, District Burdwan (W.B.) in superannuating their workman Shri Tribeni Maharaj, Havildar with effect from 10th August, 1982, is justified? If not, to what relief the workman is entitled?
- 2. The dispute as noted above between the management of Chora Colliery of E.C. Ltd. and their workmen arose in the facts and circumstances stated below. M/s. K. C. Thapper and Brother Pvt. I.td. were owners of the colliery aforesaid before its nationalisation and it is alleged that the workman Shri Tribeni Maharai joined the said colliery as Havildar on 1st August, 1962. In Form-B Register of employees maintained under the relevant rules the age of the workman on the date of commencement of his employment was noted to be 43 years. The workman alleged that his date of birth was recorded in the 'B' Form Register in the year 1977 to be 43 years According to the workman the management, however started tempering with the age recorded in the Register and the workman protested against the alteration made

in the 'B' Form Register. According to the workman, he was wrongly superannuated on 11th August, 1982. The management, however, contends that after the nationalisation of the colliery, disputes often arose in course of which workmen challenged the correctness of the entries regarding their age made in the 'B' Form Register and in order to avoid such disputes, the management issued a letter bearing No. ECL/CMD/C. 6D/77/4872 dated 13th September, 1977 (Ext. M-3), which laid down:

- Normally we should accept the age as recorded in the 'B' Form Register.
- (2) In case there is any difference in the recording of age in Form 'B' Register and in the C.M.P.F. Register the age recorded in the C.M.P.F. Register, if free from all doubts regards interpolation etc., should be accepted.
- (3) If the C.M.P.F. records is not specifically clear and keeps a doubt the correctness, the age of the workman should be assessed by the "Age Determination Committee" of the Area concerned which is already existing.

After receipt of the circular the age of all the workmen recorded in Form 'B' Register were scrutinised and compared with the age recorded in a book maintained by the erstwhile managerent of the colliery, prepared on the basis of Declarations made by the workmen in Form 'A' of Coal Mines Provident Fund. After such examination of the records noted above it was noticed that the year of birth of the workman concerned should have been 1919 but the workman was given the benefit of the circular dated 13th September, 1977 (Ext. M-3) and his date of birth was corrected as 10th August, 1922, in the 'B' Form Register. The management contends that he was accordingly rightly superannuated on 10th August, 1982.

- 3. Before the arguments were heard Shri N. Das on behalf of the management submitted that as a matter of fact the workman was superannuated on 11th August, 1982 and not on 10th August, 1982 as noted in the schedule to the order of refere ce. According to Shri Das the difference between the actual date of superannuation and the date thereof given in the schedule to the order of reference is one day only. As the date of retirement has been noted to be 10th August, 1982 in the order of reference I proceed on the assumption that, that is the correct date of Shri Tribeni Maharaj's superannuation. I have little power to travel beyond the order of reference.
- 4. From the narration of facts given above it is abundantly clear that the point in dispute is what is the correct date of birth of Shri Tribeni Maharai, the workman concerned in this reference, Ext. M-2, the entry in the 'B' Form Register proved on behalf of the management shows that in the column 'Age' 43 years was originally noted and it was subsequently nened through and the date 10th August. 1922 was inserted. Shri S. Yar Mohammad representing the union espousing the cause of the workman contends that the register produced does not appear to have been maintained in the regular course of business. To drive home his point he points out that names of workmen employed subsequent to Shri Tribeni Maharaj were entered in the register earlier than the name of the workman concerned. He points out that serial number assigned to each workman in column-1 of the register has no relation to the date of his commencement of his service. He accordingly contends that the register is a fabricated one, manufactured for the purposes of this case and unworthy of reliance. This argument appears to be forceful, but I cannot overlook that in the last but one column of this register the workman Shri Maharaj's signature in Devnegri script hearing dated 11th August, 1982 is there. If the register was fabricated Shri Maharaj would not have subscribed his signature; further the date of commencement of his service is noted in the register to be 1st August, 1962 and against that date his age was earlier noted to be 43 years, subs-quently corrected by giving date of birth as 10th August, 1922. This date was noted in the 'B' Form Register according to the management on the basis of the entries marked Fxt. M-4 prepared on the basis of Declaration in Form 'A regarding the workman's contribution to Coal Mines Provident Fund: the prescribed form with the Declaration signed by the workman was sent to the Provident Furd Commissioner according to the rules. An extract relating to the

age and other details of each workman was recorded in Ext. M-4. The date of birth of Shri Tribeni Maharaj has been noted to be 10th August, 1922 on the basis of such declara-tion in the extract noted above and corrections have been made in the 'B' Form Register subsequently. I see nothing wrong in the 'B' Form Register. It further appears that account number of Provident Fund of Shrl Tribeni Maharaj is noted in this abstract register as B/494583. It is not Shri Tribeni Maharaj's case that his account number has been wrongly given there. From all these I feel satisfied that Shri Tribeni Maharaj's date of birth was correctly noted as 10th August, 1922 and on the basis thereof he has been correctly superannuated in 1982. It will be noticed that Shri Tribeni Maharaj dld not examine himself as a witness before this Tribunal, he did not produce before the Tribunal any document worthy of reliance to prove that he was born after 10th August, 1922. He has not produced any evidence supporting his contention that entries in the 'B' Form Register were made in the year 1977 and in that year (1977) he was 42/43 years old. It is again worthy of note that Shri Tribeni Maharai does not produce his identity card which generally records the age of date of birth of a workman. It appears that on the basis of Ext. M-3, Shri Tribeni Maharaj got the benefit of 3 years continued service, in stead of retiring in 1979 on the footing that he was born in the year 1919, he was made to refire on 10th August, 1982 on the basis of Ext. M-4. It is no use arguing that Ext. M-4 does not appear to have been properly maintained. We have already seen that Ext. M-4 is an extract prepared on the basis of Coal Mines Provident Fund Declaration made in Form 'A' and sent to the relevant authorities. If Shri Tribeni Maharaj was sure that in the Declaration Form his date of birth as furnished to the Provident Fund Authority was different from 10th August, 1922, he could have called for the same from the relevant authorities but Shri Tribeni Maharaj did not do that.

5. From a consideration of the case from different angles as discussed above I arrive at the conclusion that the action of the management of Chora Colliery of E.C. Ltd., P.O. Bahula (Burdwan). West Bencal, in superannuating their workman Shri Tribeni Maharai, Havildar with effect from 10th August, 1992 is justified. Shri Tribeni Maharaj is not entitled to any relief.

An award accordingly be made and published. Dated. Celcutta,

The 29th January, 1986.

N. G. CHOUDHURY. Presiding Officer [No. L-19012(2)/84-D. IV(B)] R. K. GUPTA, Desk Officer

नई दिल्ली, 20 फरवरी, 1986

का. भा. 9.31.— न्यूनतम मजदूरी श्रधिनियम, 1948 (1948 का 11) की धारा 5 की उपधारा (1) के खंड (क) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, भारत के राजपत्न, भसाधारण, भाग-2, खंड 3(ii) दिनोक 6 ग्रगस्त, 1984 में प्रकाशित भारत सरकार के श्रम और पुनर्थास मंत्रालय (श्रम विभाग) की ग्रधिसूचना संख्या का. भा. 567(भ्र) तारीख 21 मई, 1984 में निम्नलिखित संशोधन करती है, भर्यास:—

उक्त प्रधिसूचना में अमांक (5) में उल्लिखित नाम के स्थान पर निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाए:—-

"(5) श्री भार.एस. चुघ, संयुक्त निवेशक, मैकेनिकल इंजीनियरी (ईंघन) परिवहन संक्षालय, रेल विभाग (रेलवे थोई), नई दिल्ली।"

इ. ावरुला ।" 『ता. संख्या : एस-32019/4/83-डब्स्यू.सी. (एम. डब्स्यू.)]

पी. राघवन, निवेशक

नियोक्तामों के प्रति-

निधि

New Delhi, the 20th February, 1986

S.O. 921.—In exercise of the powers conferred by clause (a) of sub-section (1) of the second 5 of the Minimum

Wages Act, 1948 (11 of 1948), the Central Government hereby makes the following amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of Labour and Rehabilitation, (Department of Labour) No. S.O. 567(E) dated the 21st May, 1984 published in the Gazette of India, Extraordinary Part II, Section 3(ii) dated the 6th August, 1984, namely:—

In the said notification the name mentioned at serial number (5) shall be substituted as under:—

"(5) Shri R. S. Chugh, Employer's representative Joint Director, Mechanical Engineering (Fuel), Ministry of Transport, Deptt. of Railways, (Railway Board), New Delhi."

[F. No. S-32019/4/83-WC(MW)] P. RAGHAVAN, Director

# नई विल्ली, 21 फरवरी, 1986

का. ग्रा. 922.—श्रीशोगिक विवाद मधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के मनुसरण में, केन्द्रीय सरकार बियास प्रोजेक्ट, तलवाड़ा टाउनिशिप, डिस्ट्रिक्ट होशियारपुर (प.) के प्रबंधतंत्र से सम्बद्ध नियोजकों धीर उनके कर्मकारों के बीच ग्रनुबंध में निर्विष्ट भौशोगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार श्रीशोगिक भधिकरण, नई दिल्ली के पंचाट की प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 5-2-86 को प्राप्त हुआ था।

#### New Delhi, the 21st February, 1986

S.O. 922.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, New Delhi, as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Beas Project, Talwara Township. District Hoshiarpur and their workmen, which was received by the Central Government on the 5th February, 1986.

# BEFORE SHRI I. P. VASISHTH, PRESIDING OFFICER, CENTRAL GOVERNMENT, INDUSTRIAL TRIBUNAL, CHANDIGARH

Case No. I.D. 74/83(CHD)

I.D. 119/83 (DELHI)

# PARTIES:

Employers in relation to the Management Beas Construction Board and Bhakra Beas Management Board.

#### AND

Their Workmen: Surat Singh and Others.

# APPEARANCES:

For the Employers—Shri J. M. Sharma and Shri N. S. Bawa.

STATE: Punjab

For the Workmen—Shri D. S. Chohan.

ACTIVITY: Bhakra Beas Management Board.

#### **AWARD**

# Dated, the 29th January, 1986

The Central Government, Ministry of Labour, in exercise of the powers conferred on them under Section 10(1)(d) of the Industrial Disnutes Act, 1947, hereinafter referred to as the Act, per their Order No. L-42011(1)/82-D II(B) dated the 11th December, 1982 read with S.O. No. S-11025(2)/83 dated the 8th June, 1983 referred the following Industrial Dispute to this Tribunal for adjudication:

"(1) Whether the action of the management of Bhakra Beas Management Board in lowering down the position and the pay scale of S/Shri Shamsher Singh

- and 18 others (as given in annexure) is justified? If not, to what relief the workmen are entitled?"
- (2) Whether the action of the management of Bhakra Beas Management Board in terminating the services of Shri Shiv Lal Singh Carpenter with effect from 7th September, 1981 when there was pendency of conciliation proceedings before the ALC(C), Chandigarh is justified? If not, to what relief the workman is entitled?"

Šl. No.	Name		Designation	
1.	S/Shri	Surat Singh	F.M.Spy.	
2.		Mohinder Singh Kohli	F.M.Ppl.	
3.		Harbans Singh	F.M.Spl.	
4.		Tarsem Singh	A.F.Spl.	
5		Hans Raj	A.F.Spl.	
6.		Skander Paul	A.F.Spl.	
7.		Ranbir Singh	A.F.Spl.	
8.		Sanesh Thakur	Ch. Man Spl.	
9.		Bishan Dass	-do-	
10.		Rajesh Kumar	-do-```	
11.		Hari Singh	-do-	
12.		Kirpal Singh	-do-	
13.		Amar Singh	-do-	
14.		Mohinder Singh	-do-	
15.		Ram Dhan	Welder	
16.		Shadi Lal	Canteen Manager	
17.		Shiv Pal	Carpenter	
18.		Jagat Ram	Fitter	

- 2. The gist of the matter is that petitioner Shamsher Singh and 18 others, as mentioned in the above quoted annexure were employed in work-charge capacity in the Power Wing of the B.C.B. at Talwara Township. On the completion of the Works at the Project they were retrenched in accordance to Law. However later on they were re-employed by the BBMB for the maintenance and operational purposes of the Project, But in the process they were reduced in rank and deprived of their original pay scales. It was avered that at an earlier stage also a dispute had arisen between the employees and the management of the BCB (Irrigation Wing) regarding the working conditions of the employees and the matter was referred to my ld. predecessor per Reference No. 8-C of 1973. In resultant Award dated 27th June, 1974 the Tribunal had directed the management not only to give preference to the retrenched workers in the matter of re-employment but also to protect their pay scales. The petitioners, therefore, felt having been wronged at the hands of the management and raised an industrial dispute.
- 3. However when the matter was still being thrashed in the conciliation proceedings before the A.L.C.(C) Chandigarh, one of them viz. Shiv Pal Singh Carpenter was disengaged w.e.f. 7th September, 1981 which, perhaps, aggravated the controversy and that was how that a failure report was submitted to the Appropriate Government who then referred the dispute to this Tribunal, as indicated above.
- 4. In the proceedings before me, BCB pleaded indifference on the pretext that since on the completion of the Works, they had duly retrenched the petitioners, therefore, they had nothing to do with the case for want of any stakes, whereas Respondent No. 2 i.e. BBMB disowned any liability for want of privity of contract and avered that since it was not a party to the proceedings in Reference No. 8-C of 1973, therefore, it was not bound by any observations made therein or directions given by the Tribunal, it was further pleaded that in the very nature of things, it required an efficient and qualified staff for the maintenance and operational responsibilities of the Project and that in view thereof recruitment was made after screening of candidates by a high nowered Selection Committee. It was explained that the petitioners were recruited for the particular posts for which they were found suitable and were thus granted the relevant pay scales. Elaborating its version the BBMB averted that since the netitioners were employed only in work-charge capacity at the BCB but recruited by it in the regular cadre, therefore.

they had no moral or legal right to protect their earlier salary.

- 5. Even though the answering Respondent No. 2 questioned the maintainability of the reference on a number of technical grounds also giving rise to two preliminary issues framed over and above the terms of reference, yet in all fairness to it, instead of wasting its steam on meaningless technicalities, it contested the case on merits.
- 6. In support of their respective versions, parties adduced verbal as well as documentary evidence which I have carefully perused and heard them.
- 7. There is no gain saying the BBMB was neither a party to the proceedings in Reference No. 8-C of 1973 nor was summoned to join the same at any stage. Of course in the relevant Award Ex, W17 dated 27th June, 1974 my learned predecessor was pleased to observe that as and when the Project Works were completed and any other Agency was to take over the same for operational and maintenance purposes it would endeavour to employ, seniority wise, the entire retrenched Work-charge staff who had put in a certain length of service but all the same neither the parties to the proceedings nor even the Tribunal was sure about the identity of the prospective Agency who was sought to be fastend with the responsibility and obligation to re-employ the petitioners.
- 8 It the same sequence it may also be worth while to note that recording to the common case of the parties BCB was concerned only with the constructional aspect of the Project and on the completion thereof, had become, "funtus-officio". Obviously all the employees engaged on the Project, including the Work-charge staff like the petitioners, were retrenched on payment of terminal benefits envisaged under the Industrial Law, It was only then that the BBMB took over the Project for maintenance and operation. In a manner of speaking it was an entirely different venture by a different Oranjisation.
- 9. Otherwise too, from the scheme of Sections 78, 79 and 80 of the Punjab Re-organisation Act, as interpreted by the apex Court in the matter of Jaswant Singh Vs. Union of India AIR 1980 S.C. 115 (Para No. 31, 32, 37 and 39), there should be no manner of doubt about their distinct identities to rule out the fensibility of casting responsibilities of an "heir". "successor" or "assignee", as envisaged under Section 18(3)(c) of the Act, on the BBMB. And it was perhaps, in its realisation that almost all the petitioners, who appeared in the witness-box in the proceedings before me, conceded in their cross-examination that the BCB and BBMB were entirely two distinct and separate Employers.
- 10. In my considered opinion against such a back drop any direction to the contrary, as issued by my learned predecessor could, at its best, be suggestive of compassion rather than of binding legal obligation on the BBMB on whose behalf it was argued in all seriousness that precisely for this very reason it had called and presented the retrenched Workcharge employees before a high powered Selection Committee but beening in view the enormous resonnsibility of maintenance and Operation it could not possibly compromise with quality and that was how that only the best available talent was selected and recruited by it.
- 11. There is yet another important angle to lend credence to the Management's view point in the sense that on their own a levision the rectifieners were recruited and discharged by the RCR in Work-charge canacity. In the very nature of things they gould not be taken on the regular cadre because the Employer itself had a limited goal in completing the Project. On the other hand after taking over the completed Works, the contesting Respondent i.e. BBMB recruited the required staff on its regular cadre. It, was, therefore, deemed proper to go in for the best available stuff. And it hardly requires any emphasis that for the obvious reason, the management could not be expected to convert each and every Work-charge employee into a regular one. After all on the values, of employees as compared to the regulars even in accordance to the Supreme Court observations in para No. 43 of the aforesaid matter of Jaswant Singh.
- 12. I, thus, find no impropriety in the impugned action of the management in picking up the petitioners for the 1565 GI|85-22

lower category jobs for which they were found sultable; and because on their retrenchment by the Beas Construction Board they had already drawn all the terminal benefits as admissible under the Law, therefore their employment by the BBMB did not entitle them for the protection of their previous status or wages particularly when no such assurance was ever given by the BBMB. For my views I draw support from the distum in the case of Workmen of Punjab State Electricity Board. Vs. Haryana State Electricity Board Chandigarh 1981 Labour Industrial Cases 1586 wherein reliance was also placed on the Supreme Court observations in the matter of Ana-kapalle Co-operative Agricultural and Industrial Society AIR 1963 S.C. 1489 (at page No. 1496).

13. Similarly there is no merit in the petitioners' grouse on the point of disengagement of Shiv Pal Singh Carpenter during the conciliation proceedings before the A.L.C(C). At the risk of repetition it may be pointed out that the conciliation proceedings related to the joint demand raised by a number of employees, including Shiv Lal Singh, regarding the protection of their status and wages enjoyed by them at BCB. The question of his disengagement had no relevance with the controversy under consideration before the A.L.C., though otherwise also the tenure of his employment had come to an end even by afflux of time in the terms of employment, All the same, on tehalf of the maragement an assurance was given during the course of hearing before me to make on earnest endeavour to find out some alternative avenue of his re-comployment in the near future. It is besides the point that the concerned workman may also have second thoughts on the proposition because on his own showing, within a few months of his disengagement by the contesting Respondent, he was employed at Mukerian Hydel Project in the same grade.

14. Be that as it may for the reasons recorded above, for want of merit in their case, the petitioners fall in their bid and as such I return my Award against them.

Chandigarh. 29-1-1986.

I. P. VASISHTH, Presiding Officer [No. L-42011/(1)/82-D. II(B)]

का. भा. 923,—भीगोगिक विवाद मधिनियम, 1947 (1947 का 14) की घारा 17 के मनुभरण में, केन्द्रीय सरकार जनरल भेनेजर वियास हैम प्रोप्तेक्ट, तलवाड़ा टाउनियप, डिस्ट्रिक्ट होशियारपुर (प.) के प्रबंधतंत्र से सम्बद्ध नियोजकों भीर उनके कर्मकारों के बीच भनुबंध में निर्विष्ट भीछोगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार भीछोगिक प्रविकरण, नई दिल्ली के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार की 4-2-86 को प्राप्त हुआ था।

S.O. 923.—In pursuance of section 17 of the Industrial Discuses Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, New Delhi, as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the transgement of General Manager, Beas Dam Project, Talwara Township, District Hoshiarpur (Pb.) and their workmen, which was received by the Central Government on the 4th February, 1986.

BEFORE SHRI I. P. VASISHTH. PRESIDING OFFICER, CENTRAL GOVERNMENT, INDUSTRIAL TRIBUNAL,

#### CHANDIGARH

Case No. I.D. 72/83 CHD. I.D. 111 of 1983 (DELHI)

#### PARTIES:

Employers in relation to the Management of Beas Construction Board and Bhakra Beas Management Board.

# AND

Their Workmen: Yog Raj and Others.

#### APPEARANCES:

For the Employers—Shri J. M. Sharma and Shri N. S. Bawa.

For the Workmen-Shri D. S. Chohan.

ACTIVITY: Bhakra Beas Management Board.

STATE : Punjab

#### AWARD

#### Dated the 28th of January, 1986

The Central Government, Ministry of Labour, in exercise of the powers conferred on them under Section 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947, hereinafter referred to as the Act, per their Order No. L-42011(2)/82-D.II(B) dated the 17th of September, 1982 read with S.O. No. S-11025(2)/83 dated the 8th of June, 1983 referred the following industrial dispute to this Tribunal for adjudication:—

"Whether the action of the management of Bhakra Beas Management Board in not absorbing S/Shri Yog Raj, (2) Gurmit Singh (3) Pritam Singh (4) Ajit Singh (5) Dev Raj (6) Narain Dass (7) Tarsim Lal (8) Mela Ram (9) Surinder Kumar (10) Narinder Singh (11) Parshotam (12) Baldev Singh (13) Prithavi Raj (14) Des Raj and (15) Piara Singh Senior workmen for the work of maintenance and operation and instead absorbing their juniors as detailed in the Annexure is justified particularly in view of the direction of the Central Government Industrial Tribunal that in the matter of absorption, offer shall first be made to the work-charge employees in order of seniority in reference No. 8/C of 1973? If not, to what relief the workmen are entitled?"

Si. No.	Name		Designation	Division
1.	S/S'tri Durga Dass		T.M. Mato	Projection & Cabling
2.	Baldev Singh		-do-	-do-
3.	Tarsem Lal		~c¹o•	-do-
4.	Jai Singh		-do-	-do-
5.	Tarsee Lal S/o Shri Ram	Gurdass	-do-	-do-
6.	Rewal Singh		-do-	-do-
7.	Gurbachan Singh		-do-	-do-
8.	Kaiser Singh		-do-	-do-
9.	Ram Singh		-do-	-do-
10.	Vas Dev		-do-	-do-
11.	Kishori Lal		-do-	-do-
12.	Siri Gopal		-do-	-do-
13.	Ramesh Kumar	*	-do-	-d >-
14.	Kashmer Singh		-do-	-do-
15.	Saroop Singh -		-do-	-do-
16.	Amrit Lal		-do-	-do-
17.	Om Parkash		Chargeman	A&C Division
18.	Khazan Singh		-do-	-do-
19.	Prem Chand		-do-	-do-
20.	Mehar Chand		-do-	-do-
21.	Gurbachan Singh		T.M Mato	Turbine
				Division
22.	Ratten Chand		-do-	-do-
23.	Ram Chand		-do-	-do-
24.	Puran Chand		-do-	-do-
25.	Baldev Singh		-do-	-do-
26.	Kartar Nath		-do-	-do-
27.	Om Parkash		-do-	-do-
28.	Bishan Dass		-do-	-do-
29.	Basakhi Ram		-do-	-do-
30.	Partap Singh		-do-	-do-
31.	Kishan Chand		-do-	-do-

- 2. To trace a short history of the matter, the petitioners Yog Raj and 14 others were employed either as T. Mate or Safai Sewak in the Pong Power Plant Circle under Respondent No. 1 Bens Construction Bourd in Work-charge capacity and were posted at Talwara. They were duly retrenched on completion of the Project-works but during the meanwhile there arose some dispute between number of workers employed in the Irrigation Wing and the management regarding the regularisation of their services. The said dispute was reterred by the appropriate Government to my Ld. predecessor who, per his Award dated 27th June, 1974 in Reference No. 8-C of 1973, passed a direction that such of the Work Charge employees who had put in continuous service of 10 years or more at the Project will be given seniority wise preference over all others at the time of re-employment.
- 3. It was the common case of the parties that on the completion of the works, Respondent No. 1 transferred the same to Respondent No. 2 i.e. BBMB for maintenance and operational effects; obviously, the latter required some limited staff for that purpose. The petitioners complained that even though they were eligible for re-employment in the light of Tribunal's Award in the aforesaid reference No. 8-C of 1973 yet Respondent No. 2, in violation thereof, engaged their juniors Durga Dass and 30 others as mentioned in the Annexure. They, therefore, assailed the action of Respondent No. 2 and claimed recruitment on priority basis in order of their seniority at the B.C.B. Project i.e. Respondent No. 1.
- 4. In the proceedings before me, B.C.B. pleaded indifference on the pretext that since on the completion of the Works they had duly retrenched the petitioners, therefore, they had nothing to do with the case for want of any stakes, whereas Respondent No. 2 i.e. BBMB disowned any liability for want of privity of contract and avered that since it were not a party to the proceedings in Reference No. 8-C of 1973 therefore, it was not bound by any observations made therein or directions given by the Tribunal. It, however, pleaded that in the very nature of things, it required an efficient staff for the maintenance and operational responsibilities of the Project and that in view thereof it recruited the required number of employees by presenting them before a high-powered Selection Committee. It was explained that even the petitioners were afforded due opportunity of selection and were actually examined by the Selection Committee which, however, did not find them suitable for the job.
- 5. Even though the answering Respondent questioned the maintainability of the reference on a number of technical grounds giving rise to two preliminary issues, framed over and above the terms of reference, yet in all fairness to it instead of wasting its steam on meaningless technicalities it contested the case on merits. In support of their respective versions the parties adduced verbal as well as documentary evidence which I have carefully perused and heard them.
- 6. There is no gain saying that BBMB was neither a party to the proceedings in Reference No. 8-C of 1973 nor was summoned to join the same at any stage. Of course in the relevant Award Ex. W5 dated 27th June, 1974 my learned predecessor was pleased to observe that as and when the Project Works were completed and any other Agency was to take over the same for operational and maintenance purposes it would endeavour to employ, seniority wise, the entire retrenched Work-charge staff who had put in a certain length of service; but all the same neither the parties to the proceedings nor even the Tribunal was sure about the identity of the prospective Agency who was sought to be bound with the responsibility and obligation to re-employ the petitioners.
- 7. In the same sequence it may also be worth while to note that according to the common case of the parties B.C.B. was concerned only with the constructional aspect of the Project and on the consoletion thereof, had become "funtusofficio". Obviously all the employees engaged on the Project, including the Work-charge staff like the petitioners, were retrenched on payment of terminal benefits envisaged under the Industrial Law. It was only then that the BBMB took over the Project for maintenance and operation. In a manner of speaking it was an entirely different venture by a different Organisation.
- 8, Otherwise too, from the scheme of Sections 78, 79 and 80 of the Punjab Re-organisation Act as interpreted by the apex Court in the matter of Jaswant Singh Vs. Union of

India AIR 1980 S.C. 115 (Para No. 21, 32, 37 and 30) there should be no manner of doubt about their distinct identities to rule out the feasibility of casting responsibilities of an "heir", "successor" or "assignee", as envisaged under Section 18(3)(c) of the Act on the BBMB. And it was, perhaps, in its realisation that the politioners Narain Dass WWI, Mela Ram WW2 and Daldev Raj WW3 conceded in their cross-examination that the BCB and BBMB were entirely two distinct and separate Employers.

- 9. In my considered opinion against such a back drop any direction to the contrary, as issued by my learned predecessor could at it best, be suggestive of compassion rather than of binding legal obligation on the BBMB on whose behalf it was argued in all seriousness that receisely for this very reason it had called and presented the retrenched Workcharge employees before a high power Selection Committee, but keeping in view the enormous responsibility of Maintenance and Operation it could not possibly compromise with quality and that was how that only the best available talent was selected and recruited by it.
- 10. There is yet another important angle to loud credence to the Managements view point in the sense that on their own admission the petitioners were recruited and discharged by the BCB in the Work charge entegory. In the very nature of things they could not be taken on the regular cadie because the Employer itself had a limited goal in completing the Project. On the other hand after taking over the com-pleted works, the contesting Respondent i.e. BBMB recruited the required staff of its regular cadic. It was, therefore, deemed proper to go in for the best available stuff. And it hardly requires any emphasis that for the obvious reason the management could not be expected to convert each and every Work-charge employee in to a regular one. After all, on the values of employment the former fall into an inferior category of employees as compared to the regulars even in accordance to the Sopreme Court observations in para No. 43 of the aforesaid matter of Jaswant Singh.
- 11. I, therefore, find no impropriety in the impugned action of the management. However in all fairness to him, during the course of hearing before me the learned representative of the BBMB was fair enough to give an undertaking that as and when any future vacancy arises at the Project the petitioners would be re-considered for employment and every sincere endeavour would be made to provide them some
- 12. Hence for the reasons recorded above, for want of merit in their cause, the petitioners full in their bid and, as such, I return my Award against them.

Chandigarh.

28-1-1986.

J. P. VASISHTH, Presiding Officer [No. L-42011(2)/82-D. H(B)]

- का. आ. १८४.--ब्रीडोगिक विवाद घष्टिनियम, 1947 (1947 का 14) की धरग 17 के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार डिकिजनल रेलवे भैनेजर उत्तरी रेलवे. लखनऊ के प्रधानंत से सम्बद्ध नियोजकों धौर उनके कर्मकारों के वीत्र प्रनृशंध में निर्विष्ट घीष्टोगिफ विवाद में केन्द्रीय सरकार भौबोगिक अधिकरण, कानपुर के पँचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय भरकार की 4-2-86 की प्राप्त हुआ। था।
- S.O. 924.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act. 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Kanpur es shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Divisional Railway Manager, Northern Railway Lucknow and their workmen which was received by the Central Government on the 4th February, 1986.

BEFORE SHREE, B. SRIVASTAVA, PRESIDING OFFICER, CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL, KANPUR

Reference No. 1,-41012 '16 '82-D T(B) dt. 16-5-1983 Industrial Dispute No. 120 of 1983

In the mutter of dispute between :

Shri Ram Shanker C/o The Zonal Working President, Uttar Raifway Karamcharl Union, 96/196 Roshanlal Hajaj Lane. Lucknow

#### AND

The Divisional Railway Manager, Northern Railway, Lucknow.

#### APPEARANCE:

Shri B. D. Tewari-for the workman.

Shri Shameed Quereshi-for management.

#### AWARD

1. The Control Government, Ministry of Labour, vide its notification No L-41012 16 82-D.H(B) dt. 16-5-1983. referred the following dispute to this tribunal for adjudication:

Whether the action of the Rallway Administration Northern Rollway, Lucknow Division in terminating the services of Shri Ram Shanker son of Shri Kaledin Khalasi with effect from 29-4-78 is justified? If not to what relief is the concerned workman entitled?

- 2 The case of the workman is that he was casual labour working under P.W.I. Notthern Railway since 24-12-72 and continued service in broken period upto 20-1-74, thereafter his services were terminated on 21-1-74 without any notice of retrenchment compensation. Thereafter workman was of retrenchment compensation. Thereafter workman was taken on roll of works said by inspector of works Bandaria-bagh Lucknow on 23-3-74 and he was given authorised scale rate in the year 1978 though it was due on 24-9-74. He continued to work upto 28-4-78, when on 29-4-78 he was again retrenched by IOW Bandariabagh, Lucknow. He submitted application to the Civil Engineer (Senior) Northern Railway, Lucknow on 8-5-82 but to no avail, hence this claim statement with request to order reinstatement of the workman with effect from 29-4-78 with all benefits and wages for retrospective effect.
- 3. The union filed written statement of the workman on 24-9-84, and despite sufficient notice none appeared for the management and then on 4-1-85 the case was ordered to proceed exparte against the management and 30-1-85 was fixed for workman's affidavit evidence and arguments. It was for the first time that on 16-3-85 the management moved an application to set aside the order to proceed exparte and the application was allowed on cost of Rs. 25. On the date fixed i.e. 6-4-85, for filing written statement the management again moved an application for time which was allowed on cost Rs. 50 fixing 16-4-85 for written statement. Management again applied for time on 16-4-85 which was again allowed on cost Rs. 50 fixing 16-5-85 and ordering that total cost be paid and thus allowing one months time. On 16-5-85 the management again moved an application which was allowed again on cost Rs. 50 fixing 28-6-85 for written statement and the entire total cost was ordered to be paid on the date fixed i.e. Rs. 225 failing which the right of defence will stand struck off. On 28-6-85 the management did not file written statement and again applied time to file written statement. In view of the previous order that the right of defence will stand struck off, hence the application was rejected and the arguments of the workman were heard and the case was reserved for orders. On 8-7-85 the management representative moved an application to recall the order without tendering cost, as there was no justifying craise for recall of the order, the application of the management was rejected.
- 4. It appears that the management had no case i.e. why they were seeking adjournments after adjournments without paying cost. Under railway boards circular even a casual labour becomes a temporary workman and becomes entitle to scale rate after completing continuous 120 days. It was probably on that account that the workman was given scale rate in 1978. For termination even a temporary workman if he has completed more than 240 days he should have given notice or notice pay and retrenchment compensation as remined u/8 2.5F of the LD. Act of 1947. The workman had given affidavit to substantiate his statement of claim that he worked Continuously from 23-3-74 without break to 28-4-78. Thus the termination of the workman

concerned is void ab nitio and the workman is entitled to be reinstated in service with full back wages w.e.f. 29.4-78.

- 5. I. accordingly hold that the action of the Railway Administration Northern Railway, Lucknow Division in terminating the services of Shri Ram Shanker son of Shri Kaledin Khalasi w.e.f. 29-4-78 is not justified and the result is that the workman is entitled to be reinstated with full back wages.
  - 6. I, therefore, give my award accordingly,

R. B. SRIVASTAVA, Presiding Officer [No. L-41012(16) /82-D,IJ(B)]

का. था. 925.— श्रीक्योगिक विवाद प्रधित्यम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार कन्तृत्वर आफ एवरी— क्रोम्स तागपुर एवरपोर्ट के प्रवन्धतं से सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्म-कारों के बीच अनुबंध में निर्दिष्ट श्रीक्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार श्रीक्योगिक अधिकरण, प्रवलपुर के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 4-2-86 को प्राप्त हुआ था।

S.O. 925.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Jabalpur (M.P.) as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Controller of Aerodromes, Nagpur Airport and their workmen which was received by the Central Government on the 4th February, 1986.

BEFORF SHRI V. S. YADAV, PRESIDING OFFICER,

CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL-CUM-LABOUR COURT, JABALPUR (M.P.) Case No. CGIT/LC(R)(31)/1985

PARTIES:

Employers in relation to the management of Controller of Aerodromes. Nagpur Airport and their workman, Ku. Supriya M. Sikday, Telephone Operator, (Nagpur-5 (M.S.).

APPEARANCES :

For workman-Shri K. K. Ghosh,

For menagement - Shri S. K. Jain.

INDUSTRY: Aviation DISTRICT: Nagpur (M.S.)

# AWARD

Dated : January 27, 1985

The Central Government in the Ministry of Labour in exercise of the powers conferred by Clause 10(1)(d)(2A) referred the following dispute, for adjudication, vide Notification No L-11011(7)/84-D.11(8) Dated 20th April, 1985:—

- "Whether the action of the management of the Controller of Actodromes. Nagpur Airport, Nagpur in terminating the services of Ku. Supriya M. Sikday, Telephone Operator w.c.f. 16-8-84 is justified? If not, to what renef the workman is entitled?"
- 2. Non-controversial facts of the case are that the workman concerned ken. Supriva M. Sikday was sponsored by the Employment Exchange. Nagpur, for the post of Telephone Operator of Nagpur Airport Nagpur. She was interviewed and taken in service on 13-4-1983 on daily wages of Rs. 11 for 12 hours per day and she worked with the Controller of Aerodromas. Nagpur Airport. Nagpur till 15-8-1984, when finally she was restrained from attending duties with effect from 16th August, 1984. She worked there for a total period of 490 days without a day's break in service.
- 3. The case of the workwomen is that she has passed Telephone Operators Course conducted by the Government of Maharashtra in First Division and obtained advance Voca-

ti nal Certificate in Tolex Operation. She started working with the Controller of Aerodromes, Nagpur, but no appointment letter illustrating her salary, terms and service conditions etc. was communicated to her. Manager assured vide letter dated 23rd August, 1982 for further communication. She was asked to assist the Telephone Department for installation of PBX Beard and was formally allowed to join duries from 13th April, 1983. She has further contended that all of a sudden, without any ryhme or reason; her services were terminated by the Controller of Aerodromes, Nagpur Airport, Nugpur vide his letter No. NP/EB-2/Genl/3852-59 dated 25th July, 1984. This was to be effective from 31-7-1984. Subsequently vide Memorandum No. NB-EB/2/Genl/3970-74 dated 31-7-1984 the termination of her services was withdrawn and she was allowed to work till 15-8-84. The management has issued a certificate of dated 10th September, 1984 which is reproduced below:—

"This is certify that Ku. Supriya Sikdar has worked as Telephone Operator in this office from 13-4-1983 to 15-8-1984."

She is a Schedule Caste and in terms of Govt. of India directives issued from time to time, to safe guard the future, she deserves a compenssionate treatment from the Controller of Aerodrome, Nagpur Airport, Nagpur, but the same has been denied.

- 4. The case of the workwomen in short therefore is that she has neither been supplied with any appointment letter containing terms of service nor any reason for terminating her employment which amounts to unfair labour practice. She has not been given either one month's notice or salary in lieu thereof or the retrenchment compensation in accordance with Sec. 25F of the LD. Act. Her termination amounts to retrenchment within the meaning of Sec. 2(00) of the LD. Act.
- 4. The management has raised a preliminary point that the Civil Aviation of the Government of India is not an industry as per the Judgment of the Central Government Industrial Tribunal, No. II, Bombay (Case No. CGIT/2/1 of 1983). Therefore this Tribunal has no jurisdiction to decide the present reference
- 5. On merits, in the brief the case of the management is that the management wanted to appoint trained Aerodrome Assistants to man their T-43 Board. Since at the relevant time trained personnels were not available for posting at Nagpur the management called candidates from the local Emlyoment Exchange for the four posts of Telephone Operators on daily wages and Ku. Supriya M. Sikdar was one of the candidates sponsored by the Employment Exchange. She was interview and was considered for appointment as Telephone Operator on purely temporary daily wages of Rs. 13 per day. Her appointment was on stop gap arrangement till qualified Aerodromes Assistants were not posted. Therefore when the qualified persons were available her services were treminated. As such the workwomen is not entitled to any relief.
- 6. The points for consideration are whether the management of Controller of Aerodromes, Nagpur Airport, Nagpur under the Civil Aviation Department is not an industry and if it is an industry whether the action of the Controller of Aerodromes. Nagpur Airport, Nagpur in terminating the services of Ku. Supriya M. Sikdar, Telephone Operator with effect from 16-8-1984 is justified.
- 7. I will first take up the preliminary points raised by the management that the Civil Aviation of the Government of India is not an industry. As such this Tribuval has no invisidation to try the present reference.
- 8 The word industry is defined under Sec. 2(j) of the Industrial Disputes Act. 1947 and its relevant portion are reproduced below:—-
  - "(j) "industry" means any systematic activity carried on by co-operation between an employer and his workmen (whether such workmen are employed by such employer directly or by or through any agency,

including a contractor) for the production, supply or distribution of goods or services with a view to satisfy human wants or wishes (not being wants or wishes which are merely spiritual or religious in nature), whether or not—

- (i) any capital has been invested for the purpose of carrying on such activity; or
- (ii) such activity is carried on with a motive to make any gain or profit".

The test whether a particular department of the Government or public sector undertaking is an 'industry' or not has been considered in the case of Bangalore Water Supply and Sewerage Board Vs. R. Rajappa and others 1978-I-LLJ-349). It has been held therein:—

- "I. (a) where (i) systematic activity; (ii) organised by co-operation between employer and employees (the direct and substantial element is commercial); (iii) for the production and/or distribution of goods and vervices calculated to satisfy human wants and wishes not spiritual or religious but inclusive of material things or services geared to celestial bliss i.e. making on a large-scale of (prasad or food) prima facie, there is an industry in that enterprise.
- (b) Absence of profit-motive or gainful objective is irrelevant, be the venture in the public, joint or private or other sector.
- (c) The true focus is functional and the decisive test is the nature of the activity with special emphasis on the employer-employee relations.
- (d) If the organisation is a trade or business, it does not cease to be one because of philanthropy animating the undertaking."

It was further held that the soevereign functions strictly understood alone quality for exemption, not the welfare activities or economic adventure undertaken by the Government or statutory bodies. It was also held that even in such departments if there are units which are industries and they are substantially severable, then they can be considered to come within the meaning of Sec. 2(j). While laying down dominant nature test their Lordships of the Hon'ble Supreme Court further observed that where complex activities carried on, some of which may qualify for exemption, other not, involves employees of the total undertaking, the predominant nature of the services and the integrated nature of the departments will be the true test. I will examine the activities carried on by the management in the instant case in the light of the above observations of the Hon'ble Supreme Court.

- 9. Both parties filed documents and adduced no oral evidence. On behalf of the management only a copy of Award delivered by the Central Govt. Industrial Tribunal-cum-Labour Covit No. 2. Bombay in Case No. CGIT-2/4 of 1983 has been filed and it has been argued that the Civil Aviation Department is a purely Government Department. Therefore the Controller of Aerodromes, Nagpur Airport, Nagpur, which is under the Civil Aviation Department cannot come under the definition of industry. The Controller of Aerodrome Nagpur of the Civil Aviation Department are governed by the Allocation of Busines Rules of 1961. These Rules of 1961 are published by the Government of India in which the activities of the Civil Aviation Department are narrated. My learned brother of the C.G.I.T. No. 2 Bombay in the case of Management of International Airport Authority of India and the Directorate Central, Civil Aviation Department. New Delhi Vs Their workmen (Case No. CGIT-2/4 of 1983) in his award dated 17th July, 1984 has reproduced the activities of Civil Aviation Department as follows:—
  - 1. Meteorological Organisation.
  - Aircraft and air navigation; Provision of Aerodromes; regulation and organisation of air traffic and or aerodromes excepting sanitary control of air navigation.

- Becaons and other provision for the safety of aireraft.
- 4. Carriage of passengers and goods by air,
- 4A. International Civil Aviation Organisation (CAO)
- 4B. International Air Transport Association (IATA)
- 4C. Commonwealth Air Transport (CATC)
- 4D. Commonwealth Advisory Aeronautical Research Council.
- Corporation established under the Air Corporation Act, 1963.
- 6. Chief Commissioner of Railway Safety. On the other hand on behalf of the workman it has been argued that the Aerodrome Nagpur under the Civil Aviation Department is carrying on systematized activity by cooperation of employer and employee for services calculated to satisfy human wants and wishes. The management has not produced any documentary evidence or adduced oral evidence to the contrary.
- 10. In view of the activities of the Civil Aviation Department as laid down under Rules 1961 I am of the opinion that there is a systematized activity by cooperation of employer and employee for services calculated to satisfy human wants and wishes and not spiritual etc. Its functions are not sovereign simply because Civil Aviation Department of which the Aerodromes Nagpur Airport is part and pracel carries on welfare activities under the Government. It cannot be said to be beyond the wide definition of industry within the meaning of Sec. 2(j) of the I.D. Act. It is the dominant nature of activity carried on by the employer and employee which is relevant. The dominant nature of the work of the Civil Aviation Department including the Acrodromes, Nagpur Airport, Nagpur is to render service to the public through the cooperation of employer and employce. In the case of Bangalore Water Supply and Sewerage case (supra) it was held that in view of Government entering into large fields of industries therefore only those service which are governed by separate rules and constitutional provisions such as Article 310 and 311 should strictly speak ing he excluded from the sphere of industry by necessary implication. It is not shown that Civil Aviation Department are governed by separate rules or by constitutional pro-Their business is only defined by Allocation of Business Rules, 1961 and not their service condition (at least no such rule has been shown to me).
- 11. For the reasons discussed above, I hold that the Civil Aviation Department is an industrial within the meaning of Sec. 2(j) of the Industrial Disputes Act and this Tribunal has jurisdiction to try the present dispute. The Award of other Central Industrial Tribunal is not binding on this Tribunal.
- 12. Coming to the merits of the case, it is not disputed before me that Ku. Supriya M. Sikdar was employed as a Telephone Operator with effect from 13-4-1983 and her services were terminated with effect 15-8-1984. Thus she worked for 490 days with the management.
- 13. Section 25B of the 1D. Act defines continuous service. If she has worked for a period of 12 calender months preceding the date with reference to which calculation is made has actually worked under the employer for not less than 240 days. The present workmen has worked for more than 240 days in the preceding year.
- 14. Section 25F of the LD. Act lays down that no workmen employed in any industry who has been in continuous rervice for not less than one year unless one month's notice or wages in lieu of notice and retrenchment compensation is paid, shall be retrenched.
  - 15. The 'retrenchment' has been defined under Sec. 2(00) of the Industrial Disputes Act as under :--
    - "Retrenchment" means the termination by the employer of the service of a workman for any reason what-

- soever, otherwise than as a punishment inflicted by way of disciplinary action, but does not include:—
- (a) voluntary retirement of the workman; or
- (b) retirement of the workman on reaching the age of superannuation if the contract of employment between the imployer and the workman concerned contains a stipulation in that behall; or
- (c) termination of the service of a workman on the ground of continuous ill-health."
- 16. The case of the management is that she was employed on a purely temporary and on daily wages as Telephone Operator and specifically stating that she was employed on a stop gap arrangement till the time a trained and qualified Aerodrome Assistant was not posted to M-43 Board. She and other candidates sponsored by the Employment Exchange were fully given to understand the facts and circumstances of the case. Therefore she is stopped from challenging the This contention stands repelled by the pronouncement of the Supreme Court in the case of State Bank of India Vs. N. Sundermoney (AIR 1976 SC. 1111) wherein it has been held that termination for any reason wnatsoever in Sec. 2(00) are the key words. Whatever the reason, every termination spells retrenchment otherwise than by way of punishment inflicted by the disciplinary action. It has been turther held that if the workman swims into the harbour of Section 25F she cannot be retrenched without payment, at the time of tettenchment, compensation computed as prescribed therein read with Section 25B(2). Same view was expressed in the case of Hindustan Steel Ltd. Vs. State of Orissa and others (1977--I-LLJ-p. 1).
- 17. Casual and seasonal fabour once they acquired the status of temporary servant they are governed by the condition of service as has been held in the case of L. Robert D'Souza Vs. Executive Engineer (AIR 1982 SC 854). Even in cases where according to terms of service the same terminates by aflux of time, even then it will amount to retrenchment as has been held in the case of State Bank of India Vs. N. S. Money (supra).
- 18. In view of the above authorities the plea of the management regarding the terms of her service do not help them. The workwoman has stated that her services were terminated without any notice or wages in fieu of notice and without paying the retrenchment compensation and on her termination some other person was taken in service. This is also admitted by the management. Therefore termination of her services amounts to unfair labour practice. In any case termination of Ku, Sikdar for reason whatsoever amounts to retrenchment and failure to give notice or wages in lieu thereof and failure to pay retrenchment compensation renders rettenchment void as has been held in the case of Factory Manager Central India Machinery Mfg. Co. Ltd. Gwaltor and another Vs. Naresh Chandra Saxena (1985 LIC p. 941).
- 19. For the reasons discussed above, I find that the action of the management of the Controller of Aerodromes, Nagpur Airport, Nagpur in terminating the services of Ku. Supraya M. Sikdar, Telephone Operator with effect from 16-8-1984 is unjustified.
- 20. As a normal rule in such cases she is entitled to reinstatement from the date of termination i.e. 16-8-1984 with full back wages and all other ancillary reliefs including eniority. The reference is answered accordingly. No order as to costs.

V. S. YADAV, Presiding Officer [No. L-41011(7)]84-D.H(B)]

का. था. 926.—शैद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 (1947 का 11) की धारा 17 के प्रनुसरण में, केन्द्रीय सरकार डिस्ट्रिस्ट भैनजर टेलीफोन्स, डाक तार विभाग, नागपुर के प्रबंधतंत्र से सम्बद्ध नियोजकों भीर उनके कर्मकारों के बीच प्रतुबंध में निर्विष्ट घौद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकारों प्रौद्योगिक प्रधिकरण, जबलपुर के पैसाट की प्रकाणित करती के भी केन्द्रीय सरकार प्रौद्योगिक प्रधिकरण, जबलपुर के पैसाट की प्रकाणित करती के भी केन्द्रीय सरकार को 4-2-86 की प्राप्त हुआ था।

S.O. 926.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tibunal, Jabalpur (M.P.) as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of District Manager Telephones, P & T Department, Nagpur, and their workmen, which was received by the Central Government on the 4th Feb., 1986.

BEFORE SHRI V. S. YADAV, PRESIDING OFFICER, CENTRAL GOVT. INDUSTRIAL TRIBUNAL-CUMLABOUR COURT, JABALPUR (M.P.)

#### Case No. CG1[/LC(R)(94)/1984

#### PARTIES:

Employers in relation to the management of District Manager Telephones, P & T Deptt. Nagpur and their workman Shri V. P. Deshmukh, Casual Mazdooi, represented through the Afl India P & T Employees Federation, 14.Q. No. 52, Telecom Colony Pratapnagar, Nagpur-22.

#### APPEARANCES:

For Union-Shri V. N. Bagale, Advocate,

For Management—Shri Dardar and Shri Nand, Advocates INDUSTRY; P & T DISTRICT; Nagpur (M.S.)

#### **AWARD**

Dated: January 24, 1986

In exercise of the powers conferred by Clause 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947, the Central Government in the Ministry of Labour referred the following dispute, for adjudication, vide Notification No. L-40012(8)/84-D.H(B) dated 20-11-1984:—

- "Whether the action of the management of Telephones, Nagpur in not regularising Shri V. P. Deshmukh Casual Mazdoor in group 'D' post with effect from 24-6-1982 is justified? If not, to what relief the workman is entitled?"
- 2. Non-controversial facts of the case are that the work-man concerned, Shri V. P. Deshmukh, was employed by the management with effect from 30-12-1972 and since then he put in 12 years service. His total attendance during this period exceeds 2:00 days. Initially he was paid Rs. 9.32 per day which was subsequently raised to Rs. 15 per day. He was doing the same work as the other regular employees were doing.
- 3. The case of the workman is that he was employed as Casual Mazdoor on 30-12-1972 and is working continuously since last 12 years. He was paid Rs. 9.32 per day, subsequently it was raised to Rs. 15 per day. He was doing the same work as the other regular employees. The work of the casual mazdoor is of perennial nature and in view of the provisions of Section 25B of LD. Act he had a right over a post of regular Group D workman as he had completed 240 days service within 12 months of a calendar year from 30-12 1972 to 29-12-1973. He has also attained the status of the regular U/s. 25B of LD. Act. It is stated that since the workman has completed 240 days service within twelve calendar months he is required to be regularised automatically by the appointing authority as has been held in the case of Bangalore Water and Sewage Board Vs. Rajappa. In view of the above Supreme Court judament the Government of India issued fresh orders for regularisation of daily wages casual workmen. These orders were circulated vide No. 45/19/79-SPB-I dated 6-4-1979, according to which the casual mazdoor who fulfilled the condition of (1) 240 days service (ii) VIII Standard educational qualification and (iii) 31 years age limit become eligible for regularisation in Group D automatically. These orders therefore, supersede all the prior P & T Rules in this regard. It is nowhere stated that the literacy test to be held for determining the suitability towards regularisation.
- 4. The workman has further stated that he is protected under the perview of category landicanned for which the Government Medical Authority has certified. The Government

of India also promulgated reservation in recruitment for handicapped in Government services. As per this provision the workman should have been regularised.

- 5. The management on 19-6-1982 conducted a farce literacy test to determine suitability towards regularisation in Group D post. The management has intentionally done this with an intention to cause exploitation of casual mazdoor and ignoring the senior, workman concerned. Juniors S/Shri Gajanan Pande, D. M. Sondawale, P. R. Pardhi, M. G. Khandekar, S. A. Khokale and S. K. Maday have been regularised. This regularisation of services of juniors by ignoring the senior amounts to discrimination. The total injuries caused to the workman in comparison to his juniors amounts to Rs. 4550 upto 30-11-1984 and which is likely to be increased by the same ratio till the decision of the case. The workman is therefore entitled for the following reliefs:—
  - To regularise the service of the workman as Group D
    in permanent capacity after completion of 240 days
    service.
  - Back wages from 30-12-1973 till the date of his regularisation.
  - 3. Compensation Rs. 4550 and cost Rs. 500.
- 6. The case of the management is that as per the award dated 6-10-1980 passed by this Tribunal in case No. CGIT/LC(R)(40)/78 the claim of Shri V. P. Deshmukh Casual Mazdoor for regularisation and payment at par to the regular employees is under process and that he will be benefitted accordingly.
- 7. It is contended that the manageemnt is strictly following recruitment rules applicable in regard to Group 'D' post. It is also contended that casual mazdoor fulfilling the prescribed conditions is regularised in Group 'D' post provided Group 'D' post is available and the candidates qualifies the prescribed test and approved by the Departmental Selection Committee. Shri Deshmukh though fulfilling the prescribed condition for regularisation was in the list of eligible candidates at the time of the previous recruitment but he was not recommended by the Departmental Selection Committee for regular appointment in Group D.
- 8. The management denied that they made farce of conducting literacy test to determine suitability of the candidates for appointment in Group 'D' post. As per rule 7 Part I Appendix XII of P & T Manual Vol. IV literacy test was conducted for regularisation of casual mazdoors in Group D category in which the workman concerned Shri, V. P. Deshmukh, did not qualify and others junior to him qualified in the test. Therefore the workman concerned is not entitled to Rs. 4550 and other benefits as claimed.
- 9. However, as per claim passed in Case No. CGIT/LC(R) (40)/78 Shri V. P. Deshmukh will get all the benefits, but the prayer as made by the workman in the instant case in totally denied.
- 10. Neither party adduced any oral evidence. On behalf of the workman certain documents have been filled as annexures to the statement of claim, some of which have been admitted by the management. Admittedly the workman was appointed as Casual Mazdoor with effect from 30-12-1972. The workman's contention is that he worked continuously for the period which exceeds 2600 days. The management adduced no evidence to the contrary in this regard. Certainfy he had completed one year's service within the meaning of Sub-section (2) of Sec. 258 of the LD. Act as he was appointed on 30-12-1972.
- 11. Management has only stated that Shri V. P. Deshmukh though fulfilling the prescribed condition for regularisation was in the list of eligible candidates at the time of the previous recruitment but he was not recommended by the Departmental Selection Committee for regular appointment in Group D. It is further stated that as per order passed by my learned predecessor in Case No. CGIT/I C(R) (40)/78 Shri V. P. Deshmukh will get all the benefits. Both parties relied on Ministry of Home Affairs O.M. o 49014/1/83-Estt.-(G) dated 13-10-1983. It says that those casual employees who were recritted before 31-3-1979 may be regularised in Group D post subject to the following conditions:—
  - Those who have put in at least 240 days service on the date of appointment against regular Group 'D' post.

 Eligible in respect of minimum age limit after excluding the period spent as daily wages worker. But this condition was also relaxed provided they otherwise are eligible for regularisation.

\_ .

\_=-----

- 3. Minimum educational qualification prescribed for the post (Management admitted that the present workman has the requisite qualification).
- The condition of being sponsored through the Employment Exchange was also relaxed.

In any case now looking to the length of his service—the condition of recruitment rules of 2 years service is now very much satisfied and the applicant workman is entitled to be regularised, as a handicap workman.

- 12. The question is as to from which date he should be regularised and what post.
- 13. As I have already pointed out the recruitment rules provided minimum two years service. Therefore in my opinion he should be regularised from the date he had completed two years service. I am fortified by the observations made in the case of I. Robert D'Souza Vs. Executive Engineer, S.E. Railway (AIR 1982 SC 854).
- 14. The management has admitted that he is qualified for Group 'D' post. Therefore, the management is directed to regularise him on any Group D post from the date he has completed 2 years' service and pay the difference of wages from the aforesaid date. There is no question of payment of any further compensation but the applicant workman will be entitled to costs of Rs. 250. The reference is answered accordingly.

V. S. YADAV, Presiding Officer. [No. L-40012(8)/84-D.II(B)]

- का. धा. 9.77.—भौधोगिक विवाद प्रधितियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के प्रमुगरण में, केन्द्रीय सरकार बिस्ट्रिक्ट मैनजर टेलीफोन्स, नागपुर के प्रबंधतंत्र से सम्बद्ध नियोजको और उनके कर्मकारों के बीच प्रमुजंध में निर्दिष्ट प्रौद्यागिक विवाद में केन्द्रीय सरकार श्रीष्ठोगिक प्रधिकरण, जबलपुर के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 4-2-86 को प्राप्त हुआ था।
- S.O. 927.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Jabalpur (M.P.) as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of District Manager, Telephones, Nagpur and their workmen, which was received by the Central Government on the 4th February, 1986.

BEFORE SHRI V. S. YADAV, PRESIDING OFFICER, CENTRAL GOVT. INDUSTRIAL TRIBUNAL-CUM LABOUR COURT, JABALPUR (M.P.)

Case No. CGIT[LC(R)](12)]1985

PARTIES :

Employers in relation to the management of District Manager, Telephones, Nagpur and their workmen, named in the Annexure, represented through the General Secretary, All India P&T Employees Federation, H. Q. Kamptee Road, Near Bridge No. 10, Indore, P.O. Bezonbagh, Nagpur-440004.

#### APPEARANCES:

For Union.—Shri V. N. Bagale, Advocate.

For Management,-+Shri Dardar, Advocate.

INDUSTRY: P&T. DISTRICT: Nagpur (M.S.)

# AWARD

Dated : January, 24th 1986

In evercise of the powers conferred by Section 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947, Central Government

in the Ministry of Labour referred the following dispute, for adjudication, vide Notification No. L-40012(29)|83-D. II(B) Dated 28th January, 1985:—

"Whether the action of the management of District Manager, Telephones, Nagpur in not regularising the services of the workmen (listed in the Annexure) working as Casual Electrical Wiremen since last five years under Assistant Engineer, Tax (Installation) Nagpur is justified 7 If not, to what relief and from which date they are entitled?"

#### ANNEXURE

SI.

No.

- 1. Shri R. P. Keimegh
- 2. Shri Rayındra Dalal
- 3. Shri B. S. Manwatkar
- 4. Shri P. G. Kawale
- 5. Shri H. K. Deotale
- b. Shri T. G. Maske,
- 2. Non-controversial tacts of the case are that the workmen numbering six were employed by the management some in the year 1978 and some in the year 1979.
- 3. The case of the workmen is that they were employed as Casual Electrical Wiremen and worked continuously since last six years and their total attendance exceeded 2100 days, Initially they were paid Rs, 9.32 per day which was subsequently raised to Rs. 16 per day. They were doing the same work as the other regular employees were doing. Their work was of perennial nature and in view of the provision of Section 25B of I.D. Act they hold a right over a post of legular Electrical Wireman as has also been laid down in the case of Bangalore Water & Sewerage Board Vs. Rajappa. In pursuance of the above Supreme Court judgment the Govt. of India issued fresh orders for regularisation of daily wages casual workmen. These orders were circulated vide endorsement of Director General, Posts and Telegraphs, Department, New Delhi No. 45/19/79-SPB-1, dated 6-4-1979, according to which the casual workmen who fulfilled the condition of 240 days service, requisite educational qualification of 171 Diploma etc. and 31 years upon age limit be considered for regularisation as Electrical Wiremen, automatically by the appointing authority. These orders, therefore, supersede all the prior P&T Rules in this regard. It is nowhere stated that the literacy test to be held for determining suitability towards regularisation, management had appointed these workmen by observing all the due formalities i.e. by calling their names through Employment Exchange and holding their test, they were selected and appointed as casual Electrical Wiremen. District Manager (Telephones) cannot be permitted to introduce any innovance or make any afteration in the instructions of the Government. The same service conditions have been upheld by the Central Govt. Industrial Tribunal-cum-Labour Court, Jabalpur in his award dated 3-10-1980 in the case of Telephone Workmen Vs. Nugpur District Manager (Telephones). The same was confirmed by the High Court, Nagpur and subsequently by the Supreme Court in tis judgment dated 4-8-1983.
- 4. On the instructions of the District Manager (Telephones) dated 28-10-1980 five of the casuar mazdoors who did not hold the requisite qualifications such as Diploma of I.T.I. etc. have been appointed as Electrical Wiremen. Their names are as under:—
  - 1. Shri N. S. Thakkar
  - 2, Shri D. B. Tijare
  - 3. Shri V. K. Khandale
  - 4. Shri B. S. Adose and
  - 5. Shri M. S. Muley.
- 5. These workmen had made applications to the Central Government Labour Court Nagpur under Sec. 33-C(2) for arrears regarding difference of pay between permanent wiremen and the daily wages paid to the workmen which was allowed, and they have been paid the arrears amounting to

- Rs. 2664. The worknen are, therefore, entitled to the following reliefs:—
  - (1) To regularise the service of the working as Electrical Wiremen in permanent capacity after completion of 240 days service.
  - (2) Back wages and arrears from 1978-79 onwards till they are regularised and absorbed in regular post.
     (3) Compensation of Rs. 13500 and costs Rs. 500.
- 6. The case of the management is that they were employed as casual mazdoors and the nature of their services were essentially of casual nature to complete the project of installation of Nagpur Telephones Automatic Exchange Lines. After the completion of the work their services were to be terminated. The management sought the names of eligible candidates from Employment Exchange and the workmen were appointed, Initially on daily wages of Rs. 6.12 per day which was later on revised to Rs. 15 per day.
- 7. There is no cadre as Regular Electrical Wiremen in the Nagpur Telephone District, Selection and appointment of Wiremen are made on the following basis when there are vacancies:—
  - (a) 75 per cent from the Departmental lower grade chilcials who have completed 3 years minimum service
  - (b) 25 per cent from outsiders i.e. Casual Mazdoors who have passed 8th Standard and who have served Department minimum 2 years having worked 240 days in consecutive years.
  - If no suitable casual mazdoors are available then only candidates are sponsored through the Employment Exchange. That they should possess the necessary qualification of Wiremen.
- 8. The workmen have also relied on office order of Assistant Engineer, Tax, Maintonance, Nagpur dated 5th December, 1980 whereby S|Shti Thakkar, Tijare, Khandale, Adase and Muley were appointed as Wiremen. This substantiates that certain casual mazdoors were appointed as Wiremen.
- 9. It is the case of the management that the applicant workman did not possess the necessary qualification. But they adduced no evidence to substantiate their allegations. Admittedly these workmen were appointed as Casual Mazdoors in the year 1978 and some in the year 1979. Their contention is that they worked regularly for more than 240 days. The management adduced no evidence to the conflury. If these workmen were appointed in the year 1978 and 1979 certainly they had completed one year's service within the meaning of Sub-section (2) of Sec. 25B of the ID. Act when the appointments vide Ex. W|3 dated 5th December, 1980 were made.
- 10. In fact they had the qualifications as required by the recruitment rules since they had put in 240 days service In the preceding year and atleast some of them had also completed the minimum two years service (at least those who had joined in 1978). In such circumstances only taking some select few for appointment on regular post is not justified socially in view of the order of Ministry of Home Affairs No. C.M. 49014[1]83-Estt.(G) dated 13-10-1983 (Ex. W]1). It says that those casual Employees who were recruited before 31-3-1979 may be regularised in Group 'D' post subject to the following conditions:—
  - Those who have put in at least 240 days service on the date of appointment against regular Group 'D' post.
  - (2) Eligible in respect of minimum age limit after excluding the period spent as daily wages worker. But this condition was also relaxed provided they otherwise are eligible for regularisation.
  - (3) Minimum educational qualification prescribed for the nest (Applicants workmen have filed their certificates mentioned above in this regard).

(4) The condition of being sponsored through the Employment Exchange was also relaxed.

In any case now looking to the length of their service the condition of recruitment rules of 2 years service is now very much satisfied and the applicants workmen are entitled to be regularised.

- 11. The question is as to from which date they should be regularised and on what post,
- 12. As I have pointed out the recruitment rules provided minimum two years service. Therefore in my opinion they should be regularised from the date they had completed two years service. I am fortified in this by the observations made in the case of L. Robert D'Souza Vs. Executive Engineer, S. E. Railway (AIR 1982 SC. 854).
- 13. It is not challenged before me that they did not work as Wiremen. At least no evidence is adduced that they

and not work as such. Therefore they ought to be regularised on the post they were working from the aforesaid date. They are also entitled to difference of wages of the regular Wiremen and the wages poid to these workmen from the date they had completed two years service after deducting the amount which they have already received vide Ex. W|4, the order of the Divisional Engineer (Phones) dated 3rd December, 1985. There is no question of payment of any further amount by way of compensation but the applicant workmen will be entitled to costs of Rs. 250 each. The reference is answered accordingly.

V. S. YADAV, Presiding Officer
[No. 40012(29)|83-D. II(B)]
HARI SINGH, Desk Officer